# धातुरूपादर्शः।

कलिकातासंस्कृतविद्यामन्दिराध्यक्षेण

श्रीतारानाथतर्कवाचस्पतिभट्टाचार्य्येण

विरचितः।

पण्डितकुलपति-

बि, ए, उपाधिधारि-

श्रीमज्जीवानन्द-विद्यासागर-भट्टाचार्य्यात्मजाभ्यां

पण्डित-श्रीआशुबोध-विद्याभूषण-

पण्डित-श्रीनित्यबोध-विद्यारत्नाभ्यां

संस्कृतः परिवर्द्धितः प्रकाशितश्च।

---

षष्ठसंस्करणम्।

---

कलिकातामहानगर्य्याम्,

"वाचस्पत्ययन्त्रे"

मुद्रितः।

ई १८९६।

प्रकाशक— पण्डित-श्रीआशुबोध-विद्याभूषण
तथा
पण्डित-श्रीनित्यबोध-विद्यारत्न।

प्राप्तिस्थान— २नं०, रमानाथ मजुमदार ष्ट्रीट,
आम्हार्ष्ट ष्ट्रीट् पोष्ट-अफिस, कलिकाता।

प्रिण्टर—बि, बि, मुखर्जी।
२ नं०, रमानाथ मजुमदार ष्ट्रीट्, कलिकाता।

# मुखबन्धः।

संस्कृतभाषायां व्युत्पित्सूनां फललाभाय व्याकरणमेव परं निदानं, स्वल्पायासेन तल्लाभाय च आशुबोधाभिधमेकं व्याकरणमितः पूर्वं मया निरमायि। तत्र च सर्वेषां धातूनां लड़ादौ स्वरूपप्रदर्शनेऽतीव ग्रन्थबाहुल्यं स्यादित्यतः पाणिन्यागमानुसारीणि पदसाधनोपयोगीनि सूत्राणि सङ्कलय्य तेषामुदाहरणानि दिङ्मात्राणि उपन्यस्य "अधिकं धातुरूपादर्शे द्रष्टव्यम्" इत्युक्त्वा धातुरूपादर्शग्रन्थकारित्वमात्मनः सूचितम्। तदनुसारेण सम्प्रति धातुरूपादर्शो नाम ग्रन्थो व्यरचि।

धातुरूपज्ञानञ्च सर्वेषां विशेषतः सुकुमारमतीनामतीव आवश्यकम्। तथाहि—परिशीलितव्याकरणागमानामपि सुधियां चेतसि सर्वदा सर्वसूत्राणामनिट्कत्वादिधातुधर्माणाञ्च स्फूर्त्तिर्नैवोपपद्यते, अस्फुरति च सूत्रे धातूनामनिट्कत्वादिधर्मं च विद्वद्भिरपि "अस्य धातोरस्मिन् प्रत्यये परे इदं रूपं स्यात्" इति कथङ्कारं ज्ञायेत? अतः सूत्रानुसारेण परिनिश्चितानि धातूनां रूपाणि अस्मिन् ग्रन्थे प्रदर्शितानि, तानि च दृष्ट्वा यस्य धातोर्यस्मिन् प्रत्यये परे यथा रूपं स्यात्तथा अनायासेन विज्ञातुं शक्यते।

अत्र च ग्रन्थे पाणिन्यागमानुसारेणैव प्रायशो धातूनां रूपाणि दर्शितानि, क्वचिच्च मतान्तरसिद्धान्यपि।

शब्दस्तोममहानिधौ सर्वेषां गणपठितधातूनामर्थादिकमस्माभिरभिहितम्, इह तु साहित्यादिषु प्रयुक्तधातूनामेवार्थरूपादिकं दर्शितम्। उपसर्गभेदेन धातुविशेषाणामर्थविशेषाः तोदाहरणाः बृहदभिधानेऽस्माभिर्दर्शनीयाः, इह तु दिङ्मात्रा उपसर्गभेदेन अर्थविशेषास्तद्रूपञ्च प्रदर्शितम्।

पाणिनीयगणपाठे सीकादिभिन्नानां हल्यवर्णान्तसादीनामजवर्णान्तसादीनाञ्च धातूनां षादित्वेन पाठः, ततः प्रयोगकाले तेषां सादित्वं सूत्रानुसारेण भवति, इह तु प्रयोगानुसारेण सादितयैव तेषां निर्देशः। एवं नृनटादिभिन्नानां नादीनां गणपाठे णादितया पाठः प्रयोगे

पुनर्नादिता, तदनुसारेण नादितयैवेह सर्वेषां निर्देशः कृतः। पाणिनीयागमानुसारेण लड्लिङादयोऽन्यक्रमेण तिङः पठिताः, आशुबोधे तु सुगमरीत्यवलम्बनेन लड्विधिलिङादयः क्रमेण पठिताः, तदनुसारेणैवात्र लड्विधिलिङादिषु रूपं प्रदर्शितम्। गणपाठे भ्वाद्यदादिगणीयानां क्रमशः पाठः, इह तु दृष्टिसौकर्य्यार्थमभिधानरीत्यनुसारक्रमेण अकारादि-हकारान्तवर्णादिकानां यथोत्तरं तत्क्रमेणैव तदुत्तरादिवर्णसन्निवेशवतामिव धातूनां निर्देशः। तेषाञ्च अर्थविशेषाः, अर्थभेदे सकर्मकत्वाकर्मकत्वकथनम्, शप्श्यनादिविकरणसूचकं भ्वाद्यदादिगणीयताकथनं, परस्मैपदादियुक्तासेट्कत्वानिट्कत्वादिधातुधर्मकथनञ्च। कृतान्तु प्रसिद्धानामिव रूपं प्रदर्शितम्। दर्शिता च अत्र अर्थभेदेन उपसर्गविशेषयोगेन च दिङ्मात्रा पदव्यवस्था; आकारादयो धातूनामनुबन्धाः प्रायेणात्र न दर्शिताः, वृहदभिधाने ते च अस्माभिः सप्रयोजनं दर्शयिष्यन्ते, इह तु उदाहरणानुसारेण अनुबन्धकार्य्यमात्रं प्रदर्शितम्।

यद्यपि धातुरूपप्रदर्शनं दिङ्मात्रम् अस्मिन् ग्रन्थेऽपि विद्यते, तथापि तत्र तत्र ग्रन्थे न सर्वधातुरूपज्ञानं सुकरमित्यतः प्रसिद्धधातूनां प्रायशः सर्वेषां रूपाणां ज्ञानस्यायञ्च महोपयोगाय भविष्यति। आशास्महे धातुभेदानां प्रत्ययभेदे रूपभेदशौर्य्यनिश्चयाय व्युत्पित्सूनां सर्वेषामत्र प्रवृत्तिः साधीयसी स्यादिति।

महता यत्नेनेदं परिशोधितं, तथापि यदत्र मम किञ्चित् स्खलितं सुधीभिर्लक्ष्येत तत् परिशोधनीयम्। एतद्दर्शने च सुधियः सुकुमारमतयश्च सततं प्रवर्त्तन्तामित्येव मम विनयतः प्रार्थना, तेनैव मम श्रमसाफल्यं भवेदित्यलं पल्लवितेन।

श्रीतारानाथशर्म्मणः।

# शुद्धिपत्रम् ।

| पृष्ठाङ्कः | पङ्क्तिः | अशुद्धं | शुद्धम् |
|---|---|---|---|
| ४ | २१ | बभविध्वे | बभूविध्वे |
| ६ | १२ | उत्-भ | उत्-भू |
| ८ | ४ | अनुभूययाताम् | अनुभूयेयाताम् |
| १४ | ३ | अबोभविष्यत् | अबोभविष्यत् |
| १८ | १२ | अङ्ग् | अङ्ग |
| १९ | १३ | अन्यते | अण्यते |
| २० | २२ | गतौ | गतौ कान्तौ म्रक्षणे व्यक्तौ च |
| २६ | १४ | अर्ज् | अर्ज |
| २७ | १ | अजयमानः | अर्ज्यमानः |
| ,, | ४ | अर्थ् | अर्थ |
| ,, | १९ | अर्द् पीड़ायां | अर्द् गतौ पीड़ायाञ्च |
| २९ | १४ | अव् रक्षणे | अव रक्षणे, गतौ, स्पृहायां, तृप्तौ, शोभायां, श्रवणे, व्याप्तौ, आलिङ्गने, प्रार्थने, प्रवेशे, सत्तायां, वृद्धौ, ग्रहणे, वधे, सामर्थ्ये, अवगमे, करणे, दुःखोत्पादने । |
| ३५ | १३ | अयति | कर्त्तरि—अयति |
| ६० | १४ | क्रन्द् क्रन्दने | क्रन्दने, वैकल्ये, आह्वाने च |

| पृष्ठाङ्कः | पङ्क्तिः | अशुद्ध | शुद्धम् |
|---|---|---|---|
| ६२ | ८ | उपकन्ता | उपक्रान्ता |
| ६५ | १० | क्रष्टुम् | क्रोष्टुम् |
| ८० | ८ | गुप्यते | गुप्यति |
| ८६ | १८ | घर्णिता | घूर्णिता |
| १३२ | ८ | अध- | अधू- |
| १४८ | १ | पत्स्यत | पत्स्यते |
| १६३ | २२ | स्पयम् | स्फायम् |
| १६७ | २२ | बौर्य्यात्, बौर्य्यते | बूर्य्यात्, बूर्य्यते |
| १६८ | १ | बौर्णः, बौर्णिः | बूर्णः, बूर्त्तिः |
| „ | २ | बौर्त्वा, सम्बौर्य्य | बूर्त्वा, सम्बूर्य्य |
| „ | ३ | बौर्य्यमाणः | बूर्य्यमाणः |
| १७२ | २३ | भीक्षाकः | भिक्षाकः |
| १७८ | १२ | भजिषीष्ट | भर्जिषीष्ट |
| „ | १७ | भजितः | भर्जितः |
| २३८ | ८ | वर्जणीयं, वर्जणम् | वर्जनीयम्, वर्जनम् |

स्थानभ्रंशतादोषपरिहारः।

२४० पृष्ठे लिखितो बृह्-धातुः १६७ पृष्ठे "बुध्"धातोरनन्तरं वर्गीयबकारमध्ये "बृह्" इत्याकारेण ग्रहीतव्यः।

## साङ्केतिकशब्दज्ञापनम् ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| भ्वादि॰ | भ्वादिगणीयः | क्र्यादि॰ | क्र्यादिगणीयः |
| अदा॰ | अदादिगणीयः | चुरादि॰ | चुरादिगणीयः |
| जुहो॰ | जुहोत्यादिगणीयः | पर॰ | परस्मैपदी |
| दिवा॰ | दिवादिगणीयः | आत्म॰ | आत्मनेपदी |
| स्वादि॰ | स्वादिगणीयः | उभ॰ | उभयपदी |
| तुदा॰ | तुदादिगणीयः | अक॰ | अकर्मकः |
| रुधा॰ | रुधादिगणीयः | सक॰ | सकर्मकः |
| तनादि॰ | तनादिगणीयः | द्विक॰ | द्विकर्मकः |



# धातुरूपादर्शः ।

## मङ्गलाचरणम् ।

प्रणम्य परमात्मानं श्रीताराना‌थशर्मणा ।
वितन्यते धातुरूपादर्श एष प्रयत्नतः ॥

## उपक्रमणिका ।

प्रसिद्धधातुरूपाणि दर्श्यन्ते प्रायशो मया ।
ककाराद्युत्तराकार-पूर्वादिक्रमयोगतः ॥
सकर्मकाकर्मकत्वे वच्म्येऽहमर्थभेदतः ।
उपसर्गविशेषेण धातोरर्थान्यतां तथा ॥
पाणिनीयमतेनैव तिङ्कृत्संज्ञा समाहृता ।
आशुबोधे तु तत्सूत्राण्युद्धृतानि समासतः ॥
सिद्धान्तकौमुदीग्रन्थे तेषां विस्तर ईक्ष्यताम् ।
तत्र रूपाणि सिद्धानि कथ्यन्तेऽत्राल्पमानतः ॥

तत्रादौ क्रममनादृत्य प्रसिद्धत्वात् भूधातो रूपं प्रदर्श्यते।—

(१) भूधातुर्विद्यमानतार्थेऽकर्मकः परस्मैपदी, प्राप्त्यर्थे सकर्मक उभयपदी, भ्वादिगणीयः सेट्।

कर्त्तरि वाच्ये।

लट्।

परस्मैपदे

| | प्रथमपुरुषे | मध्यमपुरुषे | उत्तमपुरुषे |
|---|---|---|---|
| एक-वचने | भवति | भवसि | भवामि |
| द्वि-वचने | भवतः | भवथः | भवावः |
| बहु-वचने | भवन्ति | भवथ | भवामः |

आत्मनेपदे

| | | | |
|---|---|---|---|
| एक-वचने | भवते | भवसे | भवे |
| द्वि-वचने | भवेते | भवेथे | भवावहे |
| बहु-वचने | भवन्ते | भवध्वे | भवामहे |

विधिलिङ्।

परस्मैपदे

| | | | |
|---|---|---|---|
| एक-वचने | भवेत् | भवेः | भवेयम् |
| द्वि-वचने | भवेताम् | भवेतम् | भवेव |
| बहु-वचने | भवेयुः | भवेत | भवेम |

आत्मनेपदे

| | प्रथमपुरुषे | मध्यमपुरुषे | उत्तमपुरुषे |
|---|---|---|---|
| एक-वचने | भवेत | भवेथा: | भवेय |
| द्वि-वचने | भवेयाताम् | भवेयाथाम् | भवेवहि |
| बहु-वचने | भवेरन् | भवेध्वम् | भवेमहि |

लोटि ।

परस्मैपदे

| | | | |
|---|---|---|---|
| एक-व० | भवतु | भव | भवानि |
| द्वि-व० | भवताम् | भवतम् | भवाव |
| बहु-व० | भवन्तु | भवत | भवाम |

आत्मनेपदे

| | | | |
|---|---|---|---|
| एक-व० | भवताम् | भवस्व | भवै |
| द्वि-व० | भवेताम् | भवेथाम् | भवावहै |
| बहु-व० | भवन्ताम् | भवध्वम् | भवामहै |

लङि ।

परस्मैपदे

| | | | |
|---|---|---|---|
| एक-व० | अभवत् | अभव: | अभवम् |
| द्वि-व० | अभवताम् | अभवतम् | अभवाव |
| बहु-व० | अभवन् | अभवत | अभवाम |

आत्मनेपदे

| | | | |
|---|---|---|---|
| एक-व० | अभवत | अभवथा: | अभवे |
| द्वि-व० | अभवेताम् | अभवेथाम् | अभवावहि |
| बहु-व० | अभवन्त | अभवध्वम् | अभवामहि |

## लुङ् ।

### परस्मैपदे

| | प्रथमपुरुषे | मध्यमपुरुषे | उत्तमपुरुषे |
|---|---|---|---|
| एक-व० | अभूत् | अभूः | अभूवम् |
| द्वि-व० | अभूताम् | अभूतम् | अभूव |
| बहु-व० | अभूवन् | अभूत | अभूम |

### आत्मनेपदे

| | | | |
|---|---|---|---|
| एक-व० | अभविष्ट | अभविष्ठाः | अभविषि |
| द्वि-व० | अभविषाताम् | अभविषाथाम् | अभविष्वहि |
| बहु-व० | अभविषत | अभविढ्वम् / अभविध्वम् | अभविष्महि |

## लिटि ।

### परस्मैपदे

| | | | |
|---|---|---|---|
| एक-व० | बभूव | बभूविथ | बभूव |
| द्वि-व० | बभूवतुः | बभूवथुः | बभूविव |
| बहु-व० | बभूवुः | बभूव | बभूविम |

### आत्मनेपदे

| | | | |
|---|---|---|---|
| एक-व० | बभूवे | बभूविषे | बभूवे |
| द्वि-व० | बभूवाते | बभूवाथे | बभूविवहे |
| बहु-व० | बभूविरे | बभूविढ्वे / बभूविध्वे | बभूविमहे |

## लुटि।

### परस्मैपदे

| | प्रथमपुरुषे | मध्यमपुरुषे | उत्तमपुरुषे |
|---|---|---|---|
| एक-व० | भविता | भवितासि | भवितास्मि |
| द्वि-व० | भवितारौ | भवितास्थः | भवितास्वः |
| बहु-व० | भवितारः | भवितास्थ | भवितास्मः |

### आत्मनेपदे

| | | | |
|---|---|---|---|
| एक-व० | भविता | भवितासे | भविताहे |
| द्वि-व० | भवितारौ | भवितासाथे | भवितास्वहे |
| बहु-व० | भवितारः | भविताध्वे | भवितास्महे |

## आशीर्लिङि।

### परस्मैपदे

| | | | |
|---|---|---|---|
| एक-व० | भूयात् | भूयाः | भूयासम् |
| द्वि-व० | भूयास्ताम् | भूयास्तम् | भूयास्व |
| बहु-व० | भूयासुः | भूयास्त | भूयास्म |

### आत्मनेपदे

| | | | |
|---|---|---|---|
| एक-व० | भविषीष्ट | भविषीष्ठाः | भविषीय |
| द्वि-व० | भविषीयास्ताम् | भविषीयास्थाम् | भविषीवहि |
| बहु-व० | भविषीरन् | भविषीढ्वम् } भविषीध्वम् } | भविषीमहि |

## लृटि।

### परस्मैपदे

| | प्रथमपुरुषे | मध्यमपुरुषे | उत्तमपुरुषे |
|---|---|---|---|
| एक-व० | भविष्यति | भविष्यसि | भविष्यामि |
| द्वि-व० | भविष्यतः | भविष्यथः | भविष्यावः |
| बहु-व० | भविष्यन्ति | भविष्यथ | भविष्यामः |

### आत्मनेपदे

| | | | |
|---|---|---|---|
| एक-व० | भविष्यते | भविष्यसे | भविष्ये |
| द्वि-व० | भविष्येते | भविष्येथे | भविष्यावहे |
| बहु-व० | भविष्यन्ते | भविष्यध्वे | भविष्यामहे |

## लृङि।

### परस्मैपदे

| | | | |
|---|---|---|---|
| एक-व० | अभविष्यत् | अभविष्यः | अभविष्यम् |
| द्वि-व० | अभविष्यताम् | अभविष्यतम् | अभविष्याव |
| बहु-व० | अभविष्यन् | अभविष्यत | अभविष्याम |

### आत्मनेपदे

| | | | |
|---|---|---|---|
| एक-व० | अभविष्यत | अभविष्यथाः | अभविष्ये |
| द्वि-व० | अभविष्येताम् | अभविष्येथाम् | अभविष्यावहि |
| बहु-व० | अभविष्यन्त | अभविष्यध्वम् | अभविष्यामहि |

प्र-भू ऐश्वर्य्ये अकर्मकः। धने प्रभवति धनमीष्टे इत्यर्थः। सम्-भू सम्भवे (निश्चयप्रायविषये अकर्मकः)। यत्ने विद्या सम्भवति, यत्ने सति विद्या प्रायेण निश्चितेत्यर्थः। उत्-भू उत्पत्तौ अक० क्षेत्रात् धान्यमुद्भवति उत्पद्यते इत्यर्थः।

प्रति-भू प्रतिरूपभवने अक०। प्रतिभवति प्रतिभूर्भवतीत्यर्थः। परा-भू पराभवे (अशक्यतानिश्चयेन निवृत्तौ) अक०। उद्यमात् पराभवति अशक्यताऽध्यवसायेन निवर्त्तते इत्यर्थः। पराभवकरणेऽपि तथात्वे तु सकर्मकः। रिपून् पराभवति अशक्यताऽध्यवसायसम्पादनेन निवर्त्तयतीत्यर्थः। अभि-भू अभिभवे (कर्माक्षमत्वसम्पादने) सक०। बुद्धिमभिभवति जाड्यं कर्माक्षमां करोतीत्यर्थः। परि-भू तिरस्कारे सक०। खलः परिभवति साधुं तिरस्करोतीत्यर्थः। अनु-भू अनुभवे (ज्ञानविशेषे) सक०। सुखमनुभवति जानातीत्यर्थः। एष्वर्थेषु परस्मैपदी। रूपाणि प्रागुक्तानि। किन्तु प्र-परा-परि-अन्तर्-निर्-भू लोटि आनिपि वा णत्वम्—प्रभवाणि पराभवाणि परिभवाणि अन्तर्भवाणि निर्भवाणि। पक्षे णत्वाभावः।

तत्र अकर्मकेभ्यो भावे आत्मनेपदस्य एकवचनस्य लडादौ रूपम्।—

लटि—भूयते, विधिलिङि—भूयेत, लोटि—भूयताम्, लङि—अभूयत, लुङि—अभावि, लिटि—बभूवे, लुटि—भाविता, भविता, आशीर्लिङि—भाविषीष्ट, भविषीष्ट, लृटि—भाविष्यते, भविष्यते, लृङि—अभाविष्यत, अभविष्यत।

सकर्मकेभ्यः कर्मणि वाच्ये आत्मनेपदस्य सर्ववचने लडादौ रूपम्।—

लटि।

| | प्रथमपुरुषे | मध्यमपुरुषे | उत्तमपुरुषे |
|---|---|---|---|
| एक-व० | अनुभूयते | अनुभूयसे | अनुभूये |
| द्वि-व० | अनुभूयेते | अनुभूयेथे | अनुभूयावहे |
| बहु-व० | अनुभूयन्ते | अनुभूयध्वे | अनुभूयामहे |

## विधिलिङ्।

| | प्रथमपुरुषे | मध्यमपुरुषे | उत्तमपुरुषे |
|---|---|---|---|
| एक व० | अनुभूयेत | अनुभूयेथाः | अनुभूयेय |
| द्वि-व० | अनुभूयेयाताम् | अनुभूयेयाथाम् | अनुभूयेवहि |
| बहु-व० | अनुभूयेरन् | अनुभूयेध्वम् | अनुभूयेमहि |

## लोट्।

| | | | |
|---|---|---|---|
| एक-व० | अनुभूयताम् | अनुभूयस्व | अनुभूयै |
| द्वि-व० | अनुभूयेताम् | अनुभूयेथाम् | अनुभूयावहै |
| बहु-व० | अनुभूयन्ताम् | अनुभूयध्वम् | अनुभूयामहै |

## लङ्।

| | | | |
|---|---|---|---|
| एक-व० | अन्वभूयत | अन्वभूयथाः | अन्वभूये |
| द्वि-व० | अन्वभूयेताम् | अन्वभूयेथाम् | अन्वभूयावहि |
| बहु-व० | अन्वभूयन्त | अन्वभूयध्वम् | अन्वभूयामहि |

## लुङ्।

प्रथमपुरुषे

| | | |
|---|---|---|
| एक-व० | अन्वभावि | |
| द्वि-व० | अन्वभाविषाताम्, | अन्वभविषाताम् |
| बहु-व० | अन्वभाविषत, | अन्वभविषत |

मध्यमपुरुषे

| | | |
|---|---|---|
| एक-व० | अन्वभाविष्ठाः | अन्वभविष्ठाः |
| द्वि-व० | अन्वभाविषाथाम्, | अन्वभाविषाथाम् |
| बहु-व० | अन्वभाविढ्वम्,-ध्वम् | अन्वभविढ्वम्,-ध्वम् |

उत्तमपुरुषे

| | | |
|---|---|---|
| एक-व० | अन्वभाविषि, | अन्वभविषि |
| द्वि-व० | अन्वभाविष्वहि, | अन्वभविष्वहि |
| बहु-व० | अन्वभाविष्महि, | अन्वभविष्महि |

## लिटि

| | प्रथमपुरुषे | मध्यमपुरुषे | उत्तमपुरुषे |
|---|---|---|---|
| एक-व० | अनुबभूवे | अनुबभूविषे | अनुबभूवे |
| द्वि-व० | अनुबभूवाते | अनुबभूवाथे | अनुबभूविवहे |
| बहु-व० | अनुबभूविरे | अनुबभूविढ्वे, अनुबभूविध्वे | अनुबभूविमहे |

## लुटि ।

प्रथमपुरुषे

| | | |
|---|---|---|
| एक-व० | अनु भाविता, | भविता |
| द्वि-व० | अनु-भावितारौ, | भवितारौ |
| बहु-व० | अनु-भावितारः, | भवितारः |

मध्यमपुरुषे

| | | |
|---|---|---|
| एक-व० | अनु-भावितासे, | भवितासे |
| द्वि-व० | अनु-भावितासाथे, | भवितासाथे |
| बहु-व० | अनु-भाविताध्वे, | भविताध्वे |

उत्तमपुरुषे

| | | |
|---|---|---|
| एक-व० | अनु-भाविताहे, | भविताहे |
| द्वि-व० | अनु-भावितास्वहे, | भवितास्वहे |
| बहु-व० | अनु-भावितास्महे, | भवितास्महे |

## आशीर्लिङि ।

प्रथमपुरुषे

| | | |
|---|---|---|
| एक-व० | अनु-भाविषीष्ट, | भविषीष्ट |
| द्वि-व० | अनु-भाविषीयास्ताम, | भविषीयास्ताम् |
| बहु-व० | अनु भाविषीरन्, | भविषीरन् |

मध्यमपुरुषे

| | | |
|---|---|---|
| एक-व० | अनुभाविषीष्ठाः, | भविषीष्ठाः |
| द्वि-व० | अनु-भाविषीयास्थाम्, | भविषीयास्थाम् |
| बहु-व० | अनु-भाविषीढ्वम्-ध्वम्, | भविषीढ्वम्-ध्वम् |

उत्तमपुरुषे

| | | |
|---|---|---|
| एक-व० | अनु भाविषीय, | भविषीय |
| द्वि-व० | अनु भाविषीवहि | भविषीवहि |
| बहु-व० | अनु-भाविषीमहि, | भविषीमहि |

लृट् ।

प्रथमपुरुषे

| | | |
|---|---|---|
| एक-व० | अनु-भाविष्यते, | भविष्यते |
| द्वि-व० | अनु-भाविष्येते, | भविष्येते |
| बहु-व० | अनु-भाविष्यन्ते, | भविष्यन्ते |

मध्यमपुरुषे

| | | |
|---|---|---|
| एक-व० | अनु-भाविष्यसे, | भविष्यसे |
| द्वि-व० | अनु भाविष्येथे, | भविष्येथे |
| बहु-व० | अनु-भाविष्यध्वे, | भविष्यध्वे |

उत्तमपुरुषे

| | | |
|---|---|---|
| एक-व० | अनु-भाविष्ये, | भविष्ये |
| द्वि-व० | अनु-भाविष्यावहे | भाविष्यावहे |
| बहु-व० | अनु-भाविष्यामहे, | भविष्यामहे |

लृङ् ।

प्रथमपुरुषे

| | | |
|---|---|---|
| एक-व० | अन्वभाविष्यत, | भविष्यत |
| द्वि-व० | अन्वभाविष्येताम्, | भविष्येताम् |
| बहु-व० | अन्वभाविष्यन्त, | भविष्यन्त |

मध्यमपुरुषे

| | |
|---|---|
| एक-व० | अन्वभाविष्यथाः भविष्यथाः |
| द्वि-व० | अन्वभाविष्येथाम्, भविष्येथाम् |
| बहु-व० | अन्वभाविष्यध्वम्, भविष्यध्वम् |

उत्तमपुरुषे

| | |
|---|---|
| एक-व० | अन्वभाविष्ये, भविष्ये |
| द्वि-व० | अन्वभाविष्यावहि, भविष्यावहि |
| बहु-व० | अन्वभाविष्यामहि, भविष्यामहि |

णिचि कर्त्तरि उभयपदी

| | लटि | विधिलिङि | लोटि | लङि |
|---|---|---|---|---|
| परस्मै० | भावयति | भावयेत् | भावयतु | अभावयत् |
| आत्मने० | भावयते | भावयेत | भावयताम् | अभावयत |

लुङि ।

प्रथमपुरुषे

| | | | |
|---|---|---|---|
| परस्मै० | अबीभवत् | अबीभवताम् | अबीभवन् |
| आत्मने० | अबीभवत | अबीभवेताम् | अबीभवन्त |

मध्यमपुरुषे

| | | | |
|---|---|---|---|
| परस्मै० | अबीभवः | अबीभवतम् | अबीभवत |
| आत्मने० | अबीभवथाः | अबीभवेथाम् | अबीभवध्वम् |

उत्तमपुरुषे

| | | | |
|---|---|---|---|
| परस्मै० | अबीभवम् | अबीभवाव | अबीभवाम |
| आत्मने० | अबीभवे | अबीभवावहि | अबीभवामहि |

लिटि

| | | | |
|---|---|---|---|
| परस्मै० | भावयाम्बभूव | भावयामास | भावयाञ्चकार |
| आत्मने० | भावयाम्बभूव | भावयामास | भावयाञ्चक्रे |

| | लुटि | आशीर्लिङि |
|---|---|---|
| परस्मै० | भावयिता | भाव्यात् |
| आत्मने० | भावयिता | भाविषीष्ट |

| | लृटि | लृङि |
|---|---|---|
| परस्मै० | भावयिष्यति | अभावयिष्यत् |
| आत्मने० | भावयिष्यते | अभावयिष्यत |

कर्मणि वाच्ये

| लटि | विधौ | लोटि | लङि |
|---|---|---|---|
| भाव्यते | भाव्येत | भाव्यताम् | अभाव्यत |

लिटि

भावयाम्बभूवे भावयामासे भावयाञ्चक्रे

लुङि ।

प्रथमपुरुषे

| | |
|---|---|
| एक-व० | अभावि |
| द्वि व० | अभाविषाताम्, अभावयिषाताम् । |
| बहु-व० | अभाविषत, अभावयिषत । |

मध्यमपुरुषे

| | |
|---|---|
| एक-व० | अभाविष्ठाः, अभावयिष्ठाः । |
| द्वि-व० | अभाविषाथाम्, अभावयिषाथाम् । |
| बहु-व० | अभाविषिढ्वम्-ध्वम्, अभावयिषिढ्वम्-ध्वम् । |

उत्तमपुरुषे

| | |
|---|---|
| एक-व० | अभाविषि, अभावयिषि |
| द्वि-व० | अभाविष्वहि, अभावयिष्वहि |
| बहु-व० | अभाविष्महि, अभावयिष्महि |

| लुटि | आशीर्लिङि |
| --- | --- |
| भाविता, भावयिता। | भाविषीष्ट, भावयिषीष्ट। |
| **लृटि** | **लृङि** |
| भाविष्यते, भावयिष्यते। | अभाविष्यत, अभावयिष्यत। |

सनि कर्त्तरि परस्मैपदी।

लटि—बुभूषति, विधौ—बुभूषेत्, लोटि—बुभूषतु, लङि—अबुभूषत्, लुङि—अबुभूषीत्।

लिटि—बुभूषाम्बभूव, बुभूषामास, बुभूषाञ्चकार, लुटि—बुभूषिता, आशीर्लिङि—बुभूष्यात्, लृटि—बुभूषिष्यति, लृङि—अबुभूषिष्यत।

सनि कर्त्तरि आत्मनेपदी।

लटि—बुभूषते, विधौ—बुभूषेत, लोटि—बुभूषताम्। लिटि—बुभूषाम् चक्रे आस बभूव। लुङि—अबुभूषिष्ट, लृटि—बुभूषिष्यते। लुटि—बुभूषिता, लृङि—अबुभूषिष्यत, आशीर्लिङि—बुभूषिषीष्ट।

यङि आत्मनेपदी।

लटि—बोभूयते, विधौ—बोभूयेत, लोटि—बोभूयताम्, लङि—अबोभूयत, लुङि—अबोभूयिष्ट।

लिटि—बोभूयाम्बभूव, बोभूयामास, बोभूयाञ्चक्रे। लुटि—बोभूयिता, आशीर्लिङि—बोभूयिषीष्ट, लृटि—बोभूयिष्यते, लृङि—अबोभूयिष्यत।

यङ्लुकि।

लटि—बोभवीति, बोभोति। लोटि—बोभवीतु, बोभोतु। विधौ—बोभूयात्। लङि—अबोभवीत् अबोभोत्। लिटि—

बोभवाञ्चकार,—माम,—बभूव। लुटि—बोभविता, लृटि—बोभविष्यति, आशीर्लिङि—बोभूयात्, लुङि—अबोभूवीत्, अबोभोत्। लृङि—अबोभविष्यत्।

भूधातुश्चुरादिगणीयः शोधने चिन्तायाञ्च उभयपदी अन्त्य-भूधातुवद्रूपाणि लभते। औषधं भावयति शोधयतीत्यर्थः। देवं भावयति चिन्तयतीत्यर्थः।

कृत्।

कर्त्तरि अच्—भवः संसारः। अनीयर् भावे—भवनीयम्। प्र-भिन्नोपसर्गात् अच्—पराभवः, विभवः, अभिभवः, परिभवः, सम्भवः, उद्भवः। प्र-घञ्—प्रभावः। अपादाने तु—भवः महादेवः। प्रभवः कारणम्। इन्—प्रभवी। इष्णुच्—प्रभविष्णुः प्रभावयुक्तः। क्त—भूतः, प्रभूतः, अभिभूतः। क्तवतु—भूतवान्। क्तिन्—भूतिः, अनुभूतिः, सम्भूतिः। क्त्वा—भूत्वा। क्यप्—ब्रह्म-भूयम, देवभूयम। क्विप्—भूः, आत्मभूः, स्वयम्भूः। खल्—दुर्भवं, सुभवम। खिष्णु—प्रियम्भविष्णुः, आढ्यम्भविष्णुः। खुकञ्—प्रियम्भावुकः। डु—विभुः, प्रभुः, शम्भुः। णिन—भावी। ण—भावः पदार्थः, अन्यत्र अच्—भवः। णमुल्—भावं भावम्। ण्वुल्—भावकः, परिभावकः। तव्य—भवितव्यः। तृच्—भविता। कर्त्तरि य—भव्यः। ल्यप्—परिभूय, अभिभूय। ल्युट्—भवनम्। शतृ—भवन्। शानच्—अनुभूयमानः। स्यतृ—भविष्यन्। स्यमान—भाविष्यमाणः भविष्यमाणः, कर्म्मणि—अनुभाविष्यमाणः, अनुभविष्यमाणः।

णिजन्तस्य।

अनीयर्—भावनीयम्, विभावनीयम्। क्त—भावितः। क्तवतु—भावितवान्। क्तिन्नास्ति, तत्र युच्—भावना। क्त्वा—

भावयित्वा। तव्य—भावयितव्यः। तृच्—भावयिता। य—भाव्यम्, विभाव्यम्। ल्यप्—विभाव्य, अभिभाव्य। ल्युट्—भावनम्। शतृ—भावयन्। शानच्—भाव्यमानः। स्यतृ—भावयिष्यन्। स्यमान—भावयिष्यमाणः, कर्मणि—भाविष्यमाणः, भावयिष्यमाणः।

सनन्तस्य।

अनीयर्—बुभूषणीयम्। उ—बुभूषुः। क्त—बुभूषितः। क्तवतु—बुभूषितवान्। क्तिन्नास्ति, अ—बुभूषा। क्त्वा—बुभूषित्वा। तव्य—बुभूषितव्यम्। तृच्—बुभूषिता। य—बुभूष्यम्। ल्यप्—परिबुभूष्य। ल्युट्—बुभूषणम्। शतृ—बुभूषन्। स्यतृ—बुभूषिष्यन्। स्यमान—बुभूषिष्यमाणः।

## अथाकारादिवर्णक्रमेण धातुरूपाणि प्रदर्श्यन्ते।

**(२) अक्ष् व्याप्तौ स्वादिगणीयो भ्वादिगणीयश्च परस्मैपदी सकर्मकः वेट्कः।**

कर्त्तरि वाच्ये।

लटि

| | प्रथमपुरुषे | मध्यमपुरुषे | उत्तमपुरुषे |
|---|---|---|---|
| एक व० | अक्ष्णोति अक्षति | अक्ष्णोषि-अक्षसि | अक्ष्णोमि-अक्षामि |
| द्वि व० | अक्ष्णुतः-अक्षतः | अक्ष्णुथः-अक्षथः | अक्ष्णुवः-अक्षावः |
| बहु व० | अक्ष्णुवन्ति-अक्षन्ति | अक्ष्णुथ-अक्षथ | अक्ष्णुमः-अक्षामः |

### विधिलिङि ।

| | प्रथमपुरुषे | मध्यमपुरुषे | उत्तमपुरुषे |
|---|---|---|---|
| एक-व० | अक्ष्णुयात्-अक्षेत् | अक्ष्णुयाः-अक्षेः | अक्ष्णुयाम्-अक्षेयम् |
| द्वि-व० | अक्ष्णुयाताम्-अक्षेताम् | अक्ष्णुयातम्-अक्षेतम् | अक्ष्णुयाव-अक्षेव |
| बहु-व० | अक्ष्णुयुः-अक्षेयुः | अक्ष्णुयात-अक्षेत | अक्ष्णुयाम-अक्षेम |

### लोटि ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| एक-व० | अक्ष्णोतु-अक्षतु | अक्ष्णुहि-अक्ष | अक्ष्णवानि-अक्षाणि |
| द्वि-व० | अक्ष्णुताम्-अक्षताम् | अक्ष्णुतम्-अक्षतम् | अक्ष्णवाव-अक्षाव |
| बहु-व० | अक्ष्णुवन्तु-अक्षन्तु | अक्ष्णुत-अक्षत | अक्ष्णवाम-अक्षाम |

### लङि ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| एक-व० | आक्ष्णोत्-आक्षत् | आक्ष्णोः-आक्षः | आक्ष्णवम्-आक्षम् |
| द्वि-व० | आक्ष्णुताम्-आक्षताम् | आक्ष्णुतम्-आक्षतम् | आक्ष्णुव-आक्षाव |
| बहु-व० | आक्ष्णुवन्-आक्षन् | आक्ष्णुत-आक्षत | आक्ष्णुम-आक्षाम |

### लुङ् ।

| | प्रथमपुरुषे | मध्यमपुरुषे | उत्तमपुरुषे |
|---|---|---|---|
| एक-व० | आक्षीत्-आक्षीत् | आक्षीः-आक्षीः | आक्षिषम्-आक्षम् |
| द्वि-व० | आक्षिष्टाम्-आष्टाम् | आक्षिष्टम्-आष्टम् | आक्षिष्व-आक्ष्व |
| बहु-व० | आक्षिषुः-आक्षुः | आक्षिष्ट-आष्ट | आक्षिष्म-आक्ष्म |

### लिटि

| | प्रथमपुरुषे | मध्यमपुरुषे | उत्तमपुरुषे |
|---|---|---|---|
| एक-व० | आनक्ष | आनक्षिथ-आनष्ठ | आनक्ष |
| द्वि-व० | आनक्षतुः | आनक्षथुः | आनक्षिव-आनक्ष्व |
| बहु-व० | आनक्षुः | आनक्ष | आनक्षिम-आनक्ष्म |

| | लुटि प्रथमपुरुषे | आशीर्लिङि प्रथमपुरुषे |
|---|---|---|
| एक-व० | अक्षिता, अष्टा | अक्ष्यात्, |
| द्वि-व० | अक्षितारौ, अष्टारौ | अक्ष्यास्ताम् |
| बहु-व० | अक्षितारः, अष्टारः | अक्ष्यासुः |

| ऌटि | ऌङि |
|---|---|
| अक्षिष्यति, अक्ष्यति । | आक्षिष्यत्, आक्ष्यत् । |

### कर्मणि वाच्ये लडादिषु

अक्ष्यते । अक्ष्येत । अक्ष्यताम् । आक्ष्यत ।

### लिडादौ

आनक्षे । अक्षिता । अष्टा ।

लुङि

आक्षि आक्षिषाताम् आक्षाताम् आक्षिषत आक्षत।

आशीर्लिङि — अक्षिषीष्ट अक्षीष्ट

लृटि — अक्षिष्यते अक्ष्यते।

लृङि

आक्षिष्यत आक्ष्यत।

कृत्सु।

तृच्—अक्षिता, अष्टा। क्त—अष्टः। क्तिन्—अष्टिः, व्यष्टिः, समष्टिः। घञ्—अक्षः। क्त्वा—अक्षित्वा, अष्ट्वा। शतृ—अक्ष्णुवन्, अक्षन्। शानच्—अक्ष्यमाणः। स्यतृ—अक्षिष्यन्, अक्ष्यन्। स्यमान—अक्षिष्यमाणः, अक्ष्यमाणः।

(३) अङ्क् लक्षणे (चिह्नीकरणे) अदन्त-चुरादिः उभ० सक० सेट्।

कर्त्तरि—अङ्कयति, अङ्कयते। अङ्कयेत्, अङ्कयेत। अङ्कयतु, अङ्कयताम। आङ्कयत्, आङ्कयत। आञ्चिकत्, आञ्चिकत। अङ्कयाम्-बभुव-आस-चकार-चक्रे। अङ्कयिता, अङ्कयिता। अङ्क्यात्, अङ्कयिषीष्ट। अङ्कयिष्यति, अङ्कयिष्यते। आङ्कयिष्यत्। आङ्कयिष्यत। मतान्तरे अङ्कापयति। आञ्चिकपत्।

कर्मणि वाच्ये—अङ्क्यते। अङ्क्येत। अङ्क्यताम्। आङ्क्यत। आङ्कि, आङ्किषाताम, आङ्कयिषाताम्, आङ्किषत, आङ्कयिषत। अङ्कयाम्-बभूवे-आसे-चक्रे। अङ्किता, अङ्कयिता। अङ्किषीष्ट, अङ्कयिषीष्ट। अङ्किष्यते, अङ्कयिष्यते। आङ्किष्यत, आङ्कयिष्यत।

क्तसु—अङ्कनीयः। अङ्कयिता। अङ्कितः। क्तिन् नास्ति, युच्—अङ्कना। अङ्कः। अङ्कयितव्यः। अङ्क्यः। अङ्कयितुम्। अङ्कयित्वा। समङ्क्य। अङ्कनम्। शतृ—अङ्कयन्, शानच्—अङ्कयमानः। कर्मणि—अङ्क्यमानः। अङ्कयिष्यन्, अङ्कयिष्यमाणः। कर्मणि—अङ्किष्यमाणः, अङ्कयिष्यमाणः।

## (४) अट् गतौ भ्वा० पर० सक० सेट्।

कर्त्तरि—अटति। अटेत्। अटतु। आटत्। आट। आटीत्। अटिष्यति। आटिष्यत्। अट्यात्। कर्मणि—अट्यते। णिचि—आटयति। सनि—अटिटिषति। क्तसु—अटित्वा। अटितुम्। परि—परितो भ्रमणं, पर्य्यटनम्।

## (५) अण् शब्दे भ्वा० पर० अक० सेट्।

कर्त्तरि—अणति। आण। आणीत्। अणिष्यति। कर्माणि—अण्यते। णिचि—आणयति-ते। सनि—अणिणिषति। क्तसु—अणितः। अणित्वा। अणितुम।

दिवादौ प्राणने आ० अक० सेट्। अण्यते। आणे। आणिष्ट। अणिष्यते। आणिष्यत। अणिषीष्ट।

## (६) अद् भक्षणे अदादिः पर० सकर्मकः अनिट्।

लटि

| | | | |
|---|---|---|---|
| एक-व० | अत्ति | अत्सि | अद्मि। |
| द्वि-व० | अत्तः | अत्थः | अद्वः। |
| बहु-व० | अदन्ति | अत्थ | अद्मः। |

विधौ

एक-व० अद्यात् द्वि-व० अद्याताम् बहु-व० अद्युः।

| | लोटि | लङि | | |
|---|---|---|---|---|
| एक-व० | अत्तु | आदत् | आदः | आदम् |
| द्वि-व० | अत्ताम् | आत्ताम् | आत्तम् | आद्व |
| बहु-व० | अदन्तु | आदन् | आत्त | आद्म |

लुङि

अघसत्　　अघसताम्　　अघसन्

लिटि

| | प्रथमपुरुषे | मध्यमपुरुषे | उत्तमपुरुषे |
|---|---|---|---|
| एक-व० | जघास-आद, | जघसिथ-आदिथ, | जघास-आद |
| द्वि-व० | जक्षतुः-आदतुः, | जक्षथुः-आदथुः | जक्षिव-आदिव |
| बहु-व० | जक्षुः-आदुः, | जक्ष-आद | जक्षिम-आदिम |

| लुटि | आशिषि | लृटि | लृङि |
|---|---|---|---|
| अत्ता । | अद्यात् । | अत्स्यति । | आत्स्यत् |

कर्मणि—अद्यते । अद्येत । अद्यताम् । आद्यत । अघासि, अघत्सातास्, अघत्सत । जक्षे, आदे । अत्ता । अत्सीष्ट । अत्स्यते । आत्स्यत ।

णिचि कर्त्तरि आत्मनेपदं नास्ति । आदयति । आदिदत् । आदयाम्-बभूव-आम-चकार । आदयिता । आद्यात् । आदयिष्यति । आदयिष्यत् ।

णिचि कर्मणि—आद्यते । आदि, आदिषातास्, आदयिषाताम् । आदयाम्-बभूवे-आसे-चक्रे । आदिता, आदयिता । आदिषीष्ट, आदयिषीष्ट । आदिष्यते, आदयिष्यते इत्यादि ।

सनि कर्त्तरि—जिघत्सति । अजिघत्सीत् । जिघत्साम्-बभूव-आस-चकार ।

सनि कर्मणि—जिघत्स्यते । अजिघत्सि ।

कृत्सु—अदनीयम्। आदी। आदकः। अन्नादः। अत्ता। जग्धम्, ओदने अन्नम्। जग्धिः। जग्ध्वा। अदनम्। घञ्—घासः। शतृ—अदन्, शान—अद्यमानः। क्वसु—जक्षिवान्, आदिवान्। कान—जक्षाणः, आदानः। अत्स्यन्। अत्स्यमानः। क्विप्—क्रव्यात्।

ण्यन्तकृत्सु—आदनीयम्। आदयिता। आदकः। आदना। आदितः। आदयितुम्। आदयितव्यम्। आदयित्वा। समाद्य। आदयन्। आद्यमानः। आदयिष्यन्। कर्मणि—आदिष्यमाणः, आदयिष्यमाणः।

सनन्तकृत्सु—जिघत्सनीयम्। जिघत्सिता। जिघत्सा, जिघत्सुः।

## (७) अन् जीवने अदादिः पर० अक० सेट्।

### लटि

| | प्रथमपुरुषे | मध्यमपुरुषे | उत्तमपुरुषे |
|---|---|---|---|
| एक·व० | अनिति | अनिषि | अनिमि |
| द्वि·व० | अनितः | अनिथः | अनिवः |
| बहु·व० | अनन्ति | अनिथ | अनिमः |

### विधौ

| | | | |
|---|---|---|---|
| एक·व० | अन्यात् | अन्याः | अन्याम् |
| द्वि·व० | अन्याताम् | अन्यातम् | अन्याव |
| बहु·व० | अन्युः | अन्यात | अन्याम |

### लोटि

| | | | |
|---|---|---|---|
| एक·व० | अनितु | अनिहि | अनानि |
| द्वि·व० | अनिताम् | अनितम् | अनाव |
| बहु·व० | अनन्तु | अनित | अनाम |

लङि—आनीत्, आनत् ; आनिताम्, आनन् । आनीः, आनः ; आनितम्, आनित ।

लुङि—आनीत्, आनिष्टाम्, आनिषुः । लिटि—आन, आनतुः, आनुः । अनिता । अन्यात् । अनिष्यति । आनिष्यत् ।

भावे—अन्यते । आनि । णिचि—आनयति । आनिनत् । सनि—अनिनिषति ।

कृत्—अननीयम् । अनिता । अननम् । अनितः । अनन्, अनिष्यन् ।

## (८) अन्च् पूजने गतौ च भ्वा० पर० सक० सेट्

कर्त्तरि—अञ्चति । अञ्चेत् । अञ्चतु । आञ्चत् । आञ्चीत्, आञ्चिष्टाम्, आञ्चिषुः । आनञ्च, आनञ्चतुः, आनञ्चुः । अञ्चिता । अञ्च्यात् । अञ्चिष्यति । आञ्चिष्यत् । गत्यर्थस्य तु आनचतुः । अच्यात् इत्यादि कीर्ति भेदः ।

कर्मणि वाच्ये—अञ्च्यते । अञ्च्येत । अञ्च्यताम् । आञ्च्यत । आञ्चि, आञ्चिषाताम्, आञ्चिषत । आनञ्चे । अञ्चिता । अञ्चिषीष्ट । अञ्चिष्यते । आञ्चिष्यत । गत्यर्थस्य तु नलोपे अच्यते अच्येत इत्यादि ।

कृत्—अञ्चनीयम् । अञ्चितः । अञ्चितवान् । अञ्चनम् । अञ्चिता । अञ्चितुम । अञ्चित्वा, अङ्क्त्वा । अञ्चन् । कर्मणि—अञ्च्यमानः । अञ्चिष्यन्, अञ्चिष्यमाणः । गत्यर्थस्य तु अक्तः । अक्तिः । अक्त्वा । अच्यमान इत्यादि ।

## (९) अन्ज् मिश्रणे गतौ च रुधा० पर० सक० वेट् ।

लटि ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| एक-व० | अनक्ति | अनक्षि | अनज्मि |
| द्वि-व० | अङ्क्तः | अङ्क्थः | अञ्ज्वः |
| बहु-व० | अञ्जन्ति | अङ्क्थ | अञ्ज्मः |

### विधिलिङ् ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| एक-व० | अञ्ज्यात् | अञ्ज्याः | अञ्ज्याम् |
| द्वि-व० | अञ्ज्याताम् | अञ्ज्यातम् | अञ्ज्याव |
| बहु-व० | अञ्ज्युः | अञ्ज्यात | अञ्ज्याम |

### लोट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| एक-व० | अनक्तु | अङ्ग्धि | अनजानि |
| द्वि-व० | अङ्क्ताम् | अङ्क्तम् | अनजाव |
| बहु-व० | अञ्जन्तु | अङ्क्त | अनजाम |

### लङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| एक-व० | आनक् | आनक् | आनजम् |
| द्वि-व० | आङ्क्ताम् | आङ्क्तम् | आञ्ज्व |
| बहु-व० | आञ्जन् | आङ्क्त | आञ्ज्म |

लुङ्—आञ्जीत्, आञ्जिष्टाम्, आञ्जिषुः । आञ्जीः, आञ्जिष्टम्, आञ्जिष्ट । आञ्जिषम्, आञ्जिष्व, आञ्जिष्म ।

लिट्—आनञ्ज, आनञ्जतुः, आजतुः ; आनञ्जुः, आजुः । आनञ्जिथ, आनङ्क्थ ; आनञ्जथुः, आजथुः ।

आनञ्ज, आज, आनञ्ज ; आनञ्जिव, आजिव ; आनञ्ज्व, आज्व ; आनञ्जिम, आजिम, आनञ्ज्म, आज्म ।

लुडादौ—अञ्जिता, अङ्क्ता । अज्यात् । अञ्जिष्यति, अङ्क्ष्यति । आञ्जिष्यत्, आङ्क्ष्यत् ।

कर्मणि—अज्यते । अज्येत । अज्यताम् । आज्यत । आञ्जि, आञ्जिषाताम्, आङ्क्षाताम् । आनञ्जे, आजे । अञ्जिता, अङ्क्ता । अञ्जिषीष्ट, अङ्क्षीष्ट । अञ्जिष्यते, अङ्क्ष्यते । आञ्जिष्यत, आङ्क्ष्यत । वि-पूर्वस्तु प्रकाशने कर्तरि—व्यनक्ति, कर्मणि—व्यज्यते ।

णिचि कर्त्तरि—व्यञ्जयति-ते । आञ्जिजत्-त । व्यञ्जयाम्-बभूव-आस-चकार-चक्रे । अञ्जयिता । अञ्ज्यात् । अञ्जयिषीष्ट । अञ्जयिष्यति-ते । आञ्जयिष्यत्-त ।

ण्यन्तकर्म्मणि—व्यज्यते । आञ्जि । अञ्जयाम्-बभूवे-आसे-चक्रे । आञ्जिषीष्ट, अञ्जयिषीष्ट । अञ्जिष्यते, अञ्जयिष्यते । आञ्जिष्यत, आञ्जयिष्यत ।

सन्नन्तसनि—अञ्जिजिषति । आञ्जिजिषीत् । अञ्जिजिषाम्-बभूव-आस-चकार । अञ्जिजिषिता । अञ्जिजिष्यात् । अञ्जिजिषिष्यति । आञ्जिजिषिष्यत् ।

सनन्तकर्म्मणि—अञ्जिजिष्यते । आञ्जिजिषि ।

कृत्सु—अञ्जनीयम्, व्यङ्ग्यः । व्यञ्जकः । व्यञ्जिता, व्यङ्क्ता । व्यक्तः । अञ्जितुम्, अङ्क्तुम् । अञ्जितव्यः, अङ्क्तव्यः । अञ्जित्वा, अङ्क्त्वा । व्यक्तिः । अञ्जनम्, व्यञ्जनम् । अञ्जन् । व्यज्यमानः । अञ्जिष्यन्, अङ्क्ष्यन् । अञ्जिष्यमाणः, अङ्क्ष्यमाणः ।

ण्यन्तकृत्सु—व्यञ्जयितव्यः । व्यञ्जयिता । व्यञ्जितः । व्यञ्जना । व्यञ्जयन्, व्यञ्जयमानः । कर्म्मणि—व्यञ्ज्यमानः । व्यञ्जयिष्यन् । व्यञ्जयिष्यमाणः । कर्म्मणि—व्यञ्जिष्यमाणः, व्यञ्जयिष्यमाणः ।

सनन्तकृत्सु—अञ्जिजिषा । अञ्जिजिषुः ।

## (१०) अय गतौ भ्वा० आ० सक० सेट् ।

कर्त्तरि—अयते । अयेत । अयताम् । आयत । अयिष्ट ; आयिढ्वम्, आयिध्वम् । अयाम्-बभूव-आस-चक्रे । अयिता । अयिषीष्ट ; अयिषीढ्वम्, अयिषीध्वम् । अयिष्यते । आयिष्यत ।

कर्मणि—अय्यते। आयि। अयाम्-बभूवे-आसे-चक्रे। लुङादौ कर्त्तरीव रूपाणि।

णिचि—आययति-ते। आयियत्-त। आययाम्-बभूव-आस-चकार-चक्रे। आययिता। आय्यात्। आययिषीष्ट। आययिष्यति-ते इत्यादि।

परा—अपसरणे अक० पलायते। पलायिष्ट।

कृत्सु—अयनीयम्। अयिता। अयितः। पलायितः। पलायितुम्। पलायनम्। अयित्वा। पलाय्य। पलायमानः। पलायिष्यमाणः।

## (११) अर्च् पूजने भ्वा० पर० सक० सेट्।

कर्त्तरि—अर्चति। अर्चेत्। अर्चतु। आर्चत्। आर्चीत्। आनर्च। अर्चिता। अर्च्यात्। अर्चिष्यति। आर्चिष्यत्।

कर्मणि—अर्च्यते। अर्च्येत। अर्च्यताम्। आर्च्यत। आर्चि, आर्चिषाताम्। आनर्चे। अर्चिता। अर्चिषीष्ट। अर्चिष्यते। आर्चिष्यत।

णिचि—अर्चयति-ते। आर्चिचत्-त। अर्चयाम्-बभूव-आस-चकार-चक्रे। अर्चयिता। अर्च्यात्। अर्चयिषीष्ट। अर्चयिष्यति-ते। आर्चयिष्यत्-त।

कर्मणि—अर्च्यते। आर्चि। अर्चयाम्-बभूवे-आसे-चक्रे। अर्चिता, अर्चयिता। अर्चिषीष्ट, अर्चयिषीष्ट। सनि—अर्चिचिषति। आर्चिचिषीत्।

कृत्सु—अर्चकः। अर्ची। अर्चितः। क्तिन् नास्ति, अ—अर्चा। अर्चनम्। अर्चितुम्। अर्चित्वा। अर्चितव्यः। अर्च्यः। समर्च्य। अर्चन्, अर्च्यमानः। अर्चिष्यन्, अर्चिष्यमाणः।

## (१२) अर्च् पूजने चुरा० उभ० सक० सेट्।

कर्त्तरि—अर्चयति-ते। अर्चयेत्-त। अर्चयतु-ताम्। आर्चयत्-त। आर्चिचत्-त। अर्चयाम्-बभूव-आस-चकार-चक्रे। अर्चयिता। अर्च्यात्। अर्चयिषीष्ट। अर्चयिष्यति-ते। आर्चयिष्यत्-त।

कर्मणि ण्यन्तभ्वादिगणीयाचवत्।

सनि—अर्चिचयिषति-ते। आर्चिचयिषीत्-षिष्ट।

सनन्तकृत्सु—अर्चिचयिषा, अर्चिचयिषुः।

ण्यन्तस्यास्य चुरादिगणीयस्य च कृत्सु—अर्चनीयम्। अर्चकः। अर्ची। अर्चयिता। अर्चितः। क्तिन्नास्ति, युच्—अर्चना। अर्चनम्। अर्चयितुम्। अर्चयितव्यम्। अर्च्यः। अर्चयित्वा। समर्च्य। अर्चयन्; अर्चयमान, अर्च्यमानः। अर्चयिष्यन्, अर्चयिष्यमाणः। कर्मणि—अर्चिष्यमाणोऽपि।

## (१३) अर्ज् उपार्जने अदन्तचुरादि० उभ० सक० सेट्।

कर्त्तरि—अर्जयति-ते। अर्जयेत्-त। अर्जयतु-ताम्। आर्जयत्-त। आर्जिजत्-त। अर्जयाम्-बभूव-आस-चकार-चक्रे। अर्जयिता। अर्ज्यात्, अर्जयिषीष्ट। अर्जयिष्यति-ते। आर्जयिष्यत्-त।

कर्मणि—अर्ज्यते। आर्जि। अर्जयाम्-बभूवे-आसे-चक्रे। अर्जिता, अर्जयिता। अर्जिषीष्ट, अर्जयिषीष्ट। अर्जिष्यते, अर्जयिष्यते। आर्जिष्यत, आर्जयिष्यत।

सनि—अर्जिजयिषति-ते। आर्जिजयिषीत्-षिष्ट।

कृत्सु—अर्जनीयम्। अर्जकः। अर्जयिता। अर्जितः। क्तिन्नास्ति, युच्—अर्जना। अर्जयितुम्। अर्जयितव्यः।

अर्ज्यः । अर्जयित्वा, उपार्ज्य । अर्जयन् ; अर्जयमानः, अर्ज्यमानः । अर्जयिष्यन्, अर्जयिष्यमाणः । कर्मणि— अर्जिष्यमाणोऽपि ।

## (१४) अर्थ् याचने अदन्तचुरादि० आ० द्विक० सेट् ।

कर्त्तरि—अर्थयते । अर्थयेत । अर्थयताम् । आर्थयत । आर्त्तियत । अर्थयाम-बभूव-आस-चक्रे । अर्थयिता । अर्थयिषीष्ट । अर्थयिष्यते । आर्थयिष्यत ।

कर्म्मणि—अर्थ्यते । आर्थि । अर्थयाम्-बभूवे-आसे-चक्रे । अर्थिता, अर्थयिता । अर्थिषीष्ट, अर्थयिषीष्ट । अर्थिष्यते, अर्थयिष्यते । आर्थिष्यत, आर्थयिष्यत । मतान्तरे अर्थापयते । कर्म्मणि—अर्थाप्यते । अर्थापत्तिबोधकः अर्थापिस्तु अर्थशब्दात् णिजन्तः, तेन तस्य उभयपदिता । अभिसम्मानने अभ्यर्थयते सम्मानयतीत्यर्थः ।

कृत्सु—अर्थनीयम् । अर्थकः । अर्थयिता । अर्थितः । क्तिन्नास्ति, युच्—अर्थना । अर्थनम् । अर्थयितुम् । अर्थयितव्यः । अर्थ्यः । अर्थयित्वा । प्रार्थ्य । अर्थयमानः । अर्थ्यमानः । अर्थयिष्यमाणः, कर्म्मणि—अर्थिष्यमाणोऽपि ।

## (१५) अर्द् पीड़ायाम् अक० पीड़ाजनने सक० याचने द्विक० भ्वादि० पर० सेट् ।

कर्त्तरि—अर्दति । अर्देत् । अर्दतु । आर्दत् । आर्दीत् । आनर्द । अर्दिता । अर्द्यात् । अर्दिष्यति । आर्दिष्यत् ।

कर्म्मणि—अर्द्यते । आर्दि, आर्दिषाताम् । आनर्द । अर्दिता । अर्दिषीष्ट । अर्दिष्यते । आर्दिष्यत ।

णिचि—अर्दयति-ते। आर्दिदत्-त। अर्दयाम्-बभूव-आस-, चकार-चक्रे। अर्दयिता। अर्द्यात्, अर्दयिषीष्ट। अर्दयिष्यति-ते। आर्दयिष्यत्-त। कर्म्मणि—अर्द्यते। आर्दि। अर्दयाम्-बभूवे-आसे-चक्रे। अर्दिता, अर्दयिता। अर्दिषीष्ट, अर्दयिषीष्ट। अर्दिष्यते, अर्दयिष्यते। आर्दिष्यत, आर्दयिष्यत।

सनि—अर्दिदिषति। आर्दिदिषीत्। अभिपूर्वः सामीप्यप्राप्तौ अक० अभ्यर्दति समीपं यातीत्यर्थः।

कृत्सु—अर्दनीयम्। अर्दनम्। अर्दकः। अर्दिता। अर्दितः। अभेस्तु अभ्यर्णः। क्विबस्ति, अ—अर्द। अर्दितुम्। अर्दित्वा। अर्द्यः। समर्द्य। अर्दन्। अर्द्यमानः। अर्दिष्यन्, अर्दिष्यमाणः। णिजन्तस्य तु—अर्दयिता। अर्दना। अर्दयितुम्। अर्दयितव्यः। अर्दयित्वा। अर्दयन्, अर्द्यमानः। अर्दयिष्यन्, अर्दयिष्यमाणः। कर्म्मणि अर्दिष्यमाणोऽपि इति भेदः।

## (१६) अर्ह पूजायां भ्वादि० सक० योग्यतायामकर्म्मकः पर० सेट्।

कर्त्तरि—अर्हति। अर्हेत्। अर्हतु। आर्हत्। आर्हीत्। आनर्ह। अर्हिता। अर्ह्यात्। अर्हिष्यति। आर्हिष्यत्। कर्म्मणि—अर्ह्यते। अर्ह्येत। अर्ह्यताम्। आर्ह्यत। आर्हि। आनर्हे। अर्हिता, अर्हिषीष्ट। अर्हिष्यते। आर्हिष्यत।

कृत्सु—अर्हणीयम्। अर्हणम्। अर्हकः। अर्हिता। अर्हितः। क्विबस्ति, अ—अर्हा। अर्हित्वा। अर्हितव्यम्। अर्ह्यः। अर्हन्। कर्म्मण्यपि पूज्यार्थे अर्हन्। अर्ह्यमाणः। अर्हिष्यन्। अर्हिष्यमाणः।

## (१७) अर्ह् पूजायां चुरा० उभ० सक० सेट्।

अर्हयति-ते। अर्हयेत्-त। अर्हयतु-ताम्। आर्हयत्-त। आर्जिहत्-त। अर्हयाम्-बभूव-आस-चकार-चक्रे। अर्हयिता, अर्हयिता। अर्ह्यात्, अर्हयिषीष्ट। अर्हयिष्यति-ते। आर्हयिष्यत्-त।

कर्म्मणि—अर्ह्यते। अर्ह्येत। अर्ह्यताम्। आर्ह्यत। आर्हि। अर्हयाम्-बभूवे-आसे-चक्रे। अर्हिता, अर्हयिता। अर्हिषीष्ट, अर्हयिषीष्ट। अर्हिष्यते, अर्हयिष्यते। आर्हिष्यत, आर्हयिष्यत।

कृत्सु—अर्हणीयम्। अर्हणम्। अर्हकः। अर्हयिता। अर्हितः। ण्यासश्रन्थो युच्—अर्हणा। अर्हयितुम्। अर्हयित्वा। अर्ह्यः। अर्हयन्, अर्हयमाणः। अर्हयिष्यन्, अर्हयिष्यमाणः। कर्म्मणि—अर्हिष्यमाणश्च।

## (१८) अव् रक्षणे भ्वादि० पर० सक० प्रीतावकर्म्मकः सेट्।

कर्त्तरि—अवति। अवेत्। अवतु। आवत्। आवीत्। आव। अविता। अव्यात्। अविष्यति। आविष्यत्।

कर्म्मणि—अव्यते। आवि। आवे। अविता। अविषीष्ट। अविष्यते। आविष्यत।

णिचि कर्त्तरि—आवयति-ते। आविवत्-त। आवयाम्-बभूव-आस-चकार-चक्रे। आवयिता। आव्यात्, आवयिषीष्ट। आवयिष्यति-ते। आवयिष्यत्-त।

कर्म्मणि—आव्यते। आवि। आवयाम्-बभूवे-आसे-चक्रे। आविता, आवयिता। आविषीष्ट, आवयिषीष्ट। आविष्यते, आवयिष्यते। आविष्यत, आवयिष्यत।

कृत्सु—अवनीयम्। अवनम्। आवकः। अविता। अवितः। अवितुम्। क्विप्—ऊः। क्तिन्—ऊतिः। अवित्वा। अवन्। अव्यमानः। अविष्यन्, अविष्यमाणः।

## (१६) अश् व्याप्तौ स्वादि० आ० सक० वेट्।

कर्त्तरि लटि—अश्नुते, अश्नुवाते, अश्नुवते। विधौ—अश्नुवीत, अश्नुवीयाताम्, अश्नुवीरन्। लोटि—अश्नुताम्, अश्नुवाताम्, अश्नुवताम्। लङि—आश्नुत, आश्नुवाताम्, आश्नुवत। लुङि—आशिष्ट, आष्ट; आशिषाताम्, आक्षाताम्; आशिषत, आक्षत। लिटि—आनशे, आनशाते, आनशिरे। लुडादौ—अशिता, अष्टा। अशिषीष्ट, अक्षीष्ट। अशिष्यते, अक्ष्यते। आशिष्यत, आक्ष्यत।

कर्म्मणि—अश्यते। अश्येत। अश्यताम्। आश्यत। आशि, आशिषाताम्, आक्षाताम्। लिडादौ कर्त्तरीव रूपाणि।

णिचि—आत्मनेपदं नास्ति, आशयति। आशिशत्। आशयाम्-बभूव-आस-चकार। आशयिता। आश्यात्। आशयिष्यति। आशयिष्यत्। कर्म्मणि—आश्यते। आशि। आशयाम्-बभूवे-आसे-चक्रे। आशिता, आशयिता। आशिषीष्ट, आशयिषीष्ट। आशिष्यते, आशयिष्यते।

सनि—अशिशिषते। अशिशिषिष्ट।

कृत्सु—अशनीयम्। अशनम्। आशकः। आशी। अशिता, अष्टा। अष्टः। अष्टिः। अशितुम्। अष्टा। अशित्वा, अष्ट्वा। समाश्य। अश्नुवानः। अशिष्यमाणः, अक्ष्यमाणः।

ण्यन्तस्य—आशयिता। आशयितव्यः। आशयितुम्। आशना।

सनन्तस्य—अशिशिषा, अशिशिषुः।

## (२०) अश् भोजने क्र्यादि० पर० सक० सेट् ।

कर्त्तरि—अश्नाति, अश्नीतः, अश्नन्ति । अश्नासि, अश्नीथः, अश्नीथ । अश्नामि, अश्नीवः, अश्नीमः । अश्नीयात्, अश्नीयाताम्, अश्नीयुः । अश्नातु, अश्नीताम्, अश्नन्तु । अशान, अश्नीतम्, अश्नीत । अश्नानि, अश्नाव, अश्नाम । आश्नात्, आश्नीताम्, आश्नन् । आशीत्, आशिष्टाम्, आशिषुः । आश, आशतुः, आशुः । अशिता । अश्यात् । अशिष्यति । आशिष्यत् ।

कर्म्मणि—अश्यते । अश्येत । अश्यताम् । आश्यत । आशि, आशिषाताम् । आशे । अशिता । अशिषीष्ट । अशिष्यते । आशिष्यत ।

णिचि—परस्मैपदे । आशयति । आशिशत् । आशयाम्-बभूव-आस-चकार । आशयिता । आश्यात् । आशयिष्यति । आशयिष्यत् । कर्म्मणि—स्वादिगणीयाशवद्रूपाणि ।

सनि—अशिशिषति । आशिशिषीत् । सनन्तकर्म्मणि—अशिशिष्यते । आशिशिषि ।

कृत्सु—अशनीयम् । अशनम् । आशकः । आशी । अशिता । अशितः । अष्टिः । अशितुम् । अशित्वा । अशितव्यम् । अश्नन् । अशिष्यन् । अशिष्यमाणः । ण्यन्तस्य—आशना । आशयिता । आशयित्वा । आशयितुम् । आशयन् । सनन्तस्य—अशिशिषा । अशिशिषुः ।

## (२१) अस् विद्यमानतायाम् अदा० पर० अक० सेट् ।

अस्ति, स्तः, सन्ति । असि, स्थः, स्थ । अस्मि, स्वः, स्मः । स्यात्, स्याताम्, स्युः । स्याः, स्यातम्, स्यात । स्याम्, स्याव,

स्याम । अस्तु स्तात, सन्तु । एधि, स्तम्, स्त । असानि, असाव, असाम । आसीत्, आस्ताम्, आसन् । आसीः, आस्तम्, आस्त । आसम, आस्व, आस्म । लुङादौ आर्द्ध-धातुकमात्रेऽस्य प्रयोगो नास्ति भूधातुप्रयोग एव । तस्य च रूपाणि पूर्ववत् ।

कृत्सु—केवलम् शतरि सन् । अन्यत्र भूधातुवत् ।

## (२२) अस् क्षेपणे दिवादि० पर० सक० सेट् ।

कर्त्तरि—अस्यति, अस्यतः, अस्यन्ति । अस्येत्, अस्येताम्, अस्येयुः । अस्यतु, अस्यताम्, अस्यन्तु । आस्यत्, आस्यताम्, आस्यन् । आस्थत्, आस्थताम्, आस्थन् । आस । असिता । अस्यात् । असिष्यति । आसिष्यत् ।

कर्म्मणि—अस्यते । आसि । आसे । असिता । असिषीष्ट । असिष्यते । आसिष्यत ।

सनि—असिसिषति । उपसर्गपूर्वं उभयपदी । तत्र निपूर्वः निरासे सक० निरस्यति, निरस्यते । अप-तद्वत् अपास्यति, अपास्यते । विपूर्वः विस्तारे सक० व्यस्यति । विस्तारयति । सम् सङ्क्षेपकरणे सक० सङ्घाते तु अक० । समस्यति सङ्क्षिपति । अन्येन सहैकरूपो भूत्वा संहन्यते वा ।

कृत्सु—निरसनीयम् । निरसनम् । निरासकः । निरासी । निरसिता । निरस्तः, अपास्तः, व्यस्तः, समस्तः । निर-सितुम् । निरासः, व्यासः, समासः । निरास्यः । असित्वा । निरस्य । अस्यन्, निरस्यन् । निरस्यमानः । असिष्यन्, असिष्यमाणः ।

णिचि—आसयति-ते । आसिसत्, आसिसत । आसयाम्-बभूव-आस-चकार-चक्रे ।

कृत्सु—निरसनीयम्। निरासकः। निरासयिता। निरासी। निरासितः। निरासना। निरासयितव्यः। निरासयन्। निरासयमानः, निरास्यमानः। निरासयिष्यन्। निरासयिष्यमाणः।

## (२३) असू उपतापे कण्ड्वादि० उभ० अक० सेट्।

कर्त्तरि—असूयति-ते। असूयेत्-त। असूयतु-ताम्। आसूयत्-त, आसूयीत् आसूयिष्ट। असूयाम-बभूव-आस-चकार-चक्रे। असूयिता। असूय्यात्, असूयिषीष्ट। असूयिष्यति-ते। आसूयिष्यत-त। भावे—असूय्यते। आसूयि। असूयाम्-बभूवे-आसे-चक्रे। असूयिता। असूयिषीष्ट।

कृत्सु—असूयनीयम्। असूयकः। असूयी। असूयिता। असूयितः। स्त्रियास्ति, अ—असूया। असूयितुम्। असूयितव्यम्। असूयित्वा। असूयन्, असूयमानः। असूयिष्यन्, असूयिष्यमाणः।

## (२४) आप् प्राप्तौ स्वादि० पर० सक० अनिट्।

कर्त्तरि—आप्नोति, आप्नुतः, आप्नुवन्ति। आप्नोषि, आप्नुथः, आप्नुथ। आप्नोमि, आप्नुवः, आप्नुमः। आप्नुयात्, आप्नुयाः, आप्नुयाम। आप्नोतु, आप्नुहि, आप्नवानि। आप्नोत्, आप्नोः, आप्नवम्। आपत्। आप, आपतुः, आपुः। आपिथ आपथुः, आप। आप, आपिव, आपिम। आप्ता। आप्यात्। आप्स्यति। आप्स्यत्।

कर्म्मणि—आप्यते। आपि। आपे। आप्ता। आप्सीष्ट। आप्स्यते। आप्स्यत। णिचि—आपयति-ते। आपिपत्-त। आपयाम्-बभूव-आस-चकार-चक्रे। आपयिता। आप्यात्,

आपयिषीष्ट । आपयिष्यति-ते । आपयिष्यत्-त । कर्म्मणि—आप्यते । आपि । आपयाम्-बभूवे-आसे-चक्रे । आपिता । आपयिता । आपिषीष्ट, आपयिषीष्ट । आपिष्यते, आपयिष्यते ।

सनि—ईप्सति । ऐप्सीत् । सनन्तकर्म्मणि—ईप्स्यते । ऐप्सि ।

कृत्सु—आपनीयम् । आपकः । आपी । आप्तः । आप्तुम् । आप्तिः । आप्तव्यः । आप्त्वा, प्राप्य । आप्यम् । आप्नुवन् । आप्यमानः । आप्स्यन्,आप्स्यमानः । णिजन्तस्य—आपयिता । आपयितुम् । आपयितव्यः । आपयित्वा । क्तिन्नास्ति, युच्—आपना । आपयन्, आपयमानः, आप्यमानः । आपयिष्यन्, आपयिष्यमाणः, आपिष्यमाणः । सनन्तस्य—ईप्सनीयम् । ईप्सिता । ईप्सितः । ईप्सितुम् । क्तिन्नास्ति, अ—ईप्सा । ईप्सुः । ईप्सितव्यः । वि-व्याप्तौ व्याप्नोति । व्याप्तः । व्यापकः । परि-पर्य्याप्तौ सम्पूर्त्तौ च अक० पर्य्याप्नोति, पर्य्याप्तः समर्थः सम्पूर्णो वा भवति । सम् समाप्तौ समाप्नोति, अन्तं गच्छतीत्यर्थः, समाप्तः शेषं गतः । समापयति शेषं गमयति ।

## (२५) आस् उपवेशने अदादि० आ० अक० सेट् ।

कर्त्तरि—आस्ते । आसीत । आस्ताम् । आस्त । आसिष्ट । आसाम्-बभूव-आस-चक्रे । आसिता । आसिषीष्ट । आसिष्यते । आसिष्यत ।

भावे—आस्यते । आसि । आसाम्-बभूवे-आसे-चक्रे । लुडादौ कर्त्तरीव ।

णिचि—आसयति-ते आसिसत्-त । आसयाम्-बभूव-आस-चकार-चक्रे । आसयिता । आस्यात्, आसयिषीष्ट । आसयिष्यति-ते । आसयिष्यत्-त ।

कर्म्मणि—आस्यते। आसि। आसयाम्-बभूवे-आसे-चक्रे। आसिता, आसयिता। आसिषीष्ट, आसयिषीष्ट। आसिष्यते, आसयिष्यते। आसिष्यत, आसयिष्यत।

सनि—आसिसिषति। आसिसिषीत्। भावे—आसिसिषते। आसिसिषि।

कृत्—आसनीयम्। आसनम्। आसकः। आसितव्यम्। आसिता। आसितः। आसितुम्। क्तिन् नास्ति, युच्—आसना। आसित्वा। उपास्य। आस्यम्। आसीनः। आसिष्यमाणः।

उप-उपासने सक० उपास्ते सेवते। उत्-औदास्ये उदास्ते औदासीन्यमवलम्बते।

## (२६) इ गतौ भ्वादि० पर० सक० अनिट्।

अयति। अयेत्। अयतु। आयत्। इयाय, इयतुः, इयुः। ईयात्। एष्यति। ऐष्यत्। ईयात्। कर्म्मणि—ईयते।

णिचि—आययति। आयियत्। सनि—इयिषति।

कृत्—इतः। प्रेत्य। एतुम्।

## (२७) इ नियताधिपूर्वकः अध्ययने अदादि० आ० सक० अनिट्।

कर्त्तरि—अधीते, अधीयाते, अधीयते। अधीषे, अधीयाथे, अधीध्वे। अधीये, अधीवहे, अधीमहे। अधीयीत, अधीयीयाताम्, अधीयीरन्। अधीयीथाः, अधीयीयाथाम्, अधीयीध्वम्। अधीयीय, अधीयीवहि-महि। अधीताम्, अधीयाताम्, अधीयताम्। अधीष्व, अधीयाथाम्, अधीध्वम्। अध्ययै, अध्यया-वहै-महै। अध्यैत, अध्यैयाताम्, अध्यैयत। अध्यैथाः, अध्यैयाथाम्, अध्यैध्वम्। अध्यैयि,

अध्यैशीढ्व-मद्धि। अध्यगीष्ट, अध्यैष्ट । अधिजगे, अधिजगाते, अधिजगिरे। अध्येता, अध्येषीष्ट । अध्येष्यते । अध्यगीष्यत, अध्यैष्यत ।

कर्म्मणि—अधीयते। अध्यगायि, अध्यायि; अध्यगायिषाताम्, अध्यगीषाताम्; अध्यायिषाताम्, अध्यैषाताम । अधिजगे । अध्यायिता, अध्येता । अध्येषीष्ट, अध्यायिषीष्ट । अध्यायिष्यते, अध्येष्यते । अध्यगायिष्यत, अध्यगीष्यत । अध्यायिष्यत, अध्यैष्यत। णिचि आत्मनेपदं नास्ति । अध्यापयति । अध्यापिपत् अध्यजिगपत् । अध्यापयाम्-बभूव-आस-चकार । अध्यापयिता । अध्याप्यात् । अध्यापयिष्यति । अध्यापयिष्यत् । कर्म्मणि—अध्याप्यते । अध्यापि । अध्यापयाम-बभूवे-आसे-चक्रे । अध्यापयिता अध्यापिता इत्यादि ।

सनि—अधिजिगांसते अध्यजिगांसिष्ट। कर्म्मणि—अधिजिगांस्यते। अध्यजिगांसि। णिच्-सनन्तस्य—अध्यापिपयिषति, अधिजिगापयिषति ।

कृत्सु—अध्ययनीयम् । अध्यायः । अध्ययनम् । अध्येता । अधीतः । अधीतिः । अध्येतुम । अध्येतव्यम् । अध्ययः । अधीत्य । अधीयमानः । अध्येष्यमाणः । ण्यन्तस्य—अध्यापनीयम् । अध्यापकः । अध्यापयिता । अध्यापितः । अध्यापयितुम् । अध्यापयितव्यः । क्तिन्नास्ति, युच्—अध्यापना । अध्याप्यम् । अध्याप्य । अध्यापयन् । अध्याप्यमानः । अध्यापयिष्यन् । अध्यापयिष्यमाणः, अध्यापिष्यमाणोऽपि । सनन्तस्य—अधिजिगांसनीयम् । अधिजिगांसिता । अधिजिगांसितः । अधिजिगांसितुम् । अधिजिगांसितव्यः । क्तिन्नास्ति, अ—अधिजिगांसा । अधिजिगांसुः ।

अधिजिगांस्यम्। अधिजिगांस्यमानः। अधिजिगांसिष्यमाणः।

## (२८) इ गतौ अदादि० पर० सक० अनिट्।

कर्त्तरि—एति, इतः, यन्ति। एषि, इथः, इथ। एमि, इवः, इमः। इयात्, इयाः, इयाम्। एतु, इताम्, यन्तु। ऐत्, ऐताम्, आयन्। अगात्, आगाताम्, अगुः। इयाय, ईयतुः, ईयुः। इययिथ, इयेथ; ईयथुः, ईय। इयाय, इयय; ईयिव, ईयिम। एता। ईयात्। उपसर्गात् अन्वियात्। एष्यति। ऐष्यत्। कर्म्मणि—ईयते। अगायि। ईये। आयिता, एता। आयिषीष्ट, एषीष्ट। आयिष्यते, एष्यते। आयिष्यत, ऐष्यत।

णिचि—गमयति-ते। अजीगमत्-त। गमयाम्-बभूव-आस-चकार-चक्रे। प्रतिपूर्वः प्रतीतौ प्रत्याययति। कर्म्मणि—प्रत्याय्यते।

सनि—जिगमिषति। अजिगमिषीत्। कर्म्मणि—जिगमिष्यते। अजिगमिषि। प्रति—प्रतीषिषति। कर्म्मणि—प्रतीषिष्यते।

कृत्सु—अयनीयम्, अयनम्। अयः, अत्ययः, प्रत्ययः, आयः। पर्य्यायः। एतव्यः। एता। इतः। एतुम्। इतिः। इत्वा। इत्यः। उपेत्य। यन्, ईयमानः। एष्यन्, एष्यमाणः। कर्म्मणि आयिष्यमाणोऽपि। ण्यन्तस्य—गमनीयम्, गम्यम्, गमयिता, गमयितुम्। गमना। गमयित्वा। गमयन्, गमयमानः, गम्यमानः, गमयिष्यन्। गमयिष्यमाणः। प्रतिपूर्वस्य प्रत्यायनीयम्, प्रत्यायकः, प्रत्यायितः, प्रत्यायिता। प्रत्याययितुम्। स्त्रियांस्त्र, युच्—प्रत्यायना।

प्रत्याययन्, प्रत्याययमानः। कर्मणि प्रत्याय्यमानः। प्रत्याययिष्यन्, प्रत्याययिष्यमाणः। प्र-परा—परलोक-गमने प्रैति परैति परलोकं गच्छति। उत्—उद्गमने प्रकाशे वा अक० उदेति ऊर्द्ध्वं गच्छति प्रकाशते वा। अनु—अनुगमने सम्बन्धे च सक० अन्वेति पश्चात् गच्छति सम्बध्नाति वा। अभि—अभिमुखगमने अक० अभ्येति अभिमुखं यातीत्यर्थः। उप—समीपगमने उपैति सामीप्यं गच्छति। अभि-उप—स्वीकारे सक० अभ्युपैति स्वीकरोति। निर्—निर्गमने अक० निरेति। अप—अपसरणे अक० अपैति अपसरतीत्यर्थः। आङ्—आगमने सक० एति आगच्छति। अधि—स्मरणे अध्येति स्मरतीत्यर्थः। शतरि तु विशेषः,—अधीयन्। विपरि—विपर्य्यये अक० विपर्य्येति विपर्य्ययं प्राप्नोतीत्यर्थः। अति—अतिक्रमे सक० मर्य्यादामत्येति अतिक्रम्य गच्छतीत्यर्थः। अभिप्र—अभिप्राये स० अभिप्रैति अनुमन्यतीत्यर्थः। परि—पर्य्याये व्याप्तौ च पर्य्येति पर्य्यायं प्राप्नोति व्याप्नोति वा परीतः।

## (२९) इन्ध् दीप्तौ रुधा० आत्म० अक० सेट्।

लटि—इन्धे, इन्त्से, इन्धे। विधौ—इन्धीत, इन्धीथाः, इन्धीय। लोटि—इन्धाम्, इन्त्स्व, इनधै। लङि—ऐन्ध, ऐन्धाः, ऐन्धि। लिटि—इन्धाञ्चक्रे। लुङि—ऐन्धिष्ट। लृटि—इन्धिष्यते। लुटि—इन्धिता। लृङि—ऐन्धिष्यत। लिङि—इन्धिषीष्ट। भावे—इध्यते। णिचि—इन्धयति। णिच्-लुङि—ऐन्दिधत्। सनि—इन्दिधिषते। केवलं निष्ठायामनिट्, इद्धः। इन्धनम्। इन्धितुम्।

## (३०) इष् वाञ्छायाम् तुदा० पर० सक० सेट् ।

लट् ।

| | प्रथमपुरुषे | मध्यमपुरुषे | उत्तमपुरुषे |
|---|---|---|---|
| एक-व० | इच्छति | इच्छसि | इच्छामि |
| द्वि-व० | इच्छतः | इच्छथः | इच्छावः |
| बहु-व० | इच्छन्ति | इच्छथ | इच्छामः |

विधिलिङ् ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| एक-व० | इच्छेत् | इच्छेः | इच्छेयम् |
| द्वि-व० | इच्छेताम् | इच्छेतम् | इच्छेव |
| बहु-व० | इच्छेयुः | इच्छेत | इच्छेम |

लोट् ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| एक-व० | इच्छतु | इच्छ | इच्छानि |
| द्वि-व० | इच्छताम् | इच्छतम् | इच्छाव |
| बहु-व० | इच्छन्तु | इच्छत | इच्छाम |

लङ् ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| एक-व० | ऐच्छत् | ऐच्छः | ऐच्छम् |
| द्वि-व० | ऐच्छताम् | ऐच्छतम् | ऐच्छाव |
| बहु-व० | ऐच्छन् | ऐच्छत | ऐच्छाम |

ऐषीत् । इयेष, ईषतुः, ईषुः । इयेषिथ । एषिता, एष्टा । इष्यात् । एषिष्यति । ऐषिष्यत् । कर्म्मणि—इष्यते । ऐषि । ईषे । एषिता, एष्टा । एषिषीष्ट । एषिष्यते । ऐषिष्यत । णिचि—एषयति-ते । ऐषिषत् त । एषयाम्-बभूव-आस-चकार-चक्रे । एषयिता । कर्म्मणि—एष्यते । ऐषि । एषयाम्-बभूवे-आसे-चक्रे । एषिता, एषयिता । सनि—इषिषिषति । ऐषिषिषीत । सनन्तकर्म्मणि—इषिषिष्यते । ऐषिषिषि ।

अधि—सत्कारे अधीच्छति सत्करोति। प्रति—ग्रहणे,प्रतीच्छति गृह्णाति।

कृत्—एषणीयम्। एषः। एषी। एष्टव्यः, एषितव्यः। एषिता, एष्टा। इष्टः। इष्टिः। इच्छुः। इच्छा। एषित्वा। इष्ट्वा। एषन्। इच्छन्। इष्यमाणः। एषिष्यन्। एषिष्यमाणः। ण्यन्तस्य—एषयितुम्। एषयितव्यः। एषितः। क्तिनास्ति, युच्—एषणा। एषयित्वा। एषयन्। एषयमाणः, एष्यमाणः। एषयिष्यन्। एषयिष्यमाणः, एषिष्यमाणः। अधीष्टः सत्कृतः। अध्येषणम् सत्कारः।

## (३१) इष् गतौ दिवा० पर० सक० सेट।

कर्त्तरि—इष्यति। इष्येत्। इष्यतु। ऐष्यत्। ऐषीत्। इयेष। एषिता, एष्टा। इष्यात्।

कर्म्मणि—इष्यते। इष्येत। इष्यताम्। ऐष्यत। ऐषि। ईषे। एषिता, एष्टा। एषिषीष्ट। एषिष्यते। ऐषिष्यत। प्र—प्रेरणे प्रेषयति प्रेरयति

णिचि—तुदादिगणीयेषधातुवत्। एवं कृत्सु। प्रेषणा प्रेरणा।

## (३२) ईक्ष् दर्शने भ्वा० आ० सक० सेट्।

कर्त्तरि—ईक्षते। ईक्षेत। ईक्षताम्। ऐक्षत। ऐक्षिष्ट। ईक्षाम्-बभूव-आस-चक्रे। ईक्षिता। ईक्षिषीष्ट। ईक्षिष्यते। ऐक्षिष्यत।

कर्म्मणि—ईक्ष्यते। ईक्ष्येत। ईक्ष्यताम्। ऐक्ष्यत। ऐक्षि। ईक्षाम् बभूवे-आसे-चक्रे। लुङादौ कर्त्तरीव रूपाणि।

णिचि—ईक्षयति-ते। ऐचिक्षत्-त। ईक्षयाम्-बभूव-आस-चकार-चक्रे। ईक्षयिता। ईक्ष्यात्, ईक्षयिषीष्ट इत्यादि।

ण्यन्तकर्म्मणि। ईक्ष्यते। ऐक्षि। ईक्षयाम्-बभूवे-आसे-चक्रे। ईक्षिता, ईक्षयिता। ईक्षिषीष्ट, ईक्षयिषीष्ट इत्यादि।

प्र—बुद्धिपूर्वककरणे सक० प्रेक्षते बुद्धिपूर्वं करोति। प्रति—प्रतीक्षायाम् ( आकाङ्क्षाविशेषे ) सक० प्रतीक्षते औत्सुक्येन काङ्क्षतीत्यर्थः। अप—आकाङ्क्षायाम् अवधीकरणे च—अपेक्षते आकाङ्क्षति अवधिं करोति वा। परि—परीक्षायाम् सक० परीक्षा शुद्धिसूचकव्यापारः तत्त्वनिर्णायकव्यवहारश्च, परीक्षते शुद्ध्यादिं सूचयति तत्त्वेन निश्चिनोति वा। उत्-प्र—उत्प्रेक्षायाम् सक० अन्यथास्थितवस्तुनोऽन्यरूपेण सम्भावनमुत्प्रेक्षा। उत्प्रेक्षते अन्यथास्थितमन्यरूपेणोद्भावयतीत्यर्थः। उप—उपेक्षायाम् ( औदासीन्यावलम्बने ) अक० उपेक्षते उदास्ते इत्यर्थः। औदासीन्यहेतुकत्यागेऽपि सक० उपेक्षते औदासीन्येन त्यजति। सम्-विवेचने सक० समीक्षते।

कृत्—ईक्षणीयः। ईक्षणम्। ईक्षकः। ईक्षिता। ईक्षितः। क्तिन्नास्ति. अ—ईक्षा। परीक्षा। उपेक्षा। ईक्षितव्यम्। ईक्षितुम्। ईक्षित्वा। अपेक्ष्य। ईक्ष्यः। ईक्षमाणः, ईक्ष्यमाणः। ईक्षिष्यमाणः। ण्यन्तस्य तु—ईक्षयिता। क्तिन्नास्ति. युच्—ईक्षणा। ईक्षयितव्यः। ईक्षयितुम्। ईक्षयित्वा। ईक्षयन्। ईक्षयमाणः। ईक्षयिष्यन्। ईक्षयिष्यमाणः इति भेदः।

## (३३) ईड् स्तुतौ अदा० आ० सक० सेट्।

कर्त्तरि—ईट्टे। ईडिषे, ईडिध्वे। ईडीत। ईट्टाम्। ईड्ष्व; ईडिध्वम्। ऐट्ट। ऐडिष्ट। ईडाम्-बभूव-आस-चक्रे। ईडितासे। ईडिषीष्ट। ईडिष्यते। ऐडिष्यत। कर्म्मणि—ईड्यते। ऐडि। ईडाम्-बभूवे-आसे-चक्रे। लुडादौ कर्त्तरीव।

णिचि—ईडयति-ते। ऐडिडत्-त। ईडयाम्-बभूव-आस-चकार चक्रे। ईडयितास्मि-से। ईड्यात्, ईडयिषीष्ट। ईडयिष्यति ते इत्यादि। कर्मणि—ईड्यते। ऐडि। ईडयाम्-बभूवे-आसे-चक्रे। ईडिता, ईडयिता। ईडिषीष्ट, ईडयिषीष्ट इत्यादि।

कृत्सु—ईडनीयम्। ईडनम्। ईडकः। ईडो। ईडिता। ईडितः। स्त्रियास्तु, अ—ईडा। ईडितव्यः। ईडितुम्। ईडित्वा। समीड्य। ईड्यः। ईडानः। ईड्यमानः। ईडिष्यमाणः। णयन्तस्य तु ईडयिता। स्त्रियास्तु, युच्—ईडना। ईडयितव्यः। ईडयितुम्। ईडयित्वा। ईडयन्। ईडयमानः। ईडयिष्यन्। ईडयिष्यमाणः इत्यादि भेदः।

## (३४) ईर् अदा० आत्म० गत्यर्थे सक० कम्पनार्थे अक० सेट्।

कर्त्तरि—ईर्त्ते। ईरीत। ईर्त्ताम्। ऐर्त्त। ईराञ्चक्रे। ऐरिष्ट। ईरिषीत। ईरिता। ऐरिषत। ईरिषीष्ट। कर्मणि—ईर्य्यते। ऐरि। ईरयति। ऐरिरत्। ईरिरिषते। ईर्णः। ईरितुम्। स्वपक्षार्थे—विकल्प-चुरा० उभ० सेट्। ईरयति-ते; ईरति। एवं सर्व्वत्र। ईरयेत्-त। ईरयतु-ताम्। ऐरयत्-त। ईरयाञ्चकार-चक्रे। ऐरिरत्-त। ईरयिष्यति-ते। ईरयिता, ईरिता। ईर्य्यात्, ईरयिषीष्ट। ईर्य्यते। ईरिरिषति-ते। ईरितः। ईरयितुम्, ईरितुम्।

## (३५) ईर्ष्य् ईर्ष्यायाम् भ्वा० पर० सक सेट्।

कर्त्तरि—ईर्ष्यति, ईर्ष्येत्। ईर्ष्यतु। ऐर्ष्यत्। ईर्ष्याञ्चकार। ऐर्ष्यीत्। ईर्ष्यिष्यति। ईर्ष्यिता। ईर्ष्यात्। ईर्ष्यते। ऐर्ष्यि। ईर्ष्ययति। ऐर्ष्यियत्। ईर्ष्यियिषति। ईर्ष्यितः। ईर्ष्यितुम्।

### (३६) ईश् ऐश्वर्ये अदा० आत्म० सक० सेट्।

कर्त्तरि—ईष्टे। ईशिषे; ईशिध्वे। ईशीत। ईष्टाम्। ईशिष्व; ईशिध्वम्। ऐष्ट। ऐशिष्ट। लिड़ादौ ईड़ इव रूपाणि इकारस्थाने शकारमात्रभेदः।

### (३७) ईह् चेष्टायाम् भ्वा० आत्म० अक० सेट्।

कर्त्तरि—ईहते। ईहेत। ईहताम्। ऐहत। ऐहिष्ट। लिड़ादौ सर्वत्र ईड़धातोरिव रूपाणि, डकारस्थाने हकारमात्रभेदः।

### (३८) उञ्छ् उञ्छे भ्वा० पर० सक० सेट्।

उञ्छः कणश आदानम्। कर्त्तरि—उञ्छति। उञ्छेत्। उञ्छतु। औञ्छत्। उञ्छाञ्चकार। औञ्छीत्। उञ्छिष्यति। उञ्छिता। उञ्छ्यात्। कर्म्मणि—उञ्छ्यते। औञ्छि। उञ्छयति। औचिच्छत्। उचिञ्छिषति। कृत्—उञ्छितव्यम्। उञ्छितः। उञ्छित्वा।

### (३९) उन्द् क्लेदने रुधा पर० सक० सेट्।

कर्त्तरि—उनत्ति; उनत्सि; उनद्मि। उन्द्यात्। उनत्तु; उन्धि; उनदानि। औनत्। उन्दाञ्चकार। औन्दीत्। उन्दिष्यति। उद्यात्। कर्म्मणि—उद्यते। उन्दयति। औन्दिदत्। उन्दिदिषति। कृत्—उन्नम्, उत्तम्। उन्दित्वा।

### (४०) उष् दाहे भ्वादि० प०० सक० सेट्।

कर्त्तरि—ओषति। ओषेत्। ओषतु। औषत्। ओषाञ्चकार, उवोष। औषीत्। ओषिता। उष्यात्। कर्म्मणि—उष्यते। ओषयति। औषिषत्। ओषिषिषति। कृत्—ओषितः, उषितः। ओषित्वा। ओषितुम्।

## (४१) ऊह् वितर्के० भ्वा० आत्म० सक० सेट्।

कर्त्तरि—ऊहते। ऊहेत। ऊहताम्। औहत। औहिष्ट। ऊहाम्-बभूव-आस-चक्रे। ऊहितासे। ऊहिषीष्ट। ऊहिष्यते। औहिष्यत।

कर्म्मणि—ऊह्यते। औहि। ऊहाम्-बभूवे-आसे-चक्रे। लुङादौ कर्त्तरीव।

उपसर्गपूर्व्वकः उभयपदी—समूहति, समूहते। यादौ परे तु ह्रस्वः,—समुह्यात्, समुह्य इत्यादि।

णिचि—ऊहयति-ते। औजिहत्-त। ऊहयाम्-बभूव-आस-चकार-चक्रे। ऊहयितासि-से। ऊह्यात्, ऊहयिषीष्ट। ऊहयिष्यति-ते।

कृत्सु—ऊहनीयम्। ऊहनम्। ऊहः। ऊहकः। ऊही। ऊहिता। ऊहितः। स्त्रियामस्ति, अ—ऊहा। ऊहितुम्। ऊहितव्यः। ऊहित्वा। समूह्य। ऊह्यः। ऊहमानः, ऊह्यमानः, ऊहिष्यमाणः। ण्यन्तस्य तु—ऊहयिता। ऊहयितव्यः। ऊहयितुम्। ऊहयित्वा। ऊहयन्। ऊहयमानः। ऊहयिष्यन्, ऊहयिष्यमाणः इत्यादि भेदः।

## (४२) ऋ गतौ भ्वा० पर० सक० अनिट्।

कर्त्तरि—ऋच्छति। ऋच्छेत्। ऋच्छतु। आर्च्छत्। आरत्। आर्षीत्, आरताम्, आर्ष्टाम्; आरन्, आर्षुः। आर, आरतुः, आरुः। आरिथ। आरिव। अर्त्ता। अर्य्यात्। अरिष्यति। आरिष्यत्। कर्म्मणि—अर्य्यते। आरि, आरिषाताम्, आर्षाताम्। आरे। आरिता, अर्त्ता। आरिषीष्ट, ऋषीष्ट। आरिष्यते, अरिष्यते। णिचि—अर्पयति-ते। आर्पिपत्-त। अर्पयाम्-बभूव-आस-चकार-

चक्रे। अर्पयिता। अर्प्यात्, अर्पयिषीष्ट। अर्पयिष्यति-ते।
आर्पयिष्यत्-त।

सनि—अरिरिषति। आरिरिषीत्। अरिरिषाम्-बभूव आस-
चकार। यङि—अरार्य्यते।

सम्—सङ्गतौ अक० आत्मनेपदी। समृच्छते। समारत।
समार्त्त, समारताम्, समार्षाताम्। समारे। समर्त्तासे।
समृषीष्ट।

कृत्सु—अरणीयम्। अरणम्। आरः। अर्त्ता। ऋतः।
ऋतिः। अर्त्तुम्। ऋत्वा। समृत्य। आर्य्यः। ऋच्छन्।
अर्य्यमाणः। अरिष्यन्। आरिष्यमाणः, अरिष्यमाणः।

## (४३) ऋ गतौ जुहो० पर० सक० अनिट्।

कर्त्तरि—इयर्त्ति. इयृतः, इयृति। इयर्षि, इयृथः, इयृथ। इयर्मि,
इयृवः, इयृमः। इयृयात्। इयर्त्तु, इयृताम्, इयृतु।
इयृहि, इयृतम्, इयृत। इयराणि, इयराव, इयराम। ऐयः,
ऐयृताम्, ऐयरुः। ऐयः, ऐयृतम्, ऐयृत। ऐयरम्, ऐयृव,
ऐयृम। लुङादौ सर्वत्र भ्वादिगणीयवत्।

## (४४) ऋध् वृद्धौ दिवा० पर० अक० सेट्।

कर्त्तरि—ऋध्यति। ऋध्येत्। ऋध्यतु। आर्ध्यत्। आनर्द्ध।
आर्द्धत्। अर्द्धिष्यति। अर्द्धिता। आर्द्धिष्यत्। अर्द्धयति,
अर्दिधिषति, ईर्त्सति। कृत्सु—ऋद्धः। ऋद्ध्वा, अर्धित्वा।

## (४५) एध् वृद्धौ भ्वा० आत्म० अक० सेट्।

कर्त्तरि—एधते। एधेत। एधताम्। ऐधत। ऐधिष्ट।
एधाम्-बभूव-आस-चक्रे। एधिता। एधिषीष्ट। एधि-
ष्यते। ऐधिष्यत। भावे—एध्यते। ऐधि। एधाम्-बभूवे
आसे-चक्रे। लुङादौ एकवचने कर्त्तरीव।

णिचि—एधयति-ते। ऐदिधत्-त। एधयाम्-बभूव-आस-चकार-चक्रे। एधयिता। एध्यात्। एधयिषीष्ट। एधयिष्यति-ते। कर्म्मणि—एध्यते। ऐधि। एधयाम्-बभूवे-आसे-चक्रे। एधिता। एधयिता। एधिषीष्ट, एधयिषीष्ट इत्यादि।

कृत्सु—एधनीयम्। एधनम्। एधकः। एधः। एधः, एधसौ। एधौ। एधिता। एधितः। स्त्रियाम्ति, अ—एधा। एधितुम्। एधितव्यम्। एधित्वा। समेध्य। एध्यः। एधमानः, एधिष्यमाणः। ण्यन्तस्य तु एधयिता। एधना। एधयितुम्। एधयितव्यः। एधयित्वा। एधयन्। एधयमानः। एधयिष्यन्। एधयिष्यमाणः इत्यादि भेदः।

(४६) कण शब्दे भ्वा० पर० अक० गत्यर्थे सक० सेट्।

कर्त्तरि—कणति। कणेत्। कणतु। अकणत्। चकाण। अकाणीत्, अकणीत्। कणिष्यति। कणिता। अकणिष्यत्। कण्यात। कर्म्मणि—कण्यते। कणयति, काणयति। अचीकणत्, अचकाणत्। चिकणिषति। चङ्कण्यते। निमीलने चुरा० उभ० अक० सेट्। काणयति-ते।

कृत्सु—काणित्वा। कणितः।

(४७) कथ कथने अदन्तचुरा० उभ० सक० सेट्।

कर्त्तरि—कथयति-ते। कथयेत्-त। कथयतु-ताम। अकथयत्-त। अचीकथत्-त। अचकथत्-त। कथयाम्-बभूव-आस-चकार-चक्रे। कथयिता-सि से। कथ्यात्, कथयिषीष्ट। कथयिष्यति-ते।

कर्म्मणि—कथ्यते। अकथि। कथयाम-बभूव-आस-चक्रे। कथिता, कथयिता। कथिषीष्ट, कथयिषीष्ट इत्यादि।
सनि—चिकथयिषति-ते। अचिकथयि-षीत्-षिष्ट। चिकथयिषाम्-बभूव-आस-चकार-चक्रे।
कृत्सु—कथनीयम्। कथनम्। कथकः। कथयिता। कथितः। क्तिन् युच् च नास्ति, अ—कथा। कथयितुम्। कथयितव्यः। कथयित्वा। सङ्कथ्य। कथ्यः। कथयन्। कथयमानः, कथ्यमानः। कथयिष्यन् ष्यमाणः।

## (४८) कम् इच्छायाम् भ्वा॰ आत्म॰ सक॰ सेट्।

कर्त्तरि—कामयते। कामयेत। कामयताम्। अकामयत। अचीकमत, अचकमत। कामयाम-बभूव-आस-चक्रे। चकमे। कामयिता, कमिता। कामयिषीष्ट, कमिषीष्ट। कामयिष्यते, कमिष्यते। अकामयिष्यत, अकमिष्यत।
कर्म्मणि—काम्यते। काम्येत। काम्यताम्। अकाम्यत। अकामि। कामयाम्-बभूवे-आसे-चक्रे। चकमे। कामिता, कामयिता, कमिता। कामिषीष्ट, कामयिषीष्ट, कमिषीष्ट। कामिष्यते, कामयिष्यते, कमिष्यते।
णिचि—कामयति-ते। अचीकमत्, अचकमत्-त। कर्म्मणि—काम्यते। अकामि।
सनि—चिकामयिषते। चिकमिषते। अचिकामयिषिष्ट, अचिकमिषिष्ट।
कृत्सु—कमनीयः। कमनम्। कामः। कामकः। कामुकः। कामी। कामयिता, कमिता। कामितः, कान्तः। णिङ्पक्षे युच्—कामना, पक्षे क्तिन्—कान्तिः। कामयितुम्। कमितुम्। कामयितव्यः, कमितव्यः। कामयित्वा,

कमित्वा, कान्त्वा। सङ्काम्य। काम्यः। कम्रः। कामयमानः, काम्यमानः। कामयिष्यमाणः, कमिष्यमाणः। ण्यन्तस्य कामयिता। कामितः। कामना। कामयितव्यः। कामयितुम्। कामयित्वा। कामयन्-मानः। कामयिष्यन्-ष्यमाणः इति भेदः।

## (४९) कम्प् चलने भ्वादि० आत्म० अक० सेट्।

कर्त्तरि—कम्पते। कम्पेत। कम्पताम्। अकम्पत। अकम्पिष्ट। चकम्पे। कम्पितासे। कम्पिषीष्ट। कम्पिष्यते। अकम्पिष्यत। भावे—कम्प्यते। अकम्पि।

णिचि—आत्मनेपदं नास्ति, कम्पयति। अचिकम्पत्। कम्पयाम-बभूव-आम-चकार। कर्म्मणि—कम्प्यते। अकम्पि। कम्पयाम्-बभूवे-आसे चक्रे। कम्पितासे, कम्पयितासे।

अनु—अनुग्रहे सक० अनुकम्पते अनुगृह्णाति।

कृत्सु—कम्पनीयम्। कम्पनः। कम्पकः। कम्पः। कम्पिता। कम्पितः। कम्पितुम। कम्पित्वा। प्रकम्प्य। कम्प्यः। कम्पमानः। कम्पिष्यमाणः। ण्यन्तस्य—कम्पयिता, कम्पयितव्यः, कम्पयितुम्, कम्पयित्वा, कम्पयन्, कम्प्यमानः, कम्पयिष्यन्, कम्पयिष्यमाणः। अनु—अनुकम्पा।

## (५०) कर्ण भेदने अदन्तचुरादि० उभ० सक० सेट्।

कर्त्तरि—कर्णयति-ते। आङ्-श्रवणे आकर्णयति-ते। कर्म्मणि—आकर्ण्यते।

कृत्सु—आकर्णनम्। आकर्णयन्। आकर्णितः।

## (५१) कल गतौ सङ्ख्यायाञ्च अदन्तचुरा० उभ० सक० सेट् ।

कर्त्तरि—कलयति-ते । कलयेत्-त । कलयतु-ताम् । अकलयत्-त । अचीकलत्-त, अचकलत्-त । सर्वं कथधातुवत्, थकारस्थाने लकारमात्रभेदः । सम्—एकत्रस्थीकरणे सङ्घातकरणे च सङ्कलयति एकत्रस्थं करोति, संहतं करोति वा । वि—वियोजने विकलयति वियोजयति । चुरादावन्यत्र नोदनेऽर्थे कालयति-ते । शब्दार्थे भ्वादि० आ० अक० । कलते । कृत्—कालः । कालो । कलिः । कलिका ।

## (५२) काङ्क्ष् वाञ्छायां भ्वादि० पर० सक० सेट् ।

प्रायेणाङ्पूर्वकः ।

कर्त्तरि—आकाङ्क्षति । काङ्क्षेत् । काङ्क्षतु । अकाङ्क्षत् । अकाङ्क्षीत् । चकाङ्क्ष । काङ्क्षिता । काङ्क्ष्यात् । काङ्क्षिष्यति । अकाङ्क्षिष्यत् । कर्म्मणि—काङ्क्ष्यते । अकाङ्क्षि । चकाङ्क्षे । णिचि—काङ्क्षयति-ते । कृत्—काङ्क्षणीयः । काङ्क्षणम । आकाङ्क्षी । आकाङ्क्षकः । आकाङ्क्षिता । आकाङ्क्षितः । स्त्रियान्तु, अ—आकाङ्क्षा । आकाङ्क्षितुम् । काङ्क्षित्वा । आकाङ्क्ष्य । काङ्क्ष्यम । काङ्क्षन् । काङ्क्ष्यमाणः । काङ्क्षिष्यन्, काङ्क्षिष्यमाणः ।

## (५३) काल मन्त्रणे चालने च अदन्तचुरा० उभ० सक० सेट् ।

कर्त्तरि—कालयति-ते, चालयति मन्त्रयति वा । काल्यमानः—चाल्यमानः ।

### (५४) काश् प्रकाशे भ्वादि० आ० अक० सेट्।

कर्त्तरि—काशते। काशेत। काशताम्। अकाशत। अकाशिष्ट। काशाम्-बभूव आस-चक्रे। चकाशे। काशिता। काशिष्यते। भावे—काश्यते। अकाशि। काशाम् बभूवे-आसे चक्रे। चकाशे। लुडादौ कर्त्तवत्।

णिचि—काशयति ते। अचकाशत्-त। काशयाम्-बभूव-आस चकार चक्रे। काशयितासि से। काश्यात, काशयिषीष्ट। काशयिष्यति-ते। अकाशयिष्यत्-त। कर्म्मणि—काश्यते। अकाशि। काशयाम्-बभूवे-आसे-चक्रे। काशिता काशयिता।

कृत् –काशनीयम्। काशनम्। काशकः। प्रकाशः। काशो। काशिता। काशितः। काशितुम्। काशितव्यम्। काशित्वा। प्रकाश्य। प्रकाश्यः। प्रकाशमानः। काशिष्यमाणः। ण्यन्तस्य तु काशयिता। काशयितुम्। काशना। काशयितव्यः। काशयित्वा। काशयन्-मानः। काशयिष्यन्-अ-माणः इति भेदः। नि-प्रतिभ्यामुपसर्गाभ्यां घञि नि-प्रत्योर्दीर्घः, नीकाशः, प्रतीकाशः।

### (५५) किट् गतौ भ्वादि० पर० सक० भये अक० सेट्।

केटति—अकेटीत्। चिकेट। णिचि—केटयति। सनि—चिकिटिषति। कृत्सु—केटितव्यम्। केटनीयम्। किटितः।

### (५६) कित् संशये रोगप्रतीकारे च भ्वादि० पर० सक० सेट्।

कर्त्तरि—चिकित्सति। चिकित्सेत्। चिकित्सतु। अचिकित्सत् [illegible] ... त्सीत। चिकित्साम्-बभूव आस-चकार।

चिकित्सिष्यति। चिकित्सिता। अचिकित्सिष्यत्। चिकित्स्यात्। कर्मणि—चिकित्स्यते। अचिकित्सि। चिकित्साम्-बभूव-आस-चक्रे। संशये तु विपूर्वक एव।

णिचि—चिकित्सयति। सनि—चिकित्सिषति।

कृत्सु—चिकित्सनीयम्। चिकित्सनम्। चिकित्सकः। चिकित्सी। चिकित्सिता। चिकित्सितः। क्तिन्नास्ति, अ—चिकित्सा। चिकित्सितुम्। चिकित्सित्वा। विचिकित्स्य। चिकित्स्यम्। चिकित्सन्। चिकित्स्यमानः। चिकित्सिष्यन्। चिकित्सिष्यमाणः।

## (५७) कित् निवासे भ्वादि० पर० अक० सेट्।

कर्त्तरि—केतति। केतेत्। केततु। अकेतत्। अकेतीत्। चिकेत। केतिता। कित्यात्। केतिष्यति। अकेतिष्यत्। भावे—कित्यते। अकेति। चिकिते।

णिचि—केतयति-ते। अचीकितत्-त। सनि—चिकेतिषति।

सम्—संज्ञाकरणे सक० सङ्केतति संज्ञितं करोति। सङ्केतः संज्ञा। सङ्केतितः।

कृत्सु—केतनीयम्। केतनम्। केतः। केती। केतितः। केतितुम्। केतन्। केतिष्यन्।

## (५८) कुप् कोपे दिवा० पर० अक० सेट्।

कर्त्तरि—कुप्यति। कुप्येत्। कुप्यतु। अकुप्यत्। अकुपत्। अकोपीत्। चुकोप। कोपिता। कुप्यात्। कोपिष्यति। अकोपिष्यत्। भावे—कुप्यते। अकोपि। णिचि—कोपयति। अचूकुपत्। सनि—चुकोपिषति।

कृत्सु—कोपनीयम्। कोपनम्। कोपनः। कोपः। कोपकः।

कोप्ता। कोपिता। कुपितः। कोपितुम्। कुपित्वा। सङ्कुप्य। कुप्यः। कुप्यन्। कोपिष्यन्।

## (५६) कुष् निष्कर्षे क्र्यादि० पर० सक० सेट्।

कर्त्तरि—कुष्णाति। कुष्णीयात्। कुष्णातु। अकुष्णात्। अकोषीत्। निर्-पूर्वकस्य निरकोषीत्। निरकुक्षत्। चुकोष। कोषिता। निष्कोषिता। निष्कोष्टा। कोषिष्यति। निष्कोषिष्यति, निष्कोक्ष्यति। कर्म्मणि—कुष्यते। अकोषि। निरकोषिषाताम्, निरकुक्षाताम्। णिचि—कोषयति-ते। अचूकुषत्-त्। कोषयाम-बभूव-आस-चकार-चक्रे। ण्यन्तकर्म्मणि—कोष्यते। अकोषि। अकोषिषाताम्, अकोषयिषाताम्।

कृत्सु—कोषणीयम्। कोषणम्। कोषः। कोषकः। कोषी। कोषिता, निष्कोषिता, निष्कोष्टा। निष्कोषितः, निष्कुष्टः। कोषितुम्, निष्कोषितुम्, निष्कोष्टुम्। कोषित्वा। निष्कुष्य। कुष्णन्। कोषिष्यन्। निष्कोषिष्यन्, निष्कोक्ष्यन्। कोषिष्यमाणः, निष्कोषिष्यमाणः, निष्कोक्ष्यमाणः। ण्यन्तस्य तु कोषयिता। कोषयितव्यः। कोषणा। कोषयितुम्। कोषयित्वा। कोषयन्, कोषयमाणः। कोषयिष्यन्-ष्यमाणः।

## (६०) कूज् अव्यक्तशब्दे भ्वादि० पर० अक० सेट्।

कर्त्तरि—कूजति। कूजेत्। कूजतु। अकूजत्। अकूजीत्। चुकूज। कूजिता। कूज्यात्। कूजिष्यति। अकूजिष्यत्। भावे—कूज्यते। अकूजि। चुकूजे। णिचि—कूजयति-ते। अचुकूजत्-त। सनि—चुकूजिषति। यङि—चोकूज्यते।

कृत्सु—कूजनीयम् । कूजनम् । कूजकः । कूजी । कूजिता । कूजितः । कूजितुम् । क्तिवास्ति, अ—कूजा । कूजित्वा । सङ्कूज्य । कूजन् । कूजिष्यन् । ण्यन्तस्य तु—कूजयिता । कूजयितुम् । कूजयितव्यम् । कूजयित्वा । कूजयन् । कूजयमानः । कूज्यमानः । कूजयिष्यन् ष्यमाण इत्यादि भेदः ।

## (६१) कृ करणे तनादि० उभ० सक० अनिट् ।

### लट् ।

| | प्रथमपुरुषे | मध्यमपुरुषे | उत्तमपुरुषे |
|---|---|---|---|
| एक-व० | करोति-कुरुते | करोषि-कुरुषे | करोमि-कुर्व्वे |
| द्वि-व० | कुरुतः-कुर्व्वाते | कुरुथः-कुर्व्वाथे | कुर्व्वः-कुर्व्वहे |
| बहु-व० | कुर्व्वन्ति-कुर्व्वते | कुरुथ-कुरुध्वे | कुर्म्मः-कुर्म्महे |

### लिङ् ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| एक-व० | कुर्य्यात्-कुर्व्वीत | कुर्य्याः-कुर्व्वीथाः | कुर्य्याम्-कुर्व्वीय |
| द्वि-व० | कुर्य्याताम्-कुर्व्वीयाताम् | कुर्य्यातम्-कुर्व्वीयाथाम् | कुर्य्याव-कुर्व्वीवहि |
| बहु-व० | कुर्य्युः-कुर्व्वीरन् | कुर्य्यात-कुर्व्वीध्वम् | कुर्य्याम-कुर्व्वीमहि |

### लोट् ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| एक-व० | करोतु-कुरुताम् | कुरु-कुरुष्व | करवाणि-करवै |
| द्वि-व० | कुरुताम्-कुर्व्वाताम् | कुरुतम्-कुर्व्वाथाम् | करवाव-करवावहै |
| बहु-व० | कुर्व्वन्तु-कुर्व्वताम् | कुरुत-कुरुध्वम् | करवाम-करवामहै |

[ आशीर्वादार्थे प्रथमपुरुषमध्यमपुरुषयोरेकवचने कुरुतात्। एवं सर्व्वत्र ]

लङि।

| | प्रथमपुरुषे | द्वितीयपुरुषे | मध्यमपुरुषे |
|---|---|---|---|
| एक-व० | अकरोत्-अकुरुत | अकरोः-अकुरुथाः | अकरवम्-अकुर्व्वि |
| द्वि-व० | अकुरुताम्-अकुर्व्वाताम् | अकुरुतम्-अकुर्व्वाथाम् | अकुर्व्व-अकुर्व्वहि |
| बहु-व० | अकुर्व्वन्-अकुर्व्वत | अकुरुत-अकुरुध्वम् | अकुर्म्म-अकुर्म्महि |

लिटि।

| | | | |
|---|---|---|---|
| एक-व० | चकार-चक्रे | चकर्थ-चकृषे | चकार-चकर-चक्रे |
| द्वि-व० | चक्रतुः-चक्राथे | चक्रथुः-चक्राथे | चकृव-चकृवहे |
| बहु-व० | चक्रुः-चक्रिरे | चक्र-चकृढ्वे | चकृम-चकृमहे |

लुङि।

| | | | |
|---|---|---|---|
| एक-व० | अकार्षीत्-अकृत | अकार्षीः-अकृथाः | अकार्षम्-अकृषि |
| द्वि-व० | अकार्ष्टाम्-अकृषाताम् | अकार्ष्टम्-अकृषाथाम् | अकार्ष्व-अकृष्वहि |
| बहु-व० | अकार्षुः-अकृषत | अकार्ष्ट-अकृढ्वम् | अकार्ष्म-अकृष्महि |

लृटि।

| | | | |
|---|---|---|---|
| एक-व० | करिष्यति-ते | करिष्यसि-ष्यसे | करिष्यामि-करिष्ये |
| द्वि-व० | करिष्यतः-ष्येते | करिष्यथः-ष्येथे | करिष्यावः-ष्यावहे |
| बहु-व० | करिष्यन्ति-ष्यन्ते | करिष्यथ-ष्यध्वे | करिष्यामः-ष्यामहे |

लुटि।

| | प्रथमपुरुषे | मध्यमपुरुषे | उत्तमपुरुषे |
|---|---|---|---|
| एक-व० | कर्त्ता-कर्त्ता | कर्त्तासि-से | कर्त्तास्मि-हे |
| द्वि-व० | कर्त्तारौ-कर्त्तारौ | कर्त्तास्थः-साथे | कर्त्तास्वः-स्वहे |
| बहु व० | कर्त्तारः-कर्त्तारः | कर्त्तास्थ-ध्वे | कर्त्तास्मः-स्महे |

लृङि।

| | | | |
|---|---|---|---|
| एक-व० | अकरिष्यत्-त | अकरिष्यः-ष्यथाः | अकरिष्यम्-ष्ये |
| द्वि-व० | अकरिष्यताम्-अकरिष्येताम् | अकरिष्यतम्-ष्येथाम् | अकरिष्याव-अकरिष्यावहि |
| बहु व० | अकरिष्यन्-अकरिष्यन्त | अकरिष्यत-ष्यध्वम् | अकरिष्याम-अकरिष्यामहि |

सम्पूर्वकस्य तु सञ्चस्करतुः। सञ्चस्करुः; सञ्चस्करिथ; सञ्चस्करिव, सञ्चस्करिम। सञ्चस्करे, सञ्चस्कराते, सञ्चस्करिरे। सञ्चस्करिषे।

कर्त्ता, कर्त्तासि, कर्त्तासे। क्रियात्, कृषीष्ट। संस्कृषीष्ट। कर्म्मणि—क्रियते। अकारि, अकारिषाताम्, अकृषाताम्। चक्रे। कारितासे, कर्त्तासे। कारिषीष्ट, कृषीष्ट। कारिष्यते, करिष्यते। अकारिष्यत, अकरिष्यत। णिचि—कारयति-ते। अचीकरत्-त। कारयाम् बभूव-आस-चकार चक्रे। कारयितासि-से। कार्य्यात्, कारयिषीष्ट। कारयिष्यति-ते। अकारयिष्यत्-त। सनि—चिकीर्षति। यङि—चेक्रीयते।

सम्—संस्कारे (सतो गुणान्तरोत्पादनायाम्) संस्करोति। वि—विकृतौ आ० विकुरुते। प्र—प्रस्तावे प्रकरोति। प्रकृत्य प्रकरणम्। अधि—अधिकारे सक० अधिकरोति। अधि-

कारः। अनु—अनुकरणे अनुकरोति मद्दशीकरोति परा-निर्-आ—निराकरणे पराकरोति निराकरोति निवारयतीत्यर्थः। अप—अपकारे आ० अपकुरुते अनिष्टं करोति। अपकारः। प्रति—प्रतीकारे प्रतिकरोति। घञि तु प्रतिकारः, प्रतीकारः। परि—परिष्कारे परिष्करोति शोधयतीत्यर्थः। आविस्-प्रादुस्-नमस्-साक्षात्-प्रभृतिषु तत्तत्करणे। आविस्—आविष्करोति। उरी—उररी-स्वीकारे उरीकरोति। तिरस्—पराभवे सक० तिरस्करोति।

कृत्—करणीयम्। करणम्। कारः। अन्तकरः। कर्मकरः। भयङ्करः। प्रियङ्करः। क्षेमङ्करः। क्षेमकारः। कुम्भकारः। कारकः। कारी। कर्त्ता। कृतः। कृतिः। कर्त्तुम्। क्विप्—पुण्यकृत् शुभकृत् सुकृत् दिनकृत्। क्वसु—चकृवान्। कर्त्तव्यम्। श—क्रिया। क्यप्—कृत्या। कृत्वा। प्रकृत्य। कृत्यम्। कार्य्यम्। कुर्वन्, कुर्वाणः। करिष्यन्-ष्यमाणः। णयन्तस्य तु—कारयिता। कारितः क्तिन्नास्ति, युच्—कारणा। कारयितव्यः। कारयितुम्। कारयित्वा। प्रकार्य्य। कारयन्, कारयमाणः। कारयिष्यन्-ष्यमाणः। कर्म्मणि—करिष्यमाणोऽपि।

## (६२) कृ हिंसायां स्वादि० उभ० सक० अनिट्।

कर्त्तरि—कृणोति, कृणुते। (उत्तमपुरुषद्विवचने कृण्वः-कृणुवः)। कृणोतु, कृणुताम्। कृणुयात्, कृण्वीत। अकृणोत्, अकृणुत। कृत्सु—कर्त्तव्यम्। कृण्वन्, कृण्वती, कृण्वानः।

## (६३) कृत् कीर्त्तने चुरादि० उभ० सक० सेट्।

कर्त्तरि—कीर्त्तयति-ते। कीर्त्तयेत्-त। कीर्त्तयतु-ताम्। अकीर्त्तयत-त। अचिकीर्त्तत्-त। कीर्त्तयाम्-बभूव-आस-चकार-चक्रे। कीर्त्तयिता-सि-से। कीर्त्त्यात्, कीर्त्तयिषीष्ट। कीर्त्तयिष्यति-ते। कर्म्मणि—कीर्त्त्यते। अकीर्त्ति।

कृत्सु—कीर्त्तनीयम्। कीर्त्तनम्। कीर्त्तकः। कीर्त्ती। कीर्त्तयिता। कीर्त्तितः। कीर्त्तिः। कीर्त्तना। कीर्त्तयितुम्। कीर्त्तयितव्यः। कीर्त्तयित्वा। सङ्कीर्त्त्य। कीर्त्त्यः। कीर्त्तयन्-मानः। कीर्त्त्यमानः। कीर्त्तयिष्यन्-ष्यमाणः। कर्म्मणि—कीर्त्तिष्यमाणोऽपि।

## (६४) कृत् छेदने तुदा० पर० सक० सेट्।

कर्त्तरि—कृन्तति। कृन्तेत्। कृन्ततु। अकृन्तत्। अकर्त्तीत्। चकर्त्त। कर्त्तिता। कृत्यात्। कर्त्तिष्यति, कर्त्स्यति। कर्म्मणि—कृत्यते। अकर्त्ति। णिचि—कर्त्तयति। अचकर्त्तत्, अचीकृतत्। सनि—चिकृत्सति, चिकर्त्तिषति। यङि—चरीकृत्यते।

कृत्सु—कर्त्तनीयम्। कर्त्तनम्। कर्त्तकः। कर्त्ती। कर्त्तिता। कृत्तः। कृत्तिः। कर्त्तितव्यम्। कर्त्तितुम्। कर्त्तित्वा। सङ्कृत्य। कर्त्त्यः। कृन्तन्। कृत्यमानः। कर्त्तिष्यन्-ष्यमाणः, कर्त्स्यन्-स्यमानः।

## (६५) क्लृप् कल्पने भ्वादि० अक० आ० (लुङि लुटि लृटि लृङि च उभय०) वेट्।

कर्त्तरि—कल्पते। कल्पेत। कल्पताम्। अकल्पत। अक्लृपत्, अकल्पिष्ट, अक्लृप्त। चक्लृपे। कल्प्तासि, कल्पितासे,

कल्पतासि। कल्प्स्यति, कल्पिष्यते। अकल्प्स्यत, अकल्पिष्यत। भावे—कल्प्यते। अकल्पि। णिचि—कल्पयति। अचिकॢपत।

सम्—सङ्कल्पे सङ्कल्पते मानसवृत्त्या विषयीकरोति। वि—विकल्प (विकल्पः सन्देहः) सक० विकल्पते। अव—सामर्थ्य पर्य्याप्तौ च अवकल्पते समर्थः पर्य्याप्तो वा भवतीत्यर्थः।

कृत्सु—कल्पनीयम्। कल्पनम्। कल्पकः। कल्पः। कल्पिता, कल्प्ता। कॢप्तः। कॢप्तिः। कल्पितुम्, कल्प्तुम्। कल्पितव्यम्, कल्प्तव्यम्। कल्पित्वा, कॢप्त्वा। प्रकल्प्य। कल्प्यः। कल्पमानः। कल्प्स्यन्, कल्पिष्यमाणः। कृपा। कृपणः। कृपाणः। ण्यन्तस्य तु कल्पयिता। कल्पयितव्यम्। कल्पना। कल्पयितुम्। कल्पयित्वा। प्रकल्प्य। कल्पयन्-मानः। कल्पयिष्यन्-ष्यमाणः। कर्म्मणि—कल्प्यमानः, कल्पिष्यमाणोऽपि।

## (६६) कृश् तनूकरणे दिवा० (पुषादि) पर० सक० सेट्।

कर्त्तरि—कृश्यति। कृश्यतु। कृश्येत्। अकृश्यत्। चकर्श। अकृशत्। कर्शिता। कृश्यात्। कृत्सु—कृशः। कृशानुः। कर्शिष्ठः।

## (६७) कृष् कर्षणे भ्वादि० पर० सक० अनिट्।

कर्त्तरि—कर्षति। कर्षेत्। कर्षतु। अकर्षत्। अक्राक्षीत्, अकार्क्षीत्, अकृक्षत्; अक्राष्टाम्, अकार्ष्टाम्, अकृक्षताम्; अक्राक्षुः, अकार्क्षुः, अकृक्षन्। चकर्ष। चकर्षिथ, चकर्ष्ठ, चकर्ष्ट। क्रष्टा, कर्ष्टा। कृष्यात्। क्रक्ष्यति, कर्क्ष्यति। अक्रक्ष्यत्, अकर्क्ष्यत्।

कर्म्मणि—कृष्यते। अकर्षि। णिचि—कर्षयति-ते। अचीकृषत्-त; अचकर्षत्-त। सनि—चिकृक्षति-ते। यङि—चरीकृष्यते। कर्म्मणि—कर्ष्यते, अकर्षि।

अन्यत्—कर्षणीयम्। कर्षणम्। कर्षणः। कर्षकः। कर्षी। कर्षः। कृष्टः। कृष्टिः। क्रष्टुम्, कष्टुम्। कृष्ट्वा। सङ्कृष्य। कर्ष्टम, क्रष्टम। कर्षन्, कृष्यमाणः। क्रक्ष्यन्, कर्क्ष्यन्। क्रक्ष्यमाणः, कर्क्ष्यमाणः।

## (६८) कृष् विलेखने तुदादि॰ उभ॰ सक॰ अनिट्।

कर्त्तरि—कृषति-ते। कृषतु-ताम्। कृषत्-त। अकृषत्-त। अन्यत्—क्रष्टव्यः, कर्ष्टव्यः। सङ्कर्षणः। कृषिः। प्रकर्षः। निष्कर्षः।

## (६९) कॄ विक्षेपे तुदा॰ पर॰ सक॰ सेट्।

कर्त्तरि—किरति। किरेत्। किरन्तु। अकिरत्। अकारीत्। अकारिष्टाम्। चकार, चकरतुः, चकरुः। चकरिथ। करीता, करिता। कीर्य्यात्। करीष्यति, करिष्यति। अकरीष्यत्, अकरिष्यत्।

कर्म्मणि—कीर्य्यते। अकारि, अकारिषाताम्, अकरीषाताम्, अकरिषाताम्, अकीर्षाताम्। चकरे। चकरिषे। कारितासे, करीतासे, करितासे। कारिषीष्ट, करिषीष्ट, कीर्षीष्ट। कारिष्यते, करीष्यते, करिष्यते।

णिचि—कारयति। सनि—चिकरीषति, चिकरिषति, चिकीर्षति।

प्रति-उप—हिंसायां छेदने च सक॰। प्रतिस्किरति, उपस्किरति, छिनत्ति हिनस्ति वा। प्रत्यस्किरत्। प्रति-

चस्करे। अव—अवलोपे अवकिरति। (अवकीर्णः क्षतव्रतः) सम्—सङ्करे (मिश्रीकरणे) सङ्किरति। सङ्कीर्णः। वि—दाने विकिरति। प्र—नानाजातीयानामेकत्र समावेशने, प्रतिकिरति, प्रकीर्णं करोति। प्रकीर्णः।

कृत्—करणीयम्। करणम्। कारकः। करीता, करिता। कीर्णः। कीर्णिः। करीतव्यम्, करितव्यम्। करीतुम्, करितुम्। करीत्वा, करित्वा। प्रकीर्य। कार्य्यः। किरन्। कीर्य्यमाणः। करीष्यन्, करिष्यन्। करीष्यमाणः, करिष्यमाणः। कर्म्मणि—करिष्यमाणोऽपि।

## (७०) कॄ हिंसने क्र्यादि० उभ० सक० सेट्।

कर्त्तरि—कृणाति-कृणीते। चकार-चकरे इत्यादि। क्र्यादिगणीयः केवलपरस्मैपदी कृणाति।

## (७१) क्रन्द् क्रन्दने भ्वादि० पर० अक० सेट्।

कर्त्तरि—क्रन्दति। क्रन्देत्। क्रन्दतु। अक्रन्दत्। अक्रन्दीत्। चक्रन्द। क्रन्दिता। क्रन्द्यात्। क्रन्दिष्यति। अक्रन्दिष्यत्। भावे—क्रन्द्यते। अक्रन्दि। णिचि—क्रन्दयति। अचिक्रन्दत। आङ् चुरादि० सर्वापूर्वकः सततशब्दकरणे उभयपदी, आक्रन्दयति-ते। आक्रन्दयेत्-त। आचिक्रन्दत्-त।

कृत्—क्रन्दनीयम्। क्रन्दनम्। क्रन्दकः। क्रन्दी। क्रन्दिता। क्रन्दितुम्। क्रन्दितव्यम्। क्रन्दित्वा। सङ्क्रन्द्य। क्रन्द्यम्। क्रन्दन्। क्रन्दिष्यन्। ण्यन्तस्य तु क्रन्दयिता। क्रन्दयितुम्। क्रन्दयितव्यम्। क्रन्दयित्वा। क्रन्दयन्-मानः।

क्रन्द्यमानः, क्रन्दयिष्यन्-ष्यमाणः। कर्मणि—क्रन्दिष्यमाणोऽपि।

## (७२) क्रम् क्रमणे भ्वादि० पर० सक० सेट्।

आदौ—क्राम्यति, क्रामति, क्रम्यति। मुग्धबोधमते क्रम्यतीति पदं स्यात्। एवं विधिलिङ्-लोट्-लुङ्-विभक्तिषु रूपाणि भवन्ति। पाणिनीयसुपद्माटिव्याकरणमते क्राम्यति क्रामतीति पदद्वयं सिद्धं भवतीति। क्राम्येत्, क्रामेत्। क्राम्यतु, क्रामतु। अक्राम्यत्, अक्रामत्। अक्रमीत्। चक्राम। क्रमिता। क्रमिष्यति। अक्रमिष्यत्। कर्मणि—क्रम्यते। अक्रमि, अक्रामि। णिचि—क्रामयति-ते। सङ्क्रामयति-ते। अचिक्रमत्-त। सनि—चिक्रमिषति। ण्यन्तकर्मणि—क्राम्यते। अक्रामि। क्रामितासि, क्रामयितासि।

परा—पराक्रमे अकर्मकः आत्मनेपदी, पराक्रमते, पराक्रम्यते। सनि—पराचिक्रंसते। प्र-उप—उपक्रमे (आरम्भे) प्रक्रमते, प्रक्रम्यते; उपक्रमते, उपक्रम्यते। अर्थविशेषेऽपि क्रमेः आत्मनेपदम्, वेदे क्रमते बुद्धिः, अप्रतिहता वर्त्तते इत्यर्थः। उत्साहेऽपि आत्मनेपदी पराक्रमते पराक्रम्यते। सम—सङ्क्रमे सङ्क्राम्यति, सङ्क्रामति। वि—विक्रमे, विक्रामति, विक्राम्यति। पादकरणकविक्रमे तु आ० विक्रमते विक्रम्यते वाजी पङ्क्तिं चलतीत्यर्थः। अति—अतिक्रमे अतिक्रामति अतिक्रमते वा। उत्—उत्क्रमणे उत्क्रामति—क्राम्यति वा। आ—आक्रमणे आक्रामति आक्राम्यति वा। ज्योतिर्विशिष्टस्योदये तु आत्मनेपदी, आक्रमते क्रम्यते वा सूर्यः।

कृत्सु—क्रमणीयम् । क्रमणम् । क्रामकः, क्रमकः । क्रामी, क्रमी । क्रमिता । क्रान्तः । क्रान्तिः । क्रमितुम् । क्रमितव्यम् । क्रमित्वा, क्रान्त्वा । सङ्क्रम्य । क्रम्यः । क्राम्यन्, क्रामन् । क्रमिष्यन्, क्रमिष्यमाणः । ण्यन्तस्य क्रामयिता । क्रामितः । क्रामयितुम् । क्रामयितव्यम् । स्त्रियामस्ति, युच्—क्रामणा । क्रामयन्-माणः, क्राम्यमाणः । क्रामयिष्यन्-ष्यमाणः । कर्म्मणि—क्रामिष्यमाणोऽपि । अयञ्च कृत्सु अनिट्, पराक्रन्ता, उपक्रन्ता, उपक्रन्तव्यम् । पराक्रन्तव्यम् ।

## ( ७२ ) क्री क्रये क्र्यादि० उभ० सक० अनिट् ।

कर्त्तरि—क्रीणाति, क्रीणीते । क्रीणीयात्, क्रीणीयीत । क्रीणातु, क्रीणीताम् । अक्रीणात्, अक्रीणीत । अक्रैषीत्, अक्रेष्ट । चिक्राय, चिक्रिये । क्रेता । क्रीयात्, क्रेषीष्ट । क्रेष्यति-ते । अक्रेष्यत्-त । कर्म्मणि—क्रीयते । अक्रायि, अक्रायिषाताम्, अक्रेषाताम् । क्रायितासे, क्रेतासे । क्रायिष्यते, क्रेष्यते । णिचि—क्रापयति-ते । अचिक्रपत्-त । सनि—चिक्रीषति ।

वि—विक्रये विक्रीणाति, विक्रीणीते । प्रति—प्रतिक्रये ( विनिमये ) प्रति-क्री-णाति-णीते । परि—नियमेन भृत्यादिना स्वीकारे परिक्रीणाति भाटकादिना नियतकालं गृह्णातीत्यर्थः । निर्—निष्क्रये तुल्यमूल्यदाने निष्क्रीणाति तुल्यमूल्यं ददातीत्यर्थः ।

कृत्सु—क्रयणीयम् । क्रयणम् । क्रयः । क्रायकः । क्रायी । क्रेता । क्रीतः । क्रीतिः । क्रेतुम् । क्रेतव्यम् । क्रीत्वा ।

परिक्रीय। क्रेयम। तदर्थं तु क्रय्यम्। क्रीणन्, क्रीणानः। क्रीयमाणः। क्रेष्यन्, क्रेष्यमाणः। कर्म्मणि—क्रायिष्यमाणोऽपि। ण्यन्तस्य—क्रापयिता। क्रापयितव्यः। क्रापयितुम्। क्रापयन्-मानः। क्रापयिष्यन्-ष्यमाणः।

## ( ७४ ) क्रीड् क्रीड़ायां भ्वादि० पर० अक० सेट्।

कर्त्तरि—क्रीडति। क्रीडेत्। क्रीडतु। अक्रीडत। अक्रीडीत। चिक्रीड़। क्रीडिता। क्रीड्यात्। क्रीडिष्यति। अक्रीडिष्यत्। भावे—क्रीड्यते। अक्रीडि। णिचि—क्रीड़यति-ते। अचिक्रीडत्-त। कर्म्मणि—क्रीड्यते। अक्रीडि। क्रीडयितासे, क्रीड़ितासे। सनि—चिक्रीडिषति। समपूर्व० आत्मने० सङ्क्रीड़ते, अव्यक्तशब्दे तु पर० सङ्क्रीडति चक्रम।

कृत्सु—क्रीडनीयम्। क्रीड़नम। क्रीड़कः। क्रीड़ः। क्रीड़ी। क्रीड़ना। क्रीड़ितः। स्त्रियांस्तु, अ—क्रीड़ा। क्रीड़ितुम। क्रीड़तव्यम्। क्रीड़ित्वा। सङ्क्रीड्य। क्रीड्यम्। क्रीडन्, क्रीडिष्यन्। ण्यन्तस्य क्रीडयिता। क्रीडयितुम्। क्रीड़यित्वा। क्रीड़ना। क्रीड़यन्-मानः। क्रीड्यमानः। क्रीडयिष्यन-ष्यमाणः। कर्म्मणि—क्रीडिष्यमाण इत्यादि-भेदः

## (७५) क्रुध् कोपे दिवा० पर० अक० उपसर्ग-पूर्वकन्तु सक० अनिट्।

कर्त्तरि—क्रुध्यति। क्रुध्येत्। क्रुध्यतु। अक्रुध्यत्। अक्रुधत्। चुक्रोध। क्रोद्धा। क्रुध्यात्। क्रोत्स्यति। अक्रोत्स्यत्। भावे—क्रुध्यते। अक्रोधि। सोपसर्गस्य भृत्यमभिक्रुध्यति।

कर्म्मणि—भृत्यौ अभिक्रुध्येते । णिचि—क्रोधयति । अचुक्रुधत् । ण्यन्तकर्म्मणि—क्रोध्यते । अक्रोधि । क्रोधितासे, क्रोधयितासे ।

कृत्सु—क्रोधनीयम् । क्रोधनम् क्रोधनः । क्रोधकः । क्रोधः । क्रोधो । क्रोद्धा । क्रुद्धः । क्रुद्धिः । क्रोद्धव्यम् । क्रोद्धुम् । क्रुद्ध्वा । अभिक्रुध्य । क्रोध्यम । क्रुध्यन्, अभिक्रुध्यमानः । क्रोत्स्यन्, अभिक्रोत्स्यमानः ।

## ( ७६ ) क्रुश् रोदने भ्वादि० पर० अक० आक्रोशे सक० अनिट् ।

कर्त्तरि—क्रोशति । क्रोशेत् । क्रोशतु । अक्रोशत् । अक्रुशत् । चुक्रोश । क्रोष्टा । क्रुश्यात् । क्रोक्ष्यति । अक्रोक्ष्यत् । भावे—क्रुश्यते । अक्रोशि । णिचि—क्रोशयति-ते । अचुक्रुशत्-त । क्रोशयितासि-से । कर्म्मणि—क्रोश्यते । अक्रोशि । क्रोशितासे । क्रोशयितासे । सनि—चुक्रुक्षति ।

कृत्सु—क्रोशनीयम् । क्रोशनम् । क्रोशनः । क्रोशकः । क्रोशः । क्रोशो । क्रोष्टा । क्रुष्टः । क्रुष्टिः । क्रोष्टव्यम । क्रोष्टुम । क्रुष्ट्वा । आक्रुश्य । क्रोश्यम् । क्रोशन्, क्रुश्यमानः । क्रोक्ष्यन्, क्रोक्ष्यमाणः ।

## ( ७७ ) क्लम् ग्लानौ वा दिवा० पक्षे भ्वादि० पर० अक० सेट् ।

कर्त्तरि—क्लाम्यति, क्लामति । क्लाम्येत, क्लामेत्, । क्लाम्यतु, क्लामतु । अक्लाम्यत्, अक्लामत् । अक्लमत्, अक्लमीत् । चक्लाम । क्लमिता । क्लम्यात् । क्लमिष्यति । अक्लमिष्यत् । भावे—क्लम्यते, अक्लामि । सर्वं क्रमवत्, क्रकारस्थाने क्लकारमात्रभेदः ।

(७८) क्लिद् आर्द्रीभावे दिवा० पर० अक० वेट् ।

कर्त्तरि—क्लिद्यति । क्लिद्यतु । क्लिद्येत् । अक्लिद्यत् । चिक्लेद । अक्लिदत् । क्लेदिता, क्लेत्ता । क्लेदिष्यति, क्लेत्स्यति । क्लिद्यात् । अक्लेदिष्यत्, अक्लेत्स्यत् । भावे—क्लिद्यते । णिचि—क्लेदयति । सनि—चिक्लिदिषति । चिक्लित्सति । यङि—चेक्लिद्यते । अयं परिदेवने भ्वादि० सक० उभ० । क्लिन्दति, क्लिन्दते । क्त—क्लिन्नः । क्लेदनम् । विक्लित्तिः ।

(७९) क्लिश् बाधने क्र्यादि० पर० सक० वेट् ।

कर्त्तरि—क्लिश्नाति, क्लिश्नीतः, क्लिश्नन्ति । क्लिश्नीयात् । क्लिश्नातु । क्लिशान । अक्लिश्नात् । अक्लेशीत्, अक्लिक्षत् । चिक्लेश, चिक्लेशिथ, चिक्लेष्ठ । क्लेशिता, क्लेष्टा । क्लेशिष्यति, क्लेक्ष्यति । अक्लेशिष्यत, अक्लेक्ष्यत् ।

कर्मणि—क्लिश्यते । अक्लेशि, अक्लेशिषाताम्, अक्लिक्षाताम् । चिक्लिशे । क्लेशितासे, क्लेष्टासे । क्लेशिषीष्ट, क्लिक्षीष्ट । णिचि—क्लेशयति-ते । अचिक्लिशत्-त । ण्यन्तकर्मणि—क्लेश्यते । अक्लेशि । क्लेशितासे, क्लेशयितासे ।

कृत्सु—क्लेशनीयम् । क्लेशनम् । क्लेशनः । क्लेशः । क्लेशी । क्लेशिता, क्लेष्टा । क्लिष्टः । क्लिष्टिः । क्लेशितुम् । क्लेष्टुम् । क्लेशितव्यम् । क्लेष्टव्यम् । क्लेशित्वा, क्लिष्ट्वा । संक्लिश्य । क्लेश्यः । क्लिश्नन् । क्लिश्यमानः । क्लेशिष्यन्, क्लेक्ष्यन् । क्लेशिष्यमाणः, क्लेक्ष्यमाणः ।

## (८०) क्लिश् उपतापे दिवादि० आत्म० अक० सेट्।

कर्त्तरि—क्लिश्यते। क्लिश्येत। क्लिश्यताम्। अक्लिश्यत। अक्लेशिष्ट। चिक्लिशे। क्लेशिता से। क्लेशिषीष्ट। क्लेशिष्यते। अक्लेशिष्यत। भावे—क्लिश्यते। अक्लेशि। णिचि—क्लेशयति-ते। अचिक्लिशत्-त। कर्म्मणि—क्लेश्यते। अक्लेशि। क्लेशितासे, क्लेशयितासे।

क्वचिदकल्पमते उभ० सक० सेट् क्लिश्यति-ते इत्यादि।

कृत्सु—क्लेशनीयम्। क्लेशनम्। क्लेशनः। क्लेशकः। क्लेशी। क्लेशः। क्लेशिता। क्लिष्टः। क्लिशितः। क्लेशितुम्। क्लेशितव्यम्। क्लिष्ट्वा। संक्लिश्य। क्लेश्यम्। क्लिश्यन। क्लेशिष्यन्।

## (८१) क्लिश् विघाते क्र्यादि० पर० सक० वेट्।

कर्त्तरि—क्लिश्नाति। क्लिश्नातु। क्लिश्नीयात्। अक्लिश्नात्। चिक्लेश। अक्लेशीत्, अक्लिक्षत्। क्लेशिता, क्लेष्टा। क्लेशिष्यति, क्लेक्ष्यति। क्लिश्यात्। अक्लेशिष्यत्। कर्म्मणि—क्लिश्यते। णिचि—क्लेशयति। सनि—चिक्लेशिषति, चिक्लिक्षति। कृत्सु—क्लेश्यः। क्लेशितुम्, क्लेष्टुम्। क्लिशित्वा, क्लिष्ट्वा। परिक्लिश्य।

## (८२) क्षीब् मदे अधार्ष्ट्ये च भ्वादि० आत्म० अक० सेट्।

कर्त्तरि—क्षीबते। क्षीबताम्। क्षीबेत। अक्षीबत। चिक्षीबे। अक्षीबिष्ट। क्षीबिता। णिचि—क्षीबयति-ते। सनि—चिक्षीबिषते। कृत्सु—क्षीबमानः। क्षीबः।

(८३) क्लेश् बधे उपतापे च भ्वादि॰ आत्म॰ सक॰ सेट्।

कर्त्तरि—क्लेशते। चिक्लेशे। अक्लेशिष्ट।

(८४) क्वण् शब्दे भ्वादि॰ पर॰ अक॰ सेट्।

कर्त्तरि—क्वणति। क्वणेत्। क्वणतु। अक्वणत्। अक्वाणीत्, अक्वणीत्। चक्वाण। क्वणिता। क्वण्यात्। क्वणिष्यति। अक्वणिष्यत्। भावे—क्वण्यते। अक्वाणि। णिचि—क्वणयति-ते। अचिक्वणत-त।

कृत्सु—क्वणनीयम्। क्वणनम्। क्वणः। क्वाणः। क्वाणकः। क्वाणी। क्वणिता। क्वणितम्। क्वणितव्यम्। क्वणितुम्। क्वणित्वा। प्रक्वण्य। क्वण्यम्। क्वणन्। क्वणिष्यन्।

(८५) क्वथ् निष्पचने भ्वादि॰ पर॰ सक॰ सेट्।

कर्त्तरि—क्वथति। चक्वाथ। अक्वाथीत्। अन्यत् सर्व्वं क्वणवत्। कृत्सु—क्वाथः, क्वथितम।

(८६) क्षज् बधे भ्वादि॰ आत्म॰ सक॰ सेट्।

कर्त्तरि—क्षजते। अक्षजिष्ट। णिचि—क्षजयति।

(८७) क्षञ्ज् गतौ दाने च भ्वादि॰ आत्म॰ सक॰ सेट्।

कर्त्तरि—क्षञ्जते। अक्षञ्जिष्ट। चक्षञ्जे। क्षञ्जिता। कृच्छ्र-जीवनार्थे अयं चुरादावपि—क्षञ्जयति-ते।

(८८) क्षण् बधे तना॰ उभ॰ सक॰ सेट्।

कर्त्तरि—क्षणोति, क्षणुते। अक्षणीत्, अक्षणिष्ट। कृत्सु—क्षणित्वा, क्षत्वा। क्षतिः। क्षतः। क्षणः।

(८९) चप प्रेरणे अदन्त चुरा० उभ० सक० सेट् ।

कर्त्तरि—चपयति-ते । चपयाम्--चकार--चक्रे -आस--बभूव । अचचपत्-त। चपयिष्यति-ते। कृत्सु—चपितः, चपयित्वा। चपयितुम् । चपा ।

(९०) चम् सहने दिवा० पर० सक० सेट् ।

कर्त्तरि—चाम्यति । चाम्येत् । चाम्यतु । अचाम्यत् । अचमत्, अचमीत् । चचाम । चमिता । चम्यात् । चमिष्यति । अचमिष्यत् । भावे—चम्यते । अचमि । णिचि—चमयति-ते । अचिचमत्-त ।

कृत्सु—चमणीयम् । चमणम् । चमः । चामी । चमिता । चान्तः । चान्तिः । चमितव्यम् । चमितुम् । चामित्वा, चान्त्वा । संचम्य । चम्यम् । चाम्यन् । चमिष्यन् ।

(९१) चम् सहने भ्वादि० आत्म० सक० वेट् ।

कर्त्तरि—चमते । चमेत । चमताम् । अचमत । अचमिष्ट, अचंस्त । चचमे । चमिताse, चन्तासे । चमिषीष्ट, चंसीष्ट । चमिष्यते, चंस्यते । कर्मणि—चम्यते । अचमि ।

कृत्सु—चमणीयम् । चमणम् । चमः । चामकः । चामी । चमिता, चन्ता । चान्तः । चान्तिः । चमा । चमितव्यम्, चन्तव्यम् । चमितुम्, चन्तुम् । चमित्वा, चान्त्वा । सञ्चम्यः । चम्यः । चममाणः, चम्यमाणः । चमिष्यमाणः ।

(९२) चर् सञ्चलने भ्वादि० पर० अक० सेट् ।

कर्त्तरि—चरति । चरेत् । चरतु । अचरत् । चचार । चरिता । कर्म्मणि—चर्य्यते । कृत्सु—चरित्वा । चरितुम् । अचरम् । चरः ।

### (६३) चल् शौचकर्म्मणि चुरा० उभ० सक० सेट्।

कर्त्तरि—चालयति-ते। अचिचलत्-त। चिचालयिष्यति-ते। कर्म्मणि—चाल्यते। कृत्सु—चालित्वा। प्रचाल्य। प्रचालनम्।

### (६४) चि चये भ्वादि० पर० अक० अनिट्।

कर्त्तरि—चयति। चयेत्। चयतु। अचयत्। चिचाय, चिच्यतुः, चिच्युः। चिचयिथ, चिचेथ; चिच्यथुः, चिच्य। चिचाय, चिच्यिव, चिच्यिम। अचैषीत्। चेष्यति। चेता। चीयात्। कर्म्मणि—चीयते। चाययति। अचिचयत्, चिचीषति। चेचीयते। हिंसायां स्वादि० सक०। चिणोति। चिणुयात्। चिणोतु। अचिणोत्। तुदा० गतौ सक० निवासे अक०। चियति। चियेत्। चियतु। अचियत्। लिङादिषु भ्वादिवत्। हिंसायां० क्र्यादि० सक०। चिणाति।

कृत्सु—चीणः, चितः। चित्वा। चेतुम्।

### (६५) चिण् हिंसायां तनादि० उभ० सक० सेट्।

कर्त्तरि—चिणोति, चिणुते। चिणुयात्, चिण्वीत। चिणोतु, चिणुताम्। अचिणोत्, अचिणुत। चिचेण, चिचिणे। अचेणीत्, अचित। चेणिष्यति-ते। चिण्यात्, चेणिषीष्ट। अचेणिष्यत्, अचेणिष्यत। चेणयति। चिचिणिषति। कर्म्मणि—चिण्यते।

कृत्सु—चेण्यम्। चितः। चिण्वन्। चिण्वानः। चिणित्वा, चित्वा। प्रचित्य। प्रचिण्य। चितिः।

## (९६) क्षिप् प्रेरणे तुदा० उभ० सक० अनिट्।

कर्त्तरि—क्षिपति-ते। क्षिपेत्-त। क्षिपतु ताम्। अक्षिपत्-त। अक्षैप्सीत्, अक्षिप्त। चिक्षेप, चिक्षिपे। क्षेप्तास्मि-से। क्षिप्यात्, क्षिप्सीष्ट। क्षेप्स्यति-ते। अक्षेप्स्यत-त। कर्म्मणि—क्षिप्यते। अक्षेपि। णिचि—क्षेपयति-ते। अचिक्षिपत्-त। ण्यन्तकर्म्मणि—क्षेप्यते, अक्षेपि। क्षेपितासे, क्षेपयितासे। अयं दिवादौ पर० सेट्—क्षिप्यति इत्यादि।

सम्—सङ्क्षेपकरणे सक० सङ्क्षिपति-ते। उत्—ऊर्द्ध्वक्षेपे उत्क्षिपति-ते। अव—अधोविक्षेपे अवक्षिपति-ते। प्रति—प्रतिक्षेपे प्रतिक्षिपति-ते। आङ्—आक्षेपे। आक्षिपति-ते। प्र—प्रक्षेपे प्रक्षिपति-ते।

कृत्सु—क्षेपणीयम्। क्षेपणम्। क्षेपकः। क्षेपः। क्षेपी। क्षेप्ता। क्षिप्तः। क्षिप्तिः। क्षेप्तुम्। क्षिप्त्वा। संक्षिप्य। क्षेप्यम्। क्षिपन्, क्षिप्यमाणः। क्षेप्स्यन्, क्षेप्स्यमानः।

## (९७) क्षु क्षुतौ अदादि० पर० अक० सेट्।

कर्त्तरि—क्षौति, क्षुतः, क्षुवन्ति। चुक्षाव। अक्षावीत्। कर्म्मणि—क्षूयते। कृत्सु—क्षुतः। क्षुत्वा। क्षवथुः।

## (९८) क्षुध् क्षुधायाम् दिवा० पर० अक० अनिट्।

कर्त्तरि—क्षुध्यति। क्षुध्येत्। क्षुध्यतु। अक्षुध्यत्। अक्षुधत्। चुक्षोध। क्षोद्धा। क्षुध्यात्। क्षोत्स्यति। अक्षोत्स्यत्। भावे—क्षुध्यते। अक्षोधि। चुक्षुधे। क्षोद्धा, क्षुत्सीष्ट। णिचि—क्षोधयति-ते। अचुक्षुधत्-त। ण्यन्तकर्म्मणि—क्षोध्यते। अक्षोधि।

कृत्सु—क्षोधनीयम्। क्षोधनम्। क्षोधः। क्षोधकः। क्षोधी।

चोढा। चुढः। चुढिः। चोढुम्। क्षुधित्वा। संक्षुध्य। क्षोध्यम्। क्षुध्यन्। क्षोत्स्यन्। क्षुधा।

## (९९) क्षुभ् सङ्कोचने भ्वादि॰ आत्म॰ सक॰ सेट्।

कर्त्तरि—क्षोभते। क्षोभेत। क्षोभताम्। अक्षोभत। अक्षोभिष्ट। चुक्षुभे। क्षोभितासे। क्षोभिषीष्ट। क्षोभिष्यते। अक्षोभिष्यत। भावे—क्षुभ्यते। अक्षोभि। णिचि—क्षोभयति-ते, अचुक्षुभत्-त। ण्यन्तकर्म्मणि—क्षोभ्यते। अक्षोभि। क्षोभितासे, क्षोभयितासे। सनि—चुक्षुभिषते।

कृत्सु—क्षोभणीयम्। क्षोभणम्। क्षोभणः। क्षोभः। क्षोभी। क्षोभिता। क्षुभितः। निपातनात् क्षुब्धः। क्षुब्धिः। क्षोभितुम्। क्षोभितव्यम्। क्षुभित्वा। संक्षुभ्य। क्षोभ्यम्। क्षोभमाणः। क्षोभिष्यमाणः।

अयं क्र्यादि॰ पर॰। कर्त्तरि—क्षुभ्नाति। क्षुभ्नीयात्। क्षुभ्नातु। अक्षुभ्नात्। अक्षोभीत्। चुक्षोभ। क्षोभितासि। क्षुभ्यात्। क्षोभिष्यति। अक्षोभिष्यत्। अन्यत् भ्वादिगणीयक्षुभवत्, शतरि विशेषः,—क्षुभ्नन्।

क्षुभ् अङ्गचालने दिवा॰ पर॰ अक॰ सेट्। कर्त्तरि—क्षुभ्यति। क्षुभ्येत्। क्षुभ्यतु। अक्षुभ्यत्। लुङादौ सर्व्वत्र क्र्यादिगणीयक्षुभवत्।

## (१००) क्षुर् विलेखने भ्वादि॰ पर॰ सक॰ सेट्।

कर्त्तरि—क्षुरति। चुक्षोर। अक्षोरीत्। क्षुर्य्यात्। कृत्सु—क्षुरः। क्षुरिणी। क्षुरकः।

## (१०१) क्ष्णु तेजने अदादि॰ पर॰ सक॰ सेट्।

कर्त्तरि—क्ष्णौति। अक्ष्णावीत्। चुक्ष्णाव। क्ष्णविता। सम्पूर्व्वकोऽयमात्मनेपदी। संक्ष्णुते इत्यादि।

(१०२) खञ्ज् गतिवैकल्ये भ्वादि० पर० अक० सेट्।

कर्त्तरि—खञ्जति। चखञ्ज। कृत्सु—खञ्जनः। खञ्जनकः। खञ्जकः।

(१०३) खण्ड् मन्थने भञ्जने च भ्वादि० आत्म० सक० सेट्।

कर्त्तरि—खण्डते। अखण्डिष्ट। चखण्डे। भेदनेऽर्थे चुरादावयं उभ०। खण्डयति-ते। अचखण्डत्-त। कृत्सु—खण्डितः। खण्डनम्। खण्डः।

(१०४) खन् विदारणे भ्वादि० उभ० सक० सेट्।

कर्त्तरि—खनति-ते। खनेत्-त। खनतु-ताम्। अखनत्-त। अखनीत्, अखानीत्, अखनिष्ट। चखान, चख्ने। खनिता। खायात्, खन्यात्। खनिषीष्ट। खनिष्यति-ते। अखनिष्यत्-त। कर्म्मणि—खन्यते, खायते। अखानि। णिचि—खानयति-ते। अचीखनत्-त। सनि—चिखनिषति-ते।

कृत्सु—खननीयम्। खननम्। खानकः। खनकः। खानः। खानी। खनिता। खातः। खातिः। खनितुम्। खात्वा। सङ्खाय। सङ्खन्य। खेयम्। खनन्-मानः। खनिष्यन्-ष्यमाणः। खनित्रम्। खनिः।

(१०५) खर्व्व् गतौ भ्वादि० पर० सक० सेट्।

कर्त्तरि—खर्व्वति। चखर्व्व। अखर्व्वीत्। कृत्सु—खर्व्वः। खर्व्वितः। खर्व्वितम्।

(१०६) खल् चलने स्खलने च भ्वादि० पर० अक० सेट् ।

कर्त्तरि—खलति । चखाल । अखलीत् । कृत्सु—खल: । खलं धान्यसञ्चयस्थानम् । खल्ल: औषधमर्दनार्थ-प्रस्तर-भाजनम् ।

(१०७) खाद् भक्षणे भ्वादि० पर० सक० सेट् ।

कर्त्तरि—खादति । खादेत् । खादतु । अखादत् । अखादीत् । चखाद । खादिता । खाद्यात् । खादिष्यति । अखादिष्यत् । कर्म्मणि—खाद्यते । अखादि । णिचि—खादयति । अचखादत् । ण्यन्तकर्म्मणि—खाद्यते । अखादि । सनि—चिखादिषति ।

कृत्सु—खादनीयम् । खादनम् । खादक: । खाद: । खादी । खादिता । खादित: । खादित्वा । सङ्खाद्य । खाद्यम् । खादन् । खाद्यमान: । खादिष्यन् । खादिष्यमाण: ।

(१०८) खिद् दैन्ये दिवादि० आत्म० सक० अनिट् ।

कर्त्तरि—खिद्यते । खिद्येत । खिद्यताम् । अखेद्यत । चिखिदे । अखित्त । खेत्ता, खेत्सीष्ट । अखेत्स्यत । भावे—खिद्यते । कधादि०—खिन्ते । कृत्सु—खिन्न: । खेत्तुम् । खित्वा । प्रखिद्य । खेद: । खिदम् ।

(१०९) खिद् परिघाते तुदादि० पर० अक० अनिट् ।

कर्त्तरि—खिन्दति । चिखेद । खेत्स्यति । खिद्यात् । अखैत्-

षीत्। खेत्ता, अखेत्स्यत्। खेदयति। चिखित्सति। चेखिद्यते। कृत्सु—खेत्तव्यम्। खेदनीयम्। खेद्यम्। खिन्दन्।

## (११०) खेल् चालने गतौ च भ्वादि० पर० सक० सेट्।

कर्त्तरि—खेलति। खेलेत्। खेलतु। अखेलत्। अखेलीत्। चिखेल। खेलिता। खेलिष्यति। खेल्यात्। अखेलिष्यत्। कर्म्मणि—खेल्यते। खेलयति। अचिखेलत्-त। कृत्सु—खेला। खेलितुं। खेलनम्।

## (१११) ख्या कथने अदादि० उभ० सक० अनिट्।

कर्त्तरि—(आद्येषु चतुर्षु लकारेषु रूपं नास्ति)। कालापादयः सार्व्वधातुकेष्वपि प्रयोगमिच्छन्ति, तेषां मते—ख्याति। ख्यातु। ख्यायात्। अख्यात् इत्यादि। प्रसिद्धौ दीप्तौ चार्थे अक०, कथने ज्ञाने प्रकाशने च पर० सक०। आर्द्ध-धातुके चक्षिङ आदेश-ख्याधातुस्तु उभ०। अख्यत्, अख्यत। चख्यौ, चख्ये। ख्यातासि-से। ख्येयात्, ख्यायात्; ख्यासीष्ट। ख्यास्यति-ते। अख्यास्यत्-त। कर्म्मणि—ख्यायते। ख्यायेत। ख्यायताम्। अख्यायत। अख्यायि, अख्यायिषातां, अख्यासाताम्। चख्ये। ख्यायितासे, ख्यातासे। णिचि—ख्यापयति-ते। अचिख्यपत्-त। ख्याप्यते। अख्यापि। ख्यापितासे, ख्यापयितासे। सनि—चिख्यासति-ते।

वि-आ—विवरणे शास्त्रं व्याचख्ये। सम्—सङ्ख्याकरणे घटं

सञ्चक्ष्ये। उप-आङ्—उपाख्याने उपचक्ष्ये उपाख्यानम्।
आ—आख्यायाम् (संज्ञाकरणे कथाविशेषे च) आचख्यौ।

कृत्सु—ख्यानीयम्, ख्यानम्। ख्यायकः। ख्यायी। ख्याता। ख्यातः। ख्यातिः। ख्यातुम्। ख्यात्वा। संख्याय। संख्येयः। संख्या। आख्यन्, आख्यायमानः। आख्यास्यन्, आख्यास्यमानः। आख्यानम्। आख्या। धातुनिर्देशे ण्वुलि आख्यायिका।

## (११२) गण संख्याने अदन्तचुरादि० उभ० सक० सेट्।

कर्त्तरि—गणयति-ते। गणयेत्-त। गणयतु-ताम्। अगणयत्-त। अजीगणत्-त, अजगणत्-त। गणयाम्-बभूव-आस-चकार-चक्रे। गणयितासि-से। गण्यात्, गणयिषीष्ट। गणयिष्यति-ते। अगणयिष्यत्-त।

कर्म्मणि—गण्यते। अगणि। गणयितासे, गणितासे। सनि—जिगणयिषति-ते।

अव—अवज्ञायाम् अवगणयति अवजानाति।

कृत्सु—गणनीयम्। गणनम्। गणकः। गणः। गणी। गणयिता। गणितः। गणना। गणयितुम्। गणयित्वा। विगणय्य, विगण्य। गण्यः। गणयन्-मानः, गण्यमानः। गणयिष्यन्-ष्यमाणः। कर्म्मणि—गणिष्यमाणोऽपि।

## (११३) गद् भाषणे भ्वादि पर० सक० सेट्।

कर्त्तरि—गदति; प्रणि-गदति। गदेत्। गदतु। अगदत्। अगादीत्, अगदीत्। जगाद। गदिता। गद्यात्। गदिष्यति। अगदिष्यत। कर्म्मणि—गद्यते। अगादि।

जगदे । णिचि—गादयति-ते । अजीगदत्-त । एवम्-कर्म्मणि—गद्यते । अगादि । सनि—जिगदिषति ।
कृत्सु—गदनीयम् । गदनम् । गादकः । गादः । गादी । गदिता । गदितः । गदितुम । गदित्वा । आगद्य । गद्यम् । गदन् । गद्यमानः । गदिष्यन्, गदिष्यमाणः ।

## (११४) गन्ध् द्रोहे गत्याञ्च चुरादि० आत्म० सक० भूषणे अक० सेट् ।

कर्त्तरि—गन्धयते । अजगन्धत । कृत्सु—गन्धः । गन्धनम् । गन्धकः ।

## (११५) गम् गतौ भ्वादि० पर० सक० अनिट् ।

कर्त्तरि—गच्छति, गच्छेत् । गच्छतु । अगच्छत् । अगमत् । जगाम, जग्मतुः, जग्मुः । जगन्थ, जगमिथ ; जग्मथुः, जग्म । जगाम, जगम ; जग्मिव, जग्मिम । गन्ता । गम्यात् । गमिष्यति । अगमिष्यत् ।
कर्म्मणि—गम्यते । अगमि, अगंसाताम् । जग्मे । णिचि—गमयति-ते । अजीगमत्-त । कर्म्मणि—गम्यते । अगमि, अगामि । अगमिषाताम्, अगमयिषाताम् । गमयितासे, गमितासे । सनि—जिगमिषति ।

सम्—सङ्गतौ अकर्म्मकः आत्मनेपदी सङ्गच्छते । सनि—सञ्जिगंसते । अनु—अनुगमने अनुकरणे च सकर्म्मकः, अनुगच्छति सदृशीकरोति । उत्—उदये उद्गच्छति ।

कृत्सु—गमनीयम् । गमनम् । गमः । हृदयङ्गमः । विहङ्गमः । भुजङ्गमः । भुजगः । विहगः । पुरोगः अन्तग इत्यादि । गमी, गामी । गन्ता । गतः । गतिः । गत्वा । गन्तव्यः ।

सङ्गत्य, सङ्गम्य। गम्यम्। गच्छन्। गम्यमानः। गमिष्यन्, गंस्यमानः।

## (११६) गर्ज् शब्दे भ्वादि० पर० अक० सेट्।

कर्त्तरि—गर्जति। गर्ज्जेत्। गर्ज्जतु। अगर्ज्जत्। अगर्जीत्। जगर्ज। गर्जितासि। गर्ज्ज्यात्। भावे—गर्ज्यते। अगर्जि। णिचि—गर्जयति-ते। सनि—जिगर्ज्जिषति।

कृत्सु—गर्जनीयम्। गर्जनम्। गर्जकः। गर्जी। गर्जिता। गर्जितः। गर्जना। गर्जितुम्। गर्जितव्यम्। गर्जित्वा। सङ्गर्ज्य। गर्ज्यम्। गर्जन्, गर्जिष्यन्।

## (११७) गर्ह् निन्दायां भ्वादि० आत्म० सक० सेट्।

कर्त्तरि—गर्हते। अगर्हिष्ट। कर्म्मणि—गर्ह्यते। अगर्हि। णिचि—गर्हयति-ते। अजगर्हत्-त। कृत्सु—गर्हणीयम्। गर्हणम्। गर्हकः। गर्ही। गर्हिता। गर्हितः। गर्हणा। गर्हितुम्। गर्हित्वा। सङ्गर्ह्य। गर्ह्यम्। गर्हमाणः। कर्म्मणि—गर्ह्यमाणः, गर्हिष्यमाणः।

## (११८) गर्ह् निन्दायां चुरादि० उभ० सक० सेट्।

कर्त्तरि—गर्हयति-ते। अजगर्हत्-त। कर्म्मणि—गर्ह्यते। अगर्हि। कृत्सु—गर्हणीयम्। गर्हणम्। गर्हकः। गर्ही। गर्हयिता। गर्हितः। गर्हणा। गर्हयितुम्। गर्हयितव्यम्। गर्हयित्वा। गर्हयन्, गर्हयमाणः। कर्म्मणि—गर्ह्यमाणः। गर्हयिष्यन्-ष्यमाणः।

### (১১৯) গবেষ অন্বেষণে অদন্তচুরাদি° উভ° সক° সেট্।

কর্ত্তরি—গবেষয়তি-তে। অজগবেষত্-ত। কর্ম্মণি—গবেষ্যতে। অগবেষি।

কৃৎসু—গবেষণীয়ম্। গবেষণম। গবেষী। গবেষকঃ। গবেষয়িতা, গবেষিতঃ। গবেষণা। গবেষয়িতুম্। গবেষয়িত্বা। সঙ্গবেষ্য। গবেষ্যম্। গবেষয়ন্-মাণ.। গবেষ্যমাণঃ। গবেষয়িষ্যন্-ষ্যমাণঃ।

### (১২০) গা গতৌ ভ্বাদি° আত্ম°সক° অনিট্।

কর্ত্তরি—গাতে। গাতাম্। গেত। অগাত। অগাস্ত। জগে। গাতা। সনি—জিগাসতে। অয়ং জুহোত্যাদৌ স্তুতৌ পর° সক° জন্মনি অক°। জগাতি। অগাসাত্। জগৌ।

কৃৎসু—গত্বা। প্রগায়। গানম।

### (১২১) গাহ্ বিলোড়নে ভ্বাদি° আত্ম° সক° সেট্।

কর্ত্তরি—গাহতে। গাহেত। অগাহিষ্ট, অগাঢ়। জগাহে। গাহিতা, গাঢা। গাহিষীষ্ট, ঘাক্ষীষ্ট। গাহিষ্যতে, ঘাক্ষ্যতে। অগাহিষ্যত, অঘাক্ষ্যত। কর্ম্মণি—গাহ্যতে। অগাহি. অগাহিষাতাম, অঘাক্ষাতাম্। ণিচি—গাহয়তি-তে। অজীগহত্-ত। কর্ম্মণি—গাহ্যতে। অগাহি।

অব—অবগাহে, অবগাহতে, বগাহতে।

কৃৎসু—গাহনীয়ম। গাহনম। গাহঃ। গাহকঃ। গাহী। গাহিতা, গাঢ়া। গাঢ়ঃ। গাহিঃ। গাহিতুম্, গাঢুম্।

गाहित्वा, गाढ़्वा। अवगाह्य, वगाह्य। गाह्यम्। गाह-
मानः। गाह्यमानः। गाहिष्यमाणः, घाक्ष्यमाणः।

(१२२) गुञ्ज् कूजने भ्वादि० पर० अक० सेट्।

कर्त्तरि—गुञ्जति। अगुञ्जीत्। जुगुञ्ज। भावे—गुञ्ज्यते।
अगुञ्जि। णिचि—गुञ्जयति।

कृत्सु—गुञ्जनीयम्। गुञ्जनम्। गुञ्जकः। गुञ्जी। गुञ्जिता।
गुञ्जितम्। गुञ्ज्य। गुञ्जितुम्। गुञ्जितव्यम्। गुञ्जित्वा।
सङ्गुञ्ज्य। गुञ्ज्यम। गुञ्जन्। गुञ्जिष्यन्।

(१२३) गुण मन्त्रणे अदन्तचुरादि० उभ०
सक० सेट्।

कर्त्तरि—गुणयति-ते। अजुगुणत्-त। कृत्सु—गुणः। गुणी।
गुणकः।

(१२४) गुप् रक्षणे भ्वादि० पर० सक० वेट्।

कर्त्तरि—गोपायति। गोपायेत्। गोपायतु। अगोपायत्।
अगोपायीत्, अगोपीत्, अगौप्सीत्। गोपायाम-बभूव-
आस-चकार। जुगोप। गोपायिता। गोपिता; गोप्ता।
गोपाय्यात्, गुप्यात्। गोपायिष्यति, गोपिष्यति, गोप्स्यति।
कर्म्मणि—गोपाय्यते, गुप्यते। अगोपायि, अगोपि।

णिचि—गोपायति-ते, गोपयति-ते। सनि—जुगोपायिषति,
जुगोपिषति, जुगुप्सति।

कृत्सु—गोपायनीयम्, गोपनीयम्। गोपायनम्। गोपनम्।
गोपायकः, गोपकः। गोपायी। गोपी। गोपायिता,
गोपिता, गोप्ता। गोपायितः। गुप्तः। गोपाया। गुप्तः।
गोपायितुम्, गोपितुम्, गोप्तुम्। गोपायितव्यम्, गोपि-
तव्यम्, गोप्तव्यम्। गोपायित्वा, गोपित्वा, गुप्त्वा। सङ्गो-

पाय्य, सङ्गुप्य । णिजन्तस्य सङ्गोपाय्य, सङ्गोप्य । गोप्यम् । गोपायन् । गोपाय्यमानः । गोपायिष्यन्, गोपिष्यन्, गाप्स्यन् । गोपायिष्यमाणः, गोपिष्यमाणः, गोप्स्यमानः ।

## (१२५) गुप् निन्दायां भ्वादि० आत्म० सक० निवृत्तौ अक० सेट् ।

कर्त्तरि—जुगुप्सते । जुगुप्सेत । अजुगुप्सिष्ट । जुगुप्साम्-बभूव-आस-चक्रे । कर्म्मणि—जुगुप्स्यते । अयं व्याकुलत्वे दिवादि०—गुप्यते ।

कृत्सु—जुगुप्सनीयम् । जुगुप्सनम् । जुगुप्सकः । जुगुप्सो । जुगुप्सिता । जुगुप्सितम् । जुगुप्सा । जुगुप्सितुम् । जुगुप्सितव्यम् । जुगुप्सित्वा । सञ्जुगुप्स्य । जुगुप्स्यम् । जुगुप्समानः । जुगुप्स्यमानः । जुगुप्सिष्यमाणः ।

## (१२६) गुम्फ् ग्रन्थने तुदादि० पर० सक० सेट् ।

कर्त्तरि—गुम्फति । अगुम्फत् । अगोम्फीत्, गुफ इत्यस्य अगोफीत् । जुगुम्फ । गुम्फिता । कर्म्मणि—गुम्फ्यते । अगुम्फि । णिचि—गुम्फयति ।

कृत्सु—गुम्फनीयम् । गुम्फनम् । गुम्फः । गुम्फकः । गुम्फी । गुम्फिता । गुम्फितः । गुम्फा । गुम्फितुम् । गुम्फित्वा, गुफित्वा । सङ्गुम्फ्य । गुम्फ्यम् । गुम्फन्, गुम्फ्यमानः । गुम्फिष्यन्-ष्यमाणः ।

## (१२७) गुर् उद्यमे तुदादि० आत्म० अक० सेट् ।

कर्त्तरि—गुरते । गुरेत । अगुरिष्ट । गुरिताहे । भावे—गूर्य्यते । अगोरि । णिचि—गोरयति-ते । अजुगुरत्-त ।

कृत्सु—गुरणीयम्। गुरणम्। गूर्णः। गुरित्वा। गुरमाणः। गुरिष्यमाणः।

## (१२८) गुह् संवरणे भ्वादि॰ उभ॰ सक॰ वेट्।

कर्त्तरि—गूहति, गूहते। गूहेत्-त। गूहतु, गूहताम्। अगूहत्-त। अगूहीत्, अघुक्षत्; अगूहिष्ट, अघुक्षत, अगूढ। अगूहिषाताम्, अघुक्षाताम्। अगूहिषत, अघुक्षन्त। अगूहिषि, अघुक्षि। अघुक्षावहि, अगूह्वहि। अगूहिष्महि। अघुक्षामहि।

कर्म्मणि—गुह्यते। अगूहि। णिचि—गूहयति-ते। सनि—जुघुक्षति-ते।

कृत्सु—गूहनीयम्। गूहनम्। गूहः। गूहकः। गूही। गूहिता, गोढ़ा। गूढ़ः। गूढ़िः। गूहितुम्, गोढुम्। गूहितव्यम्, गोढ़व्यम्। गूहित्वा, गूढ्वा। सङ्गुह्य। गोह्यः। गूहन्। गूहमानः। गूहिष्यन्-ष्यमाणः। घूक्ष्यन् घूक्ष्यमाणः।

## (१२९) गूर् वधे दिवादि॰ आत्म॰ सक॰ सेट्।

कर्त्तरि—गूर्य्यते। अगूरिष्ट। णिचि—गूरयति। कृत्सु—गूरणीयम्। गूरणम्। गूरिता। गूर्णः। गूर्य्यमाणः।

## (१३०) गॄ स्तुतौ क्र्यादि॰ पर॰ सक॰ सेट्।

कर्त्तरि—गृणाति। अगारीत्। जगार, जगरतुः। गर्त्ता। गीर्य्यात्। गरिष्यति।

अनु-प्रति—प्रोत्साहने अनुगृणाति प्रतिगृणाति प्रोत्साहयतीत्यर्थः।

## (१३१) गृध् लोभे दिवादि॰ पर॰ सक॰ सेट् ।

कर्त्तरि—गृध्यति । अगृध्यत्, अगर्द्धीत् । कर्म्मणि—गृध्यते । अगर्द्धि । कृत्सु—गर्द्धनीयम् । गर्द्धनम । गर्द्धन: । गर्द्धक: । गर्द्धी । गर्द्धिता । गर्द्धित: । गर्द्धितुम । गर्द्धितव्यम् । गर्द्धित्वा, गृद्ध्वा । गृध्नु: । गृध्यम् । गृध्यन् । गर्द्धिष्यन्-ष्यमाण: ।

## (१३२) गृ निगरणे तुदादि॰ पर॰ सक॰ सेट् ।

कर्त्तरि—गिरति, गिलति । गिरेत्, गिलेत् । अगारीत्, अगालीत् । जगार, जगाल । जगरतु:, जगलतु: । गरीता, गरिता ; गलीता, गलिता । गीर्य्यात् । गरीष्यति, गरिष्यति ; गलीष्यति, गलिष्यति । कर्म्मणि—गीर्य्यते । अगारि, अगालि ।

उत्—उद्वमने उद्गिरति । सम्—प्रतिज्ञायाम् आत्म॰ सङ्गिरते । अयं क्र्यादावपि शब्दे अक॰ । गृणाति । गृणीयात् । गृणातु । अगृणात् इत्यादि ।

कृत्सु—गरणीयम्, गलनीयम् । गिरणम्, गिलनम् । गर: । गारक: । गारी । गरिता, गरीता । गीर्ण: । गीर्णि: । गरितुम्, गरीतुम् । गरीत्वा, गरित्वा । गिरन् । गीर्य्यमाण: । गरीष्यन्, गरिष्यन्-ष्यमाण: । एवं लत्वपक्षे । सम्—सङ्गिरमाण: । सङ्गर: । उत्—उद्गार: ।

## (१३३) गै गाने भ्वादि॰ पर॰ सक॰ अनिट् ।

कर्त्तरि—गायति । गायेत् । गायतु । अगायत् । अगासीत् । जगौ । गाता । गेयात् । गास्यति । अगास्यत् ।

कर्म्मणि—गीयते । अगायि । सनि—जिगासति । यङि—जेगीयते ।

वि—निन्दायाम् विगायति। कर्म्मणि—विगीयते।

कृत्सु—गानम्। गायनः। गायकः। गाता। गीतम्। गीतिः। गाथकः। सङ्गीय। गेयम्। कर्त्तरि—गेयः। गायन्, गास्यन्। कर्म्मणि—गीयमानः, गास्यमानः।

## (१३४) ग्रन्थ् ग्रन्थने क्र्यादि० पर० सक० सेट्।

कर्त्तरि—ग्रथ्नाति। ग्रथ्नीयात्। ग्रथ्नातु। अग्रथ्नात्। अग्रन्थीत्। जग्रन्थ। जग्रथतुः, जग्रन्थतुः। जग्रन्थिथ, जग्रथिथ। ग्रन्थिष्यति। अग्रन्थिष्यत्। ग्रथ्यात्।

कर्म्मणि—ग्रथ्यते। अग्रन्थि। णिचि—ग्रन्थयति-ते। अज-ग्रन्थत्-त।

अयं भ्वादि० आत्म० ग्रन्थते। चुरादि० उभ० ग्रन्थयति-ते।

कृत्सु—ग्रन्थनीयम्। ग्रन्थनम्, ग्रथनम्। ग्रन्थः। ग्रन्थिः। ग्रन्थकः। ग्रन्थी। ग्रन्थिता। ग्रथितः। ग्रन्थितुम्। ग्रन्थित्वा। ग्रथित्वा। सङ्ग्रथ्य। ग्रन्थ्याम्। ग्रथ्नन्। ग्रथ्यमानः। ग्रन्थिष्यन्-ष्यमाणः।

## (१३५) ग्रस् भक्षणे भ्वादि० पक्षे चुरा० उभ० सक० सेट्।

कर्त्तरि—ग्रसति-ते, ग्रासयति-ते। अग्रसीत्, अग्रासीत्। अग्रसिष्ट। जग्रास, जग्रसे। ग्रसिता, ग्रासयिता। ग्रसितासे, ग्रासयितासे। कर्म्मणि—ग्रस्यते। अग्रासि। णिचि—ग्रासयति।

कृत्सु—ग्रसनीयम्, ग्रासनीयम्। ग्रसनम्, ग्रासनम्। ग्रासः। ग्रासकः। ग्रासी। ग्रस्तः, ग्रासितः। ग्रस्तिः। ग्रसितुम्। ग्रसितव्यम्। ग्रसित्वा, ग्रस्त्वा। सङ्ग्रस्य। ग्रास्यः। ग्रसन्। ग्रस्यमानः, ग्रसिष्यन्-ष्यमाणः।

## (१३६) ग्रह् ग्रहणे क्र्यादि० उभ० सक० सेट् ।

कर्त्तरि—गृह्णाति, गृह्णीते । गृह्णीयात्, गृह्णीत । गृह्णातु, गृह्णीताम । अगृह्णात्, अगृह्णीत । अग्रहीत्, अग्रहिष्ट । जग्राह, जगृहे ; जगृहतुः, जगृहाते ; जगृहुः, जगृहिरे । जग्रहिथ, जगृहिषे ; जग्राह, जगृहे । ग्रहीतासि-से । गृह्यात्, ग्रहीषीष्ट । ग्रहीष्यति-ते । अग्रहीष्यत्-त ।

कर्म्मणि—गृह्यते । अग्राहि । णिचि—ग्राहयति-ते । अजिग्रहत्-त । कर्म्मणि—ग्राह्यते । अग्राहि ।

सम्—संग्रहे संगृह्णाति । अव—वृष्टिप्रतिबन्धे अवगृह्णाति । नि—निग्रहे ( तिरस्कारे ) निगृह्णाति । वि—विग्रहे युद्धकरणे समस्तस्य पृथक्करणे च विगृह्णाति युध्यते व्यस्तं करोति वा । आ—आग्रहे आगृह्णाति निर्बध्नाति । प्रति—प्रतिग्रहे ( स्वीकारे ) प्रतिगृह्णाति । अनु—अनुग्रहे अनुगृह्णाति ।

कृत्सु—ग्रहणीयम् । ग्रहणम् । ग्रहः । ग्राहः । ग्राहकः । ग्राही । ग्रहीता । गृहीतः । गृहीतिः । ग्रहणम् । ग्रहीतव्यम् । गृहीत्वा । सङ्गृह्य । ग्राह्यः । गृह्यः । गृह्णन्, गृह्णानः । ग्रहीष्यमाणः ।

## (१३७) ग्लै विषादे भ्वादि० पर० अक० अनिट् ।

कर्त्तरि—ग्लायति । अग्लासीत् । जग्लौ । ग्लायात्, ग्लेयात् । भावे—ग्लायते । अग्लायि । णिचि—ग्लपयति-ते ।

कृत्सु—ग्लानीयम् ग्लानम् । ग्लायकः । ग्लायी । ग्लानः । ग्लानिः । ग्लातुम् । ग्लातव्यम् । ग्लात्वा । संग्लाय । ग्लेयम् । ग्लायन् । ग्लास्यन् ।

(१३८) घट् चेष्टायां भ्वादि० आत्म० अक० सेट्।

कर्त्तरि—घटते। घटेत। घटताम्। अघटत। अघटिष्ट। जघटे। घटितासे। घटिषीष्ट। घटिष्यते। अघटिष्यत। भावे—घट्यते। अघटि। णिचि—घटयति ते। अजीघटत्-त। सनि—जिघटिषते। यङि—जाघट्यते।

सम्—घटि योजने सङ्घटयति संयोजयति। वि—घटि वियोजने विघटयति वियोजयति।

कृत्सु—घटनीयम्। घटनम। घाटः। णिचः,—घटः, घटकः। घाटकः। घटिता। घटितः। घटना। क्तिन्नास्ति, अङ्—घटा। घटितुम। घटितव्यम। घटित्वा। सङ्घट्य। घट्यः। घटमानः। घटिष्यमाणः।

(१३९) घट्ट् चालने चुरादि० उभ० सक० सेट्।

कर्त्तरि—घट्टयति-ते। घट्टयेत्-त। घट्टयतु-ताम्। अघट्टयत्-त। अजघट्टत्-त। कर्मणि—घट्ट्यते। अघट्टि। अघट्टयिषाताम्, अघट्टिषाताम्।

कृत्सु—घट्टनीयम्। घट्टनम्। घट्टः। घट्टकः। घट्टी। घट्टयिता। घट्टितः। घट्टना। घट्टयितुम्। घट्टयितव्यम्। घट्टयित्वा। सङ्घट्ट्य। घट्टयन्-मानः। घट्टमानः। घट्टयिष्यन्-ष्यमाणः। कर्मणि—घट्टिष्यमाणय।

(१४०) घुष् शब्दे चुरादि० उभ० सक० सेट्।

कर्त्तरि—घोषयति-ते। घोषयेत्-त। घोषयतु-ताम्। अघो-

घयत्-त। अजूघुषत्-त। घोषयितासि-से। कर्म्मणि—घोष्यते। अघोषि। अघोषयिषाताम्, अघोषिषाताम्।

कृत्सु—घोषणीयम्। घोषणम्। घोषः। घोषकः। घोषी। घोषयिता। घोषितः। घोषणा। घोषयितुम्। घोषयितव्यम। घोषयित्वा। सङ्घोष्य। घोष्यः। घोषयन्-मानः, घोष्यमाणः। घोषयिष्यन्-ष्यमाणः।

## (१४१) घुष् रवे भ्वादि० पर० अक० सेट्।

कर्त्तरि—घोषति। लुङि—अघुषत्, अघोषीत्। णिचि—घोषयति-ते। अजूघुषत्-त।

कृत्सु—घोषिता। घुषितः। घुष्टः। घुष्टिः। घोषित्वा। सङ्घुष्य। घोष्यः। घोषन्। घोषिष्यन्।

## (१४२) घूर्ण् भ्रमणे तुदादि० उभ० अक० सेट्।

कर्त्तरि—घूर्णति-ते। घूर्णेत्-त। घूर्णतु-ताम्। अघूर्णत्-त। अघूर्णीत्, अघूर्णिष्ट। जुघूर्ण, जुघूर्णे। घूर्णितासि-से। घूर्ण्यात्, घूर्णिषीष्ट। घूर्णिष्यति-ते। अघूर्णिष्यत्-त। भावे—घूर्ण्यते। अघूर्णि। णिचि—घूर्णयति-ते। अजुघूर्णत्-त। सनि—जुघूर्णिषति-ते।

कृत्सु—घूर्णनीयम्। घूर्णनम्। घूर्णः। घूर्णकः। घूर्णी। घूर्णिता। घूर्णितः। घूर्णा। घूर्णितुम्। घूर्णितव्यम्। घूर्णित्वा। सङ्घूर्ण्य। घूर्ण्यम्। घूर्णन्-मानः। घूर्णिष्यन्-ष्यमाणः।

## (१४३) घृष् घर्षणे भ्वादि० पर० सक० सेट्।

कर्त्तरि—घर्षति। घर्षेत्। अघर्षीत्। जघर्ष। घर्षिता। घृष्यात्। घर्षिष्यति। अघर्षिष्यत्। कर्म्मणि—घृष्यते।

अघर्षत्। णिचि—घर्षयति-ते। अजीघर्षत्-त, अजघर्षत्-त। सनि—जिघर्षिषति।

कृत्सु—घर्षणीयम्। घर्षणम्। घर्षः। घर्षकः। घर्षी। घर्षिता। घृष्टः। घृष्टिः। घर्षितुम्। घर्षितव्यम्। घर्षित्वा, घृष्ट्वा। सङ्घृष्य। घृष्यः। घर्षन्। घृष्यमाणः। घर्षिष्यन्-ष्यमाणः।

## (१४४) घ्रा गन्धोपादाने भ्वादि० अक० ग्रहणमात्रे सक० पर० अनिट्।

कर्त्तरि—जिघ्रति। जिघ्रेत्। जिघ्रतु। अजिघ्रत्। अघ्रात्, अघ्रासीत्। जघ्रौ। जघ्रिथ, जघ्राथ। जघ्रिव। घ्राता। घ्रायात्, घ्रेयात्। घ्रास्यति। अघ्रास्यत्। भावे कर्म्मणि च,—घ्रायते। अघ्रायि। णिचि—घ्रापयति-ते। अजिघ्रपत्-त। सनि—जिघ्रासति। यङि—जेघ्रीयते।

कृत्सु—घ्राणीयम्। घ्राणम्। जिघ्रः। व्याघ्रः। घ्रायकः। घ्रायी। घ्राता। घ्राणः, घ्रातः। घ्रातिः। घ्रातुम्। घ्रातव्यम्। घ्रात्वा, सङ्घ्राय। घ्रेयः। जिघ्रन्। घ्रास्यन्।

## (१४५) चकास् दीप्तौ अदादि० पर० अक० सेट्।

कर्त्तरि—चकास्ति, चकास्तः, चकासति। अचकासीत्। चकासाम-बभूव-आस-चकार। भावे—चकास्यते। णिचि—चकासयति-ते। अचीचकासत्-त। अचचकासत्-त।

कृत्सु—चकासनीयम्। चकासनम्। चकासः। चकासकः। चकासी। चकासिता। चकासितः। चकासितुम्। चकासित्वा। सञ्चकास्य। चकास्यम्। चकासत्। चकासिष्यत्।

## (१४६) चक्ष् कथने अदादि० आत्म० सक० सेट्।

कर्त्तरि—चष्टे, प्रायेणायमाङ्पूर्व्वकः।—आचष्टे। चक्षाते, चक्षते। चक्षे, चक्षाथे, चड्ढे। चक्षे, चक्ष्वहे, चक्ष्महे। चक्षीत। चष्टाम्। अचष्ट। ख्या-आदेशे ३भ०। अख्यत्, अख्यत। चख्यौ, चख्ये, चचक्षे। ख्यातासे। ख्यायात्, ख्येयात्। ख्यासीष्ट। ख्यास्यति ते। सनि—चिख्यासति ते। णिचि—ख्यापयति-ते। अचिख्यपत्-त। कर्म्मणि—ख्यायते।

त्यागार्थे तु न ख्यादेशः, समचक्षिष्ट। वि-आ—विवरणे व्याचष्टे विवृणोति।

कृत्सु—ख्यानीयम्। ख्यानम्। ख्यायकः। विचक्षणः। ख्यायी। चक्षुः। ख्याता। ख्यातः। ख्यातिः। ख्यातुम्। ख्यातव्यम्। ख्यात्वा। संख्याय। आख्येयम्। चक्षाणः। ख्यास्यन्-स्यमानः। वि आ—व्याख्या।

## (१४७) चम् अदने भ्वादि० पर० सक० सेट्।

कर्त्तरि—चमति। विचमति। प्रायेणायमाङ्पूर्व्वकः,—आचामति। अचमीत्। चचाम। चमिता। चम्यात्। चमिष्यति।

कर्म्मणि—चम्यते। अचमि। णिचि—चमयति। अचीचमत्। सनि—चिचमिषति।

कृत्सु—चमनीयम्। आचमनम्। आचमः। आचामः। चमकः। आचामकः। चमी। आचामी। चमिता। चान्तः। चान्तिः। चमितुम्। चमित्वा, चान्त्वा।

आचम्य। चम्यम्। चमन्। आचामत्। आचम्यमानः।
आचमिष्यन्-ष्यमाणः।

(१४८) चर् गमने भ्वादि० पर० सक० सेट्।

कर्त्तरि—चरति। चरेत्। अचारीत्। चरिता। चरिष्यति।
कर्म्मणि—चर्य्यते। अचारि। णिचि—चारयति-ते।
अचीचरत्-त। ण्यन्तकर्म्मणि—चार्य्यते। अचारि।
अचारयिषाताम्। यङि—चञ्चूर्य्यते।

सम्—संक्रमणे सञ्चरति। उत्-उदये आत्म०—उच्चरते।

कृत्सु—चरणीयम्। चरणम्। चरः। गोचरः। खचरः। जल-
चरः। सञ्चारः। चारः। प्रचारः। चारकः। चारी।
चरिष्णुः। चरित्रम्। चरिता। चरितः। चूर्त्तिः। चरि-
तुम्। चरित्वा। सञ्चर्य्य। कर्म्मणि—चर्य्यम्। भावे—
चर्य्या। चरन्। चर्य्यमाणः। चरिष्यन्-ष्यमाणः।

(१४९) चर्च्च् अध्ययने चुरा० उभ० सक० सेट्।

कर्त्तरि—चर्च्चयति-ते। अचिचर्च्चत्-त। कर्म्मणि—चर्च्च्यते।
अचर्च्चि।

कृत्सु—चर्च्चनीयम्। चर्च्चनम्। चर्च्चकः। चर्च्चयिता। चर्च्चिता।
चर्च्चितः। चर्च्चना। चर्च्चा। चर्च्चयितुम्। चर्च्चयितव्यम्।
चर्च्चयित्वा। सञ्चर्च्य। चर्च्यः। चर्च्चयन्-मानः, चर्च्यमानः।
चर्च्चयिष्यन्-ष्यमाणः। कर्म्मणि—चर्च्चिष्यमाणोऽपि।

(१५०) चर्व् भक्षणे विकल्पचुरादि० उभ०
पक्षे भ्वादि० पर० सक० सेट्।

कर्त्तरि—चर्वयति ते। चर्वति। अचचर्वत्-त। अचर्वीत्।
कर्म्मणि—चर्व्यते। अचर्वि।

कृत्सु—चर्वणीयम्। चर्वणम्। चर्वकः। चर्वी। चर्वयिता। चर्विता। चर्वितः। चर्वणा। चर्वा। चर्वयितुम्, चर्वितुम्। चर्वयित्वा, चर्वित्वा। सञ्चर्व्य। चर्व्यम्। चर्वयन्-माणः। चर्वन्। चर्व्यमाणः। चर्वयिष्यन्-ष्यमाणः। चर्विष्यन्-ष्यमाणः। कर्मणि—चर्विष्यमाणोऽपि।

## (१५१) चल् चलने भ्वादि० पर० अक० सेट्।

कर्त्तरि—चलति। अचालीत्। चलिता। चल्यात्। भावे—चल्यते। अचालि। णिचि—चालयति। अचीचलत्।

कृत्सु—चलनीयम्। चलनम्। चलः। चालः। चालकः। चाली। चलितः। चलितुम्। चलितव्यम्। चलित्वा। सञ्चल्य। चाल्यम्। चलन्। चलिष्यन्।

## (१५२) चि चयने स्वादि० उभ० द्विक० अनिट्।

कर्त्तरि—चिनोति, चिनुते। चिनुयात्, चिन्वीत। चिनोतु, चिनुताम्। अचिनोत्, अचिनुत। अचैषीत्, अचेष्ट; अचैष्टाम्। चिकाय, चिचाय। चिक्ये, चिच्ये; चिक्यतुः, चिच्यतुः। चेतासि-से। चीयात्, चेषीष्ट। चेष्यति-ते। अचेष्यत्-त। कर्म्मणि—चीयते। अचायि। णिचि—चापयति-ते; चाययति-ते। चपयतीत्येके। अचीचपत्। सनि—चिकीषति-ते। चिचीषति-ते।

उप—उपचये वर्द्धने उपचिनोति। अप—अपचये (हीनकरणे) अपचिनोति। कर्म्मकर्त्तरि—उपचीयते, अपचीयते। सम्+उत्, अभि+उत्—समुच्चये समुच्चिनोति अभ्युच्चिनोति।

कृत्सु—चयनीयम्। चयनम्। चयः। चायः। चायकः। चायी। चेता। चितः। चितिः। चेतुम्। चेतव्यम्।

अग्निचित्। चित्वा। संचित्य। चयम्। चिन्वन्। चिन्वानः। चीयमानः। चेष्यन्-ष्यमाणः। चायिष्यमाणः, चेष्यमाणः।

## (१५३) चित् ज्ञाने भ्वादि० पर० सक० सेट्।

कर्त्तरि—चेतति। चेतेत्। चेततु। अचेतत्। अचेतीत्। चिचेत। कर्म्मणि—चित्यते। अचेति। णिचि—चेतयति-ते। अचीचितत्-त।

कृत्सु—चेतनीयम्। चेतनम्। चेतः। चेतकः। असू—चेतः। चेती। चेतिता। चितः। चित्तः। णिजन्तस्य चेतना। चेतितुम्। चेतितव्यम्। चेतित्वा। सञ्चित्य। चित्यम्। चेतन्। चित्यमानः। चेतिष्यन्-ष्यमाणः।

## (१५४) चिन्त् चिन्तने विकल्पचुरादि० उभ० सक० सेट्।

कर्त्तरि—चिन्तयति-ते, चिन्तति। चिन्तयेत्-त, चिन्तेत। चिन्तयतु-ताम्, चिन्ततु। अचिन्तयत्-त, अचिन्तत्। चिन्तयाम्-बभूव-आस-चकार-चक्रे। अचिचिन्तत्-त, अचिन्तीत्। चिन्तयिष्यति-ते, चिन्तिष्यति। चिन्तयिता, चिन्तिता। चिन्त्यात्, चिन्तयिषीष्ट। कर्म्मणि—चिन्त्यते। अचिन्ति। अचिन्तयिषाताम्, अचिन्तिषाताम्। सनि—चिचिन्तयिषति-ते, चिचिन्तिषति।

कृत्सु—चिन्तनीयम्। चिन्तनम्। चिन्तकः। चिन्ती। चिन्तयिता। चिन्तितः। चिन्तना। चिन्ता। चिन्तयितुम्। चिन्तयितव्यम्। चिन्तयित्वा। संचिन्त्य। चिन्त्यम्। चिन्तयन्-मानः, चिन्त्यमानः। चिन्तयिष्यन्-ष्यमाणः। कर्म्मणि—चिन्तिष्यमाणश्च।

## (१५५) चुम्ब् चुम्बने विकल्पचुरादि० उभ० सक० पक्षे भ्वादि० पर० सेट् ।

कर्त्तरि—चुम्बयति ते, चुम्बति । चुम्बयेत्-त, चुम्बेत । चुम्बयतु-ताम्, चुम्बतु । अचुचुम्बत्-त, अचुम्बीत् । चुम्बयाम्-बभूव-आस चकार-चक्रे । चुचुम्ब । चुम्बयिता, चुम्बिता । चुम्ब्यात् । चुम्बयिषीष्ट । कर्म्मणि—चुम्ब्यते । अचुम्बि ।

कृत्सु—चुम्बनीयम् । चुम्बनम् । चुम्बकः । चुम्बी । चुम्बयिता, चुम्बिता । चुम्बितः । चुम्बना, चुम्बा । चुम्बयितुम्, चुम्बितुम् । चुम्बयित्वा, चुम्बित्वा । सञ्चुम्ब्य । चुम्ब्यम् । चुम्बयन्-मानः । चुम्ब्यमानः । चुम्बिष्यन् । चुम्बयिष्यन्-ष्यमाणः । कर्म्मणि—चुम्बिष्यमाणोऽपि ।

## (१५६) चुर् स्तेये विकल्पचुरादि० उभ० पक्षे भ्वादि० पर० सक० सेट् ।

कर्त्तरि—चोरयति-ते, चोरति । अचूचुरत्-त, अचोरीत् । कर्म्मणि—चोर्य्यते, चुर्य्यते । अचोरि ; अचोरयिषाताम्, अचोरिषाताम् ।

कृत्सु—चोरणीयम् । चोरणम् । चोरः । चोरकः । चोरी । चोरयिता, चोरिता । चोरितः । चोरणा । चूर्त्तिः । चोरयित्वा, चोरित्वा । सञ्चोर्य्य, सञ्चुर्य्य । चार्य्यः । चोरयन् मानः । चोर्य्यमाणः । चोर(य)न् । चोरिष्यन् । चोरयिष्यन्-ष्यमाणः । कर्म्मणि—चोरिष्यमाणोऽपि ।

## (१५७) चूर्ण् प्रेरणे चुरादि० उभ० सक० सेट् ।

कर्त्तरि—चूर्णयति-ते । अचुचूर्णत्-त । कर्म्मणि—चूर्ण्यते । अचूर्णि ; अचूर्णयिषाताम्, अचूर्णिषाताम् ।

कृत्सु—चूर्णनीयम्। चूर्णनम्। चूर्णकः। चूर्णी। चूर्णयिता। चूर्णितः। चूर्णना। चूर्णयितुम्। चूर्णयितव्यम्। चूर्णयित्वा। सञ्चूर्ण्य। चूर्ण्यः। चूर्णय-न्-मानः। चूर्ण्यमानः। चूर्णयिष्यन्-ष्यमाणः। कर्मणि—चूर्णिष्यमाणोऽपि।

## (१५८) चेष्ट् चेष्टने भ्वादि० आत्म० अक० सेट्।

कर्त्तरि—चेष्टते। अचेष्टिष्ट। चिचेष्टे। चेष्टितासे। चेष्टिषीष्ट। भावे—चेष्ट्यते। अचेष्टि। णिचि—चेष्टयति। अचिचेष्टत्, अचचेष्टत। कर्म्मणि—चेष्ट्यते, अचेष्टि।

कृत्सु—चेष्टनीयम्। चेष्टनम्। चेष्टकः। चेष्टी। चेष्टितः। चेष्टा। चेष्टितुम्। चेष्टितव्यम्। चेष्टित्वा। सञ्चेष्ट्य। चेष्ट्यम्। चेष्टमानः, चेष्टिष्यमाणः।

## (१५९) च्यु गतौ भ्वादि० आत्म० सक० अनिट्।

कर्त्तरि—च्यवते। अच्योविष्ट, अच्योष्ट। चुच्युवे। च्योतासे। च्योषीष्ट। च्योष्यते। कर्म्मणि—च्यूयते। अच्यावि। णिचि—च्यावयति-ते। अचुच्यवत्-त।

कृत्सु—च्यवनीयम्। च्यवनम्। च्यवनः। च्यवः। च्यावकः। च्यावी। च्योता। च्युतः। च्युतिः। च्योतुम्। च्योतव्यम्। च्युत्वा। सञ्च्युत्य। च्यव्यम्। आवश्यकार्थे तु च्याव्यम्। च्यवमानः। च्यूयमानः। च्योष्यमाणः। कर्म्मणि—चाविष्यमाणोऽपि।

## (१६०) च्युत् क्षरणे भ्वादि० पर० अक० सेट्।

कर्त्तरि—च्योतति। अच्युतत्, अच्योतीत्। चुच्योत। च्योतिता। भावे—च्युत्यते। अच्योति। णिचि—च्योतयति-ते। अचुच्युतत्-त।

कृत्सु—द्योतनीयम । द्योतनम् । द्योतः । द्योतकः । द्योती । द्योतिता । द्योतितम्, द्युतितम् । द्योतितुम् । द्योतितव्यम् । द्योतित्वा । सद्युत्य । द्योत्यम् । द्योतन् । द्योतिष्यन् ।

## (१६१) छद् संवरणे विकल्पचुरादि० उभ० पक्षे भ्वादि० सक० सेट् ।

कर्त्तरि—छादयति-ते । छदति ते । अचिच्छदत-त । अच्छादीत्, अच्छदीत्, अच्छदिष्ट । कर्म्मणि—छाद्यते । अच्छादि ।

कृत्सु—छादनीयम, छदनीयम् । छादनम्, छदनम् । छादः, छदः । उरश्छदः । छादकः । छादी । इम्—छदिः । छादयिता, छदिता । छादितः, छन्नः । छादना, छत्तिः । छादयितुम्, छदितुम् । छादयितव्यम् छदितव्यम् । छादयित्वा, छदित्वा । संछाद्य, संछद्य । छाद्यम्, छद्यम् । छादयन्-मानः । छदन्, छदमानः । छाद्यमानः, छद्यमानः । छादयिष्यन्-ष्यमाणः, छदिष्यन्-ष्यमाणः ।

## (१६२) छर्द् वमने चुरादि० उभ० सक० सेट् ।

कर्त्तरि—छर्दयति-ते । अचच्छर्दत्-त । कर्म्मणि—छर्द्यते । अच्छर्दि ।

कृत्सु—छर्दनीयम् । छर्दनम् । छर्दः । छर्दकः । छर्दी । छर्दिता । छर्दितः । छर्दितुम् । छर्दितव्यम् । छर्दित्वा । सञ्छर्द्य । छर्द्यः । छर्दयन्-मानः । छर्द्यमानः । छर्दयिष्यन्-ष्यमाणः । कर्म्मणि—छर्दिष्यमाणश्च ।

## (१६३) छिद् छेदने रुधादि० उभ० सक० अनिट् ।

कर्त्तरि—छिनत्ति, छिन्ते । छिन्तः । छिनत्सि, छिन्त्से । छिन्द्यात्,

छिन्दीत। छिनत्तु, छिनदाम्। अच्छिनत्, अच्छिन्त।
अच्छिदत्, अच्छैत्सीत्, अच्छित्त। चिच्छेद, चिच्छिदे।
छेत्तासि-से। छिद्यात्, छित्सीष्ट। छेत्स्यति-ते। कर्म्मणि—
छिद्यते। अच्छेदि। णिचि—छेदयति-ते। अचिच्छिदत्-त।
वि—वियोगे विच्छिनत्ति वियुनक्ति। उत्—नाशने
उच्छिनत्ति नाशयति।

कृत्सु—छेदनीयम्। छेदनम्। छेदः। छेदकः। छेदी। छेत्ता।
छिन्नः। छित्तिः। छेत्तुम्। छेत्तव्यम्। छित्त्वा। सञ्छिद्य।
छेद्यः। छिन्दन्, छिन्दानः, छिद्यमानः। छेत्स्यन्,
छेत्स्यमानः। वि—विच्छेदः। विच्छित्तिः। उत्—
उच्छेदः।

## (१६४) जक्ष् भक्षणे अदादि॰ पर॰ सक॰ सेट्।

कर्त्तरि—जक्षिति, जक्षितः, जक्षति। जक्षिषि, जक्षिथः,
जक्षिथ। जक्षिमि, जक्षिवः, जक्षिमः। जक्ष्यात्। जक्षितु।
अजक्षीत्, अजक्षत्। अजक्षुः, अजक्षीः। जजक्ष।
कर्म्मणि—जक्ष्यते। अजक्षि। णिचि—जक्षयति।
अजजक्षत्।

कृत्सु—जक्षणीयम्। जक्षणम्। जक्षः। जक्षकः। जक्षी।
जक्षिता। जक्षितः। जग्धा। जक्षितुम्। जक्षितव्यम्।
जक्षित्वा। सञ्जक्ष्य। जक्ष्यः। जक्षत्। जक्ष्यमाणः।
जक्षिष्यन् ष्यमाणः।

## (१६५) जन् जनने दिवा॰ आत्म॰ अक॰ सेट्।

कर्त्तरि—जायते। जायेत। जायताम्। अजायत। अजनि,
अजनिष्ट; अजनिषाताम्। जज्ञे। जनितासे। जनिषीष्ट।
भावे—जायते, जन्यते। अजनि। णिचि—जनयति।

अजोजनत्। ण्यन्तकर्म्मणि—जन्यते। अजनि, अजानि। अजनिषाताम्, अजानिषाताम्, अजनयिषाताम्।

कृत्सु—जननीयम्, जननम्। जनः। अग्रजः। जनकः। इष्णु—प्रजनिष्णुः। जनिता। जातः। जातिः। जनितुम्। जनितव्यम्। जनित्वा। सञ्जाय, सञ्जन्य। जन्यम। जायमानः, जन्यमानः। जनिष्यमाणः। क्वसौ—जज्ञिवान्।

## (१६६) जप् जपने भ्वादि० पर० सक० सेट्।

कर्त्तरि—जपति। अजपत्। अजापीत्, अजपीत्। जजाप। कर्म्मणि—जप्यते। अजापि। णिचि—जापयति-ते। अजीजपत्-त। ण्यन्तकर्म्मणि—जाप्यते। अजापि। अजापिषाताम्, अजापयिषाताम्। उप-भेदने—उपजपति, भिनत्ति।

कृत्सु—जपनीयम्। जपनम। जपः। जापः। जापकः। जापी। जपिता। जप्तः। जप्तिः। जपितुम्। जपितव्यम्। जपित्वा, जप्त्वा। प्रजप्य। जप्यम्। जपन्। जप्यमानः। जपिष्यन् ष्यमाणः। उप—उपजापः।

## (१६७) जल्प् कथायां (परमतनिराकरणपूर्वक-स्वमतस्थापने) भ्वादि० पर० सक० सेट्।

कर्त्तरि—जल्पति। अजल्पीत्। जजल्प। जल्प्यात्। कर्म्मणि—जल्प्यते। अजल्पि। णिचि—जल्पयति-ते। अजजल्पत्-त। ण्यन्तकर्म्मणि—जल्प्यते। अजल्पि, अजल्पिषाताम्, अजल्पयिषाताम्।

कृत्सु—जल्पनीयम्। जल्पनम्। जल्पः। जल्पकः। जल्पी। जल्पिता; जल्पितः। जल्पा। जल्पितुम्। जल्पितव्यम्।

जल्पित्वा । सञ्जल्प्य । जल्प्यम् । जल्पन् । जल्प्यमानः । जल्पिष्यन्-ष्यमाणः ।

## (१६८) जस् बधे चुरादि० उभ० सक० सेट् ।

कर्त्तरि—(प्रायेण उत्पूर्वकः) उज्जासयति-ते । उदजीजसत्-त ।
कर्म्मणि—उज्जास्यते । उदजासि ।

कृत्सु—उज्जासनीयम् । जासनम् । जासः । जासकः । जासी । जासयिता । जासितः । जासना । जासयितुम् । जासयितव्यम् । जासयित्वा । सञ्जास्य । जास्यम् । जासयन्-मानः । जास्यमानः । जासयिष्यन्-ष्यमाणः । कर्म्मणि—जासिष्यमाणश्च ।

## (१६९) जागृ जागरणे अदादि० पर० अक० सेट् ।

कर्त्तरि—जागर्त्ति, जागृतः, जाग्रति । जागृयात् । जागर्त्तु; जागृहि । अजागः; अजागरुः । अजागरीत् । जागराम्-बभूव-आस-चकार; जजागार । आमभावपक्षे—जजागरतुः । जागरिता । भावे—जागर्य्यते । अजागरि । णिचि—जागरयति-ते, अजजागरत्-त । ण्यन्तकर्म्मणि—जागर्य्यते । अजागरि ।

कृत्सु—जागरणीयम् । जागरणम् । जागरः । जागरकः । जागरूकः । जागरी । जागरिता । जागरितः । जागर्य्या । जागरितुम् । जागरितव्यम् । जागरित्वा । प्रजागर्य्य । जागर्य्यम् । जाग्रत् । जागरिष्यन् ।

## (१७०) जि जये भ्वादि० पर० सक० अनिट् ।

कर्त्तरि—जयति । जयेत् । जयतु, जयतात् । अजयत् ।

अजैषीत्। जिगाय, जिग्यतुः। जिगयिथ, जिगेथ। जिग्यिव, जिग्यिम। जेता। जीयात्। जेष्यति। कर्म्मणि—जीयते। अजायि। अजायिषाताम्, अजेषाताम्। जिग्ये। णिचि—जापयति-ते। अजीजपत्-त। सनि—जिगीषति।

वि—परा-आत्मने० विजयते। पराजयते।

कृत्सु—जयनीयम्। जयनम्। जयः। जयी। जेता। जितः। जितः। जेतुम्। जेतव्यम्। जित्वा। विजित्य। जेयः। जयन्। जीयमानः। जेष्यन्-ष्यमाणः। क्विप—सर्व्वजित्। ष्णुक्—जिष्णुः।

## (१७१) जीव् प्राणने भ्वादि० पर० अक० सेट्।

कर्त्तरि—जीवति। जीवेत्। जीवतु, जीवतात्। अजीवत्। अजीवीत्। जिजीव। जीविष्यति। जीविता। अजीविष्यत्। जीव्यात्। भावे—जीव्यते। अजीवि। णिचि—जीवयति-ते। अजीजिवत्-त, अजिजीवत्-त।

उप—आश्रये उपजीवति आश्रयति।

कृत्सु—जीवनीयम्। जीवनम्। जीवः। जीवकः। जीवी। जीविता। जीवितः। जीवितुम्। जीवितव्यम्। जीवित्वा। सञ्जीव्य। जीव्यः। जीवन्। जीविष्यन्। उप—उपजीवी। उपजीव्यः।

## (१७२) जुष् प्रीतिसेवनयोः तुदादि० आत्म० सक० सेट्।

कर्त्तरि—जुषते। अजोषिष्ट। भावे—जुष्यते। अजोषि। णिचि—जोषयति-ते। अजूजुषत्-त।

कृत्सु—जोषणीयम्। जोषणम्। जोषः। जोषकः। जोषी। जोषिता। जुष्टः। जुष्टिः। जोषितुम्। जोषितव्यम्।

जोषित्वा। सञ्जुष्य। जुष्यम्। जुषमाणः। जोषिष्यमाणः। क्विपि—जुट्।

## (१७३) जुष् तृप्तौ विकल्पचुरादि० उभ० पक्षे भ्वादि० पर० सेट्।

कर्त्तरि—जोषयति-ते, जोषति। अजूजुषत्-त। अजोषीत्। अयं दीर्घोपधोऽपि उभ०। जूषति-ते। अजूषीत्, अजूषिष्ट।

कृत्सु—जोषयिता। जोषितः। जोषणा। जोषयितुम। जोषयितव्यम। जोषयित्वा। सञ्जोष्य। जोष्यः, पक्षे जुष्यः। जोषयन्-माणः। जोषयिष्यन्-ष्यमाणः। अन्यत् तुदादिगणीयवत्।

## (१७४) जृम्भ् जृम्भणे भ्वादि० आत्म० अक० सेट्।

कर्त्तरि—जृम्भते। अजृम्भिष्ट। जजृम्भे। भावे—जृम्भ्यते। अजृम्भि। णिचि—जृम्भयति-ते। यङि—जञ्जृम्भ्यते।

कृत्सु—जृम्भणीयम। जृम्भणम्। जृम्भकः। जृम्भी। जृम्भिता। जृम्भितः। जृम्भा। जृम्भितुम। जृम्भितव्यम। जृम्भित्वा। संजृम्भ्य। जृम्भ्यम्। जृम्भमाणः। जृम्भिष्यमाणः।

## (१७५) जॄ वयोहानौ विकल्पचुरादि० उभ० पक्षे क्र्यादि० पर० अक० सेट्।

कर्त्तरि—जारयति-ते, जरति, क्र्यादिपक्षे जृणाति। अजीजरत्-त। अजारीत्। भ्वादिपक्षे जजार, जजरतुः। जार्य्यात, जारयिषीष्ट। जीर्य्यात्। जारयिष्यति-ते। जरीष्यति, जरिष्यति।

केचित्तु विकल्पेनेमं मितमाहुस्तन्मते जरयतीत्यादिरपि।

कृत्सु—जारणीयम्, जरणीयम्। जारः। जरः। जारकः। जारी। जारयिता, जरीता, जरिता। जारितः, जीर्णः। जारणा। जीर्त्तिः। जारयितुम्, जरीतुम्, जरितुम्। जारयितव्यम्, जरीतव्यम्, जरितव्यम्। जारयित्वा, जरीत्वा, जरित्वा। सञ्जार्य्य, सञ्जीर्य्य। जार्य्यम्। जारयन्, माणः। जृणन्। जारयिष्यन्, जरीष्यन्, जरिष्यन्।

## (१७६) जॄ जरायां दिवा० पर० अक० सेट्।

कर्त्तरि—जीर्य्यति। अजरत्, अजारीत्। जजार, जजरतुः। जरीता, जरिता। णिचि—जरयति-ते

कृत्सु—जरणीयम्। जरणम्। जरः। जारकः। जारी। जरीता, जरिता। जीर्णः। जरा। जरीतुम्, जरितुम्। जरीतव्यम्, जरितव्यम्। जीर्त्वा। सञ्जीर्य्य। जार्य्यम् अजर्य्यम् सङ्गतम्। जीर्य्यन्। जरीष्यन्, जरिष्यन्।

## (१७७) ज्ञा बोधने क्र्यादि० पर० सक० अनिट्।

कर्त्तरि—जानाति। जानीयात्। जानातु। अजानात्। अज्ञासीत्। जज्ञौ। ज्ञायात्, ज्ञेयात्। ज्ञास्यति। कर्म्मणि—ज्ञायते। अज्ञायि। णिचि—ज्ञापयति-ते। अजिज्ञपत्-त। सनि—आत्मनेपदी, जिज्ञासते। प्रतिज्ञाद्यर्थभेदे च आत्मनेपदी, प्रति—प्रतिजानीते। अप—अपजानीते, निह्नुते इत्यर्थः। सञ्जानीते प्रवर्त्तते इत्यर्थः।

कृत्सु—ज्ञानीयम्। ज्ञानम्। ज्ञः। विज्ञः, प्रज्ञः, अभिज्ञः। संज्ञा, प्रज्ञा। ज्ञायकः। ज्ञायी। ज्ञाता। ज्ञातः। ज्ञातिः। णिजन्तस्य—ज्ञापना। ज्ञातुम्। ज्ञातव्यम्। ज्ञात्वा। संज्ञाय। ज्ञेयम्। जानन्। प्रतिजानानः। ज्ञायमानः। ज्ञास्यन्। ज्ञास्यमानः। क्वसौ—जज्ञिवान्।

(१७८) ज्ञा मारणे तोषणे शावणे च चुरादि० उभ० सक० सेट्।

कर्त्तरि—ज्ञपयति-ते। अजिज्ञपत-त। व्यजिज्ञपत्-त। कर्म्मणि—ज्ञप्यते। अज्ञपि, अज्ञापि। सनि—ज्ञीप्सति। नियोगार्थे तु आज्ञापयतीत्यादौ न ह्रस्वः।

कृत्सु—ज्ञपनीयम्। ज्ञपनम्। ज्ञपकः। ज्ञपी। ज्ञपयिता। ज्ञप्तः। आज्ञप्तः। ज्ञप्तिः। विज्ञप्तिः (आवेदना), ज्ञपयितुम्। ज्ञपयितव्यम्। ज्ञपयित्वा। संज्ञप्य। ज्ञप्यम्। ज्ञापयन्-मानः। ज्ञप्यमानः। ज्ञपयिष्यन्-ष्यमाणः।

(१७९) ज्ञा प्रेरणे चुरादि० उभ० सक० सेट्।

अयं प्रायेण आपूर्व्वकः। कर्त्तरि—आज्ञापयति-ते। आज्ञापयेत्-त। आज्ञापयतु ताम्। आज्ञापयत्-त। आज्ञापयाञ्चकार-चक्रे। आजिज्ञपत्-त। आज्ञापयिष्यति-ते। आज्ञापयिता। आज्ञापयिष्यत्-त। कर्म्मणि—आज्ञाप्यते। आज्ञापि।

(१८०) ज्या जरायां क्र्यादि० पर० अक० अनिट्।

कर्त्तरि—जिनाति, जिनीतः, जिनन्ति। जिनीयात्। अज्यासीत्। जिज्यौ. जिज्यतुः। जीयात्। ज्यास्यति। भावे—जीयते। अज्यायि। णिचि—ज्यापयति-ते। अजिज्यपत्-त।

कृत्सु—ज्यानीयम्। ज्यानम्। ज्यायकः। ज्यायी। ज्याता। जिनः। ज्यानिः। ज्यातुम्। ज्यातव्यम्। जित्वा। संज्याय। ज्येयम्। जिनन्। ज्यास्यन्।

(१८१) ज्वर् रोगे भ्वादि० पर० अक० सेट्।

कर्त्तरि—ज्वरति। अज्वारीत्। णिचि—ज्वरयति-ते। अजिज्वरत्-त।

कृत्सु—ज्वरणीयम् । ज्वरणम् । ज्वारः । ज्वारकः । ज्वारी । ज्वरिता । ज्वरितः । ज्वरा । ज्वरितुम् । ज्वरितव्यम् । ज्वरित्वा । संज्वर्य्य । ज्वर्य्यम् । ज्वरन् । ज्वरिष्यन् । क्विपि—जूः ।

## (१८२) ज्वल् दीप्तौ भ्वादि० पर० अक० सेट् ।

कर्त्तरि—ज्वलति । अज्वालीत् । भावे—ज्वल्यते । अज्वालि । णिचि—ज्वलयति-ते ज्वालयति-ते । अजिज्वलत्-त । उपसर्गे तु प्रज्वलयति । क्विपं हित्वा अन्यत्र ज्वरवत्, रकारस्थाने लकारमात्रभेदः ।

## (१८३) टङ्क् विदारणे चुरादि० उभ० सक० सेट् ।

कर्त्तरि—टङ्कयति-ते । अटटङ्कत्-त । कर्म्मणि—टङ्क्यते । अटङ्कि । उत्—उल्लेखे उट्टङ्कयति उल्लिखति ।

कृत्सु—टङ्कनीयम् । टङ्कनम् । टङ्कः । टङ्ककः । टङ्की । टाङ्कता । टङ्कितः । टङ्का । टङ्कना । टङ्कयितुम् । टङ्कयितव्यम् । टङ्कयित्वा । उट्टङ्क्य । टङ्क्यम् । टङ्कयन्-मानः । टङ्क्यमानः । टङ्कयिष्यन् ष्यमाणः । उत्—उट्टाङ्कतः ।

## (१८४) डी नभोगतौ भ्वादिः दिवादिश्च आत्म० अक० सेट् ।

कर्त्तरि—डयते, डीयते । डयेत, डीयेत । डयताम्, डीयताम् । अडयत, अडीयत । डिड्ये । अडयिष्ट । डयिष्यते । अडयिष्यत । डयिषीष्ट । भावे—डीयते ।

कृत्सु—डयनीयम् । डयनम् । डयः । डायकः । डायी । डयितः । डीनः । डयितुम् । डयितव्यम् । डयित्वा । सण्डीय । डेयम् । डयमानः, डयिष्यमाणः ।

## (१८५) ढौकृ गतौ भ्वादि० आत्म० सक० सेट्।

कर्त्तरि—ढौकते। अढौकिष्ट। डुढौके। ढौकिता। कर्म्मणि—ढौक्यते। अढौकि। णिचि—ढौकयति-ते। अडुढौकत्-त। सनि—डुढौकिषते।

कृत्सु—ढौकनीयम। ढौकनम्। ढौककः। ढौकी। ढौकिता। ढौकितः। ढौका। ढौकितुम्। ढौकितव्यम्। ढौकित्वा। संढौक्य। ढौक्यम्। ढौकमानः। ढौक्यमानः। ढौकिष्यमाणः।

## (१८६) तंस भूषणे विकल्पचुरादि० उभ० पक्षे भ्वादि० सक० सेट्।

कर्त्तरि--तंसयति-ते। तंसति। अततंसत्। अतंसीत्। कर्म्मणि—तंस्यते। अतंसि।

कृत्सु—तंसनीयम्। तंसनम्। तंसः। तंसकः। तंसी। तंसयिता। तंसिता। तंसा। तंसना। तंसयितुम्, तंसितुम। तंसयितव्यम् तंसितव्यम। तंसयित्वा, तंसित्वा। अवतंस्य। तंस्यम। तंसयन्-मानः। तंस्यमानः। तंसयिष्यन्-ष्यमाणः। तंसिष्यमाणः। अवतंसः, वतंसः।

## (१८७) तक्ष तनूकरणे भ्वादिः स्वादिश्च पर० सक० वेट्।

कर्त्तरि--तक्ष्णोति, तक्ष्णोति। प्रणितक्षति। अकृत्स्नार्थे—तक्षति, तक्षतः, तक्ष्णुतः। तक्षेत्, तक्ष्णुयात्। तक्षतु, तक्ष्णोतु। अतक्षत्, अतक्ष्णोत्। ततक्ष। अतक्षीत्, अताक्षीत्, अतक्षिष्टाम्, अताष्टाम्। तक्षिष्यति, तक्ष्यति। तक्षिता, तष्टा। कर्म्मणि—तक्ष्यते। णिचि—तक्षयति। अततक्षत्। सनि—तितक्षिषति। यङि—तातक्ष्यते।

कृत्सु—तक्षणीयम्। तक्षणम्। तक्षः। तक्षकः। तक्षी। तक्षिता, तष्टा। तष्टः। तष्टिः। तक्षितुम्, तष्टुम्। तक्षितव्यम्, तष्टव्यम्। तक्षित्वा, तष्ट्वा। सन्तक्ष्य। तक्ष्यम्। तक्षन्, तक्ष्णुवन्, तक्ष्यमाणः। तक्षिष्यन्, तक्ष्यन्। तक्षिष्यमाणः तक्ष्यमाणः। क्विपि—काष्ठतट्।

## (१८८) तड् ताड़ने चुरादि० उभ० सक० सेट्।

कर्त्तरि—ताड़यति-ते। अतीतड़त्-त। तिताड़यिषति-ते। कर्म्मणि—ताड्यते। अताड़ि।

कृत्सु—ताड़नीयम्। ताड़नम्। तड़ागः। तण्डुलम्। ताड़ः। ताड़कः। ताड़ी। ताड़यिता। ताड़ितः। ताड़ना। ताड़यितुम्। ताड़यितव्यम्। ताड़यित्वा। सन्ताड्य। ताड्यम्। ताडयन्-मानः, ताड्यमानः। ताड़यिष्यन्-ष्यमाणः। कर्म्मणि—ताड़्यमाणश्च।

## (१८९) तन् विस्तारे तनादि० उभ०सक० सेट्।

कर्त्तरि—तनोति, तनुतः, तन्वन्ति। तनोषि, तनुथः, तनुथ। तनोमि, तन्वः, तनुवः; तन्मः तनुमः। तनुते, तन्वाते, तन्वते। तन्यात्, तन्वीत। तनोतु, तनुताम्। अतनोत्, अतनुत। अतानीत्, अतनीत्। अतत, अतनिष्ट; अतनिषाताम्, अतनिषत। अतथाः, अतनिष्ठाः। ततान, तेनतुः, तेनुः। तेनिथ। तेने। तनितासि-से। तन्यात्, तनिषीष्ट। तनिष्यति-ते। कर्म्मणि—तन्यते। अतानि। णिचि—तानयति। अतीतनत्। सनि—तितनिषति-ते, तितांसति-ते।

कृत्सु—तननीयम्। तननम्। तानः। तानकः। तानी। तनिता। ततः। ततिः। तनितुम्। तनितव्यम्।

तनित्वा, तत्वा। अवतन्य, अवतत्य। तान्यम्। तन्वन्, तन्वानः। तन्यमानः। तनिष्यन्-ष्यमाणः। क्विप्—परीतत्। क्वसौ—तेनिवान्।

## (१९०) तप् दाहे भ्वादि॰ उभ॰ सक॰ सेट्।

कर्त्तरि—तपति-ते। अतापीत्, अतपीत्; अतपिष्ट। तताप, तेपे। तप्ता। भावे—तप्यते। अतापि। णिचि—तापयति-ते। अतीतपत्-त। भ्वादिगणीयः केवलपरस्मैपदी—तपति। अताप्सीत्। तताप, तेपतुः तेपुः। तेपिथ, ततप्थ।

कृत्सु—तपनीयम्। तपनम्। ल्यु—तपनः। तपः। तापः। णिजन्तस्य परन्तपः, द्विषन्तपः। तापकः। तापी। तप्ता। तप्तः। तप्तिः। तप्तुम्। तप्तव्यम्। तप्त्वा। सन्तप्य। तप्यम्। तपन्, तप्स्यन्।

## (१९१) तप् उपतापे सक॰ ऐश्वर्य्ये अक॰ दिवा॰ आत्म॰ अनिट्।

कर्त्तरि—तप्यते। तप्येत। अतप्त। अन्यत् भ्वादिगणीयवत्। विशेषस्त्वेषः तप्यमानः, तप्स्यमानः। अयं दाहे चुरा॰ उभ॰ सक॰ सेट्। तपयति-ते। अततपत्-त। तापयाञ्चकार-चक्रे।

## (१९२) तम् खेदे दिवादि॰ पर॰ अक॰ सेट्।

कर्त्तरि—ताम्यति। अतमत्, अतमीत्। तताम। तेमतुः। भावे—तम्यते। अतमि। णिचि—तमयति-ते। अतीतमत्-त। कर्म्मणि—तम्यते। अतामि, अतमि।

कृत्सु—तमनीयम्। तमनम्। तमः। तमकः। तमी। तमिता।

तान्तः । तान्तिः । तमितुम् । तमितव्यम् । तमित्वा, तान्त्वा । सन्तम्य । तम्यम् । ताम्यन् । तमिष्यन् ।

(१९३) तर्क् विचारणे चुरादि॰ उभ॰ सक॰ सेट् ।

कर्त्तरि—तर्कयति-ते । तर्कयाञ्चकार-चक्रे । अततर्कत् । कर्म्मणि—तर्क्यते । अतर्कि ।

कृत्सु—तर्कणीयम्, तर्कणम् । तर्कः । तर्ककः । तर्की । तर्कयिता । तर्कितः । तर्कणा । तर्कयितुम् । तर्कयितव्यम् । तर्कयित्वा । सन्तर्क्य । तर्क्यम् । तर्कयन्-माणः, तर्क्यमाणः । तर्कयिष्यन्-ष्यमाणः । कर्म्मणि—तर्किष्यमाणश्च ।

(१९४) तर्ज्ज् तिरस्कारे विकल्पचुरादि॰ उभ॰ पक्षे भ्वादि॰ आत्म॰ सक॰ सेट् ।

कर्त्तरि—तर्ज्जयति-ते, तर्ज्जते । अततर्ज्जत्-त । अतर्ज्जिष्ट । कर्म्मणि—तर्ज्यते । अतर्ज्जि ।

कृत्सु—तर्ज्जनीयम् । तर्ज्जनम् । तर्ज्जः । तर्ज्जकः । तर्ज्जी । तर्ज्जयिता । तर्ज्जिता । तर्ज्जितः । तर्ज्जना । तर्ज्जा । तर्ज्जयितुम् । तर्ज्जितुम् । तर्ज्जयितव्यम् । तर्ज्जितव्यम् । तर्ज्जयित्वा, तर्ज्जित्वा । सन्तर्ज्य । तर्ज्यम् । तर्ज्जयन्-मानः । तर्ज्जमानः, तर्ज्यमानः, तर्ज्जयिष्यन्-ष्यमाणः । कर्म्मणि—तर्ज्जयिष्यमाणः, तर्ज्जिष्यमाणश्च ।

(१९५) तर्द् हिंसायां भ्वादि॰ पर॰ सक॰ सेट् ।

कर्त्तरि—तर्दति । अतर्दीत् । ततर्द । कर्म्मणि—तर्द्यते । अतर्दि । णिचि—तर्दयति-ते । अततर्दत्-त ।

कृत्सु—तर्दनीयम् । तर्दनम् । तर्दकः । तर्दः । तर्दी । तर्दिता ।

तर्दितः। तर्दा। तर्दितुम्। तर्दितव्यम्। तर्दित्वा। सन्तर्द्य। तर्द्यम्। तर्दन्। तर्द्यमानः। तर्दिष्यन्-ष्यमाणः।

(१९६) तिज् तेजने चुरादि० उभ० सक० सेट्।

कर्त्तरि—तेजयति-ते। अतीतिजत्-त। कर्म्मणि—तेज्यते। अतेजि। उत्—उद्दीपने उत्तेजयति उद्दीपयति।

कृत्सु—तेजनीयम्। तेजनम्। अभि—तेजः। तेजकः। तेजी। तेजयिता। तेजितः। तेजना। तेजयितुम्। तेजयितव्यम्। तेजयित्वा। सन्तेज्य। तेज्यम्। तेजयन्-मानः, तेज्यमानः। तेजयिष्यन्-ष्यमाणः। कर्म्मणि—तेजिष्यमाणश्च। उत्—उत्तेजितः। उत्तेजना।

(१९७) तिज् क्षमायां भ्वादि० आत्म० सक० सेट्।

कर्त्तरि—तितिक्षते, तेजते। अतितिक्षिष्ट, अतेजिष्ट। कर्म्मणि—तितिक्ष्यते। अतितिक्षि।

कृत्सु—तितिक्षणीयम्। तितिक्षणम्। तितिक्षकः। तितिक्षी। उ—तितिक्षुः। तितिक्षिता। तितिक्षितः। तितिक्षा। तितिक्षितुम्। तितिक्षितव्यम्। तितिक्षित्वा। सन्तितिक्ष्य। तितिक्ष्यम्। तितिक्षमाणः। तितिक्ष्यमाणः। तितिक्षिष्यमाणः।

(१९८) तुद् व्यथने तुदादि० उभ० सक० अनिट्।

कर्त्तरि—तुदति-ते। तुदेत्-त। तुदतु-ताम्। अतुदत्-त। अतौत्सीत्, अतुत्त। तुतोद, तुतुदे। तुतोदिथ, तुतुदिषे। तोत्स्यसि-से। तुद्यात्, तुत्सीष्ट। तोत्स्यति-ते। कर्म्मणि—

तुद्यते। अतोदि। णिचि—तोदयति-ते। अतूतुदत्-त। सनि—तुतुत्सति ते।

कृत्सु—तोदनीयम्। तोदनम्। तोदः। तोदकः। तोदी। तोत्ता। तुन्नः। तुत्तिः। क्त—तोत्त्रम्। तोत्तुम्। तोत्तव्यम्। तुत्त्वा। सन्तुद्य। तोद्यम्। आतोद्यम्। तुदन्-मानः, तुद्यमानः। तोत्स्यन्-स्यमानः।

## (१९९) तुल् उन्माने विकल्पचुरादि० पर० सक० सेट्।

कर्त्तरि—तोलयति-ते। तोलति। अतूतुलत्-त। तोलयेत्-त। तोलयतु-ताम्। अतोलयत्-त। तोलयाम्-बभूव-आस-चकार-चक्रे। तोलयिष्यति, तोलयिता। अतोलयिष्यत्-त। कर्म्मणि—तोल्यते।

कृत्सु—तोलयित्वा, तोलितः। तोलितुम। तुलना।

## (२००) तुष् तोषे दिवादि० पर० अक० अनिट्।

कर्त्तरि—तुष्यति। तुष्येत्। तुष्यतु। अतुष्यत्। अतुषत्। तुतोष। तोष्टा। तुष्यात्। तोक्ष्यति। अतोक्ष्यत्। भावे—तुष्यते। अतोषि। णिचि—तोषयति-ते। अतूतुषत्-त। सनि—तुतुक्षति।

कृत्सु—तोषणीयम्। तोषणम्। तोषः। तोषकः। तोषी। तोष्टा। तुष्टः। तुष्टिः। तोष्टुम्। तोष्टव्यम्। तुष्ट्वा। सन्तुष्य। तोष्यम्। तुष्यन्। तोक्ष्यन्।

## (२०१) तृप् प्रीतौ दिवादि० पर० अक० प्रीणने सक० वेट्।

कर्त्तरि—तृप्यति। तृप्येत्। तृप्यतु। अतृप्यत्। अतर्पीत्, अत्राप्सीत्, अतार्प्सीत्, अतृपत्। ततर्प। ततर्पिथ,

ततप्थ, ततर्प्थ। तर्पिता। त्रप्ता, तर्प्ता। तृप्यात्। तर्पिष्यति, त्रप्स्यति, तर्प्स्यति। भावे कर्म्मणि च—तृप्यते। अतर्पि। णिचि—तर्पयति-ते। अततर्पत्, अतीतृपत्। सनि—तितर्पिषति, तितृप्सति। यङि—तरीतृप्यते।

कृत्सु—तर्पणीयम्। तर्पणम्। तर्पणः। तर्पः। तर्पकः। तर्पी। तर्पिता। त्रप्ता, तर्प्ता। तृप्तः। तृप्तिः। तर्पितुम्, त्रप्तुम्, तर्प्तुम्। तर्पितव्यम्, त्रप्तव्यम्, तर्प्तव्यम्। तर्पित्वा, तृप्त्वा। सन्तृप्य। तृप्यम्। तृप्यन्, तृप्यमाणः। तर्पिष्यन्-ष्यमाणः। त्रप्स्यन् तर्प्स्यन्-स्यमानः।

## (२०२) तृप् प्रीतौ प्रीणने च स्वादि० पर० प्रीतौ अक० प्रीणने सक० सेट्।

कर्त्तरि—तृप्नोति, तृप्नुतः। अतर्पीत्। ततर्प, ततर्पिथ। तर्पिता। तृप्यात्। तर्पिष्यति।

कृत्सु—तर्पणीयमित्यादि दिवादिगणीयवत्। तर्पिता। तर्पितः। तर्पितुम्। तर्पितव्यम्। तर्पित्वा। तृप्नन्, तृप्यमाणः। तर्पिष्यन्-ष्यमाणः इति भेदः।

## (२०३) तृष् तृष्णायां दिवादि० पर० अक० सेट्।

कर्त्तरि—तृष्यति। अतृषत्। ततर्ष। तर्षिता। तृष्यात्। तर्षिष्यति। भावे—तृष्यते। अतर्षि। णिचि—तर्षयति-ते। अतीतृषत्-त, अततर्षत्-त।

कृत्सु—तर्षणीयम्। तर्षणम्। तर्षः। तर्षकः। तर्षी। तर्षित्वा। तर्षितः। तर्षा। तर्षितुम्। तर्षितव्यम्। तर्षित्वा। ङनज्—तृष्णक्। नङ्—तृष्णा। सन्तृष्य। तृष्यम्। तृष्यन्। तर्षिष्यन्।

## (२०४) तृह् हिंसने रुधादि० पर० सक० सेट्।

कर्त्तरि—तृणेढि, तृण्ढः, तृंहन्ति। तृणेक्षि, तृण्ढः, तृण्ढ। तृणेह्मि, तृंह्वः, तृंह्मः। तृंह्यात्। तृणेढु। अतृणेट्। अतर्हीत्। ततर्ह। ततृहतुः। तर्हिता। तृह्यात्। तर्हिष्यति। अतर्हिष्यत्। कर्म्मणि—तृह्यते। अतर्हि। णिचि—तर्हयति-ते। अतीतृहत्-त, अततर्हत्-त।

अयं तुदादिगणीयो वेट्।—तृहति। ततर्ह। ततर्हिथ, ततर्ढ। अतर्हत्। अतृक्षत्। तर्हिता, त्राढ़ा, तर्ढा। तर्हिष्यति, तर्क्ष्यति। अतर्हीत्, अतार्क्षीत्।

कृत्सु—तर्हणीयम्। तर्हणम्। तर्हः। तर्हकः। तर्ढा। तर्हिता। तर्हित। तर्ढा। तर्हितुम्। तर्हितव्यम्। तर्हित्वा। सन्तृह्य। तृह्यम्। तृंहन्, तृह्यमाणः। तर्हिष्यन्-ष्यमाणः। तुदादेस्तु—तृढ़ः। तृढ़िः। तृहन्। तर्हिष्यन्-ष्यमाणः। तर्क्ष्यन्, त्रक्ष्यन्। तर्क्ष्यमाणः, त्रक्ष्यमाणः।

## (२०५) तॄ प्लवनतरणयोः भ्वादि० पर० सक० सेट्।

कर्त्तरि—तरति। तरेत्। तरतु। अतरत्। ततार, तेरतुः, तेरुः। तेरिथ, तेरथुः, तेर। ततार, ततर; तेरिव, तेरिम। अतारीत्, अतारिष्टाम्, अतारिषुः। तरिष्यति, तरीष्यति। तरिता, तरीता। अतरिष्यत्, अतरीष्यत्। तीर्य्यात्। कर्म्मणि—तीर्य्यते। अतारि। णिचि—तारयति। अतीतरत्। सनि—तितीर्षति, तितरिषति, तितरीषति। यङि—तेतीर्य्यते।

वि-अतिपूर्वकोऽयमात्मनेपदी—वि+अति—व्यतितरते, तरेत, तरताम्, अतरत। तेरे, अत्यतीर्ष्ट, अतरिष्ट, अत्यतरीष्ट। तरिष्यते, तरीष्यते। तरिषीष्ट, तरीषीष्ट, तीर्षीष्ट।

कृत्सु—तीर्य्यः। तीर्णः। तीर्त्वा। संतीर्य्य। तरितुम्, तरीतुम्, तर्त्तुम्। तरितव्यम्, तरीतव्यम्, तर्त्तव्यम्। तरणीयम्। तार्य्यम्। तर्षः। तरिः, तरीः। अति—अतितरः अतिक्रमः। उत्—उत्तरणम्। सम्—सन्तरणम्। वि—वितरणम्। निर्—निस्तारः। आ—आतरः तर-पण्यम् नद्यादिपारयानस्य शुल्कम्। प्र (णिचि)—प्रतारणा।

## (२०६) त्यज् त्यागे भ्वादि० पर० सक० अनिट्।

कर्त्तरि—त्यजति। त्यजेत्। त्यजतु। अत्यजत्। अत्याक्षीत्। तत्याज। तत्यजिथ, तत्यक्थ। तत्याज, तत्यज। तत्यजिव। त्यज्यात्। त्यक्ता। त्यक्ष्यति। अत्यक्ष्यत्। कर्म्मणि—त्यज्यते। अत्याजि। णिचि—त्याजयति-ते। अतित्यजत्-त। सनि—तित्यक्षति। यङि—तात्यज्यते।

कृत्सु—त्यजनीयम्। त्यजनम्। त्यागः। त्याजकः। घिनुण्—त्यागी। त्यक्ता। त्यक्तः। त्यक्तिः। त्यक्तुम्। त्यक्तव्यम्। त्यक्त्वा। सन्त्यज्य। त्याज्यम्। त्यजन्, त्यज्यमानः। त्यक्ष्यन्, त्यक्ष्यमाणः।

## (२०७) त्रप् लज्जायां भ्वादि० आत्म० अक० वेट्।

कर्त्तरि—त्रपते। अत्रपिष्ट, अत्रप्त। त्रेपे। त्रपितासे, त्रप्तासे। त्रपिषीष्ट, त्रप्सीष्ट। भावे—त्रप्यते। अत्रापि। णिचि—त्रपयति-ते, त्रापयति-ते। अतित्रपत्-त।

कृत्सु—त्रपणीयम्। त्रपणम्। त्रापकः। इष्णुच्—अपत्रपिष्णुः। त्रपिता, त्रप्ता। त्रप्तः। त्रपा। त्रपितुम्। त्रप्तुम्। त्रपितव्यम्, त्रप्तव्यम्। त्रपित्वा, त्रप्त्वा। सन्त्रप्य। त्रप्यम्। त्रपमाणः। त्रपिष्यमाणः, त्रप्स्यमानः।

(२०८) वस् वासे वा दिवादि० पक्षे भ्वादि० पर० अक० सेट् ।

कर्त्तरि—वस्यति, वसति । वस्येत्, वसेत् । वस्यतु, वसतु । अवस्यत्, अवसत्; अवासीत्, अवसीत्। ववास; वेसतुः, ववसतुः । वसिता । वसिष्यति । भावे—वस्यते । अवासि । णिचि—वासयति-ते । अविवसत्-त ।

कृत्सु -वसनीयम् । वसनम् । वासः । वासकः । वासी । वसिता । वस्तः । वस्तिः । वसितुम् । वसित्वा । क्तु—वस्तु । सन्वस्य । वस्यन्, वसन् । वसिष्यन् ।

(२०९) वुट् द्वैधीभावे वा दिवा० पक्षे तुदादि० कुटादिः पर० अक० छेदनार्थे चुरा० आत्म० सक० सेट् ।

कर्त्तरि—वुट्यति, वुटति । अवुटीत् । ववोट । वुटिता । वुट्यात । वुटिष्यति । भावे—वुट्यते । अवोटि । णिचि—वोटयति-ते । अवुवुटत्-त । सनि—वुवुटिषति, वुवोटिषति ।

चुरादेस्तु—वोटयते । अवुवोटत ।

कृत्सु—वुटनीयम । वुटनम् । वोटः । वोटकः । वोटी । वुटिता । वुटितः । वुट्टि । वुटिः । वुटो । वुटितुम् । वुटितव्यम् । वुटित्वा । सन्वुट्य । वोट्यम् । वुट्यन्, वुटन् । वुटिष्यन् ।

(२१०) वै पालने भ्वा०आत्म०सक० अनिट् ।

कर्त्तरि—वायते । वायेत । वायताम । अवायत । अवास्त । ववे । वास्यते । वाता । वासीष्ट । अवास्यत । वासीष्ट । कर्म्मणि—वायते । अवायि । णिचि—वापयति-ते । अविवपत्-त । सनि—विवासते ।

कृत्सु—त्राणीयम्। त्राणम्। त्रायः। त्रायकः। त्रायी। त्राता। त्राणः, त्रातः। त्रातिः। त्रातुम्। त्रातव्यम्। त्रात्वा। सन्त्राय। त्रेयम्। त्रायमाणः, त्रास्यमानः। कर्म्मणि—त्रायिष्यमाणश्च।

## (२११) त्वर् वेगे भ्वादि॰ आत्म॰ अक॰ सेट्।

कर्त्तरि—त्वरते। त्वरेत। त्वरताम। अत्वरत। अत्वरिष्ट। तत्वरे। त्वरितासे। भावे—त्वर्य्यते। अत्वारि। णिचि—त्वरयति-ते। अतत्वरत-त। कर्म्मणि—अत्वरि, अत्वारि।

कृत्सु—त्वरणीयम। त्वरणम। त्वारः। त्वारकः। त्वारी। त्वरिता। त्वरितः, तूर्णः। त्वरा। त्वरितव्यम्। त्वरित्वा। सन्त्वर्य्य। त्वार्य्यम्। त्वरमाणः। णिचि—त्वर्य्यमाणः। त्वरिष्यमाणः।

## (२१२) दण्ड दण्डने अदन्तचुरादि॰ उभ॰ द्विक॰ सेट्।

कर्त्तरि—दण्डयति-ते। अददण्डत्-त। दण्डयितास्मि-मे। कर्म्मणि—दण्ड्यते, अदण्डि।

कृत्सु—दण्डनीयम्। दण्डनम्। दण्डः। दण्डकः। दण्डी। दण्डयिता। दण्डितः। दण्डना। दण्डयितुम्। दण्डयितव्यम्। दण्डयित्वा। सन्दण्ड्य। दण्ड्यः। दण्डयन्मानः, दण्ड्यमानः। दण्डयिष्यन्-ष्यमाणः। कर्म्मणि—दण्डिष्यमाणश्च।

## (२१३) दद् दाने धृतौ च भ्वादि॰ आत्म॰ सक॰ सेट्।

कर्त्तरि—ददते। ददेत। ददताम्। अददत। दददे। अददिष्ट। ददिष्यते। ददिता। अददिष्यत। ददिषीष्ट।

कर्मणि—दद्यते । अदादि । णिचि—दादयति । अदीददत् । सनि—दिददिषते । यङि—दादद्यते । कृत्सु—ददितः । ददितुम् । ददुः ।

## (२१४) दध् धारणे भ्वादि० आत्म० सक० सेट् ।

कर्त्तरि—दधते इत्यादि ददवत् । कृत्सु—दधितव्यम् । दधनीयम् । दाध्यम् । दधितः । दधमानः । दधित्वा । सन्दध्य । दधितुम् । दधनः । दधि ।

## (२१५) दन्भ् दम्भे स्वादि० पर० अक० सेट् ।

कर्त्तरि—दभ्नोति । दभ्नुतः । अदभ्नोत् । ददम्भ, देभतुः, ददम्भतुः । देभिथ, ददम्भिथ । भावे—दभ्यते । अदम्भि । णिचि—दम्भयति-ते । अददम्भत्-त । सनि—दिदम्भिषति, धीप्सति ।

संघातेऽर्थे चुरादि० आत्म० दम्भयते । अददम्भत । प्रेरणे चुरादि० उभ० दम्भयति-ते, अददम्भत्-त ।

कृत्सु—दम्भनीयम् । दम्भनम् । दम्भः । दम्भकः । दम्भी । दम्भिता । दब्धः । दब्धिः । दम्भितुम् । दम्भितव्यम् । दम्भित्वा, दब्ध्वा । सन्दभ्य । दभ्नाः । दभ्नुवन् । दम्भिष्यन् ।

## (२१६) दन्श् दंशने भ्वादि० पर० सक० अनिट् ।

कर्त्तरि—दशति । दशेत् । दशतु । अदशत् । अदाङ्क्षीत् । अदाङ्ष्टाम् । ददंश ; ददंशतुः, ददशतुः । दश्यात् । दङ्क्ष्यति । कर्मणि—दश्यते । अदंशि । णिचि—दंशयति-ते । अददंशत्-त । सनि—दिदङ्क्षति । यङि—दंदश्यते । अयं चुरादावात्मनेपदी—दंशयते ।

सम्—सन्दंशे ( उभयपार्श्वतः कर्षणे, सन्नहने च ) सन्दशति । उप—उपदंशे ( सहभोजने ) मूलकेनोपदशति ।

कृत्सु—दंशनीयम्। दंशनम्। दंशकः। दंशः। दंशी। दंष्टा। दष्टः। दष्टिः। तृन्—दंष्टा। दंष्टुम्। दंष्टव्यम्। दष्ट्वा। उपदश्य। दंश्यन्। दशन्, दङ्क्षन्, दङ्क्ष्यमाणः। यङ्-ऊक—दंदशूकः। सम्—सन्दंशः। सन्दंशितः। णमुल्—मूलकोपदंशम्।

## (२१७) दम् दमने दिवादि॰ पर॰ सक॰ सेट्।

कर्त्तरि—दाम्यति। दाम्येत्। दाम्यतु। अदाम्यत्। अदमत्, अदमीत्। ददाम। देमतुः। दामिष्यति। दमिता। अदमिष्यत्। दम्यात्। कर्म्मणि—दम्यते। अदमि। णिचि—दमयति-ते। अदीदमत्-त। ण्यन्तकर्म्मणि—अदमि। अदामि। सनि—दिदमिषति। यङि—दंदम्यते। कृत्सु—दमनीयम्। दमनम्। दमः। दमकः। दमी। दमिता। दान्तः। दान्तिः। दमितः। दन्तः। दमितुम्। दमितव्यम्। दमितुम्। दमित्वा। दान्त्वा। सन्दम्य। दम्यः। दाम्यन्। दमिष्यन्।

## (२१८) दय् गतौ बधे दाने पालने च भ्वादि॰ आत्म॰ सक॰ सेट्।

कर्त्तरि—दयते। अदयिष्ट। अदयिढ्वम्, अदयिध्वम, अदयिड्ढ्वम्। दयाम् बभूव आस-चक्रे। कर्म्मणि—दय्यते। अदायि। कृत्सु—दयनीयम्। दयनम्। दायः। दायी। दयिता। दयितः। दया। दयितुम्। दयितव्यम्। दयित्वा। सन्दय्य। दाय्यम्। दयमानः। दयिष्यमाणः।

## (२१९) दरिद्रा दुर्गतौ अदादि॰ पर॰ सक॰ सेट्।

कर्त्तरि—दरिद्राति, दरिद्रितः, दरिद्रति। दरिद्रियात्-याताम्, दरिद्रियुः। दरिद्रातु। अदरिद्रात्। दिदरिद्रौ, दरिद्राञ्च-

कार। अदरिद्रीत्, अदरिद्रामीत्। दरिद्रिष्यति। दरिद्रिता। अदरिद्रिष्यत्। दरिद्र्यात्। कर्म्मणि—दरिद्र्यते। अदरिद्रि, अदरिद्रायि। दरिद्रयति। अदिदरिद्रत्। दिदरिद्रासति, दिदरिद्रिषति। कृत्सु—दरिद्रितः। दरिद्रितुम्। दरिद्रः।

## (२२०) दल् भेदने भ्वादि० पर० सक० सेट्।

कर्त्तरि—दलति। अदालीत्। ददाल, देलतुः। कर्म्मणि—दल्यते, अदालि। णिचि—दालयति-ते, दलयति-ते। अदीदलत्-त। कर्म्मणि—दाल्यते, दल्यते। अदालि, अदलि।

कृत्सु—दलनीयम्। दलनम्। अच्—दलम्। दालकः, उद्दालकः। दाली। दलिता। दलितः। दलितुम्। दलितव्यम्। दलित्वा। सन्दल्य। दाल्यः। दलन्। दलिष्यन्। दलिष्यमाणः।

## (२२१) दह् दाहे भ्वादि० पर० सक० अनिट्।

कर्त्तरि—दहति। दहेत्। दहतु। अदहत्। अधाक्षीत्। अदाग्धाम्, अधाक्षुः। ददाह, देहतुः। देहिथ, ददग्ध। दग्धा। दह्यात्। धक्ष्यति। कर्म्मणि—दह्यते। अदाहि। णिचि—दाहयति-ते। अदीदहत्-त। सनि—दिधक्षति। यङि—दन्दह्यते।

कृत्सु—दहनीयम्। दहनम्। दाहः। दाहकः। दाही। दग्धा। दग्धः। दग्धिः। दग्धुम्। दग्धव्यम्। दग्ध्वा। सन्दह्य। दाह्यः। दहन्। दह्यमानः। धक्ष्यन्। धक्ष्यमाणः। सनन्तस्य—दिधक्षा। दिधक्षुः। दिधक्षन्। यङन्तस्य—दन्दह्यमानः।

(२२२) दा दाने अदादि० जुहोत्यादि० उभ० सक० अनिट् ।

लटि ।

| | प्रथमपुरुषे | मध्यमपुरुषे | उत्तमपुरुषे |
|---|---|---|---|
| एक-व० | ददाति-दत्ते | ददासि-दत्से | ददामि-ददे |
| द्वि-व० | दत्तः-ददाते | दत्थः-ददाथे | दद्वः-दद्वहे |
| बहु-व० | ददति-ददते | दत्थ-दद्ध्वे | दद्मः-दद्महे |

लिङि ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| एक-व० | दद्यात् ददीत | दद्याः-ददीथाः | दद्याम-ददीय |
| द्वि-व० | दद्याताम्- ददीयाताम | दद्यातम्- ददीयाथाम् | दद्याव-ददीवहि |
| बहु-व० | दद्युः-ददीरन् | दद्यात ददीध्वम् | दद्याम-ददीमहि |

लोटि ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| एक-व० | ददातु-दत्ताम् | देहि-दत्स्व | ददानि-ददै |
| द्वि व० | दत्ताम्-ददाताम | दत्तम्-ददाथाम् | ददाव ददावहै |
| बहु-व० | ददतु-ददताम् | दत्त-दद्ध्वम् | ददाम-ददामहै |

लङि ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| एक-व० | अददात्-अदत्त | अददाः-अदत्थाः | अददाम्-अददि |
| द्वि-व० | अदत्ताम्- अददाताम | अदत्तम्- अददाथाम | अदद्व-अदद्वहि |
| बहु-व० | अददुः-अददत | अदत्त-अदद्ध्वम | अदद्म-अदद्महि |

लिटि—ददौ, ददे, ददतुः, ददाते । ददाथ, ददिथ । ददौ, ददे । ददिव, ददिवहे । लुङि—अदात्, अदित, अदाताम्, अदिषाताम् ; अदुः, अदिषत ; अदाः, अदियाः ; अदाम्,

अदिषि । लृटि—दास्यति-ते । लुटि—दाता । लृङि—
अदास्यत्, अदास्यत । आशीर्लिङि—देयात्, दासीष्ट ।
कर्म्मणि—दीयते । अदायि । णिचि—दापयति-ते । अदीद-
पत्-त । सनि—दित्सति-ते । यङि—देदीयते ।
कृत्सु—दानीयम् । दानम् । दायः । दायकः । दायी । दाता ।
दत्तः । प्रदत्तः, प्रत्तः । नित्तः । दत्तिः । प्रत्तिः, प्रदत्तिः ।
दातुम् । दातव्यम् । दत्त्वा । सन्दाय । देयम् । ददत् ।
ददानः । दास्यन्-स्यमानः । ददिवान् । क्त्रिमन्—दत्त्रिमः ।
सनः,—दित्सा । दित्सुः । दित्सन् ।

(२२३) दाण् दाने भ्वादि० पर० सक० अनिट् ।

कर्त्तरि—यच्छति । यच्छेत् । यच्छतु । अयच्छत् । अदात् ।
ददौ । कर्म्मणि—दीयते । अदायि ।
अशिष्टव्यवहारे सम्-आत्मनेपदम्—संयच्छते वेश्याया वस्त्रम् ।
कृत्सु—जुहोत्यादिगणीयवत् ।

(२२४) दान् खण्डने भ्वा० उभ० सक० सेट् ।

कर्त्तरि ( नित्यसनन्तः )—दीदांसति-ते । दीदांसेत्-त ।
दीदांसतु-ताम् । अदीदांसत्-त । दीदांसाञ्चकार-चक्रे ।
अदीदांसीत्-सिष्ट । दीदांसिष्यति-ते ।
कृत्सु—दीदांसितुम् ।

(२२५) दिव् क्रीडाविजिगीषाव्यवहारद्युति-स्तुतिमोदमदस्वप्नकान्तिगतिषु दिवा० पर० क्रीड़ा-द्युतिमोदमद-स्वप्नकान्तिष्वर्थेषु अक० विजगीषा-व्यवहारगतिषु सक० सेट् ।

कर्त्तरि—दीव्यति । अदेवीत् । दिदेव । देविता । दीव्यात् ।
देविष्यति । भावे कर्म्मणि च—दीव्यते । अदेवि । णिचि—

देवयति-ते। अदीदिवत्-त। सनि—दिदेविषति, दुद्यूषति। यङि—देदीव्यते।

आ—जिगीषायाम् आदीव्यति। परि+देवि परिदेवने—परिदेवयति-ते।

अयं चुरादौ देवने परिकूजने च उभ०। देवयति ते। देवयाञ्चकार-चक्रे।

कृत्सु—देवनीयम्। देवनम्। देवः। देवकः। देवी। देविता। द्यूतः। द्यूतिः। देवितुम्। देवितव्यम्। देवित्वा, द्यूत्वा। सन्दीव्य। देव्यम्। दीव्यन्। दिव्यमानः। देविष्यन्-ष्यमाणः। क्विप्—अक्षद्यूः। सनः,—दुद्यूषा, दिदेविषा। दुद्यूषः, दिदेविषः। दुद्यूषन्, दिदेविषन्। परि—परिदेवना। आद्यूनः औदरिकः। चुरादिगणीयः देवयितुम्।

## (२२६) दिश् देशने तुदादि०उभ०सक०अनिट्।

कर्त्तरि—दिशति ते। दिशेत्-दिशेत। दिशतु-ताम्। अदिशत्, अदिशत। अदिक्षत्-त। दिदेश। दिदिशे। दिदेशिथ, दिदिशिषे। देष्टासि-से। देक्ष्यति-ते। देष्टा। अदेक्ष्यत्-त। कर्म्मणि—दिश्यते। अदेशि। णिचि—देशयति-ते। अदीदिशत्-त। सनि—दिदिक्षति। यङि—देदिश्यते।

उप—उपदेशे उपदिशति शिक्षयतीत्यर्थः। सम्—सन्देशे (वाचिकवार्त्ताकथने) सन्दिशति। आ—आज्ञायाम् आदिशति। उत्—उद्देशे उद्दिशति। अति—अतिदेशे (तुल्यतया कथने) अतिदिशति। अप—अपदेशे अपदिशति। अपदेशस्य छलम्। व्यप—संज्ञाकरणे व्यपदिशति, सङ्केतितं करोति। नि—नियोगे निदिशति नियुङ्क्ते। निर्—निर्देशे निर्दिशति कथयतीत्यर्थः।

कृत्सु—देशनीयम्। देशनम्। देशः। देशकः। देशी। देष्टा।

दिष्टः। दिष्टिः। ण्यन्तस्य देशना। देष्टुम्। देष्टव्यम्। दिष्ट्वा। उपदिश्य। देश्यम्। दिशन्, दिशमानः। दिश्यमानः। देक्ष्यन्-क्ष्यमाणः।

## (२२७) दिह् लेपने अदादि० उभ० सक० अनिट्।

कर्त्तरि—देग्धि, दिग्धः, दिहन्ति। धेक्षि, दिग्धः, दिग्ध। देह्मि, दिह्वः, दिह्मः। दिग्धे, धिक्षे। दिह्यात्, दिहीत। देग्धु, दिग्धाम्। अधेक्, अधेग्, अदिग्ध। अधिक्षत्, अदिग्ध-अधिक्षत; अधिक्षाताम्, अधिक्षन्त। अधिक्षथाः, अदिग्धाः। अधिक्षि, अदिह्वहि-अधिक्षावहि, अदिह्महि, अधिक्षामहि। दिदेह, दिदिहे। देग्धासि-से। दिह्यात्, धिक्षीष्ट। धेक्ष्यति-ते। कर्म्मणि—दिह्यते। अदेहि। णिचि—देहयति-ते। अदीदिहत्-त। सनि—दिधिक्षति-ते। यङि—देदिह्यते।

सम्—संशये सक० सन्देग्धि।

कृत्सु—देहनीयम्। देहनम्। देहकः। देही। देग्धा। दिग्धः। दिग्धिः। देग्धुम्। देग्धव्यम्। दिग्ध्वा। उपदिह्य। देह्यम्। दिहन्। दिहानः। धेक्ष्यन्-क्ष्यमाणः। सम्—सन्देहः। सन्दिग्धः। सन्दिहानः।

## (२२८) दीक्ष् मौण्ड्येज्योपनयननियमव्रतादेशाधाने भ्वादि० आत्म० मौण्ड्ये इज्यायां च अक० उपनयनादिषु सक० सेट्।

कर्त्तरि—दीक्षते। दिदीक्षे। अदीक्षिष्ट। दीक्षिष्यते। दीक्षिता। अदीक्षिष्यत। दीक्षिषीष्ट। कर्म्मणि—दीक्ष्यते

अदीचि। णिचि—दीचयति-ते। अदिदीचत्-त। सनि—दिदीचिषते।

कृत्सु—दीचणीयम्। दीचणम्। दीचकः। दीची। दीचिता। दीचितः। दीचा। दीचितुम्। दीचितव्यम्। दीचित्वा। सन्दीच्य। दीचमाणः। दीचिष्यमाणः।

## (२२९) दीप् दीप्तौ दिवादि० आत्म० अक० सेट्।

कर्त्तरि—दीप्यते। दीप्येत। दीप्यताम्। अदीप्यत। अदीपि, अदीपिष्ट। दिदीपे। दीपितासे। दीपिष्यते। अदीपिष्यत्। दीपिषीष्ट। भावे—दीप्यते। अदीपि। णिचि—दीपयति-ते। अदीदिपत्-त, अदिदीपत्-त। सनि—दिदीपिषते। यङि—देदीप्यते।

उत्—उद्दीपने उद्दीपयति उत्तेजयतीत्यर्थः।

कृत्सु—दीपनीयम्। दीपनम्। दीपनः। दीपः। दीपकः। दीपी। दीपिता। दीप्तः। दीप्तिः। ण्यन्तस्य—दीपना। दीपितुम्। दीपितव्यम्। दीपित्वा। सन्दीप्य। दीप्यम्। दीप्यमानः। दीपिष्यमाणः। यङ्—देदीप्यमानः। उत्—उद्दीपितः। उद्दीपना।

## (२३०) दु अनुतापे स्वादि० पर० अक० अनुतापने सक० वेट्।

कर्त्तरि—दुनोति, दुनुतः, दुन्वन्ति। दुनुयात्। दुनोतु। अदुनोत्। अदावीत्। अदौषीत्। दुदाव। दुदुविथ। दविता, दोता। दूयात्। दविष्यति, दोष्यति। भावे कर्म्मणि च—दूयते। अदावि। णिचि—दावयति-ते। अदूदवत्-त। सनि—दुदूषति। यङि—दोदूयते।

कृत्सु—दवनीयम्। दवनम्। दवन:। दव:। दाव:। दावकः। अयुच्—दवथुः। दावी। दविता, दोता। दून:। दवितुम्, दोतुम्। दवितव्यम्, दोतव्यम्। दविला, दुत्वा। सन्दूय। दव्यम्। आवश्यकार्थे तु दाव्यम्। दुन्वन्। दविष्यन्-ष्यमाणः। दोष्यन्-ष्यमाणः।

(२३१) दुःख दुःखितकरणे अदन्तचुरादि० उभ० सक० सेट्।

कर्त्तरि—दुःखयति-ते। मतान्तरे दुःखापयति-ते। अदुदुःखत्-त। अदुदुःखपत्-त।

(२३२) दुल् उत्क्षेपे चुरादि० उभ० सक० सेट्।

कर्त्तरि—दोलयति-ते। अदूदुलत्-त। सनि—दुदोलयिषति-ते। कृत्सु—दोलयित्वा। दोला। दुलिः,—कमठो। दोदुल्यमानः।

(२३३) दुष् दोषे दिवादि० पर० अक० अनिट्।

कर्त्तरि—दुष्यति। दुष्येत्। दुष्यतु। अदुष्यत्। अदुषत्, दुदोष। दोष्टा। दोक्ष्यति। दुष्यात्। भावे—दुष्यते। अदोषि। णिचि—दूषयति-ते। सनि—दुदुक्षति। यङि—दोदुष्यते। चित्तविकारे तु—दूषयति-ते दोषयति-ते चित्तम्। अदूदुषत-त।

कृत्सु—दोषणीयम्। दोषणम्। दोषः। दोषकः। दोषी। ण्यन्तस्य—दूषणीयम्। दूषणम्। दूषकः। दूष्यम् इत्यादि। दुष्टः। दुष्टिः। दोष्टुम्। दोष्टव्यम्। दुष्ट्वा। सन्दुष्य। दुष्यम्। दुष्यन्।

## (२३४) दुह् दोहने अदादि० उभ० द्विक० अनिट्।

कर्त्तरि—दोग्धि, दुग्धः, दुहन्ति। धोक्षि, दुग्धः, दुग्ध। दोह्मि, दुह्वः, दुह्मः। दुग्धे, दुहाते, दुहते। धुक्षे, दुहाथे, धुग्ध्वे दुह्यात्, दुहीत। दोग्धु, दुग्धाम्। अधुक्-ग्, अदुग्ध। अधुक्षत्, अधुक्षत, अदुग्ध; अधुक्षाताम, अधुक्षन्त। अधुक्षथाः, अदुग्धाः। अधुक्षि, अधुक्षावहि, अदुह्वहि; अधुक्षामहि, अदुह्महि। दुदोह। दुदोहिथ, दुदुहिव। दुदुहे। दोग्धासि-से। दुह्यात्। धुक्षीष्ट। धोक्ष्यति-ते। कर्म्मणि—दुह्यते। अदोहि। णिचि—दोहयति-ते। अदूदुहत्-त। सनि—दुधुक्षति। यङि—दोदुह्यते।

कृत्सु—दोहनीयम्। दोहनम्। दोहः। दोहकः। दोही। दोग्धा। दुग्धम्। दुग्धि। दोग्धुम्। दोग्धव्यम्। दुग्ध्वा। सन्दुह्य। दुह्यम्, दोह्यम्। दुहन्। दुहानः। दुह्यमानः। धोक्ष्यन्-क्ष्यमाणः। कामधुक्। कामदुघा गौः। सन्—दुधुक्षा, दुधुक्षुः। दुधुक्षन्। यङ्—दोदुह्यमानः।

## (२३५) दू खेदे दिवादि० आत्म० अक० सेट्।

कर्त्तरि—दूयते। अदविष्ट। दुदुवे। दवितासे। दविषीष्ट। दविष्यते। भावे—दूयते। अदावि। णिचि—दावयति-ते। अदूदवत्-त। सनि—दुदूषते।

कृत्सु—दवनीयम्। दवनम्। दावः। दावकः। दावी। दविता। दूनः। दूतिः। दवितुम्। दवितव्यम्। दूत्वा। सन्दूय। दव्यम्, आवश्यकार्थे तु दाव्यम्। दूयमानः। दविष्यमाणः।

## (२३६) दृ आदरे तुदादि० आत्म० सक० अनिट्।

कर्त्तरि (प्रायेणाङ्पूर्वकः)—आद्रियते। आद्रियेत। आद्रियताम्। आद्रियत। आदृत। आदद्रे, आदद्रिषे। आदर्त्तासे। आदृषीष्ट। आदरिष्यते। आदरिष्यत। कर्म्मणि—आद्रियते। आदारि। णिचि—आदारयति-ते। आदीदरत्-त। सनि—आदिदरीषते। यङि—आदेद्रीयते।

कृत्सु—आदरणीयम्। आदरणम्। दरः, आदरः। आदारकः। इनि—आदरी। आदर्त्ता। आदृतः। आदृतिः। आदर्त्तुम्। आदर्त्तव्यम्। आदृत्य। आदृत्यः। आद्रियमाणः। आदरिष्यमाणः।

## (२३७) दृप् हर्षे गर्वे च दिवादि० पर० अक० वेट्।

कर्त्तरि—दृप्यति। दृप्येत्। दृप्यतु। अदृप्यत्। अदर्पीत्, अद्राप्सीत्, अदार्प्सीत्, अदृपत्। ददर्प ; ददर्पिथ, दद्रप्थ, ददर्प्थ। दर्पिता, द्रप्ता, दर्प्ता। दर्पिष्यति, द्रप्स्यति, दर्प्स्यति। भावे—दृप्यते। अदर्पि। णिचि—दर्पयति-ते। अदीदृपत्-त। अददर्पत्-त। सनि—दिदर्पिषति, दिदृप्सति। यङि—दरीदृप्यते।

कृत्सु—दर्पणीयम्। दर्पणम्। दर्पः। दर्पकः। दर्पी। दर्पिता, द्रप्ता, दर्प्ता। दृप्तः। दृप्तिः। दर्पितुम्, द्रप्तुम्, दर्प्तुम्। दर्पितव्यम्, द्रप्तव्यम्, दर्प्तव्यम्। दर्पित्वा, दृप्त्वा। सन्दृप्य। दृप्यः। दृप्यन्। दर्पिष्यन्, द्रप्स्यन्, दर्प्स्यन्।

## (२३८) दृश् दर्शने भ्वादि० पर० सक० अनिट्।

कर्त्तरि। पश्यति। पश्येत्। पश्यतु। अपश्यत्। अदर्शत्,

अद्राक्षीत्; अद्राष्टाम्, अदर्शताम्; अद्राक्षुः, अदर्शन्। ददर्श; ददर्शिथ, दद्रष्ठ। ददृशिव। द्रष्टा। द्रक्ष्यति। कर्मणि—दृश्यते। अदर्शि, अदर्शिषाताम्, अदृक्षाताम्। दर्शितासे, द्रष्टासे। दर्शिषीष्ट, दृक्षीष्ट। णिचि—दर्शयति-ते। अदीदृशत्-त, अददर्शत्-त। सनि—दिदृक्षते। अण्यन्तस्य कर्मणः कर्तृत्वे आत्मनेपदं—दर्शयते राजा भृत्यान्।

कृत्सु—दर्शनीयम्। दर्शनम्। दर्शः। सुदर्शनः सुदर्शः। दर्शकः। दर्शी। द्रष्टा। दृष्टः। दृष्टिः। ण्यन्तस्य—दर्शितः। एवं दर्शना। द्रष्टुम्, दर्शयितुम्। द्रष्टव्यम्, दर्शयितव्यम्। दृष्ट्वा, दर्शयित्वा। सन्दृश्य, सन्दर्श्य। दृश्यम्, दर्श्यम्। पश्यन्, दर्शयन्-मानः। दृश्यमानः, दर्श्यमानः। द्रक्ष्यन्। द्रक्ष्यमाणः। क्वसु—ददृशिवान्, ददृश्वान्। कर्मणि—दर्शिष्यमाणः। ण्यन्तस्य—दर्शयिष्यन्-ष्यमाणः। सनि—दिदृक्षा। दिदृक्षुः। दिदृक्षमाणः।

## (२३९) दॄ विदारे क्र्यादि॰ पर॰ सक॰ सेट्।

कर्त्तरि—दृणाति। दृणीयात्। दृणातु। अदृणात्। अदारीत्, अदारिष्टाम्। ददार; दद्रतुः, ददरतुः। ददरिथ; दद्रथुः, ददरथुः। दरीता, दरिता। दीर्य्यात्। दरीष्यति, दरिष्यति। दरिता, दरीता। अदरिष्यत्, अदरीष्यत्। कर्मणि—दीर्य्यते। अदारि। दद्रे, ददरे। णिचि—दारयति-ते। अददरत्-त। सनि—दिदरीषति, दिदरिषति, दिदीर्षति। यङि—देदीर्य्यते।

अस्य कर्मकर्त्तरि दीर्य्यते। केचित्तु दिवादावेनं पठित्वा दीर्य्यतीत्यपि रूपमाहुः।

कृत्सु—दरणीयम् । दरणम् । दारः । दाराः । दारकः । दारी । दरीता, दरिता । दीर्णः । दीर्त्तिः । दरीतुम्, दरितुम् । दरीतव्यम्, दरितव्यम् । दीर्त्वा । सन्दीर्य्य । दार्य्यम् । द्दणन्, दीर्य्यमाणः । दरीष्यन्, दरिष्यन् । दरीष्यमाणः, दरिष्यमाणः । कर्म्मणि—दारिष्यमाणश्च ।

## (२४०) दे पालने भ्वादि० आत्म० सक० अनिट् ।

कर्त्तरि—दयते । अदास्त । दिग्ये । दाता । दास्यते । कृत्सु—दातुम् । दत्तः ।

## (२४१) देव् देवने भ्वादि० आत्म० अक० सेट् ।

कर्त्तरि—देवते । अदेविष्ट । दिदेवे । भावे—देव्यते । अदेवि । णिचि—देवयति-ते, अदिदेवत्-त ।

परि—विलापे परिदेवते । "पर्य्यदेविष्ट सा पुरः" इति भट्टिः ।

कृत्सु—देवनीयम । देवनम् । देवः । देवकः । देवी । देवितुम् । देवितः । देवा । देवितुम् । देवित्वा । सन्देव्य । देवमानः । देविष्यमाणः । क्विप्—देः ।

## (२४२) देव् परिदेवने कूजने च चुरादि० आत्म० सक० सेट् ।

कर्त्तरि—देवयते । अदिदेवत । केचित्त्वेनं दिव इत्याहुः ।

कृत्सु—देवयिता । देवयितुम । देवना । देवयितव्यम् । देवयित्वा । देवयमानः । देवयिष्यमाण इत्यादिभेदः । अन्यत् भ्वादिगणीयवत् ।

## (२४३) दो खण्डने दिवादि० पर० सक० अनिट् ।

कर्त्तरि—द्यति, द्यतः, द्यन्ति । द्येत् । द्यतु । अद्यत् । अदात् । ददौ । दाता । देयात् । कर्म्मणि—दीयते । अदायि ;

अदायिषाताम्, अदिषाताम्। ददे। णिचि—दापयति-ते। अदीदपत्-त। सनि—दित्सति।

कृत्सु—दानीयम्। दानम्। दायः। दायकः। दायी। दाता। दितः। दितिः। दातुम्। दातव्यम्। दित्वा। सन्दाय। देयम्। दान्। दीयमानः। दास्यन्-स्यमानः।

## (२४४) द्यु गतौ अदादि० पर० सक० अनिट्।

कर्त्तरि—द्यौति, द्युतः, द्युवन्ति। द्युयात्। द्यौतु। अद्यौत्। अद्यौषीत्। दुद्याव। दुद्यविथ, दुद्योथ। दुद्युविव। द्योता। द्योष्यति। कर्मणि—द्यूयते। अद्यावि। णिचि—द्यावयति-ते। अदुद्यवत्-त। सनि—दुद्यूषति।

कृत्सु—द्यवनीयम्। द्यवनम्। द्यवः। द्यावकः। द्यावी। द्योता। द्युतः। द्युतिः। द्योतुम्। द्योतव्यम्। द्युत्वा। सन्द्युत्य। द्यव्यम्, द्याव्यम्। द्युवन्। द्यूयमानः। द्योष्यन्-ष्यमाणः।

## (२४५) द्युत् विद्योते भ्वादि० आत्म० अक० सेट्।

कर्त्तरि—द्योतते। द्योतेत। द्योतताम्, अद्योतत। लुङि उभयपदी—अद्युतत्, अद्योतिष्ट। विद्युते। द्योतितासे। द्योतिषीष्ट। भावे—द्युत्यते। अद्योति। णिचि—द्योतयति-ते। अदुद्युतत्। सनि—दिद्योतिषते।

कृत्सु—द्योतनीयम्। द्योतनम्। द्योतः। द्योतकः। द्योती। द्योतिता। द्युतितम्, द्योतितम्। द्युत्तिः। विद्युत्। द्योतितुम्। द्योतितव्यम्। द्योतित्वा। सन्द्युत्य। द्योत्यम्। द्योतमानः। द्योतिष्यमाणः।

(२४६) द्रु द्रवे गतौ च भ्वादि० पर० द्रवे अक० गतौ सक० अनिट् ।

कर्त्तरि—द्रवति । द्रवेत् । द्रवतु । अद्रवत् । अदुद्रुवत् । दुद्राव । दुद्रविथ, दुद्रोथ ; दुद्रुव । द्रोता । द्रोष्यति । अद्रोष्यत् । भावे कर्म्मणि च—द्रूयते । अद्रावि । णिचि—द्रावयति-ते । अदि(दु)द्रव-त्-त । सनि—दुद्रूषति ।

वि—विद्रवे पलायने च विद्रवति । उप—उपद्रवे ( अनिष्टोत्पादने ) उपद्रवति ।

कृत्सु—द्रवणीयम् । द्रवणम् । द्रवः । द्रावः । द्रावकः । द्रावी । द्रोता । द्रुतः । द्रुतिः । द्रोतुम् । द्रोतव्यम् । द्रुत्वा । सन्द्रुत्य । द्रव्यम्, द्राव्यम् । द्रवन् । द्रूयमाणः । द्रोष्यन्-ष्यमाणः । उत्—उपद्रुतः ।

(२४७) द्रुह् द्रोहे दिवादि० पर० अक० उपसर्गे सक० वेट् ।

कर्त्तरि—( भृत्याय ) द्रुह्यति । अद्रुह्यत् । अद्रुहत् । दुद्रोह । दुद्रोहिथ, दुद्रोग्ध, दुद्रोढ़ । द्रोहिता, द्रोग्धा, द्रोढ़ा । द्रोहिष्यति, ध्रोक्ष्यति । अद्रोहिष्यत्, अध्रोक्ष्यत् । कर्म्मणि—भृत्योऽभिद्रुह्यते । आङ्—आद्रोहि, आध्रुक्षाताम्, आद्रोहिषाताम् ; आद्रोहिषत, आध्रुक्षन्त । आदुद्रुहे । आदुद्रुहिषे, आदुध्रुक्षे । णिचि—द्रोहयति-ते । अदुद्रुहत्-त । सनि—दुद्रोहिषति, दुद्रुहिषति, दुध्रुक्षति । यङि—दोद्रुह्यते ।

अभि—अभिद्रुह्यति राजानं खलः ।

कृत्सु—द्रोहणीयम् । द्रोहणम् । द्रोहः । द्रोहकः । द्रोही । द्रोहिता, द्रोग्धा, द्रोढ़ा । द्रुग्धः, द्रूढ़ः । द्रुग्धिः, द्रूढ़िः ।

द्रोहितुम्, द्रोग्धुम् द्रोढुम्। द्रोहितव्यम्, द्रोग्धव्यम्, द्रोढव्यम्। द्रुग्ध्वा, द्रूढ्वा। सन्द्रुह्य। द्रोह्यः। द्रुह्यन्। अभिद्रुह्यमाणः। द्रोहिष्यन्-ष्यमाणः, ध्रोक्ष्यन्-माणः। मित्रध्रुक्-ग्, मित्रध्रुट्-ड्।

## (२४८) द्विष् द्वेषे अदादि० उभ० सक० अनिट्।

कर्त्तरि—द्वेष्टि, द्विष्टे; द्विष्टः, द्विषाते; द्विषन्ति, द्विषते। द्वेक्षि, द्विक्षे। द्विष्यात्, द्विषीत। द्वेष्टु, द्विष्टाम्। द्विड्ढि, द्विक्ष्व। द्वेषाणि, द्वेषै, अद्वेट्-ड्, अद्विष्ट। अद्विक्षत्, अद्विक्षत। दिद्वेष, दिद्विषे। द्वेष्टासि-से। द्वेक्ष्यति-ते। कर्म्मणि—द्विष्यते। अद्वेषि। णिचि—द्वेषयति-ते। अदिद्विषत्-त। सनि—दिद्विक्षति-ते। यङि—देद्विष्यते।

कृत्सु—द्वेषणीयम्। द्वेषणम्। द्वेषः। द्वेषकः। द्वेषी। द्वेष्टा। द्विष्टः। द्विष्टिः। द्वेष्टुम्। द्वेष्टव्यम्। द्विष्ट्वा। सन्द्विष्य। द्वेष्यः। द्विषन्, द्विषाणः। द्विष्यमाणः। द्वेक्ष्यन्-क्ष्यमाणः।

## (२४९) धा धारणे पोषणे च जुहोत्यादि० उभ० सक० अनिट्।

कर्त्तरि—दधाति, धत्ते; धत्तः, दधाते; दधति, दधते। दधासि, धत्से; धत्थः, दधाते; धत्थ, धद्ध्वे। दधामि, दधे। दध्वः, दध्वहे; दध्म, दध्महे। दध्यात्, दधीत। दधातु, धत्ताम्। अदधात्, अधत्त। अधात्, अधित; अधिषाताम्। दधौ, दधे। धातासि-से। धेयात्, धासीष्ट। धास्यति-ते। कर्म्मणि—धीयते। अधायि; अधायिषाताम्, अधिषाताम्। णिचि—धापयति-ते। सनि—धित्सति-ते।

सम्—सन्धाने सन्दधाति। अनु+सम्—अनुसन्धाने अनुसन्दधाति। वि—विधाने विदधाति। अन्तर्—अन्तर्धाने

अन्तर्दधाति। तिरस्—तिरोधाने तिरोदधाति। श्रद्—श्रद्धायाम् श्रद्दधाति। नि—निधाने निदधाति। अभि—अभिधाने अभिदधाति। परि—परिधाने परिदधाति। आ—आधाने आदधाति। प्र+नि—प्रणिधाने प्रणिदधाति। सम्+नि—सन्निधाने सन्निदधाति। उप+आ—उपाधौ उपादधाति। वि-आ—व्याधौ व्यादधाति। वि-अव—व्यवधाने व्यवदधाति। अव—अवधाने अवदधाति। उप—उपधाने (शयनोपकरणभेदकरणे) उपदधाति। सम्-आ—समाधाने समादधाति।

कृत्सु—धानीयम्। धानम्। धायः। धायकः। कि—उदधिः, दधिः। धायी। धाता। हितः। हितिः। अन्तर्द्धा। श्रद्धा। धातुम्। धातव्यम्। हित्वा। सन्धाय। धेयम्। दधत्, दधानः। धीयमानः। धास्यन्-स्यमानः। कर्मणि—धायिष्यमाणश्च।

## (२५०) धाव् जवे शुद्धौ च भ्वादि० उभ० शुद्धौ सक० शीघ्रगतौ अक० सेट्।

कर्त्तर्धावादेशस्तु पर०। कर्त्तरि—धावति-ते। धावेत्-त। धावतु-ताम्। अधावत्-त। दधाव, दधावे। अधावीत्। अधाविष्ट। धाविष्यति-ते। धाविता। अधाविष्यत्-त। धाव्यात्, धाविषीष्ट। णिचि—धावयति-ते। अदीधवत्-त। दिधाविषति-ते। यङि—दाधाव्यते।

अनु—अनुधावने अनुधावति। अप—पलायने अपधावति। निर्—मार्ज्जने निर्धावति।

कृत्सु—धौतः, धावितः। धावित्वा, धौत्वा। प्रधाव्य। धावितुम्। धावितव्यम्। धावनीयम्। धाव्यम्। धौतवान्। धावितवान्। धावन्। धावमानः।

(२५१) धिन्व् प्रीतौ गतौ च स्वादि० पर० प्रीतौ अक० प्रीणने गतौ च सक० सेट्।

कर्त्तरि—धिनोति, धिनुतः, धिन्वन्ति। धिनोषि, धिनुथः, धिनुथ। धिनोमि, धिन्वः, धिनुवः ; धिन्मः, धिनुमः। धिनुयात्। धिनोतु। अधिनोत्। अधिन्वीत्। दिधिन्व। धिन्विता। धिन्व्यात्। कर्म्मणि—धिन्व्यते। अधिन्वि।

कृत्सु—धिन्वनीयम्। धिन्वनम्। धिन्वकः। धिन्वितः। धिन्वित्वा। धिन्वन्। धिन्व्यमानः। धिन्विष्यन् ष्यमाणः।

(२५२) धु कम्पे स्वादि० उभ० अक० चालने सक० अनिट्।

कर्त्तरि—धुनोति, धुनुतः, धुन्वन्ति। धुनोषि। धुनोमि ; धुन्वः, धुनुवः, धुन्मः, धुनुमः। धुनुते, धुन्वाते, धुन्वते। धुनुयात्, धुन्वीत। धुनोतु, धुनुताम्। अधुनोत्, अधुनुत। पाणिनीयमते—अधौषीत्। मुग्धबोधमते तु—अधावीत्, अधुत। दुधाव, दुधुवे। धोतासि-से। धूयात्, धोषीष्ट। भावे कर्म्मणि च—धूयते। अधावि। णिचि—धावयति। अदूधवत्। सनि—दुधूषति-ते। यङि—दोधूयते।

कृत्सु—धवनीयम्। धवनम्। धवः। धावकः। धावी। इत्र—धवित्रम्। धोता। धुतः। धुतिः। धोतुम्। धोतव्यम्। धुत्वा। सन्धुत्य। धव्यम्, धाव्यम्। धुन्वन्, धुन्वानः। यङः,—दोधूयमानः। धोष्यन्।

(२५३) धुर्व् हिंसने भ्वादि० पर० सक० सेट्।

कर्त्तरि—धूर्वति। अधूर्वत्। अधूर्वीत्। दुधूर्व। धूर्विता। धूर्व्यात्।

क्त्वसु—धूर्वेचम। धूर्त्तः। धूर्त्तिः। धूर्त्वा। क्विप्—धूः, धुरौ, धुरः। धूर्त्तिः। धुर्य्यः। धूर्त्तः।

## (२५४) धू कम्पे स्वादिः क्र्यादिः चुरादिश्च उभ० तुदादि० पर० कम्पे अक० कम्पने सक० वेट्।

कर्त्तरि—(स्वादिः) धूनोति, धूनुते। धूनुयात्, धून्वीत। धूनोतु, धूनुताम्। अधूनोत्, अधूनुत। (क्र्यादिः)—धुनाति, धुनीते; धुनीतः, धुनाते; धुनन्ति, धुनते। धुनीयात्, धुनीत। धुनातु, धुनीताम्। अधुनात्, अधुनीत। (चुरादिः)—धूनयति-ते। लिड़ादिषु—दुधाव, दुधुवे। अधावीत्; अधविष्ट, अधोष्ट। (पाणिनीयमते अधावीत्। मुग्धबोधमते अधावीत्, अधौषीत्।) धोष्यति, धविष्यति, धोष्यते। धविष्यते। धोता, धविता; धोतासि-से; धवितासि से। अधोष्यत्, अधविष्यत्; अधोष्यत, अधविष्यत। धूयात्; धोषीष्ट, धविषीष्ट। भावे कर्म्मणि च—धूयते। अधावि। णिचि—धूनयति। अदुधूनत्। सनि—दुधूषति-ते।

केचित् धूनातीत्याद्याहुः। स्वादौ ह्रस्वश्चेति पाणिनीयाः। तथा च—"धूनोति चम्पकवनानि धुनोत्यशोकं चूतं धुनाति धुवति स्फुटितातिमुक्तम्। वायुर्विधूनयति चम्पकपुष्परेणून् यत्काननं धवति चन्दनमञ्जरीञ्च॥" इति कविरहस्यम्।

(तुदादिः)—धुवति। धुवेत्। धुवतु। अधुवत्। अधुवीत्। धुविष्यति। धुविता। अधुविष्यत्। णिचि—धावयति। अयं भ्वादौ उभ०। धवति-ते।

कृत्सु—धवनीयम्। धवनम्। धविता। धोता। धूनः। धूनिः। धवितुम्, धोतुम्। धवित्वा, धूत्वा। सन्धूय। धुनन्। धुनानः। मतान्तरे धूतः। धूतिः। धून्वन्, धन्वानः। धूयमानः। धविष्यन् ष्यमाणः। धोष्यन्-ष्यमाणः।

## (२५५) धूप् सन्तापने भ्वादि० पर० सक० तापे अक० सेट्।

कर्त्तरि—धूपायति। धूपायेत्। धूपायतु। अधूपायत्। अधूपायीत्, अधूपीत्। धूपायाम-बभूव-आस-चकार। दुधूप। धूपायिता, धूपिता। धूपाय्यात्, धूप्यात्। धूपायिष्यति, धूपिष्यति। कर्म्मणि भावे च—धूपाय्यते, धूप्यते। अधूपायि, अधूपि। णिचि—धूपाययति-ते, धूपयति-ते। अदुधूपाययत्-त, अदुधूपत्-त।

कृत्सु—धूपायनीयम्, धूपनीयम्। धूपायनम्, धूपनम्। धूपायकः, धूपकः। धूपायिता, धूपिता। धूपायितः, धूपितः। धूपाया, धूपा। धूपायितुम्, धूपितुम्। धूपायन्, धूपयन्। धूपायिष्यन्-ष्यमाणः, धूपिष्यन्-ष्यमाणः।

## (२५६) धृ स्थितौ तुदादि० आत्म० अक० धारणे सक० अनिट्।

कर्त्तरि—ध्रियते। अधृत। दध्रे। धर्त्तासे। धृषीष्ट। धरिष्यते। भावे कर्म्मणि च—ध्रियते। अधारि। णिचि—धारयति-ते। अदीधरत्-त। ण्यन्तविषयके भावे कर्म्मणि च—धार्य्यते। अधारि। सनि—दिधरिषते।

सन्तोषार्थकस्तु उभयपदी भ्वादिगणीयः। धरति-ते इत्यादि।

अयं धारणार्थे चुरादि० उभ० सक० सेट्। कर्त्तरि—धारयति-ते। अदीधरत्-त इत्यादि।

कृत्सु—धरणीयम्। धरणम्। धरः। धारः। धारकः। धारी। धृतः। धृतिः। धर्त्तुम्। धर्त्तव्यम्। धृत्वा। सन्धृत्य। धार्य्यम्। ध्रियमाणः। धरिष्यन्-ष्यमाणः। णिजन्तस्य—धनुर्द्धरः, वंशधरः। धारयिता। धारयित्वा। धारितः। धारणा। धारयन्-माणः, धार्य्यमाणः।

## (२५७) धृष् संहतौ हिंसायाञ्च भ्वादि० पर० संहतौ अक० हिंसा ; सक० सेट्।

कर्त्तरि—धर्षति। धर्षत्। अधर्षीत्। दधर्ष, दधृषतुः। धर्षिता। भावे कर्म्मणि च—धृष्यते। अधर्षि। णिचि—धर्षयति-ते। अदीधृषत्-त, अदधर्षत्-त।

कृत्सु—धर्षणीयम्। धर्षणम्। धर्षः। दुर्धर्षणः। दुर्धर्षः। धर्षकः। धर्षी। धर्षिता। धर्षितः। धृष्टः। ण्यन्तस्य—धर्षणा। धर्षितुम्। धर्षितव्यम्। धर्षित्वा, धृष्ट्वा। सन्धृष्य। धृष्यः। धर्षन्। धृष्यमाणः। धर्षिष्यन्-ष्यमाणः। क्नज्—धृष्णक्। क्नु—धृष्णुः।

## (२५८) धृष् प्रागल्भ्ये स्वादि० पर० अक० सेट्।

कर्त्तरि—धृष्णोति, धृष्णुतः। धृष्णुयात्। धृष्णोतु। अधृष्णोत्। अन्यत् सर्वं भ्वादिगणीयवत्। निष्ठायां धृष्टम्, धर्षितम्। शतरि—धृष्णन्। क्त्वा-प्रत्यये धर्षित्वा इति भेदः।

## (२५९) धृष् अमर्षे विकल्पचुरादि० उभ० पक्षे भ्वादि० पर० सक० सेट्।

कर्त्तरि—धर्षयति-ते। धर्षति। अदीधृषत्-त, अदधर्षत्-त।

अधर्षीत्। धर्षयितासि-से, धर्षितासि। धर्षयिष्यति-ते, धर्षिष्यति। कर्म्मणि—धर्ष्यते, धृष्यते। अधर्षि।

कृत्सु—धर्षयिता। धर्षणा। धर्षयितुम्। धर्षयितव्यम्। धर्षयित्वा। सन्धर्ष्य। धर्ष्यः। धर्षयन्-माणः। धर्ष्यमाणः। धर्षयिष्यन्-ष्यमाणः। अन्यत् भ्वादिगणीयवत्।

## (२६०) धे पाने भ्वादि॰ पर॰ सक॰ अनिट्।

कर्त्तरि—धयति। धयेत्। धयतु। अधयत्। अदधत्, अधात्, अधासीत्। दधौ। धाता। धेयात्। कर्म्मणि—धीयते। अधायि। णिचि—धापयति-ते। अदीधपत्-त। सनि—धित्सति। यङि—देधीयते।

कृत्सु—धानीयम्। धानम्। धायः। धायकः। स्तनन्धयः। स्तनन्धयी। पुष्पन्धयः। धायी। धाता। धितः। धितिः। धातुम्। धातव्यम्। धित्वा। सन्धाय। धेयम्। धयन्। धीयमानः। धास्यन्-स्यमानः।

## (२६१) ध्मा मुखमारुतसंयोजने शब्दे च भ्वादि॰ पर॰ सक॰ शब्दे अक॰ अनिट्।

कर्त्तरि—धमति। धमेत्। धमतु। अधमत्। अध्मासीत्। दध्मौ, दध्मतुः। दध्माथ, दध्मिथ। ध्मेयात्, ध्मायात्। कर्म्मणि भावे च—ध्मायते। अध्मायि। णिचि—ध्मापयति-ते। अदिध्मपत्-त।

आं—स्फीततायाम्, आधमति उदरम् स्फायते।

कृत्सु—ध्मानीयम्। ध्मानम्। आं—आध्मानम्। उदराध्मानम्। ध्मायः। नाड़ीन्धमः। ध्मायकः। ध्मायी। ध्मातः। ध्मातिः। ध्मातुम्। ध्मातव्यम्। ध्मात्वा। संध्माय।

ध्येयम् । धमन् । ध्मायमानः । ध्मास्यन् । ध्मास्यमानः ।
कर्म्मणि—ध्मायिष्यमाणश्च ।

(२६२) ध्यै चिन्तने भ्वादि० पर० सक० अनिट् ।

कर्त्तरि—ध्यायति । ध्यायेत् । ध्यायतु । अध्यायत् । अध्यासीत् । दध्यौ । ध्याता । ध्येयात्, ध्यायात् । कर्म्मणि—ध्यायते । अध्यायि । णिचि—ध्यापयति-ते । अदिध्यपत्-त ।

कृत्सु—ध्यानीयम् । ध्यानम् । ध्यायः । ध्यायकः । ध्यायी । ध्याता । ध्यातः । ध्यातिः । ध्यातुम् । ध्यातव्यम् । ध्यात्वा । सन्ध्याय । ध्येयम् । ध्यायन् । ध्यायमानः, ध्यास्यमानः, ध्यायिष्यमाणश्च । क्विप्—धीः ।

(२६३) ध्वन् रवे भ्वादि० पर० अक० सेट् ।

कर्त्तरि—ध्वनति । अध्वानीत्, अध्वनीत् । दध्वान । भावे—ध्वन्यते । अध्वानि । णिचि—ध्वनयति, ध्वानयति । अदिध्वनत् । ण्यन्तकर्म्मणि—ध्वन्यते । अध्वानि-अध्वनि ।

कृत्सु—ध्वननीयम् । ध्वननम् । ध्वानः । ध्वानकः । इ—ध्वनिः । ध्वनिता । ध्वनितः । ध्वान्तम् । ध्वनितुम् । ध्वनितव्यम् । ध्वनित्वा । सन्ध्वन्य । ध्वन्यः । ध्वनन् । ध्वन्यमानः । ध्वनिष्यन्-ष्यमाणः ।

(२६४) ध्वन शब्दे अदन्तचुरादि० उभ० अक० सेट् ।

कर्त्तरि—ध्वनयति-ते । अदिध्वनत्-त । अध्वनयीत् । ध्वनयिता । भावे—ध्वन्यते । अध्वनि ।

कृत्सु—ध्वनयिता । ध्वनयितुम् । ध्वनयितव्यम् । ध्वनयन्-मानः । ध्वनयिष्यन्-ष्यमाणः । अन्यत् भ्वादिगणीयवत् ।

(२६५) ध्वन्स् गतौ नाशे च भ्वादि० आत्म० गतौ सक० नाशे अक० सेट्।

कर्त्तरि—ध्वंसते। अध्वंसिष्ट। दध्वंसे, दध्वसे। ध्वंसिषीष्ट। कर्म्मणि भावे च—ध्वस्यते। अध्वंसि। णिचि—ध्वसयति-ते। अदध्वंसत्-त।

कृत्सु—ध्वंसनीयम्। ध्वंसनम्। ध्वंसः। ध्वंसकः। ध्वंसी। ध्वंसिता। ध्वस्तः। ध्वस्तिः। ध्वंसितुम्। ध्वंसितव्यम्। ध्वंसित्वा, ध्वस्त्वा। अपध्वस्य। ध्वंस्यः। ध्वंसमानः। ध्वंसिष्यमाणः।

यद्यपि नृनृतनटनन्दनक्कनाधनाथभिन्नाः सर्वे नकारादयो धातवः गणपाठे णकारादिकतया पठितास्तथापि प्रयोगकाले ते नकारादेशेन नादयो भवन्ति। पुनश्च त एव प्रादिपूर्व्वकाः णत्वादेशेन णादयो भवन्ति। अतोऽत्र प्रयोगानुसारेण नादय एव प्रदर्श्यन्ते।—

(२६६) नट् अवस्कन्दने ( हिंसने ) चुरादि० उभ० सक० सेट्।

कर्त्तरि (प्रायेणायमुत्पूर्व्वकः)—उन्नाटयति-ते। उदनीनटत्-त। कर्म्मणि—उन्नाट्यते। उदनाटि।

णोपदेशाभावेन नास्य णत्वम्—प्रनटति।

कृत्सु—उन्नाटनीयम्। उन्नाटनम्। उन्नाटकः। उन्नाटयिता। उन्नाटितः। उन्नाटना। उन्नाटयितुम्। उन्नाटयितव्यम्। नाटयित्वा। उन्नाट्य। उन्नाट्यम्। उन्नाटयन्-मानः, उन्नाट्यमानः। उन्नाटयिष्यन्-ष्यमाणः। उन्नाटिष्यमाणश्च।

(२६७) नट् नृत्ये भ्वादि० पर० अक० सेट्।

कर्त्तरि—नटति। अनाटीत्, अनटीत्। ननाट, नेटतुः।

भावे—नट्यते। अनाटि। णिचि—नाटयति। घटादेस्तु नटयति-ते। ण्यन्तकर्म्मणि—अनाटि, अनटि।

अस्य णोपदेशतया णत्वम्—प्रणटति।

कृत्सु—नटनीयम्। नटनम्। नाटः। नाटकः। नाटी। नटिता। नटितः। नटितुम्। नटितव्यम्। नटित्वा। सन्नट्य। नाट्यम्। नटन्। नटिष्यन्।

## (२६८) नद् शब्दे भ्वादि॰ पर॰ अक॰ सेट्।

कर्त्तरि—नदति। प्रणिनदति। अनादीत्, अनदीत्। ननाद, नेदतुः, नेदुः। भावे—नद्यते। अनादि। णिचि—नादयति-ते। अनीनदत्-त। सनि—निनदिषति।

प्र-परि-परा-निर्-अन्तर्-पूर्वकस्य णत्वं—प्रणदति, परिणदति, पराणदति इत्यादि।

कृत्सु—नदनीयम्। नदनम्। नादः। नादकः। नादी। नदिता। नदितः। नदितुम्। नदितव्यम्। नदित्वा। सन्नद्य। नाद्यम्। नदन्, नदिष्यन्। निर्—निर्णादः। अन्तर्—अन्तर्णदनम्।

## (२६९) नन्द् आनन्दे भ्वादि॰ पर॰ अक॰ सेट्।

कर्त्तरि—नन्दति। अनन्दत्। अनन्दीत्। ननन्द, ननन्दतुः। नन्दिष्यति। नन्द्यात्। भावे—नन्द्यते। णिचि—नन्दयति-ते। अननन्दत्-त। सनि—निनन्दिषति।

प्रादिपूर्वस्य न णत्वम्,—प्रनन्दतीत्यादि। अभि—अभिनन्दने ऽभिनन्दति, संवर्द्धयति।

कृत्सु—नन्दनीयम्। नन्दनम्। नन्दः। ण्यन्तस्य ल्युः,—नन्दनः। अथुच्—नन्दथुः। नन्दकः। आनन्दी।

नन्दिता। नन्दितः। नन्दा। नन्दितुम्। नन्दितव्यम्। नन्दित्वा। सन्नन्द्य। नन्द्यः। नन्दन्। नन्दिष्यन्।

## (२७०) नम् नमने भ्वादि० पर० सक० अनिट्।

कर्त्तरि—नमति। नमेत्। नमतु। अनमत्। अनंसीत्, अनंसिष्टाम्। ननाम, नेमतुः, नेमुः। नेमिथ, ननन्थ। नन्ता। नंस्यति। अनंस्यत्। कर्म्मणि—नम्यते। अनामि। णिचि—नमयति-ते। अनीनमत्-त। ण्यन्तकर्म्मणि—अनामि, अनमि। सनि—निनंसति। यङि—नंनम्यते।

प्रादिभ्यो णत्वम्, प्र—प्रणमति। परि—परिणामे आत्म० परिणमते।

कृत्सु—नमनीयम्। नमनम्। नमः। नामकः। नामः। प्र—प्रणामः। नामी। नन्ता। नतः। नतिः। नन्तुम्। नन्तव्यम्। नत्वा। सन्नम्य, सन्नत्य। नम्यम्। र—नम्रः। नमन्। कर्म्मणि—नम्यमानः। यङः,—नंनम्यमानः। नंस्यन्-स्यमानः।

## (२७१) नर्द् शब्दे गतौ च भ्वादि० पर० शब्दे अक० गतौ सक० सेट्।

कर्त्तरि—नर्दति, प्रणर्दति। अनर्दीत्। ननर्द, ननर्दतुः। नर्दिता। नर्दिष्यति। अनर्दिष्यत्। भावे कर्म्मणि च—नर्द्यते। अनर्दि। णिचि—नर्दयति-ते। अननर्दत्-त।

कृत्सु—नर्दनीयम्। नर्दनम्। नर्दकः। नर्दी। नर्दिता। नर्दितः। नर्दा। नर्दितुम्। नर्दितव्यम्। नर्दित्वा। सन्नर्द्य। नर्द्यम्। नर्दन्। नर्दिष्यन्। परि—परिणर्दनम्।

## (२७२) नश् नाशे अदर्शने च दिवादि० पर० अक० वेट्।

कर्त्तरि—नश्यति, प्रणश्यति। नश्येत्। नश्यतु। अनश्यत्। अनेशत्, अनशत्। ननाश, नेशतुः, नेशुः। नेशिथ, ननंष्ठ। नेश, ननाश, ननश; नेशिव, नेश्व। नशिता, नंष्टा, नङ्ग्धा। अनशिष्यत्, अनङ्क्ष्यत्। नशिष्यति, नङ्क्ष्यति। नश्यात्। भावे—नश्यते। अनाशि। णिचि—नाशयति। अनीनशत्। सनि—निनशिषति, निनङ्क्षति। यङि—नानश्यते।

कृत्सु—नशनीयम्। नशनम्। नाशः। नाशकः। नाशी। नशिता, नंष्टा, नङ्ग्धा। नष्टः, नग्धः। नष्टिः, नग्धिः। नशितुम्, नंष्टुम्, नङ्ग्धुम्। नशितव्यम्, नंष्टव्यम्, नङ्ग्धव्यम्। नशित्वा, नष्ट्वा, नङ्क्ष्वा। विनश्य। नाश्यम्। नश्यन्, नशिष्यन्, नङ्क्ष्यन्। प्रादिभ्यः षकारस्याविकृतिस्थले णत्वं—प्रणाशः। अन्यत्र विकारे तु न—प्रनष्टः प्रनग्धः।

## (२७३) नह् बन्धने दिवादि० उभ०सक०अनिट्।

कर्त्तरि—नह्यति-ते। अनात्सीत्, अनद्ध। ननाह, नेहतुः। नेहे। नद्धासि-से। नत्स्यति-ते। कर्मणि—नह्यते। अनाहि। णिचि—नाहयति। अनीनहत्। सनि—निनत्सति-ते।

प्रादिभ्यो णत्वं—प्रणह्यति-ते। सम्—कवचधारणे अकर्मकः,—सन्नह्यति ते। परि—परिणाहे (विशालतायाम्) अक०—परिणह्यति।

कृत्सु—नहनीयम्। नहनम्। नाहः। नाहकः। नद्धा। नद्धः। नद्धिः। नद्धुम्। नद्धव्यम्। नद्ध्वा। सन्नह्य। नाह्यम्। नह्यन्-मानः। नत्स्यन् त्स्यमानः। प्र—प्रणद्धः।

## (२७४) नाथ् आशीर्वादे आत्म० सक० प्रार्थने पर० द्विक० उपतापे ऐश्वर्य्ये च अक० सेट्।

कर्त्तरि—नाथते। अनाथिष्ट। ननाथे। उपतापादिष्वर्थेषु नाथति इत्यादि। कर्म्मणि—नाथ्यते अनाथि। णिचि—नाथयति-ते। अननाथत्-त।

अस्य न णत्वम्, प्रनाथते।

कृत्सु—नाथनीयम्। नाथनम्। नाथः। नाथकः। नाथी। नाथितः। नाथा। नाथितुम्। नाथितव्यम्। नाथित्वा। सन्नाथ्य। नाथ्यम्। नाथमानः। नाथ्यमानः। नाथिष्यमाणः।

## (२७५) निज् शोधने जुहोत्यादि० उभ०सक० शुद्धौ अक० अनिट्।

कर्त्तरि—नेनेक्ति, नेनिक्तः, नेनिजति। नेनेक्षि; नेनिक्थः, नेनिक्थ। नेनेज्मि, नेनिज्वः, नेनिज्मः। नेनिक्ते; नेनिजाते, नेनिजते, नेनिजे। नेनिज्यात्, नेनिजीत। नेनेक्तु। नेनिग्धि। नेनिजानि। अनेनेक्-ग्, अनेनिक्त। अनिजत्, अनैक्षीत्, अनिक्त। निनेज, निनिजे। नेक्तासि-से। निज्यात्, निक्षीष्ट। नेक्ष्यति-ते। अनेक्ष्यत्-त। भावे कर्म्मणि च—निज्यते अनेजि। णिचि—नेजयति-ते। अनीनिजत्-त। सनि—निनिक्षति-ते। यङि—नेनिज्यते।

प्रादिभ्यो णत्वम्, प्रणेनेक्ति।

कृत्सु—नेजनीयम्। नेजनम्। नेजः। नेजकः। नेजी। नेक्ता। निक्तः। निक्तिः। नेक्तुम्। नेक्तव्यम्। निक्त्वा। विनिज्य। नेज्यम्। नेनिजत्। नेनिजानः। नेक्ष्यन्-क्ष्यमाणः।

## (२७६) निन्द् निन्दायां भ्वादि० पर० सक० सेट्।

कर्त्तरि—निन्दति। निन्देत्। निन्दतु। अनिन्दत्। अनिन्दीत्। निनिन्द, निनिन्दतुः। निनिन्दिथ। निन्द्यात्। निन्दिष्यति। निन्दिता। अनिन्दिष्यत्। निन्द्यात्। कर्म्मणि—निन्द्यते। अनिन्दि। णिचि—निन्दयति-ते। अनिनिन्दत्-त। सनि—निनिन्दिषति।

प्रादिभ्यो णत्वम् प्रणिन्दति।

कृत्सु—निन्दनीयम्। निन्दनम्। निन्दकः। निन्दी। निन्दिता। निन्दितः। निन्दा। निन्दितुम्। निन्दितव्यम्। निन्दित्वा। सन्निन्द्य। निन्द्यम्। निन्दन्। निन्द्यमानः। निन्दिष्यन्। निन्दिष्यमाणः।

कृत्सु—पाणिनीयमते वा णत्वं प्रणिन्दा, प्रनिन्दा। मुग्धबोधमते तु सर्वत्र वा णत्वम्।

## (२७७) नी प्रापणे भ्वादि० उभ० द्विक०अनिट्।

कर्त्तरि—नयति, नयतः, नयन्ति। नयते, नयेते, नयन्ते। नयेत्, नयेत। नयतु, नयताम्। अनयत्, अनयत। अनैषीत्, अनेष्ट। निनाय, निन्ये; निन्यतुः, निन्याते; निन्युः, निन्यिरे। निनयिथ, निनेथ; निनिषे। निन्यथुः, निन्याथे। नेतासि-से। नेता। नीयात्, नेषीष्टः। नेष्यति-ते, अनेष्यत्-त। कर्म्मणि—नीयते। अनायि। णिचि—नाययति-ते। अनीनयत्-त। सनि—निनीषति-ते। यङि—नेनीयते।

प्र—करणे प्रणयति करोति। अप—दूरीकरणे अपनयति। उप—उपनयने आत्मनेपदम् उपनयते। उत्—उन्नयने

(उत्क्षेपणायाम् ऊर्द्ध्वक्षेपणे च) उन्नयति उत्क्षेपते, ऊर्द्ध्वं क्षिपतीत्यर्थं आत्म० वा। अभि—अभिनये (आकारादिना तदनुरूपकरणे) अभिनयति। अनु—अनुनये (सन्तोषादिजनकव्यापारकरणे) अनुनयति। वि—विनये आत्मनेपदी विनयते। वि—विगणने च (ऋणशोधनार्थं गणनायाम्) आत्मनेपदी, ऋणं विनयते शोधनार्थं गणयतीत्यर्थः।

प्रादिभ्यो णत्वम्—प्रणयति।

कृत्सु—नयनीयम्। नयनम्। नयः। उपनयः। विनयः। उन्नायः। सन्नायः, आनायः। नायकः। नायी। नेता। नीतः। नीतिः। नेतव्यम्। नीत्वा। विनीय। नेयम्। नयन्। नयमानः। नीयमानः। नेष्यन्। नेष्यमाणः। कर्मणि—नायिष्यमाणश्च। प्र—प्रणयः।

## (२७८) नु स्तुतौ अदादि० पर० सक० वेट्।

कर्त्तरि—नौति, नुतः, नुवन्ति। नौषि, नुथः, नुथ। नौमि। नुयात्। नौतु। नवानि, नवाव, नवाम। अनौत्। अनावीत्, अनौषीत्। नुनाव। नुनुविथ। नुनुविव। नविता, नोता। नविष्यति-नोष्यति। कर्म्मणि—नूयते। अनावि। णिचि—नावयति-ते। अनूनवत्-त। सनि—नुनूषति। यङि—नोनूयते।

प्रादिभ्यो णत्वम्—प्रणौति।

कृत्सु—नवनीयम्। नवनम्। नवः, अभिनवः। नावकः। नावी। नविता, नोता। नुतः। नुतिः। नवितुम्, नोतुम्। नवितव्यम्, नोतव्यम्। नवित्वा, नुत्वा। सन्नुत्य। नव्यम्, नाव्यम्। नुवन्। नूयमानः। नविष्यन्, नोष्यन्। नविष्यमाणः, नोष्यमाणः। कर्म्मणि—नाविष्यमाणश्च। प्र—प्रणवः।

## (२७९) नुद् प्रेरणे तुदादि० उभ० सक० अनिट्।

कर्त्तरि—नुदति-ते। नुदेत्-त। नुदतु-ताम्। अनुदत्-त। अनौत्सीत्, अनुत्त। नुनोद। नुनोदिथ। नुनुदिव, नुनुदे। नोत्तासि-से। नुद्यात्, नुत्सीष्ट। नोत्स्यति-ते। कर्म्मणि—नुद्यते। अनोदि। णिचि—नोदयति-ते। अनूनुदत्-त। सनि—नुनुत्सति-ते। यङि—नोनुद्यते।

प्रादिभ्यो णत्वम—प्रणुदति। वि—विनोदे (हर्षहेतुकव्यापारे) सकर्म्मकः, विनुदति। णिचि—(हर्षसम्पादनव्यापारे) विनोदयति। अप—अपसारणे खण्डने च अपनुदति।

कृत्सु—नोदनीयम्। नोदनम्। नोदः, विनोदः। नोदकः। नोदी, विनोदी। नुत्तः, नुन्नः। नुत्तिः। नोत्तुम। नोत्तव्यम्। नुत्त्वा। सन्नुद्य। नोद्यम्। नुदन्-मानः, नुद्यमानः। नोत्स्यन्-स्यमानः। प्र—प्रणोदनम्। वि—विनोदः।

## (२८०) नू स्तवने तुदादि० पर० सक० सेट्।

कर्त्तरि—नुवति, नुवतः, नुवन्ति। नुवेत्। नुवतु। अनुवत्। अनुवीत्, अनुविष्टाम्। नुनाव, नुनुवतुः। नुनुविथ। नुविता। नुविष्यति। कर्म्मणि—नूयते। अनावि। णिचि—नावयति-ते। अनूनवत्-त। सनि—नुनूषति। यङि—नोनूयते।

प्रादिभ्यो णत्वम्—प्रणुवति।

कृत्सु—नुवनीयम्। नुवनम्। नुवः। नावकः। नुविता। नूतः। नूतिः। नुवितुम्। नुवितव्यम्। नुवित्वा। सन्नूय। नव्यम्। नाव्यम। नुवन्। नुवमानः। नूयमानः। नुविष्यन्-ष्यमाणः। कर्म्मणि—नाविष्यमाणश्च। प्र—प्रणूतः।

## (२८१) नृत् नर्त्तने दिवादि० पर० अक० सेट्।

कर्त्तरि—नृत्यति, नृत्यतः, नृत्यन्ति। नृत्येत्। नृत्यतु। अनृत्यत्। अनर्त्तीत्, अनर्त्तिष्टाम्। ननर्त्त, ननृततुः। ननर्तिथ, ननर्त्त। नर्त्तिता। नृत्यात्। नर्त्तिष्यति, नर्त्स्यति। भावे—नृत्यते। अनर्त्ति। णिचि—नर्त्तयति-ते। अनीनृतत्, अननर्त्तत्। सनि—निनर्त्तिषति, निनृत्सति। यङि—नरीनृत्यते।

प्रादिभ्यो न णत्वम्—प्रनृत्यति।

कृत्सु—नर्त्तनीयम्। नर्त्तनम्। नर्त्तः। नर्त्तकः। नर्त्तकी। नर्त्ती। नर्त्तिता। नृत्तः। नृत्तिः। नर्त्तितुम्। नर्त्तितव्यम्। नर्त्तित्वा। सनृत्य। नृत्यं, नर्त्यम्। नृत्यन्। नर्त्तिष्यन्, नर्त्स्यन्।

## (२८२) पच् पाके भ्वादि० उभ० सक० अनिट्।

कर्त्तरि—पचति-ते। पचेत्-त। पचतु-ताम्। अपचत्-त। अपाक्षीत्, अपक्त। अपाक्षीः, अपक्थाः। अपाक्षम्, अपक्षि। पपाच, पेचतुः। पेचिथ, पपक्थ। पेचिव। पेचे। पेचाथे। अपक्ष्यत्, अपक्ष्यत। पक्तासि-से। पच्यात्, पक्षीष्ट। पक्ष्यति-ते। पक्ता। कर्म्मणि—पच्यते। अपाचि। णिचि—पाचयति-ते। अपीपचत्-त। सनि—पिपक्षति-ते। यङि—पापच्यते।

कृत्सु—पचनीयम्। पचनम्। पाकः। मितम्पचः, द्रोणम्पचः। पचः। सुपचः, दुष्पचः। पाचकः। इष्णुच्—उत्पचिष्णुः। एलिम—पचेलिमम्। पक्ता। क्त्रि, मप् च—पक्त्रिमः। पक्वः। पक्तिः। पचा। पक्तुम्। पक्तव्यम्। पक्त्वा। सम्पच्य। पाच्यम्। पचन्-मानः। पच्यमानः। पक्ष्यन्-माणः।

## (२८३) पञ्च् व्यक्तीकारे भ्वादि० आत्म० सक० सेट्।

कर्त्तरि—पञ्चते। अपञ्चिष्ट। कर्म्मणि—पञ्च्यते। अपञ्चि। णिचि—पञ्चयति-ते। अपपञ्चत्-त।

कृत्सु—पञ्चनीयम्। प्रपञ्चनम्। प्रपञ्चः। पञ्चः। पञ्चकः। पञ्चितम्। पञ्चितुम्। पञ्चितः। पञ्चितव्यम्। पञ्चिता। पञ्चमानः। पञ्चिष्यमाणः।

## (२८४) पञ्च् विस्तारे चुरादि० उभ० सक० सेट्।

कर्त्तरि—पञ्चयति-ते। अपपञ्चत्-त। कर्म्मणि—पञ्च्यते। अपञ्चि।

कृत्सु—पञ्चयिता। पञ्चना। पञ्चयितुम्। पञ्चयितव्यम्। पञ्चयित्वा। पञ्चयन्-मानः। पञ्च्यमानः। पञ्चयिष्यन्-ष्यमाणः, इत्यादि भेदः। अन्यत् भ्वादिगणीयवत्।

## (२८५) पट् भ्रंशने चुरादि० उभ० सक० सेट्।

कर्त्तरि—पाटयति-ते। अपीपटत्-त। कर्म्मणि—पाट्यते। अपाटि।

उत-उत्पाटने (उन्मूलने) उत्पाटयति मूलादुत्थापयति।

कृत्सु—पाटनीयम्। पाटनम्। उत्—उत्पाटनम्। पाटकः। पाटी। पाटयिता। पाटितः। पाटना। पाटयितुम्। पाटयितव्यम्। पाटयित्वा। सम्पाट्य। पाट्यम्। पाटयन्-मानः। पाट्यमानः। पाटयिष्यन्-ष्यमाणः। कर्म्मणि—पाटिष्यमाणश्च।

## (२८६) पठ् पठने भ्वादि० पर० सक० सेट्।

कर्त्तरि—पठति। पठेत्। पठतु। अपठत्। अपाठीत्,

अपठीत्। पपाठ, पेठतुः, पेठुः। पेठिथ। पठिष्यति। पठिता। अपठिष्यत्। पठ्यात्। कर्म्मणि—पठ्यते, अपाठि। णिचि—पाठयति-ते। अपीपठत्-त। सनि—पिपठिषति। यङि—पापठ्यते।

कृत्सु—पठनीयम्। पठनम्। पाठः। पाठकः। पाठी। पठिता। पठितः। पठितिः। पठितुम्। पठित्वा। सम्पठ्य। पाठ्यम्। पठन्। पठ्यमानः। पठिष्यन्-ष्यमाणः। ण्यन्तस्य—पाठनीयम्। पाठनम्। पाठयिता। पाठितः। पाठना। पाठयितुम्। पाठयितव्यम्। पाठयित्वा। पाठयन्-मानः, पाठ्यमानः। पाठयिष्यन्-ष्यमाणः, इति भेदः। सनः,—पिपठिषा। पिपठिषुः। पिपठिषन्। क्विप्—पिपठीः।

## (२८७) पण् व्यवहारे स्तुतौ च भ्वादि० आत्म० व्यवहारे पर० सक० सेट्।

कर्त्तरि—पणायते, पणायति। अपणायिष्ट। अपणिष्ट। पणायाम्-बभूव-आस-चक्रे। पेणे। पणायितासे, पणितासे। स्तुतौ सार्वधातुकेऽपि वा आयः, पणते इत्यादि। कर्म्मणि—पणाय्यते, पण्यते। अपणायि, अपाणि।

कृत्सु—पणायनीयम्, पणनीयम्। पणायनम्, पणनम्। पणः। पणायकः, पाणकः। पणायिता, पणिता। पणायितः, पणितः। पणाया। पणायितुम्, पणितुम्। पणायितव्यम्, पणितव्यम्। पणायित्वा, पणित्वा। सम्पणाय्य, सम्पण्य। पणाय्यम्, पाण्यम्। पणायन्-मानः। स्तुतौ पणमानोऽपि। पणायिष्यन्-ष्यमाणः, पणिष्यमाणः।

(२८८) पत् गतौ भ्वादि० पर० अक० ज्वला० सेट्।

कर्त्तरि—पतति। पतेत्। पततु। अपतत्। अपप्तत्। पपात, पेततुः। पेतिथ, पेतथुः। पपात, पपत। पतिता। पत्यात्। पतिष्यति। अपतिष्यत्। पत्यात्। भावे—पत्यते। अपाति। णिचि—पातयति-ते। अपीपतत्-त। सनि—पिपतिषति, पित्सति। यङि—पनीपत्यते।

उत्-ऊर्द्ध्वपतने उत्पतति। प्र+नि—नमस्कारे सक० प्रणिपतति। अनु—अनुगमने अनुपतति।

कृत्सु—पतनीयम्। पतनम्। पातः। पातकः। पाती। इष्णुच्—उत्पतिष्णुः। उकञ्—पातुकः। पतितः। पत्तिः। पतितुम्। पतितव्यम्। पतित्वा। सम्पत्य। पात्यम्। पतन्। पतिष्यन्। ण्यन्तस्य—पातनीयम्। पातनम्। पातयिता। पातितः। पातना। पातयितुम्। पातयितव्यम्। पातयन्-मानः, पात्यमानः। पातयिष्यन्-ष्यमाणः। कर्म्मणि—पातिष्यमाणश्च। सनन्तस्य—पिपतिषा, पित्सा। पिपतिषुः। पित्सुः। पिपतिषन्, पित्सन्।

(२८९) पत गतौ अदन्तचुरादि० उभ० सक० सेट्।

कर्त्तरि—पतयति-ते, अपपतत्-त। पतयाञ्चकार। ऐश्वर्य्ये पत्यं दिवादिः, आत्मनेपदी—पत्यते, अपतिष्ट। पेते इत्यादि।

(२९०) पद् गतौ दिवादि० आत्म० सक० अनिट्।

कर्त्तरि—पद्यते। पद्येत। पद्यताम्। अपद्यत। पेदे।

पेदिषे। अपादि। पत्स्यत। पत्ता। अपत्स्यत। पत्सीष्ट। कर्म्मणि—पद्यते। अपादि। णिचि—पादयति-ते, अपीपदत्-त। सनि—पिपदिषते, पित्सते। यङि—पनीपद्यते।

प्र+नि—प्रणिपद्यते।

उत्—उद्भवे अक० उत्पद्यते। उदपादि। सम्—सम्पत्तौ सम्पद्यते। वि—मरणे विपद्यते। आ—आपत्तौ (आपत्प्राप्तौ, हठादागमने, तर्कविशेषे च) आपद्यते आपदं प्राप्नोति, हठादागच्छति, तर्कविषयीभवति। प्रति—ज्ञाने स्वीकारे वा, प्रतिपद्यते जानाति स्वीकरोति वा। उप—उपपत्तौ (युक्तियुक्तभवने)। उपपद्यते। णिचः,—उपपादयति। उपपाद्यते। अभि+उप—स्वीकारे अभ्युपपद्यते स्वीकरोति।

कृत्सु—पदनीयम्। पदनम्। पादः। पादौ। पादकः। पन्नः। पत्तिः। पत्तुम। पत्तव्यम्। पत्वा। प्रपद्य। पाद्यम्। पद्यमानः। पत्स्यमानः। णयन्तस्य—पादनीयम्। पादनम्। पादयिता। पादितः। पादकः। पादयितुम्। पादयितव्यम्। पादयित्वा। पादयन्-मानः, पाद्यमानः। पादयिष्यन्-ष्यमाणः। कर्म्मणि—पादिष्यमाणश्च। सनन्तस्य—पिपदिषा, पित्सा। पिपदिषुः, पित्सुः। पिपदिषमाणः, पित्समानः। यङि—पनीपद्यमानः। आ—आपन्नः। आपत्तिः। आपत्। उप—उपपन्नः। उपपत्तिः। उपपादनीयम्। उपपाद्यम्। उत्—उत्पन्नः। उत्पत्तिः, सम्—सम्पन्नः। सम्पत्तिः। सम्पत्। वि—विपन्नः। विपत्तिः। विपत्। अभि+उप—अभ्युपपन्नः। अभ्युपपत्तिः।

## (२९१) पा पाने भ्वादि० पर० सक० अनिट् ।

कर्त्तरि—पिबति । पिबसि । पिबामि । पिबेत् । पिबेः । पिबेयम् । पिबतु । पिब । पिबानि । अपिबत् । अपिबः । अपिबम् । अपात, अपाताम, अपुः । पपौ, पपतुः, पपुः । पपिथ, पपाथ, पपिव । पाता । पास्यति । पेयात् । अपास्यत् । कर्म्मणि—पीयते, अपायि ; अपायिषाताम्, अपासाताम् । पपे । पायितासे, पातासे । णिचि—पाययति-ते । अपीप्यत्-त । सनि—पिपासति । यङि—पेपीयते ।

कृत्सु—पानीयम् । पानम् । पायः । पायकः । मधुपः, द्विपः, फेनपः । चौरपायी । पाता । पीतः । पीतिः । पातुम् । पातव्यम् । पीत्वा । आपाय । निपीयेति तु पीङो रूपम् । पेयम् । पिबन् । पीयमानः । पास्यन्, पास्यमानः । सनन्तस्य—पिपासा । पिपासुः । पिपासन् ।

## (२९२) पा रक्षणे अदादि० पर० सक० अनिट् ।

कर्त्तरि—पाति । पायात् । पातु । अपात् । अपासीत् । अपान्, अपुः । पपौ, पपुः । पायात् । कर्म्मणि—पायते । अपायि । णिचि—पालयति-ते । अपीपलत्-त ।

कृत्सु—पिबतेरिव रूपम् । पातः । पातिः । पात्वा । पान् इत्यादि भेदः ।

## (२९३) पार कर्म्मसमाप्तौ अदन्तचुरादि० उभ० सक० सेट् ।

कर्त्तरि—पारयति-ते । अपपारत्-त । कर्म्मणि—पार्य्यते, अपारि ।

कृत्सु—पारणीयम्। पारणम्। पारः। पारकः। पारयिता। पारितः। पारणा। पारयितुम्। पारयितव्यः। पारयित्वा। सम्पार्य। पार्यम। पारयन्-माणः, पार्यमाणः। पारयिष्यन्-ष्यमाणः। कर्मणि—पारिष्यमाणश्च।

## (२६४) पाल् रक्षणे चुरादि० उभ० सक० सेट्।

कर्त्तरि—पालयति-ते। पालयेत्-त। पालयतु-ताम्। अपालयत्-त। पालयाञ्चकार-चक्रे। पालयितासि-से। पालयिष्यति-ते। पालयिता। अपालयिष्यत-त। पाल्यात्, पालयिषीष्ट। कर्मणि—पाल्यते। अपालि। णिचि—अपीपलत्-त। सनि—पिपालयिषति-ते।

कृत्सु—पालनीयम्। पालनम्। पालः। अण्—क्षेत्रपालः, भूमिपालः, भूपालः। पालकः। पालयिता। पालितः। पालना। पालयितुम्। पालयितव्यम्। पालयित्वा। सम्पाल्य। पाल्यः। पालयन्-मानः। पाल्यमानः। पालयिष्यन्-ष्यमाणः। कर्मणि—पालिष्यमाणश्च।

## (२६५) पिष् पेषणे रुधादि० पर० सक० अनिट्।

कर्त्तरि—पिनष्टि, पिंष्टः, पिंषन्ति। पिनक्षि, पिंष्ठः, पिंष्ठ। पिनष्मि, पिंष्वः, पिंष्मः। पिंष्यात्, पिंष्याः, पिंष्याम्। पिनष्टु। पिण्ड्ढि। पिनषाणि। अपिनट्-ड्, अपिंष्टाम्। अपिषत्, अपिषः, अपिषम्। पिपेष। पिपेषिथ। पिपेषिव। पेष्टा। पिष्यात्। पेक्ष्यति। अपेक्ष्यत्। कर्मणि—पिष्यते। अपेषि। णिचि—पेषयति-ते। अपीपिषत्। सनि—पिपिक्षति। यङि—पेपिष्यते।

कृत्सु—पेषणीयम्। पेषणम्। पेषः। पेषकः। पेषी। पेष्टा। पिष्टः। पिष्टिः। पेष्टुम्। पेष्टव्यम्। पिष्ट्वा। सम्पिष्य।

णमुल्—शुष्कपेषं पिनष्टि। पेष्यम्। पिंषन्। पिष्यमाणः। पेक्ष्यन्-क्ष्यमाणः।

## (३९६) पीड् पीड़ने चुरादि० उभ० सक०सेट्।

कर्त्तरि—पीड़यति-ते। पीड़येत्-त। पीडयतु-ताम्। अपीडयत्-त। पीडयाञ्चकार-चक्रे। अपीपिड़त्-त, अपिपीड़त्-त। पीडयिष्यति-ते। पीडयिता। अपीड़यिष्यत्-त। पीड्यात्, पीडयिषीष्ट। कर्म्मणि—पीड्यते। अपीडि। सनि—पिपीड़यिषति-ते।

आ—भूषणे आपीड़यति।

कृत्सु—पीड़नीयम्। पीडनम्। पीड़ः। पीडकः। पीड़ी। पीड़यिता। पीड़ितः। पीड़ा। णिजन्तस्य—पीड़ना। पीडयितुम्। पीडयितव्यम्। पीडयित्वा। सम्पीड्य। पीड्यः। पीड़यन्-मानः, पीड्यमानः। पीड़यिष्यन्-ष्यमाणः। कर्म्मणि—पीडिष्यमाणश्च। आ—आपीड़ा। ब्रह्मापीड़ः।

## (२९७) पीव् स्थौल्ये भ्वादि० अक० पर० सेट्।

कर्त्तरि—पीवति। पिपीव। पीविता इत्यादि 'जीवति'वत्। णिचि—पीवयति। अपीपिवत्।

कृत्सु—पीवा। पीवरः। पीवनीयम्। पीव्यम्। पीवितः।

## (२९८) पुथ् हिंसायां दिवादि० पर० सक० सेट्।

कर्त्तरि—पुथ्यति। अपोथीत्।

अथ चुरादौ दीप्तौ उभ० अक०। पोथयति-ते। अपूपुथत्-त।

कृत्सु—पोथितुम्। पोथनीयम्। पोथितम्।

## (२९९) पुर्व् पूरणे भ्वादि० पर० सक० सेट्।

कर्त्तरि—पूर्वति। पुपूर्व। अपूर्वीत्। पूर्व्यात्। कर्म्मणि—पूर्व्यते। णिचि—पूर्वयति-ते। सनि—पुपूर्विषति।

अयं चुरादौ निकेतनेऽर्थे उभ० अक०। पूर्वयति-ते। अपूपूर्वत्-त।

कृत्सु—पूर्वितव्यम्। पूर्वणीयम्। पूर्व्यम्। पूर्वितः। पूर्वन्। पूर्वितुम्। पूर्वित्वा। प्रपूर्व्य। पूर्वः। पूः। पुरौ।

## (३००) पुष् पुष्टौ अक० पोषणे सक० दिवादि० पर० अनिट्।

कर्त्तरि—पुष्यति। पुष्येत्। पुष्यतु। अपुष्यत्। अपुषत्। पुपोष। पुपोषिथ। पुपुषिव। पोष्टा। पोक्ष्यति। अपोक्ष्यत्। पुष्यात्। कर्म्मणि—पुष्यते। अपोषि। णिचि—पोषयति-ते। अपूपुषत्-त। सनि—पुपुक्षति।

कृत्सु—पोषणीयम्। पोषणम्। पोषः। पोषकः। पोषी। पोष्टा। पुष्टः। पुष्टिः। पोष्टुम्। पोष्टव्यम्। पुष्ट्वा। सम्पुष्य। पोष्यम्। पुष्यन्, पुष्यमाणः। पोक्ष्यन्-क्ष्यमाणः।

## (३०१) पुष् पुष्टौ अक० पोषणे सक० क्र्यादि० पर० सेट्।

कर्त्तरि—पुष्णाति, पुष्णीतः, पुष्णन्ति। पुष्णीयात्। पुष्णातु, पुष्णीताम्। पुषाण। अपुष्णात्। अपोषीत्। पोषिता। पोषिष्यति। कर्म्मणि—पुष्यते। अपोषि। णिचि—पोषयति-ते। अपूपुषत्-त। सनि—पुपुषिषति, पुपोषिषति।

कृत्सु दिवादिगणीयवत्।—पोषिता। पोषितुम्। पोषितव्यम्। पोषित्वा। पुष्णन् इत्यादिभेदः।

भ्वादिस्तु पुष्टौ पर० अक० सेट्। पोषति, अपोषीदित्यादि। चुरादिस्तु धृतौ, उभ० सक० सेट्। पोषयति-ते। पोषयाञ्चकार-चक्रे। अपूपुषत्-त इत्यादि।

## (३०२) पुष् विकाशे दिवादि० पर० अक० सेट् ।

कर्त्तरि—पुष्यति । पुष्येत् । पुष्यतु । अपुष्यत् । अपुष्यीत् । पुपुष्पे । पुष्पिष्यति । पुष्पिता । पुष्यात् । भावे—पुष्यते । अपुष्पि । णिचि—पुष्पयति-ते । अपूपुष्पत् । सनि—पुपुष्पिषति । यङि—पोपुष्पते ।

कण्ड्वादि—अपुष्पीत् ।

कृत्सु—पुष्पणीयम् । पुष्पणम् । अच्—पुष्पम् । पुष्पिता । पुष्पितः । पुष्पा । पुष्पितुम् । पुष्पितव्यम् । पुष्पित्वा । सम्पुष्प । पुष्पन् । पुष्पिष्यन् ।

## (३०३) पू शोधने भ्वादि० आत्म० सक० सेट् ।

कर्त्तरि—पवते । पवेत । पवताम् । अपवत । अपविष्ट । पुपुवे, पुपुविषे । पविष्यते । पविता । पविषीष्ट । कर्म्मणि—पूयते । अपावि । णिचि—पावयति-ते । अपीपवत्-त । सनि—पिपविषते । णिचः सनि—पिपावयिषति ।

कृत्सु—पवनीयम् । पवनम् । ल्यु—पवनः । पावकः । पविता । पूतः, पवितः । पूतिः । पवितुम् । पवितव्यम् । पवित्वा, पूत्वा । सम्पूय । विपूय । पव्यम्, पाव्यम । पवमानः । पूयमानः । पविष्यन्-ष्यमाणः । कर्म्मणि—पाविष्यमाणश्च ।

## (३०४) पू शोधे दिवादि० आत्म० अक० सेट् ।

कर्त्तरि—पूयते । अपविष्ट । पुपुवे । भावे—पूयते । अपावि ।

कृत्सु—भ्वादिगणीयवत् । पूयमान इति भेदः ।

## (३०५) पू शोधने क्र्यादि० उभ० सक० सेट् ।

कर्त्तरि—पुनाति, पुनीतः, पुनन्ति । पुनीते । पुनीयात्, पुनीत; पुनीयाः, पुनीथाः; पुनीयाम्, पुनीय । पुनातु, पुनीताम्

पुनीहि, पुनीष्व ; पुनानि, पुने। अपुनात्, अपुनीत। अपुनीताम्, अपुनाताम् ; अपुनाः, अपुनीथाः ; अपुनीतम्, अपुनाथाम्। अपुनाम्, अपुनि, अपुनीव, अपुनीवहि। अपावीत्, अपविष्ट। अपाविष्टाम्, अपविषाताम् ; अपाविषुः, अपाविषत। पुपाव, पुपुवे। पवितासि-से। पूयात्, पविषीष्ट। पविष्यति-ते। सनि—पुपूषति-ते। अन्यत् भ्वादिगणीयवत्। निष्ठायां नाशेऽर्थे पूनः, अन्यत्र पूतः। इत्र—पवित्रम्। शतरि—पुनन्। शानच्—पुनानः, इति भेदः।

## (३०६) पूज् पूजने चुरादि० उभ० सक० सेट्।

कर्त्तरि—पूजयति-ते। पूजयाञ्चकार-चक्रे। अपूपुजत्-त। पूजयिष्यति-ते। कर्म्मणि—पूज्यते। अपूजि। अपूजयिषाताम्, अपूजिषाताम्।

कृत्सु—पूजनीयम्। पूजनम्। पूजकः। पूजी। पूजयिता। पूजितः। पूजा। पुनर्ण्यन्तस्य पूजना। पूजयितुम्। पूजयितव्यम्। पूजयित्वा। सम्पूज्य। पूज्यः। पूजयन्-मानः। पूज्यमानः। पूजयिष्यन्-ष्यमाणः। कर्म्मणि —पूजिष्यमाणः।

## (३०७) पूर् पूर्त्तौ दिवादि० आत्म० सक० सेट्।

कर्त्तरि—पूर्य्यते। अपूरि, अपूरिष्ट। पुपूरे। पूरिता। कर्म्मणि—पूर्य्यते। अपूरि। णिचि—पूरयति-ते। अपूपुरत्-त।

कृत्सु—पूरणीयम्। पूरणम्। पूरः। पूरकः। पूरी। पूरिता। पूर्णः, पूर्त्तं—खातादि। पूर्त्तिः। पूरितुम्। पूरितव्यम्। पूरित्वा। सम्पूर्य्य। पूर्य्यम्। पूर्य्यमाणः। पूरिष्यमाणः।

(३०८) पूर् पूर्त्तौ प्रीणने च चुरादि० उभ० सक० सेट् ।

कर्त्तरि—पूरयति-ते । अपूपुरत्-त । पूरयिता । कर्म्मणि—पूर्य्यते । अपूरि । अपूरिषाताम्, अपूरयिषाताम् ।

कृत्सु—पूरयिता । पूर्णः, पूरितः । पूरणा । पूरयितुम् । पूरयितव्यम् । पूरयित्वा । पूरयन्-माणः । पूरयिष्यन्-ष्यमाणः, इत्यादि भेदः । अन्यत् दिवादिगणीयवत् ।

(३०९) पृ पूरणे पालने च जुहोत्यादि० पर० सक० अनिट्, वा दीर्घः, दीर्घपक्षे सेट् ।

कर्त्तरि—पिपर्त्ति, पिपृतः-पिपूर्त्तः, पिप्रति-पिपुरति । पिपर्षि, पिपृथः, पिपूर्थः । पिपर्म्मि, पिपृवः, पिपूर्वः । पिपृयात्, पिपूर्य्यात् । पिपर्त्तु ; पिपृताम्, पिपूर्त्ताम् । पिपृहि, पिपूर्हि । पिपराणि, पिपराव । अपिपः ; अपिपृताम्, अपिपूर्त्ताम् । अपिपरुः । अपारीत, अपार्षीत् । पपार ; पपरतुः, पप्रतुः । परीता, परिता, पर्त्ता । प्रियात्, पूर्य्यात् । परिषीष्ट, पृषीष्ट । परीष्यति, परिष्यति । कर्म्मणि—प्रियते, पूर्य्यते । अपारि । पारितासे, परीतासे, परितासे, पर्त्तासे । णिचि—पारयति-ते । सनि—पिपरीषति, पिपरिषति, पुपूर्षति ।

कृत्सु—परणीयम् । परणम् । परः । पारः । पारकः । पारी । परीता, परिता, पर्त्ता । पूर्त्तः, पृतः । पूर्त्तिः, पृतिः । परीतुम्, परितुम्, पर्त्तुम् । परीतव्यम्, परितव्यम्, पर्त्तव्यम् । पीर्त्वा, पृत्वा । आपूर्य्य, आपृत्य । पार्य्यम्, पृत्यम् । पिपुरत्, पिप्रत् । पूर्य्यमाणः, प्रियमाणः । परीष्यन्, परिष्यन् । परीष्यमाणः, परिष्यमाणः । कर्म्मणि—पारिष्यमाणश्च ।

## (३१०) पृ व्यापारे तुदादि० आत्म० अक० अनिट्।

कर्त्तरि—( प्रायेणायं व्याङ्पूर्वकः )—व्याप्रियते। व्याप्रियेत। व्याप्रियताम्। व्याप्रियत। व्यापृत। व्यापप्रे। व्यापृषीष्ट। व्यापरिष्यते। कर्म्मणि—व्याप्रियते। व्यापारि। णिचि—व्यापारयति-ते। व्यापीपरत्-त।

कृत्सु—व्यापरणीयम्। व्यापरणम्। व्यापारः। व्यापारकः। व्यापारी। व्यापर्त्ता। व्यापृतः। व्यापृतिः। व्यापर्तुम्। व्यापर्त्तव्यम्। व्यापृत्य। व्यापार्य्यः। व्याप्रियमाणः। व्यापरिष्यमाणः। कर्म्मणि—व्यापारिष्यमाणश्च।

## (३११) पृ प्रीतौ स्वादि० पर० अक० प्रीणने सक० अनिट्।

कर्त्तरि—पृणोति, पृणुतः, पृण्वन्ति। पृणुयात्। पृणोतु। अपृणोत्। अपार्षीत्। पपार, पप्रतुः। पर्त्ता। प्रियात्। परिष्यति। भावे कर्म्मणि च—प्रियते। अपारि, अपारिषाताम्, अपृषाताम्। णिचि—पारयति-ते। अपीपरत्-त। सनि—पुपूर्षति।

चुरादिस्तु पूर्त्तौ उभ० सक० सेट्। पारयति-ते। अपीपरत्-त।

कृत्सु—पृण्वन् इति भेदः। अन्यत् तुदादिगणीयवत्।

## (३१२) पृच् सम्पर्के रुधादि० पर० अक० सेट्।

कर्त्तरि—पृणक्ति, पृङ्क्तः, पृञ्चन्ति। पृणक्षि, पृङ्क्थः, पृङ्क्थ। पृणच्मि, पृञ्च्वः, पृञ्च्मः। पृञ्च्यात्। पृणक्तु। पृङ्ग्धि। अपृणक्-ग्। अपर्चीत्। पपर्च। पर्चिता। भावे—पृच्यते। अपर्चि।

अदादिस्तु आत्म० अक० सेट्। पृक्ते, अपर्चिष्ट।

चुरादिस्तु संयमने सक० सम्पर्के अक० उभ० पक्षे भ्वादि० पर० सेट्। पर्चयति-ते, पर्चति। अपीपृचत्-त। अपपर्चत्-त। अपर्चीत्।

कृत्सु—पर्चनीयम्। पर्चनम्। पर्कः। घिनुन्—सम्पर्की। पर्चिता। पृक्तः। पृक्तिः। पर्चितुम्। पर्चितव्यम्। पर्चित्वा। सम्पृच्य। पर्क्यम्। पृञ्चन्। पर्चिष्यन्। क्विप्—पृक्।

## (३१३) पॄ पालने पूर्त्तौ च क्र्यादि० पर० सक० सेट्।

कर्त्तरि—पृणाति। पृणीयात्। पृणातु, पृणीहि, प्रीणानि। अपृणात्। पपार, पपरतुः, पप्रतुः; पपरुः, पप्रुः। पपरिथ, पपरथुः, पप्रथुः। पपर, पप्र, पपर; पपार। अपारीत्, अपारिष्टाम्। परिष्यति, परीष्यति। परिता, परीता। अपरिष्यत्, अपरीष्यत्। पूर्य्यात्। कर्म्मणि—पूर्य्यते। णिचि—पारयति। अपीपरत्। सनि—पिपरिषति, पिपरीषति, पुपूर्षति। यङि—पोपूर्य्यते।

अयं पालन-पूरणयोरर्थयोर्जुहोत्यादिः।—पिपर्त्ति, पिपूर्य्यात्, पिपर्त्तु, अपिपः।

पूर्त्तावर्थे चुरादिरपि च।—पारयति-ते, अपीपरत्-त।

कृत्सु—पूर्त्तः। पूर्त्वा। पूर्णः।

## (३१४) पेस् गतौ भ्वादि० पर० सक० सेट्।

कर्त्तरि—पेसति। अपेसीत्। कर्म्मणि—पेस्यते। अपेसि। णिचि—पेसयति-ते। अपिपेसत्-त।

कृत्सु—पेसनीयम्। पेसनम्। पेसः। पेसकः। पेसी। पेसिता। पेसितः। पेसा। पेसितुम्। पेसितव्यम्।

पेसित्वा। सम्पेस्य। पेसम्। पेसन्। पेसमानः। पेसिष्यन्-ष्यमाणः।

## (३१५) पेस् अनादरे चुरादि० उभ० सक० सेट्।

कर्त्तरि—पेसयति-ते। अपीपिसत्-त।

कृत्सु—पेसयिता। पेसयितुम्। पेसयितव्यम्। पेसयित्वा। पेसयन्-मानः। पेसयिष्यन्-ष्यमाणः, इत्यादिभेदः। अन्यत् भ्वादिगणीयवत्।

## (३१६) प्याय् वृद्धौ भ्वादि० आत्म० अक० सेट्।

कर्त्तरि—प्यायते। अप्यायि, अप्यायिष्ट। पिप्ये। भावे—प्याय्यते। अप्यायि। यङि—पेपीयते।

आ+णिच्—प्रीणने—आप्याययति-ते।

कृत्सु—प्यायनीयम्। प्यायनम्। प्यायः। प्यायकः। प्यायी। प्यायिता। प्यानः। आपीनमूधः। प्यातिः। प्यायितुम्। प्यायितव्यम्। प्यायित्वा। सम्प्याय्य। प्याय्यम्। प्यायमानः। प्यायिष्यमाणः। यङि—पेपीयमानः। आप्यायितः। आप्याययन्-मानः।

## (३१७) प्रच्छ् जिज्ञासायां तुदा० पर० द्विक० अनिट्।

कर्त्तरि—पृच्छति। पृच्छसि। पृच्छामि। पृच्छेत्। पृच्छेः, पृच्छेयम्। पृच्छतु। पृच्छ। पृच्छानि। अपृच्छत्। अपृच्छः। अपृच्छम्। अप्राक्षीत्, अप्राष्टाम्, अप्राक्षुः। अप्राक्षीः, अप्राष्टम्, अप्राष्ट। अप्राक्षम्, अप्राक्ष्व, अप्राक्ष्म। पप्रच्छ, पप्रच्छतुः। पप्रच्छिथ, पप्रष्ठ। पप्रच्छ, पप्रच्छिव। प्रष्टा। पृच्छ्यात्। प्रक्ष्यति। अप्रक्ष्यत्।

कर्म्मणि—पृच्छ्यते। अप्रच्छि। णिचि—प्रच्छयति-ते। सनि—पिपृच्छिषति। यङि—परीपृच्छ्यते।

आ—आत्मनेपदं—आपृच्छते। द्विकर्म्मकत्वेन दुह्यादि० गौणे कर्म्मणि लकारादि। पृच्छ्यते शिष्येण गुरुः धर्म्मम् इत्यादि।

कृत्सु—प्रच्छनीयम्। प्रच्छनम्। प्रच्छः। प्रच्छकः। प्रच्छी। प्रष्टा। पृष्टः। पृष्टिः। प्रष्टुम्। क्विप्—प्राट्, न—प्रश्नः। प्रष्टव्यम्। पृष्ट्वा। आपृच्छ्य। प्रच्छाम्। पृच्छन्। पृच्छ्यमानः। प्रच्छ्यन्-माणः। आ—आपृष्टः।

## (३१८) प्रथ ख्यातौ भ्वादि० आत्म० अक० ख्यापने सक० सेट्।

कर्त्तरि—प्रथते। अप्रथिष्ट। पप्रथे। भावे कर्म्मणि च—प्रथ्यते। अप्राथि। णिचि—प्रथयति-ते। अपप्रथत्-त। ण्यन्तकर्म्मणि—अप्राथि, अप्रथि। घटादि० णिच् प्रथयति।

चुरादिस्तु ख्यातौ अकर्म्मकः, विक्षेपे सक० उभ० सेट् घटादि०। प्रथयति-ते। अपप्रथत्-त।

कृत्सु—प्रथनीयम्। प्रथनम्। प्राथः। प्राथकः। प्राथी। प्रथिता। प्रथितः। प्रथा। प्रथितुम्। प्रथितव्यम्। प्रथित्वा। सम्प्रथ्य। प्राथ्यम्। प्रथमानः। प्रथ्यमानः। प्रथिष्यमाणः।

## (३१९) प्री प्रीतौ दिवादि० आत्म० अक० प्रीणने सक० अनिट्।

कर्त्तरि—प्रीयते। प्रीयेत। प्रीयताम्। अप्रीयत। अप्रेष्ट। पिप्रिये। प्रेतासे। प्रेषीष्ट। प्रेष्यते। भावे कर्म्मणि च—

प्रीयते। अप्रायि। णिचि—प्राययति-ते। अपिप्रयत्-त। सनि—पिप्रीषते।

कृत्सु—प्रयणीयम्। प्रयणम्। प्रायः। प्रायी। प्रेता। प्रीतः। प्रीतिः। प्रेतुम्। प्रेतव्यम्। प्रीत्वा। सम्प्रीय। प्रेयम्। प्रीयमाणः। प्रेष्यमाणः।

## (३२०) प्री तर्पणे सक० कान्तौ (इच्छायां) तृप्तौ च अक० क्र्यादि० उभ० अनिट्।

कर्त्तरि—(लटि) प्रीणाति, प्रीणीते; प्रीणीतः, प्रीणाते; प्रीणन्ति, प्रीणते। प्रीणासि, प्रीणीषे; प्रीणीथः, प्रीणाथे; प्रीणीथ, प्रीणीध्वे। प्रीणामि-प्रीणे, प्रीणीवः-प्रीणीवहे, प्रीणीमः-प्रीणीमहे।

(लिङि)—प्रीणीयात्, प्रीणीत; प्रीणीयाताम्, प्रीणीयाताम्; प्रीणीयुः, प्रीणीरन्। प्रीणीयाः, प्रीणीथाः; प्रीणीयातम्-प्रीणीयाथाम्, प्रीणीयाम्-प्रीणीय, प्रीणीयाव, प्रीणीवहि।

(लोटि)—प्रीणातु-प्रीणीताम्, प्रीणीहि-प्रीणीष्व, प्रीणानि-प्रीणै।

(लङि)—अप्रीणात्-अप्रीणीत, अप्रीणाः-अप्रीणीथाः, अप्रीणाम्-अप्रीणि।

(लिटि)—पिप्राय-पिप्रिये, पिप्रियतुः-पिप्रियाते. पिप्रयिथ-पिप्रेथ, पिप्रियिषे, पिप्रियथुः-पिप्रियाथे। पिप्राय-पिप्रय-पिप्रिये। पिप्रियिव, पिप्रियिवहे।

लुङि—अप्रैषीत्-अप्रेष्ट, अप्रैषीः-अप्रेष्टाः, अप्रैषम्-अप्रेषि।

लुडादिषु—प्रेता। प्रेतासि-से। प्रीयात्, प्रेषीष्ट। प्रेष्यति-ते। अप्रेष्यत्-त। कर्म्मणि भावे च—प्रीयते। अप्रायि। णिचि—प्रीणयति-ते। अपिप्रीणत्-त। हरदत्तपाठे तु प्राययति। सनि—पिप्रीषति-ते। यङि—पेप्रीयते।

चुरादिस्तु तर्पणे सक० उभ० अनिट्। प्राययति-ते। अपिप्रयत्-त। अत्रापि नुक्, प्रीणयतीत्येके। भ्वादिस्तु उभ० सक० अनिट्। प्रयति-ते। अप्रैषीत्, अप्रेष्ट। पिप्राय, पिप्रिये इत्यादि।

कृत्सु—दिवादिगणीयवत्। प्रीणन् प्रीणान इत्यादिभेदः।

## (३२१) प्रु गमने भ्वादि० आत्म० सक० अनिट्।

कर्त्तरि—प्रवते। अप्रोष्ट। पुप्रुवे। प्रोतासे। प्रोष्यते। कर्म्मणि—प्रूयते। अप्रावि। णिचि—प्रावयति-ते। अपिप्रवत्-त-अपुप्रवत्-त।

कृत्सु—प्रवणीयम। प्रवणम्। प्रावः, प्रावकः। प्रावी। प्रोता। प्रुतः। प्रुतिः। प्रोतुम्। प्रुत्वा। सम्प्रुत्य। प्रव्यम्। प्रवमाणः, प्रूयमाणः। प्रोष्यमाणः। कर्म्मणि—प्राविष्यमाणश्च।

## (३२२) प्रुष् दाहे भ्वादि० पर० सक० सेट्।

कर्त्तरि—प्रोषति। अप्रोषीत्। पुप्रोष। कर्म्मणि—प्रुष्यते। अप्रोषि। णिचि—प्रोषयति-ते। अपुप्रुषत्-त।

क्र्यादिस्तु सेके पूर्त्तौ च सक० स्नेहे अक० पर० सेट्। प्रुष्णाति। अप्रोषीत्। पुप्रोष।

कृत्सु—प्रोषणीयम्। प्रोषणम। प्रोषः। प्रोषकः। प्रोषी। प्रोषिता। प्रुष्टः। प्रुष्टिः। प्रोषितुम्। प्रोषितव्यम्। प्रोषित्वा। प्रुष्ट्वा। सम्प्रुष्य। प्रोष्यः। प्रोषन्। प्रुष्यमाणः। प्रोषिष्यन्-ष्यमाणः। उदित्-क्त्वा वेट्—प्रुषित्वा, प्रुष्ट्वा, प्रुष्टः।

## (३२३) प्लव् प्लवने भ्वादि० आत्म० अक० सेट्।

कर्त्तरि—प्लवते। अप्लविष्ट। भावे—प्लव्यते। अप्लावि। णिचि—प्लावयति-ते। अपिप्लवत्-त।

कृत्सु—प्लवनीयम्। प्लवनम्। ण्यन्तस्य—प्लावनम्। प्लवः। विप्लवः, विप्लावः। आप्लवः, आप्लावः। प्लावकः। प्लविता। प्लवितः। प्लवितुम्। प्लवितव्यम्। प्लवित्वा। संप्लुत्य। प्लाव्यम्। प्लवमानः। प्लविष्यमाणः।

## (३२४) प्लु सर्पणे उत्प्लुत्य गतौ च भ्वा० आत्म० सक० प्लुतगतौ अक० अनिट्।

कर्त्तरि—प्लवते। अप्लवत। अप्लोष्ट। पुप्लुवे। प्लावयति। अपुप्लवत्। सनि—पुप्लूषते।

## (३२५) प्लुष् दाहे भ्वादि० पर० सक० सेट्।

प्रुष इव कार्य्यम्। दिवादिस्तु पर० सक० सेट्। प्लुष्यति। (ऌदित्)—अप्लुषत्। क्र्यादिस्तु सेके पूर्त्तौ च सक० स्नेहे अक० पर० सेट्। प्लुष्णाति। अप्लोषीत्। पुप्लोष।

## (३२६) प्सा भक्षणे गतौ च अदादि० पर० सक० अनिट्।

कर्त्तरि—प्साति, प्रणिप्साति; प्सातः। प्सायात्। प्सातु। अप्सात्। अप्सुः, अप्सान्। अप्सासीत्, अप्सासिष्टाम्, अप्सासिषुः। पप्सौ। प्सायात्, प्सेयात्। कर्म्मणि—प्सायते। अप्सायि। णिचि—प्सापयति। विप्सपत्।

कृत्सु—प्सानीयम्। प्सानम्। प्सायः। प्सायकः। प्सायी। प्साता। प्सातः। प्सातिः। प्सातुम्। प्सातव्यम्। प्सात्वा। संप्साय। प्सयम्। प्सान्। प्सायमानः। प्सास्यन्-स्यमानः। कर्म्मणि—प्सायिष्यमाणश्च। प्र+नि—प्रणिप्सा।

## (३२७) फक्क् असदाचारे मन्दगतौ च भ्वादि० पर० अक० सेट्।

कर्त्तरि—फक्कति। अफक्कीत्। भावे—फक्क्यते। फक्कयति। कृत्सु—फक्कित.। फक्कितव्यम्। फक्किका।

## (३२८) फण् गतौ भ्वादि पर० सक० सेट्।

कर्त्तरि—फणति। अफाणीत, अफणीत्। पफाण, फेणतुः, पफणतुः। कर्म्मणि—फण्यते। णिचि—फाणयति, फणयति। कृत्सु—फणः, फणधरः। फणा, फणाधरः।

## (३२९) फल् गतौ सक० निष्पत्तौ च अक० भ्वादि० पर० सेट्।

कर्त्तरि—फलति। फलेत्। फलतु। अफलत्। अफालीत्। पफाल। फेलतुः। फलिष्यति। फलिता। अफलिष्यत्। फल्यात्। कर्म्मणि भावे च—फल्यते। अफालि। णिचि—फालयति-ते। गत्यर्थस्य तु फलयति। उभयोः अपीफलत्-त। सनि—पिफलिषति।

कृत्सु—फलनीयम्। फलनम्। अच्—फलम्। फालः। फालकः। फलिता। फुल्लः। फुल्लवान्। प्रफुल्तः, सम्फुल्तः। भावे—फुल्तम्। क्रियारम्भे—फुल्तः। फुल्लिः। फलितुम्। फलितव्यम्। फलित्वा। सम्फल्य। फलन्। फल्यमानः। फलिष्यन्-ष्यमाणः। ज्वलादिः,—फलः, फालः।

## (३३०) फुल्ल् विकाशे भ्वादि पर० अक० सेट्।

कर्त्तरि—फुल्लति। अफुल्लीत्। पुफुल्ल। फुल्लिता। भावे—फुल्ल्यते। अफुल्लि। फुल्लयति-ते। अपुफुल्लत्।

कृत्सु—फुल्लनीयम्। फुल्लनम्। फुल्लः। उत्फुल्लः। सम्फुल्लः। प्रफुल्लः। फुल्लकः। फुल्लितः। फुल्लिः। फुल्लितुम्। फुल्लितव्यम्। सम्फुल्ल्य। फुल्लम्। फुल्लन्। फुल्लिष्यन्।

## (३३१) बध् निन्दायां बन्धने च स्वादि॰ आत्म॰ सक॰ सेट्।

कर्त्तरि—बीभत्सते। बीभत्सेत। बीभत्सताम्। अबीभत्सत। अबीभत्सिष्ट। बीभत्साम-बभूव-आस-चक्रे। बीभत्सितासे। बीभत्सिषीष्ट। बीभत्सिष्यते। अबीभत्सिष्यत। कर्म्मणि—बीभत्स्यते। अबीभत्सि। णिचि—बीभत्सयति-ते। अबीभत्सत्-त।

निन्दाभिन्नार्थे तु—बधते। अबधिष्ट। बबधे इत्यादि।

चुरादिस्तु संयमने उभ॰ सक॰ सेट्, बाधयति-ते। अबीबधत्-त।

कृत्सु—बीभत्सनीयम्। बीभत्सनम्। बीभत्सकः। बीभत्सिता। बीभत्सितः। बीभत्सा। बीभत्सुः। बीभत्सितुम्। बीभत्सितव्यम्। बीभत्सित्वा। आबीभत्स्य। बीभत्स्यम्। बीभत्समानः-बीभत्स्यमानः। बीभत्सिष्यमाणः।

## (३३२) बन्ध् बन्धने क्र्यादि॰ पर॰ सक॰ अनिट्।

कर्त्तरि—बध्नाति, बध्नीतः, बध्नन्ति। बध्नीयात्, बध्नीयाः, बध्नीयाम्। बध्नातु। बधान। अबध्नात्। अबान्त्सीत्। (सुपद्ममते—अभान्त्सीत्)। अबान्धाम्। अबान्त्सुः। बबन्ध, बबधतुः-बबन्धतुः। बबन्धिथ, बबन्थ। कर्म्मणि—बध्यते। अबन्धि। णिचि—बन्धयति-ते। अबबन्धत्-त। सनि—बिबन्त्सति। यङि—बाबध्यते।

अनु—अनुबन्धने अनुबध्नाति। सम्—सम्बन्धे सम्बध्नाति।

उत्—उद्बन्धने उद्बध्नाति । प्रति—प्रतिबन्धे प्रतिबध्नाति । नि—निबन्धे निबध्नाति । निर्—निर्बन्धे निर्बध्नाति । प्र—प्रबन्धे प्रबध्नाति ।

चुरादिस्तु संयमने उभ० सक० सेट् । बन्धयति-ते । अबबन्धत्-त ।

कृत्सु—बन्धनीयम् । बन्धनम् । बन्धः, प्रबन्धः । बन्धकः । बन्धा । बन्धा । बद्धः । बद्धिः । बन्धुम । बन्धव्यम् । बद्धा । आबध्य । बन्ध्यः । बध्नन् । बध्यमानः । बन्त्स्यन्-स्यमानः ।

## (३३) बाध् विघाते भ्वादि० आत्म० सक०सेट् ।

कर्त्तरि—बाधते । बाधेत । बाधताम् । अबाधत । अबाधिष्ट । बबाधे । बाधिष्यते । बाधिता । अबाधिष्यत । बाधिषीष्ट । कर्म्मणि—बाध्यते । अबाधि । णिचि—बाधयति-ते । अबबाधत्-त । सनि—बिबाधिषते । यङि—बाबाध्यते ।

सम—सम्बाधने ( अन्योन्योत्पीड़ने ) सम्बाधते ।

कृत्सु—बाधनीयम् । बाधनम् । बाधः । बाधकः । बाधिता । बाधितः । बाधा । बाधितुम् । बाधितव्यम् । बाधित्वा, अपबाध्य । बाध्यः । बाधमानः । बाध्यमानः । बाधिष्यमाणः । सम्—सम्बाधः ।

## (३४) बुध् ज्ञाने दिवा० आत्म० सक० अनिट् ।

कर्त्तरि—बुध्यते । बुध्येत । बुध्यताम् । अबुध्यत । अबोधि, अबुद्ध, अभुत्साताम् । अबुद्धाः, अभुत्साथाम् । अभुद्ध्वम् । बुबुधे । बोद्धा । बोद्धासे । भुत्सीष्ट । भोत्स्यते । अभोत्स्यत । कर्म्मणि—बुध्यते । णिचि—बोधयति-ते । अबूबुधत्-त । सनि—बुभुत्सते । यङि—बोबुध्यते ।

उत्—उद्बोधे (उत्प्रेरणायाम्) उद्बुध्यते। उत्+बोधि—उद्बोधने (उत्तेजने) उद्बोधयति उत्तेजयति। सम्+बोधि—सम्बोधने (क्रियासु नियोगार्थमाभिमुख्यसम्पादने) सम्बोधयति।

कृत्सु—बोधनीयम्। बोधनम्। बोधः। बोधकः। बोधी। बोद्धा। बुद्धः। बुद्धिः। बोद्धुम्। बोद्धव्यम्। बुद्ध्वा। सम्बुध्य। बोध्यः। बुध्यमानः। भुत्स्यमानः। णिचः,—बोधयिता। बोधितः। बोधना। बोधयितुम्। बोधयितव्यः। बोधयित्वा। प्रबोध्य। बोधयन्-मानः। बोध्यमानः। बोधयिष्यन्-माणः। सनः,—बुभुत्सा। बुभुत्सुः। बुभुत्सन्। सम्—सम्बोधितः।

## (३३५) बुध् बोधने भ्वादि० उभ० सक० अनिट्।

कर्त्तरि—बोधति-ते। बोधेत्, बोधेत। बोधतु, बोधताम्। अबोधत्, अबोधत। अबोधीत्, अबुधत्, अबोधिष्ट। बुबोध, बुबुधे। बुबोधिथ। बुबोधिव। बुबुधे। अन्यत् दिवादिगणीयवत्, शतरि बोधन् इति भेदः।

अवगमनार्थे अयं केवलपरस्मैपदी।—बोधति इत्यादि।

## (३३६) वॄ वरणे (प्रार्थने) क्र्यादि० पर० सक० सेट्।

कर्त्तरि—वृणाति, वॄणाति। वृणीतः, वॄणीतः। वृणन्ति, वॄणन्ति। अवारीत्। ववार, ववरतुः। वरीता, वरिता। वीर्य्यात्। वरीष्यति, वरिष्यति। कर्म्मणि—वीर्य्यते। अवारि। णिचि—वारयति-ते। अवीवरत्-त। सनि—विवरीषति, विवरिषति, वुवूर्षति।

कृत्सु—वरणीयम्। वरणम्। वरः। वारकः। वरीता-वरिता।

वोर्णः । वोर्णिः । वरीतुम्, वरितुम् । वरितव्यः, वरीतव्यः । वोर्त्वा । सम्वोर्य्य । वार्य्यः । वृणन्, वृणान् । वोर्य्यमाणः । वरीष्यन्-ष्यमाणः । वरिष्यन्-ष्यमाणः ।

केचिदिमं न पठन्ति, वर्गीयवकार-पर्य्याये नास्य गणना इति बहवः ।

## (३३१) ब्रू कथने अदादि० उभ० द्विक० सेट् ।

कर्त्तरि—ब्रवीति, आह । ब्रूतः, आहतुः । ब्रुवन्ति, आहुः । ब्रवीषि, आत्थ । ब्रूथः, आहथुः । ब्रूथ । ब्रवीमि, ब्रूवः, ब्रूमः । ब्रूते, ब्रुवाते, ब्रुवते । ब्रूषे, ब्रुवाथे, ब्रूध्वे । ब्रुवे, ब्रूवहे, ब्रूमहे । ब्रूयात्, ब्रुवीत । ब्रवीतु, ब्रूताम् । अब्रवीत्, अब्रूत । अवोचत्-अवोचत । अवोचः, अवोचथाः । अवोचम्, अवोचे । उवाच, ऊचतुः, ऊचुः । उवचिथ, उवक्थ । ऊच । उवाच, उवच ; ऊचिव । ऊचे ; ऊचाते, ऊचिरे । वक्तास्मि-स्मे । उच्यात् । वक्ष्यति-ते । वक्ता । अवक्ष्यत्-त । कर्म्मणि—उच्यते । अवाचि । ऊचे, ऊचिषे । वक्तासे । वक्षीष्ट । वक्ष्यते । णिचि—वाचयति-ते । अवी-वचत्-त । सनि—विवक्षति-ते । यङि—वावच्यते ।

कृत्सु—वचनीयम् । वचनम् । वाकः । अनुवाकः । वाचकः । वक्ता । उक्तः । उक्तिः । वक्तुम् । वक्तव्यम् । उक्त्वा । प्रोच्य । वाच्यम् । पदसमुदायो वाक्यम् । ब्रुवन्, ब्रुवाणः । उच्यमानः । क्वसौ—ऊचिवान् । कानि—अनूचानः । वक्ष्यमाणः । णिच,—वाचयिता । वाचितः । वाचना । वाचयितुम् । वाचयित्वा । संवाच्य । वाचयन्-मानः । वाच्यमानः । वाचयिष्यन्-ष्यमाणः । कर्म्मणि—वाचिष्यमाणश्च । सनः,—विवक्षा । विवक्षुः । विवक्षन् ।

## (३३८) भक्ष भक्षणे चुरादि० उभ० सक० सेट्।

कर्त्तरि—भक्षयति-ते। भक्षयेत्-त। भक्षयतु-ताम्। अभक्षयत्-त। अबभक्षत्-त। भक्षयाञ्चकार-चक्रे-आस-बभूव। भक्षयिता। भक्षयिष्यति-ते। भक्षयितासि से। भक्ष्यात्, भक्षयिषीष्ट। अभक्षयिष्यत्-त। कर्म्मणि—भक्ष्यते। अभक्षि। सनि—बिभक्षयिषति-ते।

विकल्पचुरादिवत् भक्षति भक्षते इत्याद्यपि भवति।

कृत्सु—भक्षणीयम्। भक्षणम्। भक्षः। भक्षकः। भक्षयिता। भक्षितः। भक्षणा। भक्षयितुम्। भक्षयितव्यम्। भक्षयित्वा। आभक्ष्य। भक्ष्यः। भक्षयन् माणः। भक्ष्यमाणः। भक्षयिष्यन्-ष्यमाणः। कर्म्मणि—भक्षिष्यमाणश्च।

## (३३९) भज भागे सेवने च भ्वादि० उभ० सक० अनिट्, पाके दाने चुरादि० उभ० सक० सेट्।

कर्त्तरि—भजति ते। भजेत्, भजेत। भजतु, भजताम्। अभजत-त। अभाक्षीत्, अभक्त। बभाज, भेजतुः, भेजुः। भेजिथ-बभक्थ। भेजे, भेजाते, भेजिरे। भक्तासि से। भज्यात, भक्षीष्ट। भक्ष्यति-ते। भक्ता। अभक्ष्यत्-त। कर्म्मणि—भज्यते। अभाजि। णिचि—भाजयति-ते। अबीभजत्-त। सनि—बिभक्षति-ते।

अयं दीप्तावर्थे इदित्, चुरादि० उभ० सक० सेट्।—भञ्जयति-ते।

कृत्सु—भजनीयम्। भजनम्। भागः। भाजकः। घिनुण—भागी। भक्ता। भक्तः। भक्तिः। भक्तुम्। भक्तव्यः। भक्त्वा। विभज्य। भाज्यम्। भाग्यम्। भजन्, भजमानः। भज्यमानः। भक्ष्यन्। भक्ष्यमाणः।

## (३४०) भण् व्यक्तवाक्ये भ्वादि० पर० द्विक० सेट् ।

कर्त्तरि—भणति । अभाणीत्, अभणीत् । बभाण, बभणतुः । भणिष्यति, भणिता । कर्म्मणि—भण्यते । अभाणि । णिचि—भाणयति-ते । अबीभणत्-त, अबभाणत्-त, अबभणत्-त । सनि—बिभणिषति । यङि—बम्भण्यते ।

कृत्सु—भणनीयम् । भणनम् । भाणः । भाणकः । आभाणकः । भणिता । भणितः । भणितिः । भणितुम् । भणितव्यम् । भणित्वा । सम्भण्य । भाण्यम् । भणन् । भण्यमानः । भणिष्यन्-ष्यमाणः ।

## (३४१) भण्ड् परिभाषणे भ्वादि० आत्म० सक० सेट् ।

कर्त्तरि—भण्डते । अभण्डिष्ट । अयं कल्याणभाषणे चुरादि० उभ० ।—भण्डयति-ते । अबभण्डत्-त ।

कृत्सु भण्डः । भण्डः । भण्डिलः । भण्डीरः । भण्डी ।

## (३४२) भन्ज् भञ्जने रुधादि० पर० सक० अनिट् ।

कर्त्तरि—भनक्ति, भङ्क्तः, भञ्जन्ति । भनक्षि, भङ्क्थः, भङ्क्थ । भनज्मि, भञ्ज्वः, भञ्ज्मः । भञ्ज्यात् । भनक्तु, भङ्क्तात् । भङ्ग्धि । भनजानि । अभनक्-ग् । अभाङ्क्षीत्, अभाङ्क्ताम् । बभञ्ज, बभञ्जतुः-बभजतुः, बभञ्जिथ-बभङ्क्थ । भङ्क्ता । भज्यात् । कर्म्मणि—भज्यते । अभाजि, अभाञ्जि । उपसर्गादपि प्राभाञ्जि-प्राभाजि । अभङ्क्षाताम् । णिचि—भञ्जयति-ते । अबभञ्जत्-त । सनि—बिभङ्क्षति ।

कृत्सु—भञ्जनीयम् । भञ्जनम् । भङ्गः । भञ्जकः । प्रभञ्जनः ।

घुरच्—भङ्गुरः। भङ्क्ता। भग्नः। भक्तिः। भङ्क्तुम्। भङ्क्तव्यम्। भक्त्वा, भङ्क्त्वा। प्रभज्य। भङ्ग्यम्। भञ्जन्। भज्यमानः। भङ्क्ष्यन्, भङ्क्ष्यमाणः।

## (३४३) भर्त्स् भर्त्सने चुरादि० उभ० सक० सेट्।

कर्त्तरि—भर्त्सयति-ते। अबभर्त्सत्-त। भर्त्सयाञ्चकार-चक्रे-आस-बभूव। कर्म्मणि—भर्त्स्यते। अभर्त्सि।

पाणिनीयमते अयमात्मनेपदी—भर्त्सयते इत्यादि।

कृत्सु—भर्त्सनीयम्। भर्त्सनम्। भर्त्सः। भर्त्सकः। भर्त्सयिता। भर्त्सितः। भर्त्सना। भर्त्सयितुम्। भर्त्सयितव्यम्। भर्त्सयित्वा। सम्भर्त्स्य। भर्त्स्यम्। भर्त्सयन् मानः। भर्त्स्यमानः। भर्त्सयिष्यन्-ष्यमाणः। कर्म्मणि—भर्त्सिष्यमाणश्च।

## (३४४) भा दीप्तौ अदादि० पर० अक० अनिट्।

कर्त्तरि—भाति, भातः, भान्ति। भायात्। भातु। अभात्। अभान्, अभुः। अभासीत्। बभौ, बभतुः, बभुः। बभिथ-बभाथ। बभिव। भाता। भातासि। भास्यति। अभास्यत्। भायात्। भावे—भायते। अभायि। णिचि—भापयति-ते। अबीभपत्-त। सनि—बिभासति। यङि—बाभायते।

व्यति—परस्परभाने व्यतिभाते, व्यतिभाते, व्यतिभान्ते। व्यतिभासे। व्यतिहे। प्रति—प्रतिभायाम्, प्रतिभाति।

कृत्सु—भानीयम्। भानम्। भायः। भायकः। भाता। भातः। भातिः। प्रभा। आभा। भातुम्। भातव्यम्। भात्वा। विभाय। भेयम्। भान्। भास्यन्।

## (३४५) भाष् कथने भ्वादि० आत्म० द्विक० सेट्।

कर्त्तरि—भाषते। अभाषिष्ट। बभाषे। भाषितासे। अभाषि-

ष्यते। कर्म्मणि—भाष्यते। अभाषि। णिचि—भाषयति-ते। अबभाषत्-त, अबीभषत्-त। सनि—बिभाषिषते। यङि—बाभाष्यते।

सम—सम्भाषणे (परस्परकथने) सम्भाषते। वि—विकल्पे विभाषते। कर्म्मणि—विभाष्यते।

कृत्सु—भाषणीयम। भाषणम। भाषः। भाषकः। भाषी। भाषिता। भाषितः। भाषा। भाषितुम्। भाषितव्यम। भाषित्वा। सम्भाष्य। भाष्यम। भाषमाणः। भाष्यमाणः। भाषिष्यमाणः।

## (३४६) भास् दीप्तौ भ्वादि० आत्म० अक० सेट्।

सर्वं भाषवत् षकारस्थाने सकारमात्रभेदः। णिचि—अबभसत्-त, अबभासत्-त इति। भासनीयमित्यादौ णत्वनिमित्तहेत्वभावान्न णत्वमिति। घुरच्—भासुरः। वर—भास्वरः, इति च भेदः।

## (३४७) भिक्ष् लोभे सक० क्लेशे अक० याचने द्विक० भ्वादि० आत्म० सेट्।

कर्त्तरि—भिक्षते। भिक्षेत। भिक्षताम्। अभिक्षत। अभिक्षिष्ट। बिभिक्षे। भिक्षिष्यति। भिक्षिता। अभिक्षिष्यत। भिक्षिषीष्ट। कर्म्मणि—भिक्ष्यते। अभिक्षि। णिचि—भिक्षयति-ते। अबिभिक्षत्-त। सनि—बिभिक्षिषते। यङि—बेभिक्ष्यते।

कृत्सु—भिक्षणीयम्। भिक्षणम्। भिक्षः। दुर्भिक्षम्। सुभिक्षम्। भिक्षकः। षाक—भैक्षाकः, भिक्षाकी। भिक्षी। उ—भिक्षुः। भिक्षिता। भिक्षितः। भिक्षा। भिक्षितुम्। भिक्षितव्यम्। भिक्षित्वा। संभिक्ष्य। भिक्ष्यम्। भिक्षमाणः। भिक्ष्यमाणः। भिक्षिष्यमाणः।

## (३४८) भिद् द्विधाकरणे विशेषकरणे च रुधादि० उभ० सक० अनिट्।

कर्त्तरि (लटि)—भिनत्ति, भिन्तः, भिन्दन्ति। भिनत्सि, भिन्थः, भिन्थ। भिनद्मि, भिन्द्वः, भिन्द्मः। भिन्ते, भिन्दाते, भिन्दते। भिन्त्से, भिन्दाथे, भिन्द्ध्वे। भिन्दे, भिन्द्वहे, भिन्द्महे।

विधिलिङि—भिन्द्यात्, भिन्दीत। भिन्द्याः, भिन्दीथाः। भिन्द्याम्, भिन्दीय।

लोटि—भिनत्तु, भिन्ताम। भिन्धि, भिन्त्स्व। भिनदानि, भिनदै।

लङि—अभिनत्, अभिन्त। अभिनत्, अभिनः। अभिन्थाः। अभिनदम्, अभिन्दि।

लिटि—बिभेद, बिभिदे; बिभिदतुः, बिभिदाते। बिभेदिथ, बिभिदिषे; बिभिदथुः, बिभिदाथे। बिभेद, बिभिदे; बिभिदिव, बिभिदिवहे।

लुङि—अभैत्सीत्, अभिदत्; अभैत्ताम्, अभिदताम्; अभैत्सुः, अभिदन्। अभैत्सीः, अभिदः; अभैत्तम्, अभिदतम्; अभैत्त, अभिदत। अभैत्सम्, अभिदम्; अभैत्स्व, अभिदाव; अभैत्स्म, अभिदाम। अभित्त, अभित्साताम्, अभित्सत। अभित्थाः, अभित्साथाम्, अभिद्ध्वम्। अभित्सि, अभित्स्वहि, अभित्स्महि।

लिङादिषु—भेत्स्यति-ते। भेत्ता। भेत्तासि-से। अभेत्स्यत्-त। भिद्यात्, भित्सीष्ट। कर्म्मणि—भिद्यते। अभेदि। णिचि—भेदयति। अबीभिदत्। सनि—बिभित्सति-ते। यङि—बेभिद्यते।

कृत्सु—भेत्तव्यम्। भेदनीयम्। भेद्यम्। भित्तम्। भिन्नम्।

भिन्दन्। भिन्दती। भिन्दानः। भेत्तुम्। भित्त्वा। विभिद्य। केलिमर्—भिदेलिमाः। भिद्यः,—नदः। भेदुरम्। भिदा। भिदिरम्—वज्रम्। भेदः। निर्—निर्भेदः, प्रकाशः। सम्—सम्भेदः, संश्लेषः।

## (३४६) भी भये जुहोत्यादि॰ पर॰ अक॰ अनिट्।

कर्त्तरि—बिभेति, बिभीतः-बिभितः, बिभ्यति। बिभेषि, बिभीथः-बिभिथः। बिभेमि, बिभीवः-बिभिवः। बिभयात्-बिभीयात्। बिभेतु। बिभिहि-बिभीहि। बिभयानि। अबिभेत्, अबिभीताम्-अबिभिताम्, अबिभयुः। अभैषीत्। बिभयाम्-बभूव-आस-चकार, बिभाय। आमभावपक्षे—बिभ्यतुः, बिभ्युः। बिभयिथ-बिभेथ। बिभ्यिव। भेता। भेष्यति। अभेष्यत्। भीयात्। भावे—भीयते। अभायि। णिचि—प्रयोजकात् भये आत्मनेपदी—भीषयते। अन्यत्र उभयपदी—भापयति-ते। अबीभयत्, अबीभपत्, अबीभीषत। सनि—बिभीषति। यङि—बेभीयते।

क्र्यादिस्तु भये अक॰ भरणे सक॰ पर॰ अनिट्। भीनाति-भिनाति। अभैषीत्।

कृत्सु—भयनीयम्। भयनम्। भयम्। भायकः। आनक—भयानकः। भेता। भीतः। भीतिः। भेतुम्। भेतव्यम्। सम्भीय। भेयम्। क्रु—भीरुः। क्लुक—भीलुकः। मक्—भीमः। णिचः,—भीष्मः। बिभ्यत्। भेष्यन्। णिचः,—भीषणीयम्-भापनीयम्। भीषणम्-भापनम्। भीषणः,-भापनः। भीषकः-भापकः। भीषयिता, भापयिता। भीषितः, भापितः। भीषणा, भापना। भीषयितुम्, भापयितुम्। भीषयितव्यम्, भापयितव्यम्। भीषयित्वा,

भापयित्वा। सम्भीष्य, सम्भाप्य। भीष्यम्, भाप्यम्। भीषयमाण, भीष्यमाणः। भापयमानः, भाप्यमानः। भीषयिष्यमाणः, भापयिष्यमाणः। सनः,—बिभीषा। बिभीषु। बिभीषन्।

(३५०) भुज् वक्रीकरणे तुदादि० पर० सक० अनिट्।

कर्त्तरि—भुजति। अभौक्षीत्। बुभोज। भोक्ता। कर्म्मणि—भुज्यते। अभोजि। णिचि—भोजयति-ते। अबूभुजत्-त। सनि—बुभुक्षति। यङि—बोभुज्यते।

कृत्सु—भोजनीयम्। भोजनम्। भोजकः। भोजी। भोक्ता। भुग्नः। भुक्तिः। भोक्तुम्। भोक्तव्यम्। भुक्त्वा। सम्भुज्य। भोज्यम्। भुजन्। भुज्यमान। भोक्ष्यन्-क्ष्यमाणः।

(३५१) भुज् भक्षे पालने च रुधादि० भक्षे आत्म० पालने पर० सक० अनिट्।

कर्त्तरि—भुनक्ति, भुङ्क्तः, भुञ्जन्ति। भुनक्षि, भुङ्क्थः, भुङ्क्थ। भुनज्मि, भुञ्ज्वः, भुञ्ज्मः। भुङ्क्ते, भुञ्जाते, भुञ्जते। भुङ्क्षे, भुञ्जाथे, भुङ्ग्ध्वे। भुञ्जे, भुञ्ज्वहे, भुञ्ज्महे। भुञ्ज्यात्, भुञ्जीत। भुनक्तु, भुङ्क्ताम्। अभुनक्-ग्, अभुङ्क्त। अभौक्षीत् अभुक्त। बुभोज, बुभोजिथ। बुभुजे। भोक्तास्मि। भुज्यात्, भुक्षीष्ट। भोक्ष्यति-ते। अभोक्ष्यत्-त। कर्म्मणि—भुज्यते। अभोजि। णिचि—भक्षणार्थकस्य पर०।—भोजयति। पालनार्थस्य उभ०।—भोजयति-ते। अबूभुजत्-त। सनि—बुभुक्षते। पालनार्थस्य बुभुक्षति।

कृत्सु—तुदादिगणीयवत्, केवलं भुक्तः, भूर्भोग्या, अन्नं भोज्यम्, भुञ्जन्, भुञ्जान इत्यादिभेदः।

(३५२) [सर्व्वधातुवरिष्ठत्वात् प्रथमत्वाच्च भूधातुः प्रारम्भ एव प्रदत्तः]।

(३५३) भूष् भूषणे विकल्पचुरादि० उभ० पक्षे भ्वादि० पर० सक० सेट्।

कर्त्तरि—भूषयति-ते, भूषति। भूषयेत्-त, भूषेत्। भूषयतु, भूषयताम्, भूषतु। अभूषयत-त, अभूषत्। अबुभूषत-त, अभूषीत्। भूषयाञ्चकार-चक्रे-आस-बभूव; बुभूष। भूषयिष्यति-ते, भूषिष्यति। भूषयिता, भूषिता। अभूषयिष्यत्-त, अभूषिष्यत्। कर्म्मणि—भूष्यते। अभूषि। अभूषयिषाताम्। अभूषिषाताम्। सनि—बुभूषयिषति-ते, बुभूषिषति। यङि—बोभूष्यते।

कृत्सु—भूषणीयम्। भूषणम्। भूषकः। भूषणः। भूषी। भूषयिता, भूषिता। भूषितः। भूषणा। भूषा। भूषयितुम्, भूषितुम्। भूषयितव्यम्, भूषितव्यम्। भूषयित्वा, भूषित्वा। सम्भूष्य। भूष्यम्। भूषयन्-माणः। भूषन्। भूष्यमाणः। भूषयिष्यन्-ष्यमाणः। कर्म्मणि—भूषिष्यमाणः। भूषिष्यन्-ष्यमाणः।

(३५४) भृ धारणे पोषणे च जुहोत्यादि० उभ० सक० अनिट्।

कर्त्तरि—बिभर्त्ति (आत्मनेपदिपक्षे तु—बिभृते इत्यादि), बिभृतः, बिभ्रति। बिभर्षि, बिभृथः, बिभृथ। बिभर्म्मि, बिभृवः, बिभृमः। बिभृयात्। बिभर्त्तु, बिभृताम्, बिभ्रतु। बिभृहि। बिभराणि। अबिभः, अबिभृताम्, अबिभरुः। अभार्षीत्। बिभराम्-बभूव-आस-चकार, बभार। आम-

भावपक्षे—बभ्रतुः। बभर्थ। भर्त्ता। भ्रियात्। भरिष्यति। कर्म्मणि—भ्रियते। अभारि, अभारिषाताम्-अभृषाताम्। णिचि—भारयति-ते। अबीभरत्-त। सनि—बुभूर्षति।

कृत्सु—भरणीयम्। भरणम्। भरः। भारः। भारकः। भारी। भर्त्ता। भृतः। भृतिः। भर्त्तुम्। भर्त्तव्यम्। भृत्वा। अवभृत्य। भार्य्यम्। बिभ्रत्। सामर्थ्यं कवचं बिभ्राणः। भ्रियमाणः। भरिष्यन्-ष्यमाणः। कर्म्मणि—भारिष्यमाणश्च।

## (३५५) भृ भरणे पोषणे च भ्वादि० उभ०सक० अनिट्।

कर्त्तरि—भरति-ते। भरेत्, भरेत। भरतु, भरताम्। अभरत्, अभरत। अभार्षीत्, अभृत। बभार बभ्रे। सनि—बिभरिषति ते, बुभूर्षति-ते। अन्यत जुहोत्यादिगणीयवत्। क्त्रिमाङ्‌प्रत्यययोः,—भृत्रिमः भरथुः भृङ्गारः। शतृ-शानचोः भरन्, भरमाण इति भेदः।

## (३५६) भृज् भर्जने भ्वादि० आत्म० सक० सेट्।

कर्त्तरि—भर्जते। भर्जेत। भर्जताम। अभर्जत। बभृजे। अभर्जिष्ट। भर्जिष्यते। भर्जिता। अभर्जिष्यत। भर्जिषीष्ट। कर्म्मणि—भृज्यते। अभर्जि। णिचि—भर्जयति-ते। अबीभृजत्, अबभर्जत्। सनि—बिभर्जिषते। यङि—बरीभृज्यते।

कृत्सु—भर्जितव्यम। भर्जनीयम। भृज्यम्। भृक्तम्। भर्जित्वा। भृक्त्वा। संभृज्य। भर्जितुम्। भर्गः।

## (३५७) भ्रन्भ्रश् भ्रंशने (अधःपतने) दिवादि० पर० अक० वेट्।

कर्त्तरि—भ्रश्यति। भ्रश्येत्। भ्रश्यतु। अभ्रश्यत्। अभ्रशत्,

बभ्रंश। भ्रंशिता। भ्रश्यात्। भ्रंशिष्यति। अभ्रंशिष्यत्। भावे—भ्रश्यते। अभ्रंशि। णिचि—भ्रंशयति-ते। अबभ्रंशत्-त। सनि—बिभ्रंशिषते। यङि—बाभ्रश्यते।

कृत्सु—भ्रंशनीयम्। भ्रंशनम्। भ्रंशः। भ्रंशकः। भ्रंशी। भ्रंशिता। भ्रष्टः। भ्रष्टिः। भ्रंशितुम्। भ्रंशितव्यम्। भ्रंशित्वा, भ्रष्ट्वा। सम्भ्रश्य। भ्रंश्यः। भ्रश्यमानः। भ्रंशिष्यमाणः।

अयं दन्त्यसकारवानपि—भ्रंसते, भ्रस्यति इत्यादि।

## (३५८) भ्रन्श् भ्रंशे भ्वादि० आत्म० अक० सेट्।

कर्त्तरि—भ्रंशते। भ्रंशेत। भ्रंशताम्। अभ्रंशत। बभ्रंशे। लुङि परस्मैपदस्य—अभ्रशत्, इत्यादि।

कृत्सु—दिवादिगणीयवत्। शानचि—भ्रंशमान इति भेदः।

## (३५९) भ्रम् भ्रमणे भ्वादि० पर० सक० सेट्, फणादि० ज्वलादि०।

कर्त्तरि—भ्रमति, भ्राम्यति। कौटिल्ये इति। अभ्रमत्-अभ्रमीत्। बभ्राम। फणादेः,—भ्रेमतुः, बभ्रमतुः। बभ्रमिथ, भ्रेमिथ। भ्रमिष्यति। भ्रमिता। अभ्रमिष्यत्। भ्रम्यात्। कर्म्मणि—भ्रम्यते। अभ्रामि। णिचि—भ्रमयति-ते। भ्रामयति-ते। अबिभ्रमत्-त। सनि—बिभ्रमिषति। यङि—बम्भ्रम्यते। चङि न ह्रस्वः।

कृत्सु—भ्रमणीयम्। भ्रमणम्। भ्रमः। भ्रमकः। भ्रमी। भ्रमिता। भ्रान्तः। भ्रान्तिः। भ्रमितुम्। भ्रमितव्यम्। भ्रमित्वा-भ्रान्त्वा। विभ्रम्य। भ्रम्यम्। भ्रमन्। यङः,—बम्भ्रम्यमाणः। भ्रमिष्यन्। ज्वलादेः,—भ्रमः, भ्रामः। भ्रमरः।

(३६०) भ्रमु भ्रमणे दिवादि० पर० अक० सेट् शमादि०।

कर्त्तरि—भ्राम्यति। भ्राम्येत्। भ्राम्यतु। अभ्राम्यत्। आर्द्धधातुके कृत्सु च भ्वादिगणीयवत्। शतरि—भ्राम्यन्। क्त्वा—भ्रमित्वा। क्त—भ्रमितः, इत्यादिभेदः।

(३६१) भ्रस्ज् पाके (भर्जने) तुदा० उभ० सक० अनिट्।

कर्त्तरि—भृज्जति-ते। आर्द्धधातुके वा भर्ज्जादेशः, स च सेट्। अभ्राक्षीत्, अभ्रष्ट। बभर्ज्ज, बभ्रज्ज, बभर्जतुः-बभ्रज्जतुः। बभर्जिथ-बभ्रज्जिथ-बभ्रष्ठ। बभर्जिव, बभ्रज्जिव। बभर्जे-बभ्रज्जे। भर्ज्जितासि से। भ्रष्टासि-से। भृज्ज्यात्, भर्ज्यात्। भर्जिषीष्ट, भ्रक्षीष्ट। भर्जिष्यति-ते, भर्क्ष्यति-ते। भ्रक्ष्यति-ते। कर्म्मणि—भृज्ज्यते। अभ्राज्जि। णिचि—भर्जयति-ते, भृज्जयति-ते। सनि—बिभर्जिषति-ते, बिभ्रज्जिषति-ते, बिभ्रक्षति-ते

कृत्सु—भर्जनीयम्, भ्रज्जनीयम्। भर्जनम्, भ्रज्जनम्। भर्जः, भ्रज्जः। भर्जकः, भ्रज्जकः। भर्जिता, भ्रष्टा। भर्जितः, भृष्टः। भर्जा। भृष्टिः। भर्जितुम्, भ्रष्टुम्। भर्जितव्यम्, भ्रष्टव्यम्। भर्जित्वा, भृष्ट्वा। आभर्ज्ज्य, आभृज्ज्य। भर्ज्ज्यम्, भ्रज्ज्यम्। भृज्जन्-मानः-भृज्ज्यमानः। भर्जिष्यन्-माणः। भ्रक्ष्यन्-माणः।

(३६२) भ्राज् दीप्तौ भ्वादि० आत्म० अक० सेट्।

कर्त्तरि—भ्राजते। अभ्राजिष्ट। फणादित्वात् बभ्राजे, भ्रेजे। भ्राजितासे। चङि वा ह्रस्वः। भावे—भ्राज्यते।

अभ्राजि। णिचि—भ्राजयति-ते। अबिभ्रजत्-त, अब-भ्राजत-त।

कृत्सु—भ्राजनीयम्। भ्राजनम्। भ्राजः। भ्राजकः। भ्राजी। भ्राजिता। भ्राजितः। भ्राजा। भ्राजितुम्। भ्राजितव्यम्। भ्राजित्वा। विभ्राज्य। भ्राज्यम्। क्विप्—विभ्राट्। अथुः,—भ्राजथुः। भ्राजमानः। भ्राजिष्यमाणः। इष्णुच्—भ्राजिष्णुः।

## (३६३) मण्ड् भूषणे चुरादि० उभ० पक्षे भ्वादि० पर० सक० सेट्।

कर्त्तरि—मण्डयति-ते। मण्डति। अममण्डत्-त। अमण्डीत्। ममण्ड। मण्डिष्यति। मण्डिता। अमण्डिष्यत्। मण्ड्यात्। कर्म्मणि—मण्ड्यते। अमण्डि। सनि—मिमण्डिषति। यङि—मामण्ड्यते।

कृत्सु—मण्डनीयम। मण्डनम्। मण्डः। मण्डनः। मण्डकः। मण्डी। मण्डयिता, मण्डिता। मण्डितः। मण्डना। मण्डा। मण्डयितुम्, मण्डितुम्। मण्डयितव्यम, मण्डितव्यम। मण्ड[illegible]त्वा, मण्डित्वा। समण्ड्य। मण्ड्यम्। मण्डयन्-मानः। मण्डन्। मण्ड्यमानः। मण्डयिष्यन्-ष्यमाणः, मण्डिष्यन्-ष्यमाणः।

## (३६४) मथ् विलोड़ने भ्वादि० पर० सक० सेट्।

कर्त्तरि—मथति। ममाथ, मेथतुः। अमथीत्। कर्म्मणि—मथ्यते। अमाथि। णिचि—माथयति-ते। अमीमथत्-त। सनि—मिमथिषति।

कृत्सु—मथनीयम्। मथनम्। मथः। माथः। माथकः। प्रमाथी। मथिता। मथितः। मत्तिः। मथितुम्। मथि-

तव्यम्। मथित्वा। सम्मथ्य। माथ्यम्। मथन्, मन्थन्। मथ्यमानः। मथिष्यन्-ष्यमाणः।

(३६५) मद् हर्षे दिवादि॰ पर॰ अक॰ सेट्, शमादि॰ पुषादि॰।

कर्त्तरि—माद्यति। माद्येत्। माद्यतु। अमाद्यत्। अमदत्, अमादीत्, अमदीत्। ममाद। मेदतुः। मदिष्यति। मदिता। अमदिष्यत्। मद्यात्। भावे—मद्यते। अमादि। णिचि—मादयति-ते। अमीमदत्-त। सनि—मिमदिषति। यङि—मामद्यते।

उत्—उन्मादे उन्माद्यति। प्र—प्रमादे प्रमाद्यति।

कृत्सु—मदनीयम्। मदनम्। मदनः। णिचः,—मदनः। मादकः। मादी। मदिता। निष्ठायामनिट्—मत्तः। मत्तिः। मदितुम्। मदितव्यम्। मदित्वा। सम्मद्य। माद्यः। माद्यन्। मदिष्यन्।

उत्—उन्मादः। उन्मत्तः। प्र—प्रमादः। प्रमत्तः।

(३६६) मद् तर्पणे चुरादि आत्म॰ सक॰ सेट्।

कर्त्तरि—मादयते। अमीमदत। मादयाञ्चक्रे-आस-बभूव। मादयिष्यते। कर्म्मणि—माद्यते। मादयितासे, मादितासे। भ्वादिस्तु गर्वे दैन्ये च प॰ अक॰ सेट्। मदति। घटादि॰ मदयति। जाड्ये स्वप्ने मदे आमोदे दीप्तौ च आत्म॰ अक॰ स्तुतौ सक॰। इदित्—मन्दते। अमन्दिष्ट।

कृत्सु—मादनीयम्। मादनम्। मादः। मादकः। मादी। मादयिता। मादितः। मादना। मादयितुम्। मादयितव्यम्। मादयित्वा। सम्माद्य। माद्यम्। मादयमानः। मादयिष्यमाणः।

## (३६७) मन् बोधे दिवा० आत्म० सक० अनिट्।

कर्त्तरि—मन्यते। मन्येत। मन्यताम्। अमन्यत। अमंस्त। मेने, मेनाते, मेनिरे। मन्ता। मन्तासे। अमंस्यत। मंसीष्ट। कर्म्मणि—मन्यते। अमानि। णिचि—मानयति-ते। अमीमनत्-त। सनि—मिमंसते।

अभि—अभिमाने—अभिमन्यते। सम्—सम्मतौ, सम्माने (गौरवान्वितक्रियायाम्) च—सम्मन्यते। अप+अव—अपमाने—अपमन्यते,—अवमन्यते। अनु—अनुमतौ—अनुमन्यते। वि—विमतौ—विमन्यते।

कृत्सु—मननीयम्। मननम्। मानः। अभिमानः। मानकः। मानी। मन्ता। मतः। मतिः। मन्तुम्। मन्तव्यम्। मत्वा। विमत्य, विमन्य। मान्यम्। मन्यमानः। मंस्यमानः।

अभि—अभिमानः। सम्—सम्मानः। अप-अव—अपमानः, अवमानः। अनु—अनुमतिः। वि—विमतिः।

## (३६८) मन् बोधे तनादि० आत्म० सक० सेट्।

कर्त्तरि—मनुते। मन्वाते, मन्वते। मन्वीत। मनुताम्। अमनुत। अमनिष्ट। मेने। मनिता। मनितासे। मनिष्यते। अमनिष्यत। कर्म्मणि—मन्यते। अमानि। णिचि—मानयति-ते। अमीमनत्-त। सनि—मिमनिषते। मतान्तरे तुदा० आत्म०।—मनते इत्यादि। चुरादिश्च गर्वे आत्म० अक० सेट्।—मानयते। अमीमनत। अदन्त-चुरादिस्तु स्तुतौ उभ० सक० सेट्।—मनयति-ते। अममनत्-त।

कृत्सु—मनिता। मनितुम्। मनितव्यम्। उदित्—मनित्वा,

मत्वा। मन्थानः। मनिष्यमाण इति भेदः। अन्यत् दिवादिगणीयवत्।

## (३६९) मन्त्र् मन्त्रणे (गुप्तभाषणे) चुरादि० आ० सक० सेट्।

कर्त्तरि—मन्त्रयति-ते। मन्त्रयेत्-त। मन्त्रयतु-ताम्। अमन्त्रयत्-त। अममन्त्रत्-त। मन्त्रयाञ्चकार-चक्रे आस-बभूव। मन्त्रयिता। मन्त्रयिष्यति ते। मन्त्र्यात। कर्मणि—मन्त्र्यते। अमन्त्रि। अममन्त्रत्-त। सनि—मिमन्त्रयिषति-ते।

आ—आमन्त्रणे (यस्याः करणे प्रत्यवायो नास्ति तादृशक्रियायां नियोगे) सम्बोधने च—आमन्त्रयते। नि—निमन्त्रणे (अवश्यकर्त्तव्यक्रियायां नियोगकरणे) सम्बोधने च—निमन्त्रयते। अभि—अभिमन्त्रणे, मन्त्रपाठेन संस्कारकरणे—अभिमन्त्रयते।

कृत्सु—मन्त्रणीयम्। मन्त्रणम्। मन्त्रः। मन्त्रकः। मन्त्रयिता। मन्त्रितः। मन्त्रणा। मन्त्रयितुम्। मन्त्रयितव्यम्। मन्त्रयित्वा। मन्त्रा। अभिमन्त्र्य। मन्त्राम। मन्त्रयमाणः। मन्त्रमाणः। मन्त्रयिष्यमाणः। कर्मणि—मन्त्रिष्यमाणः।

## (३७०) मन्थ् विलोड़ने वधे च सक० क्लेशे अक० भ्वादि० पर० सेट्।

कर्त्तरि—मन्थति। अमन्थीत्। ममन्थ। ममन्थतुः, ममथतुः। मथ्यात्। भावे कर्मणि च—मथ्यते। अमन्थि। णिचि—मन्थयति-ते। अममन्थत्-त। सनि—मिमन्थिषति। यङि—मामथ्यते।

कृत्सु—मन्थनीयम्। मन्थनम्। मन्थनः। मन्थानः। मन्थः।

मन्थकः। मन्थी। मन्थिता। मथितः। मन्थः। मन्थितुम्। मन्थितव्यम्। मन्थित्वा, मथित्वा। प्रमथ्य। मन्थम्। मन्थन्। मथ्यमानः। मन्थिष्यन्-ष्यमाणः।

## (३७१) मन्थ् क्लेशने क्र्यादि० पर०द्विक०सेट्।

कर्त्तरि—मथ्नाति, मथ्नीतः, मथ्नन्ति। मथ्नीयात्, मथ्नातु। अमथ्नात्। अन्यत् भ्वादिगणीयवत्, शतरि—मथ्नन् इति विशेषः।

## (३७२) मस्ज् मज्जने (सशिरस्कस्नाने) तुदा० पर० अक० अनिट्।

कर्त्तरि—मज्जति। मज्जेत्। मज्जतु। अमज्जत्। अमाङ्क्षीत्, अमाङ्क्ताम्, अमाङ्क्षुः। अमाङ्क्षीः, अमाङ्क्तम्। अमाङ्क्षम्। अमाङ्क्ष्व। ममज्ज। ममज्जिथ, ममङ्क्थ। मङ्क्ता। मङ्क्तासि। मज्ज्यात्। मङ्क्ष्यति। अमङ्क्ष्यत्। भावे—मज्ज्यते। अमज्जि। णिचि—मज्जयति-ते। अममज्जत्-त। सनि—मिमङ्क्षति। यङि—मामज्ज्यते।

नि—निमज्जने (अत्यन्तासक्तौ अत्यन्तसंश्लेषे च)—निमज्जति। उत्—उन्मज्जने (उत्प्लवने) उन्मज्जति, उत्तिष्ठति।

कृत्सु—मज्जनीयम्। मज्जनम्। मज्जः। मज्जकः। मज्जी। मंक्ता। मग्नः। मंक्तः। मंक्तुम्। मंक्तव्यम्। मंक्त्वा। सम्मज्ज्य। मज्जम्। मज्जन्। मङ्क्ष्यन्। अथु—मज्जथुः। सनः—मिमङ्क्षा। मिमङ्क्षुः। मिमङ्क्षन्।

## (३७३) मह् पूजने भ्वादि पर० सक० सेट्।

कर्त्तरि—महति। अमहीत्। ममाह, मेहतुः। कर्मणि—मह्यते। अमाहि। णिचि—माहयति-ते।

आत्मनेपदी तु वृद्धौ अक० सेट। इदित्।—मंहते। अमंहिष्ट।

अदन्तचुरादिरपि पूजने उभ० सक० सेट्।—महयति-ते। अममहत्-त।

महो—पूजायां कण्ड्वादि०।—महीयते। महीयताम्।

कृत्—महनीयम्। महनम्। असि—मह:। माहः। माहकः। माही। महितः। महिः। महितुम्। महितव्यम्। महित्वा। सम्मह्य। माह्यः। महन्। मह्यमानः। महिष्यन्-ष्यमाणः।

## (३७४) मा माने अदादि० पर० सक० अनिट्।

कर्त्तरि—माति। मायात्। मातु। अमात्। अमान्। अमासीत्। ममौ, ममतुः। ममिथ, ममाथ। मेयात्। माता। मास्यति। अमास्यत्। कर्मणि—मीयते। अमायि। अमायिषाताम्, अमासाताम्। णिचि—मापयति-ते। अमीममत्-त। सनि—मित्सति। यङि—मेमीयते।

प्र—प्रमाणे, प्रमाति। परि—परिमाणे, परिमाति। उत्—उन्माने, उन्माति। वि—विमाने, विमाति।

कृत्—मानीयम्। मानम्। मायकः। मायी। माता। मितः। मितिः। मातुम्। मातव्यम्। मित्वा। प्रमाय। मेयः। मान। मीयमानः। मास्यन्-स्यमानः। कर्मणि—मास्यमानश्च। प्र—प्रमीयमाण। परि—परिमीयमाण।

## (३७५) माङ् शब्दे च माने स० जुहोत्यादि० आत्म० अनिट्।

कर्त्तरि—मिमीते। मिमीत। मिमीताम्। अमिमीत। ममे। अमास्त। मास्यते। अमास्यत। मासीष्ट। सनि—मित्सते। अन्यत् सर्व्वं पूर्व्ववत्।

दिवादिस्तु माङ् ङित् आत्म० सक० अनिट्।—मायते। अमास्त। कृत्सु—पूर्व्ववत्।

(३७६) मान् विचारणे भ्वादि० आत्म० सक० सेट् ।

कर्त्तरि—( नित्यमनन्तोऽयम् ) मीमांसते । अमीमांसिष्ट । मीमांसाम् बभूव आस-चक्रे । कर्म्मणि—मीमांस्यते । अमीमांसि ।

कृत्सु—मीमांसनीयम् । मीमांसनम् । मीमांसः । मीमांसकः । मीमांसी । मीमांसिता । मीमांसितः । मीमांसा । मीमांसुः । मीमांसितुम् । मीमांसितव्यम् । मीमांसित्वा । सम्मीमांस्य । मीमांस्यम् । मीमांसमानः । मीमांस्यमानः । मीमांसिष्यमाणः ।

(३७७) मान् पूजने विकल्पचुरादि० उभ० पक्षे भ्वादि० पर० सक० सेट् ।

कर्त्तरि—मानयति-ते, मानति । अमीमनत्-त, अमानीत् । कर्म्मणि—मान्यते । अमानि ।

कृत्सु—माननीयम् । माननम् । मानः । मानकः । मानी । मानयिता, मानिता । मानितः । मानना । माना । मानयितुम्, मानितुम् । मानयितव्यम्, मानितव्यम् । मानयित्वा, मानित्वा । सम्मान्य । मान्यः । मानयन्-मानः । मानन् । मान्यमानः । मानयिष्यन्-ष्यमाणः । मानिष्यन् । कर्म्मणि—मानिष्यमाणश्च ।

(३७८) मार्ग् अन्वेषणे विकल्पचुरादि० उभ० पक्षे भ्वादि० पर० सक० सेट् ।

कर्त्तरि—मार्गयति-ते, मार्गति । अममार्गत्-त, अमार्गीत् । कर्म्मणि—मार्ग्यते । अमार्गि ।

चुरादिस्तु संस्कारे मर्पणे च उभ० सक० सेट्।—मार्गयति-ते। अममार्गत्-त।

कृत्सु—मार्गणीयम्। मार्गणम्। मार्गणः। मार्गकः। मार्गी। मार्गयिता, मार्गिता। मार्गितः। मार्गणा, मार्गा। मार्गयितुम्, मार्गितुम्। मार्गयितव्यम्, मार्गितव्यम्। मार्गयित्वा, मार्गित्वा। सम्मार्ग्य। मार्ग्यम्। मार्गयन्-मानः। मार्गन्। मार्ग्यमाणः। मार्गयिष्यन्-ष्यमाणः। मार्गिष्यन्-ष्यमाणः। कर्म्मणि—मार्गिष्यमाणश्च।

## (३७९) मार्ज् मार्जने चुरा० उभ० सक० ध्वनौ अक० सेट्।

कर्त्तरि—मार्जयति-ते। अममार्जत्-त। मार्जयेत्-त। मार्जयतु-ताम्। अमार्जयत्-त। मार्जयाञ्चकार-चक्रे-मास-बभूव। मार्जयिष्यति-ते। मार्जयिता। अमार्जयिष्यत्-त। मार्ज्यात्, मार्जयिषीष्ट। कर्म्मणि—मार्ज्यते। अमार्जि। अमार्जयिषाताम्। अमार्जिषाताम्।

कृत्सु—मार्जनीयम्। मार्जनम्। मार्जः। मार्जकः। मार्जी। मार्जयिता। मार्जितः। मार्जना। मार्जयितुम्। मार्जयितव्यम्। मार्जयित्वा। सम्मार्ज्य। मार्ज्यम्। मार्जयन्-मानः। मार्ज्यमानः। मार्जयिष्यन्-ष्यमाणः। कर्म्मणि—मार्जिष्यमाणश्च।

## (३८०) मि क्षेपणे स्वादि० उभ० सक० अनिट्।

कर्त्तरि—मिनोति, मिनुतः, मिन्वन्ति। मिनोमि, मिन्वः,-मिनुवः, मिन्मः,-मिनुमः। मिनुते, मिन्वाते, मिन्वते। मिन्वे, मिनुवहे-मिन्वहे, मिनुमहे-मिन्महे। मिनुयात्, मिन्वीत। मिनोतु। मिनु। मिनवानि। मिनुताम्।

मिनुव। मिनुवहे। अमिनोत, अमिनुताम्, अमिन्वन्। अमिनोः। अमिनवम्। अमिनुव। अमासीत्, अमास्त। ममौ, मिम्यतुः। ममिथ-ममाथ। मिम्यिव। मिम्ये। माता। मीयात्। मासीष्ट। मास्यति-ते। कर्मणि—मीयते। अमायि। अमायिषाताम्, अमासाताम्। णिचि—मापयति-ते। अमीमपत्-त। सनि—मित्सति-ते। यङि—मेमीयते।

अनु—अनुमिनो अनुमिनोति। उप—उपमाने उपमिनोति। प्र—प्रमाणे प्रमिणोति।

कृत्सु—मानीयम्। मानम्। मायः। मायकः। मायी। माता। मितः। मितिः। प्र—प्रमितिः। प्रमितः। प्रमाणम्। उप—उपमितः। उपमानम्। अनु—अनुमितिः। अनुमानम्। मातुम्। मातव्यम्। मित्वा। सम्मीय। मेयम्। मिन्वन्। मिन्वानः। मास्यन्-मास्यमानः। कर्मणि—मीयमानम्। क्विप् च—मित्।

## (३८१) मिद् स्नेहे दिवा० पर० अक० सेट्।

कर्त्तरि—मेद्यति। मेद्यतु। अमिदत्, अमेदीत्। मिमेद। मेदिता। भावे—मिद्यते। अमेदि। णिचि—मेदयति-ते। अमीमिदत्-त।

भ्वादिषु आत्म० लुङि पर०, अक० सेट्। वाचे मेधार्थे च उभ० सक० सेट्। वैकल्पिकचुरादि० उभ०, पक्षे पर० उभ० अक० सेट् इत्यदत्। चुरादिषु उभ० सक० सेट्। यथाक्रममुदाहरणानि यथा—मेदते, द्युतत्—अमिदत्। मेदति-ते। अमेदीत्। ऋदित चाङ न ह्रस्वः। मिन्दयति, अमिमिन्दत्-त। पक्षे मिन्दति। अमिन्दीत्। मेदयति-ते। अमीमिदत्-त।

कृत्सु—मेदनीयम्। मेदनम्। असि—मेदः। मेदः। मेदकः। मेदी। मेदिता। मेदितं मिदितं-मिन्नम्। मित्तिः। मेद्यम्। मेदिष्यन्।

## (३८२) मिल् श्लेषे तुदादि० उभ० सक० सेट्।

कर्त्तरि—मिलति-ते। मिलेत्-त। मिलतु-ताम्। अमिलत्-त। मिमेल, मिमिले। अमेलीत्, अमेलिष्ट। मेलिता। मेलिष्यति-ते। अमेलिष्यत्-त। मिल्यात्, मेलिषीष्ट। भावे—मिल्यते। अमेलि। णिचि—मेलयति-ते। अमीमिलत्-त। कुटादिरयमित्येके, तेन अमिलीत्।

कृत्सु—मेलनीयम्। मेलनम्, मिलनम्। मेलकः। मेली। मेलिता। मिलितः। मेलितुम्। मेलितव्यम्। मिलित्वा। सम्मिल्य। मेल्यम्। मिलन्। मिलमानः। मेलिष्यन्-ष्यमाणः।

## (३८३) मिश्र (स्र) युतौ योजने च अदन्त-चुरादि० उभ० सक० सेट्।

कर्त्तरि—मिश्रयति-ते। अमिमिश्रत्-त। कर्मणि—मिश्र्यते। अमिश्रि।

कृत्सु—मिश्रणीयम्। मिश्रणम्। मिश्रः। मिश्रकः। मिश्री। मिश्रयिता। मिश्रितः। मिश्रणा। मिश्रयितुम्। मिश्रयितव्यम्। मिश्रयित्वा। संमिश्र्य। मिश्र्यम्। मिश्रयन्-माणः। मिश्रयमाणः। मिश्रयिष्यन्-ष्यमाणः। कर्मणि—मिश्रिष्यमाणश्च।

## (३८४) मिष् स्पर्द्धायाम् तुदादि० पर० सक० सेट्।

कर्त्तरि—मिषति। अमेषीत्। भावे—मिष्यते। अमेषि। णिचि—मेषयति-ते, अमीमिषत्-त।

उत्—उन्मेषे (प्रकाशे) उन्मिषति। नि—निमेषे निमिषति।

सेचनार्थको भ्वादिस्तु उदित् क्त्वा वेट्।—मेषति। अमेषात्। पराभिभवेच्छायान्तु—मिषति। अमेषीत्। मिमेष।

कृत्सु—मेषणीयम्। मेषणम्। मेषः। मेषकः। मेषी। मेषिता। मिषितः। मिष्टिः। मेषितुम्। मेषितव्यम्। मेषित्वा। सम्मिष्य। मेष्यम्। मिषन्। मेषिष्यन्।

## (३८५) मिह् सेचने भ्वादि० पर० सक० अनिट्।

कर्त्तरि—मेहति। अमिक्षत्। मेढा। मेक्ष्यति। कर्म्मणि—मिह्यते। अमेहि। णिचि—मेहयति-ते, अमीमिहत्-त। सनि—मिमिक्षति।

कृत्सु—मेहनीयम्। मेहनम्। मेहः। मेहकः। मेही। मेढा। मीढः। मीढिः। मेढुम्। मेढव्यम्। मेहन्। मिह्यमानः। मेक्ष्यन्।

## (३८६) मी हिंसायां दिवा० आत्म० सक० सेट्।

कर्त्तरि—मीयते। मीयेत। मीयताम्। अमीयत। मिम्ये। अमेष्ट। मेष्यति। मेता। अमेष्यत। मेषीष्ट। कर्म्मणि—मीयते, अमायि। णिचि—माययति। सनि—मित्सते। यङि—मेमीयते।

कृत्सु—मीनः। मीत्वा। मेतुम्।

## (३८७) मी हिंसायां क्र्यादि० उभ० सक० सेट्।

कर्त्तरि—मीनाति, मीनीते। प्रमीणाति-ते। मीनीयात्, मीनीत। मीनातु, मीनीताम्। अमीनात्, अमीनीत। ममौ, मिम्ये। अमासीत्, अमास्त। मास्यति-ते। माता।

मीयात्, मासीष्ट। णिचि—मापयति। अमीमपत्। सनि—मित्सति-ते।

कृत्सु—मीतः। मीत्वा, प्रमीय। मातुम्। मातव्यः। मानीयः, मेयः। मीतम्। मिनती। मीनानः। मानम्।

## (३८८) मील निमेषे भ्वादि० पर० अक० सेट्।

कर्त्तरि—मीलति। अमीलीत्। णिचि—मीलयति। अमिमीलत्-त, अमीमिलत्-त।

प्र—प्रमीलायाम् प्रमीलति। नि—निमीलने निमीलति। उत्—उन्मीलने उन्मीलति।

कृत्सु—मीलनीयम। मीलनम्। मीलः। मीलकः। मिलिता। मीलितः। मीला, प्रमीला। मीलयितुम्। मिलितव्यम्। मीलित्वा। सम्मील्य। मील्यम्। मीलन्। मीलिष्यन्।

## (३८९) मुच् मोचने तुदादि० मुचादि० उभ० सक० अनिट्।

कर्त्तरि—मुञ्चति, मुञ्चतः, मुञ्चन्ति। मुञ्चते। मुञ्चेत्, मुञ्चेत। मुञ्चतु, मुञ्चताम। अमुञ्चत, अमुञ्चत। अमुचत्, अमुक्त। मुमोच। मुमोचिथ। मुमुचे। मोक्ता। मोक्षामि-से। मुच्यात्, मुक्षीष्ट। मोक्ष्यति-ते। अमोक्ष्यत्-त। कर्मणि—मुच्यते। अमोचि। णिचि—मोचयति-ते। अमूमुचत्-त। सनि—मुमुक्षति-ते। यङि—मोमुच्यते।

आ—परिधाने आमुञ्चति परिधत्ते। वि—त्यागे विमुञ्चति त्यजति।

भ्वादिस्तु दम्भे शाठ्ये आत्म० सक० सेट्।—मोचते। अमोचिष्ट। इदित्प्रयोगमत्रार्थे मुञ्चते। चुरादिस्तु त्यागे उभ० सक० सेट्।—मोचयति-ते। अमूमुचत्-त।

कृत्सु—मोचनीयम्। मोचनम्। मोकः, निर्मोकः। मोचकः। मोची। मोक्ता। मुक्तः। मुक्तिः। मोक्तुम्। मोक्तव्यः। मुक्त्वा। विमुच्य। मोच्यः। मुञ्चन्-मानः। मुच्यमानः। मोच्यन्-मानः।

## (३९०) मुण्ड् खण्डने भ्वादि॰ पर॰ सक॰ सेट्।

कर्त्तरि—मुण्डति। मुमुण्ड। अमुण्डीत्। मुण्डिष्यति। णिचि—मुण्डयति।

कृत्सु—मुण्डितः। मुण्डनम्। मुण्डित्वा।

## (३९१) मुद् हर्षे भ्वादि॰ आत्म॰ अक॰ सेट्।

कर्त्तरि—मोदते। मोदेत। मोदताम्। अमोदत। अमोदिष्ट। मुमुदे। मोदितासे। मोदिषीष्ट। मोदिष्यते। भावे—मुद्यते। अमोदि। णिचि—मोदयति-ते। अमूमुदत्-त। सनि—मुमुदिषते, मुमोदिषते। यङि—मोमुद्यते।

चुरादिस्तु सम्मार्ज्जने उभ॰ सक॰ सेट्।—मोदयति-ते। अमूमुदत्-त।

कृत्सु—मोदनीयम्। आमोदनम्। मोदनः। मोदकः। मोदिता। मुदितः। क्विप्—मुत्-द्। मोदितुम्। मोदितव्यम्। मोदित्वा। सम्मुद्य। मोद्यम्। मोदमानः। मोदिष्यमाणः।

## (३९२) मुर्च्छ् मोहे वृद्धौ च भ्वादि॰ पर॰ अक॰ सेट्।

कर्त्तरि—मूर्च्छति। अमूर्च्छीत्। भावे—मूर्च्छ्यते। णिचि—मूर्च्छयति-ते अमुमूर्च्छत्-त।

सम्—सम्मूर्च्छने (प्रतिबिम्बने) सम्मूर्च्छति—दर्पणे प्रतिबिम्बति।
कृत्सु—मूर्च्छनीयम्। मूर्च्छनम्। मूर्च्छकः। मूर्च्छिता। मूर्च्छितः। भावादिकर्मणोस्तु—मूर्च्छितम्, मूर्त्तम्। मूर्त्तिः। मूर्च्छा। मूर्च्छितुम्। मूर्च्छितव्यम्। मूर्च्छित्वा। सम्मूर्च्छ्य। मूर्च्छन्। मूर्च्छिष्यन्। क्विप्—मूः।

## (३९३) मुष् लुण्ठने क्र्यादि० पर० द्विक० सेट्।

कर्तरि—मुष्णाति, मुष्णीतः, मुष्णन्ति। मुष्णीयात्। मुष्णातु। मुषाण। अमुष्णात्। अमोषीत्। मुमोष। मोषिता। मुष्यात्। मोषिष्यति। कर्मणि—मुष्यते। अमोषि। णिचि—मोषयति-ते। अमूमुषत्-त।
भ्वादिस्तु वधे पर० सक० सेट्।—मोषति। अमोषीत्। दिवादिस्तु खण्डने पर० सक० सेट्।—मुष्यति। इरित्—अमुषत-अमोषीत्। पुषादरयमित्यन्ये।
कृत्सु—मोषणीयम्। मोषणम्। मोषः। मोषकः। मोषी। मोषिता। मुषितः। मुष्टः। क्विप्—मुट्-ड्। मोषितुम्। मोषितव्यम्। मुषित्वा। सम्मुष्य। मुष्णन्। मुष्यमाणः। मोषिष्यन्-ष्यमाणः।

## (३९४) मुह् विमोहने दिवा० पर० अक० सेट्।

कर्तरि—मुह्यति। मुह्येत्। मुह्यतु। अमुह्यत्। अमुहत्। मुमोह। मुमोहिथ, मुमोग्ध, मुमोढ। मुमुहिव, मुमुह्व। मोहिता, मोग्धा, मोढा। मुह्यात्। मोहिष्यति, मोक्ष्यति। अमोहिष्यत्, अमोक्ष्यत्। भावे—मुह्यते। अमोहि। णिचि—मोहयति-ते। अमूमुहत्-त। सनि—मुमुहिषति, मुमोहिषति, मुमुक्षति। यङि—मोमुह्यते।

कृत्सु—मोहनीयम् । मोहनम् । मोहः । मोहकः । मोही । मोहिता, मोग्धा, मोढ़ा । मुग्धः, मूढ़ः । मुग्धिः, मूढिः । मोहितुम्, मोग्धुम्, मोढुम् । मोहितव्यम्, मोग्धव्यम्, मोढ़व्यम् । मुहित्वा, मोहित्वा ; मुग्ध्वा, मूढ्वा । परिमुह्य । मोह्यम् । मुह्यन् । मोहिष्यन् मोक्ष्यन् ।

(३९५) मृ मरणे तुदादि० अक० अनिट् स्ये सेट्, लट् लिङ् लोट् लङ् लुङ्षु, आशीर्लिङि च आत्म० अन्यत्र पर० ।

कर्त्तरि—म्रियते । म्रियेत । म्रियताम् । अम्रियत । अमृत । ममार, मम्रतुः । ममिथ । मर्त्ता । अमरिष्यत्, मर्त्तासि । मृषीष्ट । मरिष्यति । भावे—म्रियते । अमारि । मम्रे । णिचि—मारयति-ते । अमीमरत-त । सनि—मुमूर्षति । यङि—मेम्रीयते ।

कृत्सु—मरणीयम् । मरणम् । मारः । मारी । मर्त्ता । मृतः । मृतिः । मर्त्तुम् । मर्त्तव्यम् । मृत्वा । अपमृत्य । मार्य्यम् । म्रियमाणः । मरिष्यन् । णिचः,—मारकः । मारः । सनः,—मुमूर्षा मुमूर्षुः । मुमूर्षमाणः ।

(३९६) मृग अन्वेषणे याचने च अदन्तचुरादि० आत्म० सक० सेट् ।

कर्त्तरि—मृगयते । अममृगत । मृगयाञ्चक्रे । मृगयिष्यति । कर्म्मणि—मृग्यते । अमृगि । अमृगयिषाताम्, अमृगिषाताम् ।

दिवादिस्तु अन्वेषणे पर० सक० सेट् ।—मृग्यति । अमर्गीत् । कण्ड्वादिरप्ययं, तेन मृग्यति इत्यादि ।

कृत्सु—मृगणीयम्। मृगणम। मृगः। मृगकः। मृगयिता। मृगितः। मृगणा। मृगयितुम। मृगयितव्यम्। मृगयित्वा। सम्मृग्य। मृग्यम्। मृगयमाणः। मृग्यमाणः। मृगयिष्यमाणः। कर्म्मणि—मृगिष्यमाणश्च।

(३९७) मृज् शोधने भूषणे च विकल्पचुरादि० उभ० पक्षे अदादि० पर० सक० वेट्।

कर्त्तरि—मार्ष्टि, मृष्टः, मार्जन्ति-मृजन्ति। मार्क्षि, मृष्ठः, मृष्ठ। मार्ज्मि, मृज्व, मृज्मः। मृज्यात्। मार्ष्टु, मृष्टाम्। मृड्ढि, मृष्टं, मृष्ट। मार्जानि, मार्जाव, मार्जाम। अमार्ट्-ड्, अमृष्टाम्, अमार्जन्-अमृजन्। अमार्ट्-ड्, अमृष्टम्, अमृष्ट। अमार्जम। अमार्जीत्, अम्राक्षीत्, अमार्क्षीत्। ममार्ज, ममार्जतुः,-ममृजतुः। ममार्जिथ, मम्रष्ठ, ममार्ष्ठ। मार्जिता, मार्ष्टा, म्रष्टा। मृज्यात्। मार्जिष्यति, म्रक्ष्यति, मार्क्ष्यति। पाणिनीयमते अस्य ऋदुपधत्वेन अम, मुग्धबोधमते तन्न इति भेदः। कर्म्मणि—मृज्यते। अमार्जि। णिचि—मार्जयति-ते। अमीमृजत्-त, अममार्जत्-त। सनि—मिमार्जिषति, मिमृक्षति। यङि—मरीमृज्यते।

कृत्सु—मार्जनीयम्। मार्जनम। मार्गः। मार्जकः। मार्जी। मृष्टः। मृजा। मार्जितुम-म्रष्टुम मार्ष्टुम। मार्जितव्यम-म्रष्टव्यम-मार्ष्टव्यम। मृष्ट्वा। सम्मृज्य। मृज्यम्। मार्जन्-मृजन्। मृज्यमानः। मार्जिष्यन्-म्रक्ष्यन्-मार्क्ष्यन्। मार्जिष्यमाणः-म्रक्ष्यमाणः,-मार्क्ष्यमाणः।

(३९८) मृड् चोदे क्र्यादि० पर० सक० सेट्।

कर्त्तरि—मृड्नाति, मृड्नीतः, मृड्नन्ति। मृड्नीयात्। मृड्नातु।

अमृक्षत्। अमर्दीत्। ममर्द। ममृदतुः। मर्दितासि। मर्दिष्यति। मर्दिता। अमर्दिष्यत्। मृद्यात्। कर्मणि—मृद्यते। अमर्दि। णिच्—मर्दयति-ते। अमीमृदत्-त, अममर्दत्-त। सनि—मिमर्दिषति। यङि—मरीमृद्यते।

कृत्सु—मर्दनीयम्। मर्दनम्। मर्दनः। मर्दकः। मर्दः। मर्दी। मर्दिता। मर्दितः। मर्दा। मर्दितुम्। मर्दितव्यम्। मर्दित्वा। सम्मृद्य। मृद्यम। मर्दन्। मृद्यमानः। मर्दिष्यन्-ष्यमाणः।

## (३८९) मृश् मर्शने प्रणिधाने च तुदा० पर० सक० अनिट्।

कर्तरि—मृशति। अम्राक्षीत्, अमार्क्षीत्, अमृक्षत्। ममर्श। ममर्शिथ। ममृशिव। म्रष्टा, मर्ष्टा। म्रक्ष्यति, मर्क्ष्यति। कर्मणि—मृश्यते। अमर्शि। णिचि—मर्शयति-ते। अमीमृशत्-त, अममर्शत्-त। सनि—मिमृक्षति।

परा—परामर्श (पूर्वोक्तस्य स्मरणे। न्यायमते व्याप्तिविशिष्टपक्षवृत्तित्वज्ञाने) परामृशति। वि—विमर्श (चिन्तने) विमृशति। अभि—अभिमाने मर्दने परामर्शने च—अभिमृशति।

कृत्सु—मर्शनीयम्। मर्शनम्। मर्शः। मर्शकः। मर्शी। म्रष्टा, मर्ष्टा। मृष्टः। मृष्टिः। म्रष्टुम्, मर्ष्टुम्। म्रष्टव्यम्, मर्ष्टव्यम्। मृष्ट्वा। सम्मृश्य। मृश्यम्। मृशन्। मृश्यमानः। म्रक्ष्यन्-माणः। मर्क्ष्यन्-माणः।

परा—परामर्शः। वि—विमर्शः। अभि—अभिमर्शनम्।

(४००) मृश् मर्शने गतौ च भ्वादि० पर० सक० सेट्।

कर्त्तरि—मर्शति। अमर्शीत् इत्यादि। अन्यत् तुदादि-
 मृशवत्। किन्तु वलादाविट्। शतरि—मर्शन्।

(४०१) मृष् सहने चुरादि० उभ० सक० सेट्।

कर्त्तरि—मर्षयति-ते। अमीमृषत्-त, अममर्षत्-त। कर्म्मणि
 —मर्ष्यते। अमर्षि।

(४०२) मृष् सहने भ्वादि० उभ० सेचने पर०
सक० सेट् ऊदित्-क्त्वा वेट्।

कर्त्तरि—मर्षति-ते। अमर्षीत्। अमर्षिष्ट। कर्म्मणि—मृष्यते।
 अमर्षि। णिचि चुरादिगणीयवत्।

(४०३) मृष् सहने विकल्पचुरादि० पक्षे दिवादि०
उभ० सक० सेट्।

कर्त्तरि—मृष्यति-ते। मर्षयति-ते। अमर्षीत्। अमर्षिष्ट।
 अन्यत् भ्वादिगणीयवत्।

अदन्तचुरादिरपि क्षमायां, उभ० सक० सेट्।—मृषयति-ते।
 अमीमृषत्-त।

कृत्सु—मर्षणीयम्। मर्षणम्। मर्षः। मर्षकः मर्षी। मर्षिता।
 मर्षितुम्। मृष्टः। मृष्टिः। भौवादिकस्य दैवादिकस्य च—
 मर्षितव्यम। मर्षित्वा, मृषित्वा। दैवादिकस्य चौरादिकस्य
 च—मर्षितः। मर्षित्वा। चौरादिकस्य—मर्षयिता। मर्षयि-
 तुम्। मर्षयित्वा। सम्मृष्य इति भेदः। शतरि शानचि च
 चौरादिकस्य—मर्षयन्-माणः। मर्षमाणः। मर्षयिष्यन्-

ष्यमाणः। दैवादिकस्य—मृष्यन्। मृष्यमाणः। मर्षिष्यन्-ष्यमाणश्च। भौवादिकस्य—मर्षन्। मृष्यमाणः। मर्षिष्यन्-ष्यमाणः।

(४०४) मोक्ष मोचने विकल्पचुरादि० उभ० पक्षे भ्वादि० पर० सक० सेट्।

कर्त्तरि—मोक्षयति-ते, मोक्षति। अमुमोक्षत्-त, अमोक्षीत्। कर्म्मणि—मोक्ष्यते। अमोक्षि।

कृत्सु—मोक्षणीयम्। मोक्षणम्। मोक्षः। मोक्षकः। मोक्षयिता, मोक्षिता। मोक्षितः। मोक्षणा। मोक्षा। मोक्षयितव्यम्। मोक्षितव्यम्। मोक्षयितुम्। मोक्षितुम्। मोक्षयित्वा, मोक्षित्वा। सम्मोक्ष्य। मोक्ष्यम्। मोक्षयन्-मानः। मोक्षन्। मोक्ष्यमाणः। मोक्षयिष्यन्-ष्यमाणः। मोक्षिष्यन्-ष्यमाणः। कर्म्मणि—मोक्षिष्यमाणश्च।

(४०५) म्ना अभ्यासे भ्वादि० पर० सक० अनिट्।

कर्त्तरि—मनति, मनतः, मनन्ति। मनेत्। मनतु। अमनत्। अम्नासीत्, अम्नासिष्टाम्, अम्नासिषुः। मम्नौ। मम्निथ, मम्नाथ। म्नाता। म्नायात्, म्नेयात्। म्नास्यति। कर्म्मणि—म्नायते। अम्नायि। अम्नायिषाताम्, अम्नासाताम्। णिचि—म्नापयति-ते। अमीम्नपत्-त।

कृत्सु—म्नानीयम्। म्नानम्। आम्नायः। म्नायी। म्नायकः। म्नाता। अम्नातः। म्नातिः। म्नातुम्। म्नातव्यम्। म्नात्वा। संम्नाय। म्नेयम्। मनन्। म्नायमानः। म्नास्यन्। म्नास्यमानः। कर्म्मणि—म्नायिष्यमाणश्च।

### (४०६) म्लै हर्षक्षये भ्वादि० पर० अक० अनिट्।

कर्त्तरि—म्लायति। अम्लासीत। म्लायात्, म्लेयात्। म्लान-
मित्यादिभेदः। अन्यत् ग्लैवत्।

### (४०७) यज् दाने पूजने यागे (देवोद्देश्यक-हविस्त्यागे) सङ्गतौ च भ्वादि० उभ० सक० यजादि० अनिट्।

कर्त्तरि—यजति-ते। यजेत्-त। यजतु-ताम्। अयजत्-त।
अयाक्षीत्, अयष्ट; अयाष्टाम्, अयक्षाताम्। इयाज,
ईजतुः। इयजिथ-इयष्ठ। ईजिव। ईजे। यष्टास्मि-से।
इज्यात्। यक्षीष्ट। यक्ष्यति-ते। अयक्ष्यत्-त। कर्म्मणि—
इज्यते। अयाजि। णिचि—याजयति-ते। अयीयजत्-
त। सनि—यियक्षति-ते। यङि—यायज्यते।

कृत्सु—यजनीयम्। यजनम्। यागः। याजकः। याजी। यष्टा।
इष्टः। इष्टिः। क्यप्—इज्या। वनिप्—यज्वा। यष्टव्यम्।
यष्टुम। इष्ट्वा। सम्मिज्य। याज्यम्। यजन्। यजमानः।
इज्यमानः। यक्ष्यन्-माणः। सनः—यियक्षन्-माणः।
यियक्षुः। यङः+ऊक—यायजूकः।

### (४०८) यत् खेदे (ताड़ने) उपस्करणे च चुरादि० पर० सक० सेट्।

कर्त्तरि—यातयति। अयीयतत्। कर्म्मणि—यात्यते। अयाति।
निर्—निर्यातने (प्रतिरूपकरणेन शोधने प्रत्यर्पणे च)
निर्यातयति-ते।

कृत्सु—यातनीयम्। यातनम्। यातकः। यातयिता। क्तिन्

नास्ति. युच्—यातना । यातयितव्यम् । यातयितुम् । यातयित्वा । संयात्य । यातयन् । यातयमानः । यात्यमानः । यातयिष्यन्-ष्यमाणः । कर्म्मणि—यातिष्यमाणश्च ।

## (४०९) यत् यत्ने भ्वादि० आत्म० अक० सेट् ।

कर्त्तरि—यतते । यतेत । यतताम् । अयतत । अयतिष्ट । येते । यतितासे । यतिषीष्ट । यतिष्यते । अयतिष्यत । भावे—यत्यते । अयाति । णिच—यातयति-ते । अयीयतत्-त ।

आ वशीभवने—आयतते ।

कृत् यतनीयम् । यतनम् । यतिता । इदित् निष्ठायां अनिट् यत्तः, आयत्तः, प्रयत्तः । यत्तिः । यतितव्यम् । यतितुम् । यतित्वा । नङ्—यत्नः । आयत्य । यात्यम् । यतमानः । यतिष्यमाणः । क्तः—आयत्तः । आयत्तिः ।

## (४१०) यन्त्र सङ्कोचने विकल्पचुरादि० उभ० पक्षे भ्वादि० पर० सक० सेट् ।

कर्त्तरि—यन्त्रयति-ते । यन्त्रति । अययन्त्रत्-त । अयन्त्रीत् । कर्म्मणि—यन्त्र्यते । अयन्त्रि ।

कृत्—यन्त्रणीयम् । यन्त्रणम् । यन्त्रः । यन्त्रकः । यन्त्रयिता । यन्त्रितः । क्तिन् नास्ति, युच्—यन्त्रणा । यन्त्रयितव्यम् । यन्त्रयितुम् । यन्त्रयित्वा । संयन्त्र्य । यन्त्र्यम् । यन्त्रयमाणः । यन्त्र्यमाणः । यन्त्रयिष्यन्-ष्यमाणः । कर्म्मणि—यन्त्रिष्यमाणश्च ।

## (४११) यम् उपरमे भ्वादि० पर० अक० अनिट् ।

कर्त्तरि—यच्छति । यच्छेत् । यच्छतु । अयच्छत् । अयंसीत्, अयंसिष्टाम्, अयंसिषुः । ययाम, येमतुः । येमिथ-ययन्थ,

येमिव। यन्ता। यन्तासि। यम्यात्। यंस्यति। अयंस्यत्। भावे—यम्यते। अयामि, अयामि। णिचि—यमयति-ते, यामयति-ते। सनि—यियंसति। यङि—यंयम्यते।

आ—आयासे दीर्घीभवने आत्म० आयच्छते। दीर्घीकरणे तु सकर्मकः पादमायच्छते। नि—नियमे (व्यामौ व्रतभेदे च) नियच्छति। सम्—संयमने (बन्धने) संयच्छति बध्नाति। उद्—उद्यमे आत्म० उद्यच्छते। उप—स्वीकारणे (सुपद्गमते विवाहे) आत्म० उपयच्छते।

चुरादिस्तु परिवेषणे उभ० सक० सेट्, वा घटादि०।—यमयति, यामयति, अयीयमत्-त। अययामत्-त।

कृत्सु—यमनीयम्। यमनम्। यमः। यामः। यामकः। यमकः। यमी। यामी। यन्ता। यतः। यतिः। यन्तव्यम्। यन्तुम्। ऊदित् क्त्वा वेट्—यमित्वा यत्वा। संयम्य। यम्यः। यच्छन्। यम्यमानः। यंस्यन्-स्यमानः।

आ—आयामः। नि—नियमः। सं—संयमः, संयतः। उत्—उद्यमः, उद्यतः, उद्यतिः।

## (४१२) यस् यत्ने दिवादि० पर० अक० पक्षे भ्वादि० सेट्।

कर्त्तरि—यस्यति यसति, संयस्यति संयसति, प्रयस्यति, नियंस्यति। इरित्—अयसत्, अयासीत्, अयसीत्। अयं पुषादिरित्यन्ये। ययास, येसतुः। भावे—यस्यते। अयासि। णिचि—यासयति-ते। अयीयसत्-त।

आ—आयासे—आयस्यति।

कृत्सु—यसनीयम्। यसनम्। यासः, प्रयासः। प्रयासी। आयासः। निर्य्यासः। यसिता। यस्तः। यस्तिः। यसि-

तव्यम्। यमितुम्। उदित् क्त्वा वेट्—यमित्वा, यत्वा। प्रयत्य। याम्यम्। यच्छन् यमन्। संयच्छन्-संयमन्। प्रयच्छन्। यमिष्यन्।

## (४१३) या गतौ अदा० पर० सक० अनिट्।

कर्त्तरि—याति। यायात्। यातु। अयात्। अयुः, अयान्। अयासीत्, अयासिष्टाम, अयासिषुः। ययौ, ययतुः। ययिथ, ययाथ। ययिव। यातासि। यायात्। यास्यति। याता। अयास्यत्। यायात्। कर्म्मणि—यायते। अयायि। णिचि—यापयति-ते। अयीयपत्-त। सनि—यियासति। यङि—यायायते।

कृत्सु—यानीयम्। यानम्। यायी। याता। यातः। यातिः। यातव्यम्। यातुम्। यात्वा। प्रयाय। येयम। यान्। यायमानः। यास्यन्-स्यमानः। सनः,—यियासा। यियासुः। यङः+वरच्—यायावरः।

## (४१४) याच् प्रार्थने भ्वादि० उभ० द्विक० सेट्।

कर्त्तरि—याचति-ते। याचेत्-त। याचतु-ताम्। अयाचत्-त। अयाचीत्, अयाचिष्ट। ऋदित् चङि न ह्रस्वः। अयाचिष्यत्। ययाच, ययाचे। याचितासि-से। याच्यात्, याचिषीष्ट। याचिष्यति-ते। कर्म्मणि—याच्यते। अयाचि। णिचि—याचयति-ते। अययाचत्-त। सनि—यियाचिषति-ते। यङि—यायाच्यते।

कृत्सु—याचनीयम्। याचनम्। याचकः। याची। याचिता। याचितः। याचितव्यम्। याचितुम्। याचित्वा। नङ्—याञ्ञा। उपयाच्य। याच्यम्। याचन्-मानः। याच्यमानः।

याचयिष्यन्-ष्यमाणः। टित्+अथु—याचथुः। ड्वित्—याचित्रम्।

## (४१५) यु मिश्रणेऽमिश्रणे च अदा० पर० सक० सेट्।

कर्त्तरि—यौति, युतः, युवन्ति। युयात्। यौतु। अयौत्। अयावीत्। युयाव, युयुवतुः। युयुविथ। यवितासि। यूयात्। यविष्यति। कर्म्मणि—यूयते। अयावि। णिचि—यावयति-ते। सनि—यियविषति, युयूषति। णिचः सनि—यियावयिषति-ते। यङि—योयूयते।

क्र्यादिस्तु बन्धे सक० उभ० अनिट्।—युनाति। युनीते। अयौषीत्। अयोष्ट।

चुरादिस्तु निन्दने आत्म० सक० सेट्।—यावयते। अयीयवत।

कृत्सु—यवनीयम्। यवनम्। यवः। यविता। युतः। युतिः। यवितव्यम्। यवितुम्। युत्वा। संयुत्य। यव्यम्। याव्यम्। युवन्। यूयमानः। यविष्यन्-ष्यमाणः। कर्म्मणि—यविष्यमाणश्च।

## (४१६) युज् समाधौ दिवा० आत्म० अक० अनिट्।

कर्त्तरि—युज्यते। युज्येत। युज्यताम्। अयुज्यत। अयुक्त। युयुजे। योक्तासे। युक्षीष्ट। योक्ष्यते। भावे—युज्यते। अयोजि। णिचि—योजयति-ते। अयूयुजत्-त।

कृत्सु—योजनीयम्। योजनम्। योगः। योजकः। घिणुन—योगी। योक्ता। युक्तः। युक्तिः। योक्तव्यम्। योक्तुम्। संयुज्य। योज्यम्। योग्यः। युज्यमानः। योक्ष्यमाणः।

## (४१७) युज् युतौ रुधादि० उभ०सक०अनिट्।

कर्त्तरि—युनक्ति, युङ्क्तः, युञ्जन्ति। युनक्षि, युङ्क्थः।

युनज्मि. युञ्जः। युङ्क्ते, युञ्जाते, युञ्जते। युञ्ज्यात्, युञ्जीत। युनक्तु, युङ्क्ताम्। अयुनक्-ग्, अयुङ्क्त। इरित् —अयुजत अयौक्षीत्। अयुक्त। युयोज, युयुजे। योक्ष्यति-ते। अयोक्ष्यत्-त। युज्यात, युक्षीष्ट। कर्मणि—युज्यते। अयोजि। सनि—युयुक्षति-ते। यङि—योयुज्यते।

उद्—उद्योगे सक॰—उद्युङ्क्ते। प्र—प्रयोगे सक॰ आत्म॰ प्रयुङ्क्ते। अनु—प्रश्ने सक॰ आत्म॰ अनुयुङ्क्ते। अभि अभियोगे सक॰ आत्म॰ अभियुङ्क्ते। उप—भोजने सक॰ सम्बन्धभेदे सक॰ आत्म॰ उपकारार्थे उपयुङ्क्ते भुङ्क्ते उपकरोति वा। नि—नियोगे सक॰ आत्म॰ नियुङ्क्ते।

कृत्सु—दिवादिकावत् शतरि युञ्जन्, युञ्जान इति भेदः।

उत्—उद्योगः। उद्युक्तः। प्र—प्रयोगः। प्रयुक्तः। अनु—अनुयोगः। अनुयुक्तः। अभि—अभियोगः। अभियुक्तः। उप—उपयोगः। नि—नियोगः।

## (४१८) युज् निन्दायां बन्धने च चुरादि॰ उभ॰ सक॰ सेट्।

कर्त्तरि—योजयति-ते। योजयेत्-त। योजयतु-ताम्। अयोजयत्-त। योजयाञ्चकार चक्रे। अयूयुजत्-त। योजयिष्यति-ते।

कृत्सु—योजयितव्यः। योजितः। योजयिता। योजयित्वा। योजना। योजयितुम्।

## (४१९) युध् योधने दिवादि॰ आत्म॰ अक॰ अनिट्।

कर्त्तरि—युध्यते। युध्येत। युध्यताम्। अयुध्यत। अयुद्ध। अयुत्साताम्। युयुधे, युयुधाते, युयुधिरे। योद्धा। योद्धासे। युत्सीष्ट। योत्स्यते। अयोत्स्यत। कर्मणि—युध्यते।

अयोधि। णिचि—योधयति-ते। अयूयुधत्-त। सनि—युयुत्सते। यङि—योयुध्यते।

कृत्सु—योधनीयम्। योधनम्। योधी। योद्धा। युद्धः। युद्धिः। योद्धव्यम्। योद्धुम्। युद्ध्वा। संयुध्य। योध्यः। युध्यमानः। योत्स्यमानः। सनः+उ—युयुत्सुः।

## (४२०) रक्ष् पालने भ्वादि० पर० सक० सेट्।

कर्त्तरि—रक्षति, प्रतिरक्षति। रक्षेत्। रक्षतु। अरक्षत्। अरक्षीत्, अरक्षिष्टाम्, अरक्षिषुः। ररक्ष। रक्षिता। रक्ष्यात्। रक्षिष्यति। अरक्षिष्यत्। कर्म्मणि—रक्ष्यते। अरक्षि। णिचि—रक्षयति-ते। अररक्षत्-त। सनि—रिरक्षिषति। यङि—रारक्ष्यते।

कृत्सु—रक्षणीयम्। रक्षणम्। रक्षः। रक्षकः। रक्षी। रक्षिता। रक्षितः। रक्षा। रक्षितव्यम्। रक्षितुम्। रक्षित्वा। संरक्ष्य। रक्ष्यम्। रक्षन्। रक्ष्यमाणः। रक्षिष्यन्-ष्यमाणः।

## (४२१) रच विधाने अदन्तचुरादि० उभ० सक० सेट्।

कर्त्तरि—रचयति-ते। रचयेत्-त। रचयतु-ताम्। अरचयत्-त। अररचत्-त। रचयाञ्चकार-चक्रे-आस-बभूव। रचयितासि-से। रचयिता। रचयिष्यति-ते। अरचयिष्यत्-त। रच्यात्, रचयिषीष्ट। कर्म्मणि—रच्यते। अरचि। सनि—रिरचयिषति-ते। यङि—रारच्यते।

कृत्सु—रचनीयम्। रचनम्। रचकः। रचयिता। रचितः। रचना। रचयितुम्। रचयित्वा। विरचय्य, विरच्य। रच्यम्। रचयन्-मानः। रच्यमानः। रचयिष्यन्-ष्यमाणः।

## (४२२) रध् हिंसायां पाके च दिवा० पर० सक० वेट् ।

कर्त्तरि—रध्यति। रध्येत्। रध्यतु। अरध्यत्। ऌदित्—अरधत्। इदित्—अरन्धत्। ररन्ध, रेधतुः,-ररन्धतुः। ररन्धिथ-ररद्ध। ररन्धिव रेध्व। रधितास्मि-रद्धास्मि। रत्स्यति। कर्म्मणि—रध्यते। अरन्धि। णिचि—रन्धयति-ते। अररन्धत्-त।

कृत्सु—रन्धनीयम्। रन्धनम्। रन्धः। रन्धकः। रधिता, रद्धा। रद्धः। रधितव्यम, रद्धव्यम्। रधितुम, रद्धुम। ऊदित् क्त्वा वेट्—रधित्वा, रद्धा। संरध्य। रध्यन्। रधिष्यन्-ष्यमाणः। रत्स्यन्-त्स्यमानः।

## (४२३) रन्ज् रञ्जने (वर्णान्तरसम्पादने) सक० प्रीतौ अक० दिवादि० उभ० अनिट् ।

कर्त्तरि—रज्यति-ते। रज्येत्-त। रज्यतु-ताम्। अरज्यत्-त। अराङ्क्षीत्। अरङ्क्त। ररञ्ज। ररञ्जिथ-ररङ्क्थ, ररञ्जिव-ररजिव। ररञ्जे-ररजे। रङ्क्तास्मि-से। रज्यात्। रङ्क्षीष्ट। रज्याः। रङ्क्षीष्ठाः। रङ्क्ष्यति-ते। अरङ्क्ष्यत्-त। भावे कर्म्मणि च—रज्यते। अरञ्जि। णिचि—रञ्जयति-ते। घटादि० रजयतीति भेदः। अररञ्जत्-त, अरीरजत्-त। सनि—रिरङ्क्षति-ते। यङि—रारज्यते।

उप—ग्रहणे ग्रासे च—उपरज्यति। अनु—प्रीतौ अनुरज्यति प्रीणाति। वि—विरागे विरज्यति।

कृत्सु—रञ्जनीयम्। रञ्जनम्। रङ्गः। रञ्जकः। रङ्क्ता। रक्तः। रक्तिः। रङ्क्तव्यम्। रङ्क्तुम्। रक्त्वा। उपरज्य। रङ्ग्यम्। रज्यन्। रज्यमानः। रङ्क्ष्यन्। रङ्क्ष्यमाणः।

उप—उपरागः। अनु—अनुरक्तः, अनुरागः। वि—विरक्तः, विरागः।

(४२४) रन्ज् रागे सक० आसक्तौ अक० भ्वादि० उभ० अनिट्।

कर्त्तरि—रजति, रजते। रजेत्-त। रजतु-ताम। अरजत्-त। अराङ्क्षीत्। अरङ्क्त। णिचि—रजयति-ते। रजयति—हृष्टपादानेन मृगान् रमयतीत्यर्थः। अन्यत्र रञ्जयति।

(४२५) रभ् आरम्भे सक० औत्सुक्ये च अक० भ्वादि० आत्म० अनिट्।

कर्त्तरि—रभते, (प्रायेणायम् पूर्व्वकः) आरभते। रभेत। रभताम्। अरभत। अरब्ध। रेभे, आरेभे। रब्धासे। रप्सीष्ट। रप्स्यते। भावे कर्म्मणि च—आरभ्यते, आरम्भि। णिचि—रम्भयति-ते। अररम्भत्-त। सनि—आरिप्सते। यङि—रारभ्यते।

शब्दे तु भ्वादि० आत्म० अक० सेट् इदित्। रम्भते। अरम्भिष्ट। कृत्सु—रम्भणीयम्। रम्भणम्। आरम्भः। रम्भो, आरम्भो। रब्धा। रब्ध। रब्धिः। रब्धुम्। रब्धव्यम्। रब्ध्वा। आरभ्य। आरम्भकः। रभमाणः। रभ्यमाणः। रप्स्यमानः।

(४२६) रम् क्रीड़ायां भ्वादि० आत्म० अक० अनिट्।

कर्त्तरि—रमते। रमेत। रमताम्। अरमत। अरंस्त, अरंस्थाः, अरंसि। रेमे। रन्तासे। रंसीष्ट। रंस्यते। भावे—रम्यते। अरामि। णिचि—रमयति। अरीरमत्-त। सनि—रिरंसते। यङि—रंरम्यते।

उप—निवृत्तौ नाशे कर्मत्यागे च । वा पर० उपरमति-ते ।
वि—विश्रामे वा पर० विरमति-ते । उप+आ—निवृत्तौ प्रत्यागतौ च, उपारमते । सुपद्मरमते तु—नित्यं परस्मैपदम्, केवलमुपोपसर्गादकर्म्मकाद्वा परस्मैपदम् ।

कृत्सु—रमणीयम् । रमणम् । ज्वलादि० णः,—रमः, रामः । घञि च रामः । रामकः । रामी । रन्ता । रतः । रातः । रन्तव्यम् । रन्तुम् । क्त्वा-वेट्—रमित्वा, रत्वा । उपरम्य, उपरत्य । रम्यः । रममाणः । रंस्यमानः ।
उप—उपरतः, उपरतिः । वि—विरामः, विरतः, विरतिः । उप+आ—उपारतः ।

## (४२७) रस् शब्दे भ्वादि० पर० अक० सेट् ।

कर्त्तरि—रसति । रसेत् । रसतु । अरसत् । अरासीत्, अरसीत् । ररास, रेसतुः । रसितासि । रस्यात् । रसिष्यति । भावे—रस्यते । अरासि । णिचि—रासयति-ते । अरीरसत्-त ।
कृत्सु—रसनीयम् । रसनम् । रासः । रासकः । रासी । रसिता । रसितः । रस्तिः । रसितव्यम् । रसितुम् । रसित्वा । संरस्य । रास्यम् । रसन् । रसिष्यन् ।

## (४२८) रस आस्वादे अदन्तचुरादि० उभ० सक० सेट् ।

कर्त्तरि—रसयति-ते । रसयेत्-त । रसयतु-ताम् । अरसयत्-त । अररसत्-त । रसयाम्-बभूव-आस चकार-चक्रे । रसयितासि-से । कर्म्मणि—रस्यते । अरसि ।
कृत्सु—रसनीयम् । रसनम् । रसः । रसी । रसकः । रसयिता । रसितः । रसना । रसयितव्यम् । रसयितुम् । रसयित्वा ।

संरस्य। रस्यम्। रसयन्-मानः। रस्यमानः। रसयिष्यन्-ष्यमाणः।

## (४२९) रह त्यागे अदन्तचुरादि० उभ० सक० सेट्।

कर्त्तरि—रहयति-ते। रहयेत्-त। रहयतु-ताम्। अरहयत्-त। अररहत्-त। कर्म्मणि—रह्यते। अरहि।

भ्वादिस्तु त्यागे पर० सक० सेट्।—रहति। अरहीत्। गत्यर्थस्तु इदित्।—रंहति। अरंहीत्।

कृत्सु—रहणीयम्। रहणम्। रहः। रहकः। असि—रहः। रहयिता। रहितः। रहणा। रहयितव्यम्। रहयितुम्। रहयित्वा। विरहय्य, विरह्य। रह्यः। रहयन्-माणः। रह्यमाणः। रहयिष्यन्-ष्यमाणः। कर्म्मणि रहिष्यमाणश्च।

## (४३०) राज् दीप्तौ भ्वादि० उभ० अक० सेट् फणादिः।

कर्त्तरि—राजति-ते। राजेत्-त। राजतु-ताम्। अराजत्-त। अराजीत्, अराजिष्ट। रराज. रेजतुः,-रराजतुः। रेजे, रराजे। राजितासि-से। राज्यात्,राजिषीष्ट। राजिष्यति-ते। भावे—राज्यते। अराजि। णिचि—राजयति-ते। अरराजत्-त। ऋदित्। चङि न ह्रस्वः। सनि—रिराजिषति-ते। यङि—राराज्यते।

निर्-राज्-णिच्—निर्मञ्छनं आरातिः, तस्मिन्नर्थे नीराजयति।

कृत्सु—राजनीयम्। राजनम्। राजः। राजकः। राजी। राजिता। राजितः। राजा। क्विप्—राट्-ड्। राजि-

तव्यम्। राजितुम्। राजित्वा। विराज्य। राज्यम्। राजन्-मानः। राजिष्यन्-ष्यमाणः। नि—निराजना।

## (४३१) राध् सिद्धौ अक० शुभाशुभविषयप्रश्ने, निष्पादने, पाके च सक० दिवा० स्वादिश्च पर० अनिट् फलादिः।

कर्त्तरि—राध्यति, राध्नोति। राध्येत्, राध्नुयात्। राध्यतु, राध्नोतु। अराध्यत्, अराध्नोत्। अरात्सीत्। रराध, रेधतुः, रराधतुः। राद्धा। राध्यात्। रात्स्यति। भावे—राध्यते। अराधि। णिचि—राधयति ते। सनि—आरिरात्सति, रित्सति। यङि—राराध्यते।

आ—सेवने सक० आराध्यति। अप—अपराधे अपराध्यति।

कृत्सु—राधनीयम्। राधनम्। राधकः। राधी। राद्धा। राद्धः। राद्धि। राद्धव्यम्। राद्धुम्। राद्ध्वा। अपराध्य। राध्यम्। राध्यन्। रात्स्यन्। आ—आराधनीयम्। णिच्+युच्—आराधना। अप—अपराधः।

## (४३२) रिच् विरेचने रुधादि० उभ० अक० अनिट्।

कर्त्तरि—रिणक्ति, रिङ्क्तः, रिञ्चन्ति। रिणक्षि, रिङ्क्थः। रिणच्मि, रिञ्च्मः। रिङ्क्ते इत्यादि च। रिञ्च्यात्। रिणक्तु, रिङ्क्ताम्, रिञ्चन्तु। रिङ्ग्धि। रिणचानि। रिङ्क्ताम्। अरिणक्-ग्, अरिङ्क्ताम्, अरिञ्चन्। इरित्—अरिचत्, अरैक्षीत्। अरिक्त। रिरेच। रेक्तासि-से। रिच्यात्। रेक्ष्यति-ते। भावे—रिच्यते। अरेचि। णिचि—रेचयति-ते। अरीरिचत्-त।

वैकल्पिकचुरादिस्तु उभ० पक्षे भ्वादि० सम्पर्के, वियोगार्थे वा

पर० सक० सेट्। रेचयति-ते, रेचति। अरीरिचत्-त। अरेचीत्।

अति—अतिशये (अतिक्रमे) सकर्मकः,—अतिरिणक्ति। वि+अति—व्यतिक्रमे (विपरीतकरणे) व्यतिरिणक्ति।

कृत्सु—रेचनीयम्। रेचनम्। रेकः। रेचकः। रेची। रेक्ता। रिक्तः। रिक्तिः। रेक्तव्यम्। रेक्तुम्। रिक्त्वा। अतिरिच्य। रेक्ष्यम। रिच्यन्। रेच्यन्।

अति—अतिरिच्यमानः। अतिरिक्तः। अतिरेकः। वि+अति—व्यतिरेकः। व्यतिरिक्तः। व्यतिरिच्यमानः।

## (४३३) रु ध्वनौ अदादि० पर० अक० सेट्।

कर्त्तरि—रौति, रवीति; रुवीतः, (मुग्धबोधादिमते) रुवः, रुवन्ति। रौषि-रवीषि, (रुथः) रुवीथः, (रुथ) रुवीथ। रौमि-रवीमि, रुवीवः (रुवः)। रुवीयात् (रुयात्)। रौतु रवीतु, रुवीताम् (रुताम्), रुवन्तु। अरौत्-अरवीत्, अरुवीताम्। (अरुताम्) अरुवन्। अरौः,-अरवीः। अरावीत्-अरौषीत्। रुराव। रुरविथ। रुरुविव। रविता-रोता। रूयात्। रविष्यति-रोष्यति। भावे—रूयते। अरावि। णिचि—रावयति-ते। अरीरवत्-त। सनि—रुरूषति। यङि—रोरूयते।

भ्वादिस्तु वधे गतौ च आत्म० सक० अनिट्।—रवते। अरोष्ट। रुरुविषे।

कृत्सु—रवणीयम्। रवणम्। रवः। आरावः, विरावः, संरावः। रावकः। रावी।,रविता, रोता। रुतः। रुतिः। रवितव्यम्, रोतव्यम्। रवितुम्, रोतुम्। रुत्वा। आरुत्य। रव्यम्।

रोच्यम् । क्विप्—रुत् । रुचन् । रविष्यन्-रोच्यन् । यङः,—
रोरुच्यमाणः ।

## (४३४) रुच् प्रीतौ प्रकाशे च भ्वादि० आत्म० अक० सेट् ।

कर्त्तरि—रोचते । रोचेत । रोचताम् । अरोचत । लुङि उभ०—
अरुचत, अरोचिष्ट । रुरुचे । रोचितासे । रोचिष्यते ।
भावे—रुच्यते । अरोचि । णिचि—रोचयति-ते । अरूरुचत्-
त । सनि—रुरुचिषते, रुरोचिषते । यङि ( पौनःपुन्ये )
रोरुच्यते । अस्य भृशार्थे यङ् नास्ति ।

कृत्सु—रोचनीयम् । रोचनम् । रोचः । रोचकः । रोची ।
रोचिता । रुचितः । भावादिकर्मणोस्तु—रुचितम्
रोचितम् । रुक्तः । रोचितव्यम् । रोचितुम् । रोचित्वा,
रुचित्वा । संरुच्य । रोच्यम् । रोचमानः । रोचिष्यमाणः ।

## (४३५) रुज् भङ्गे सक० रोगे च अक० तुदादि० पर० अनिट् ।

कर्त्तरि—रुजति । रुजेत् । रुजताम् । अरुजत् । अरौक्षीत् ।
रुरोज । रुरोजिथ । रुरुजिव । रोक्ता । रोक्ष्यति ।
भावे—रुज्यते । अरोजि । णिचि—रोजयति-ते ।
अरूरुजत्-त ।

चुरादिस्तु हिंसायाम् उभ० सक० सेट् । रोजयति-ते । अरू-
रुजत्-त ।

कृत्सु—रोजनीयम् । रोजनम् । रोगः । घिणुन्—रोगी ।
रोक्ता । रुग्णः । क्तिन् नास्ति, अ—रुजा । रोक्तव्यम् ।
रोक्तुम् । रुक्त्वा । संरुज्य । रोग्यम् । रुजन् । रोक्ष्यन् ।

## (४३६) रुद् रोदने अदादि॰ पर॰ अक॰ सेट्।

कर्त्तरि—रोदिति, रुदितः, रुदन्ति। रोदिषि, रुदिथः, रुदिथ। रोदिमि, रुदिवः, रुदिमः। रुद्यात्। रोदितु, रुदिताम्, रुदन्तु। रुदिहि। रोदानि। अरुदिताम्, अरुदन्। अरोदीः, अरोदः। अरुदत्-अरोदीत्। अरोदीः-अरुदः। रुरोद। रुरोदिथ। रुरुदिव। रोदिता। रुद्यात्। रोदिष्यति। भावे—रुद्यते। अरोदि। णिचि—रोदयति-ते। अरूरुदत्-त। सनि—रुरुदिषति। यङि—रोरुद्यते।

कृत्सु—रोदनीयम्। रोदनम्। रोदः। रोदकः। रोदी। रोदिता। रुदितः। रुत्तिः। रोदितव्यम्। रोदितुम्। रुदित्वा। विरुद्य। रोद्यम्। रुदन्। रोदिष्यन्। सनः,—रुरुदिषा। रुरुदिषन्। यङः,—रोरुद्यमानः।

## (४३७) रुध् आवरणे रुधा॰उभ॰ द्विक॰ अनिट्।

कर्त्तरि—रुणद्धि, रुन्धः, रुन्धन्ति। रुणत्सि, रुन्ध, रुन्ध। रुणध्मि। रुन्धे। रुन्धे। रुन्ध्यात्, रुन्धीत। रुणद्धु, रुन्धाम्, रुन्धन्तु। रुन्धि। रुन्धाम्। अरुणत्-द्, अरुन्धाम्, अरुन्धन्। अरुणत्, अरुणः। अरुन्ध। अरुधत्, अरौत्सीत्, अरुद्ध। रुरोध। रुरोधिथ। रुरुधिव। रुरुधे। रोद्धासि-से। रुध्यात्। रुत्सीष्ट। रोत्स्यति-ते। कर्म्मणि—रुध्यते, अरोधि। णिचि—रोधयति-ते। अरूरुधत्-त। सनि—रुरुत्सति-ते। यङि—रोरुध्यते।

दिवादिस्तु कामे आत्म॰ सक॰ अनिट्। प्रायेणानुपूर्व्वः।—अनुरुध्यते। अन्वरुद्ध।

नि—निरोधे सक॰ प्रलये अक॰ निरुणद्धि। प्रति—प्रतिरोधे,

प्रतिरुणद्धि। उप—उपरोधे, उपरुणद्धि। अनु—अनुरोधे, अनुरुणद्धि। वि—विरोधे, विरुणद्धि।

कृत्सु—रोधनीयम्। रोधनम्। रोधः। रोधकः। रोधी। रोद्धा। रुद्धः। रुद्धिः। रोद्धव्यम। रोद्धुम। रुद्ध्वा। संरुध्य। रोध्यम। रुन्धन्। रुन्धानः। रुध्यमानः। रोत्स्यन्-त्स्यमानः।

प्रति—प्रतिरुद्धः। प्रतिरोधः। उप—उपरुद्धः। उपरोधः। अनु—अनुरुद्धः। अनुरोधः। वि—विरुद्धः। विरोधः। अव—अवरुद्धः। अवरोधः।

## (४३८) रुह् उद्भवे अक० रोहणे सक० भ्वादि० पर० अनिट्।

कर्त्तरि—रोहति। रोहेत्। रोहतु। अरोहत्। अरुक्षत्। रुरोह। रुरोहिथ। रुरोहिव। रोढ़ा। रुह्यात्। रोक्ष्यति। कर्म्मणि—रुह्यते। अरोहि। णिचि—रोपयति-ते, रोहयति-ते। अरूरुपत्-त, अरूरुहत्-त। सनि—रुरुक्षति। यङि—रोरुह्यते।

आ—आरोहे। आरोहति। अव—अवरोहे (ऊर्द्ध्वस्थानादधोगमने) अवरोहति। वि—उन्मूलीभवने विरोहति (उच्छिद्यते)।

कृत्सु—रोहणीयम्। रोहणम्। रोहः। रोही। रोढ़ा। रूढ़ः। रूढ़िः। रोढ़व्यम्। रोढ़ुम्। रूढ्वा। आरुह्य। रोह्यम्। रोहन्। रुह्यमाणः। रोक्ष्यन्-माणः। ज्वलादि०—रोहः, रुहः। आ—आरोहः। अव—अवरोहः।

## (४३९) रूप रूपक्रियायां विचारणे च अदन्त-चुरादि० उभ० सक० सेट्।

कर्त्तरि—रूपयति-ते। रूपयाञ्चकार चक्रे। अरुरूपत्-त।

रूपयिष्यति-ते। कर्म्मणि—रूप्यते। सनि—रुरूपयिषति। नि—( प्रमाणोपन्यासेन स्वरूपादिकथने )—निरूपयति। अनु—अनुकरणे, अनुरूपयति-ते।

विकल्पचुरादिवत् पक्षे रूपति इत्याद्यपि भवति। अयं विमोहनेऽर्थे कृत्स्नापधोऽपि दिवादिः।—रुप्यति। रुरोप। रुरोपिथ, रुरुपथुः। अरोपीत्, अरुपत।

कृत्सु—रूपयितुम्। रूपयित्वा। भ्वादिपक्षे—रूपित्वा। निरूप्य।

## (४४०) लक्ष् दर्शने अङ्कने च चुरादि० उभ० सक० आलोचने आत्म० सेट्।

कर्त्तरि—लक्षयति-ते। अललक्षत्-त। लक्षयाञ्चकार-चक्रे। लक्षयितासि। लक्षयिष्यति-ते। कर्म्मणि—लक्ष्यते। अलक्षि। सनि—लिलक्षयिषति।

कृत्सु—लक्षणीयम्। लक्षणम्। विलक्षणम्। लक्षः। लक्षकः। लक्षी। लक्षयिता। लक्षितः। लक्षणा। लक्षयितव्यम्। लक्षयितुम्। लक्षयित्वा। संलक्ष्य। लक्ष्यम्। लक्ष्मीः। लक्षयन्-माणः। लक्ष्यमाणः। लक्षयिष्यन्-ष्यमाणः। कर्म्मणि—लक्षिष्यमाणश्च।

उप—उपलक्षणे ( स्वस्य स्वान्यस्य च लक्षणया बोधने ) उपलक्षयति। वि—विलक्षणे ( विशेषधर्मेण ज्ञापने ) विलक्षयति।

## (४४१) लघि अभोजने अक० अतिक्रमे गतौ च सक० भ्वादि० आत्म० सेट्।

कर्त्तरि—लङ्घते। अलङ्घिष्ट। ललङ्घे। कर्म्मणि भावे च—

लङ्घते। अलङ्घि। णिचि—लङ्घयति-ते। अललङ्घत्-त।
शोषणे पर०।—लङ्घति। अलङ्घीत्।
प्रकाशे चुरादि० उभ० सक० सेट् इदित्।—लङ्घयति-ते।
अललङ्घत्-त। आस्वादने अनिदित्।—लाघयति ते।
अलीलघत्-त।

कृत्सु—लङ्घनीयम्। लङ्घनम्। लङ्घः। लङ्घकः। लङ्घी।
लङ्घिता। लङ्घितः। लङ्घा। लङ्घितव्यम्। लङ्घितुम्।
लङ्घित्वा। विलङ्घ्य। लङ्घ्यम्। लङ्घमानः। लङ्घ्यमानः।
लङ्घिष्यन्-ष्यमाणः।

## (४४२) लप् भाषणे भ्वादि० पर० द्विक० सेट्।

कर्त्तरि—लपति। आलपति। अलापीत्, अलपीत्। ललाप,
लेपतुः। कर्म्मणि—लप्यते। अलापि। णिचि—लापयति ते,
अलीलपत्-त। सनि—लिलपिषति। यङि—लालप्यते।
वि—विलापे (परिदेवने) विलपति। प्र—प्रलापे (अनर्थक
वाक्यप्रयोगे) प्रलपति। सम्—संलापे (मिथोभाषणे)
संलपति। अनु—(मुहुर्भाषणे) अनुलपति। अप
—अपलापे (अन्यथास्थितस्य वस्तुनोऽन्यथात्वप्रतिपादने)
अपलपति।

कृत्सु—लपनीयम्। लपनम्। लापः। लापकः। लापी।
लपिता। लपितः। लप्तिः। लपितव्यम्। लपितुम्।
लपित्वा। विलप्य। लाप्यम्। लपन्। लप्यमानः। लपि-
ष्यन्-ष्यमाणः।
वि—विलापः। विलपितम्। वि+प्र—विप्रलापः (विरोधोक्तिः)।
प्र—प्रलापः। प्रलपितम्। सं—संलापः। अनु—अनुलापः।
अप—अपलापः।

## (४४३) लबि आलम्बने सक० भ्रंशने शब्दे च अक० भ्वादि० आत्म० सेट्।

कर्त्तरि—लम्बते। अलम्बिष्ट। ललम्बे। लम्बिता। कर्म्मणि—लम्ब्यते। अलम्बि। णिचि—लम्बयति-ते। अललम्बत्-त। सनि—लिलम्बिषते।

अव—अधोगमने अक० अवलम्बने (आश्रयकरणे) च सक० अव—अवलम्बते। वि—विलम्बकरणे, विलम्बते। आ—आलम्बने, आलम्बते।

कृत्सु—लम्बनीयम्। लम्बनम्। लम्बः। लम्बकः। लम्बी। लम्बिता। लम्बितः। लम्बा। लम्बितव्यम्। लम्बितुम्। लम्बित्वा। अवलम्ब्य। अवलम्बः। अवलम्बनम्। विलम्बः। आलम्बनम्। विलम्बितम्।

## (४४४) लभ् प्राप्तौ भ्वादि० आत्म० सक० अनिट्।

कर्त्तरि—लभते। लभेत। लभताम्। अलभत। अलब्ध, अलब्धाः, अलप्सि। लेभे। लेभिरे। लेभिषे। लेभे। लब्धा। लब्धासे। लप्स्यते। लप्सीष्ट। कर्म्मणि—लभ्यते। अलाभि, अलम्भि। प्रालम्भि। णिचि—लम्भयति-ते, अललम्भत्-त। सनि—लिप्सते। यङि—लालभ्यते।

आ—आलम्भने (स्पर्शने घातने च) आलभते। वि+प्र—विप्रलम्भे (विसंवादे) विप्रलभते। उप+आ—उपालम्भे (निन्दापूर्वकदुष्टोक्तौ)—उपालभते।

कृत्सु—लभनीयम्। लभनम्। लाभः। आलम्भः। आलम्भरः। विप्रलम्भः। विप्रलब्धः। उपालम्भः। उपालब्धः। लाभी। लब्धा। लब्धम्। लब्धव्यम्। लब्धः। क्रिम—लब्धिमः। लब्धुम्। आलभ्य। लभ्यम्। आलभ्यः। दुर्लभः। सुलभः।

लभमानः। लभ्यमानः, लप्स्यमानः। षित्—लभा। सन्—लिप्सा, लिप्सुः।

## (४४५) लष् इच्छायां वा दिवादि० पक्षे भ्वादि० उभ० सक० सेट्।

कर्त्तरि—लष्यति-ते, लषति-ते। अलाषीत्, अलषीत्। अलषिष्ट। ललाष, लेषतुः। लेषे। लषिष्यति-ते। कर्म्मणि—लष्यते। अलाषि। णिचि—लाषयति-ते। अलीलषत्-त। सनि—लिलषिषति-ते। यङि—लालष्यते।

अभि—अभिलाषे, अभिलष्यति-ते। अभिलषति-ते।

कृत्सु—लषणीयम्। लषणम्। लाषः। लाषकः। लाषी। उक—लाषुकः। लषिता। लषितः। लष्टिः। लषितव्यम्। लषितुम्। लषित्वा। अभिलष्य। लाष्यम्। लष्यन्-लषन्। लष्यमाणः-लषमाणः। कर्म्मणि—लष्यमाणः। लषिष्यन्-ष्यमाणः।

## (४४६) लस् सम्बन्धे श्लेषे क्रीड़ायां दीप्तौ च भ्वादि० पर० अक० सेट्।

कर्त्तरि—लसति। अलासीत्,अलसीत्। ललास,लेसतुः। भावे—लस्यते। अलासि। णिचि—लासयति-ते। अलीलसत्-त।

वि—विलासे विलसति। उद्—उल्लासे (हर्षकरणे) उल्लसति। सुपद्ममते सार्वधातुके दिवादिगणीयवत्।—लस्यति, लस्यतु इत्यादि। मुग्धबोधादिमते शिल्पयोगेऽर्थे चुरादिरप्यस्ति।—लासयति कुशलो नृत्ये, शिल्पं युनक्तीत्यर्थः।

कृत्सु—लसनीयम्। लसनम्। लासः। लासी। लसिता। लसितः। लसितव्यम्। लस्तिः। लसितुम्। लसित्वा। विलस्य। लास्यम्। लसन्। लसिष्यन्। विलासः। उल्लासः।

## (४४७) लस्ज् व्रीड़ायाम् भ्वादि० आत्म० अक० सेट्।

कर्त्तरि—लज्जते। अलज्जिष्ट। ललज्जे। लज्जिता। भावे—लज्जाते। अलज्जि। णिचि—लज्जयति-ते। अललज्जत्-त। सनि—लिलज्जिषते।

कृत्सु—लज्जनीयम। लज्जनम्। लज्जिता। इदित्, निष्ठायामनिट्। ओदित निष्ठा-तस्य नः,—लग्नः। लज्जा। लज्जितव्यम्। लज्जमानः। लज्जिष्यमाणः।

## (४४८) लिख् लेखने तुदा० पर० सक० सेट्।

कर्त्तरि—लिखति। लिखेत्। लिखतु। अलिखत्। अलेखीत्। लिलेख। लिख्यात्। लेखिष्यात। अलेखिष्यत्। कर्म्मणि—लिख्यते। अलेखि। णिचि—लेखयति-ते। अलीलिखत्-त। सनि—लिलेखिषति-लिलिखिषति। यङि—लेलिख्यते।

उद्—उल्लेखे (उच्चारणे) विदारणे च।—उल्लिखति। भ्वादिस्तु गतौ पर० सक० सेट् इदित्।—लिङ्खति। अलिङ्खीत्।

कृत्सु—लेखनीयम्। लेखनम्। लेखः। लेखी। लेखिता। लिखितः। लेखितव्यम्। लिखित्वा, लेखित्वा। विलिख्य। लेख्यम्। लिखन्। लिखमानः। लेखिष्यन्-ष्यमाणः। कुटादिरप्ययं, तेन लिखनमिति सिद्धम्।

## (४४९) लिप् लेपने तुदा० उभ० सक० अनिट् मुचादिः।

कर्त्तरि—लिम्पति-ते। अलिम्पत्-त। अलिपत्, अलिपत, अलिप्त। लिलेप, लिलिपे। लिप्यात्। लेप्तासि-से।

कर्म्मणि—लिप्यते । अलेपि । णिचि—लेपयति-ते । अलीलिपत्-त ।

अव—गर्वे अक० अवलिम्पति । अनु—चन्दनादिमर्द्दने, अनुलिम्पति ।

कृत्—लेपनीयम् । लेपनम् । लेपः । लेपकः । लेपी । लेप्ता । लिप्तः । लिप्तिः । लेप्तव्यम् । लिप्त्वा । संलिप्य । लेप्यम् । लिम्पन् । लिम्पमानः । लिप्यमानः । लेप्स्यन् । लेप्स्यमानः ।

अव—अवलिप्तः । अवलेपः ( गर्वः ) । अनु—अनुलिप्तः । अनुलेपनम् ।

## (४५०) लिह् आस्वादे अदा० उभ० सक० अनिट् ।

कर्त्तरि—लेढ़ि, लीढ़ः, लिहन्ति । लेक्षि, लीढ़ः, लीढ़ । लेह्मि । लीढ़े । लिह्यात्, लिहीत । लेढु-लीढ़ाम्, लिहन्तु-लिहताम् । लीढ़ि-लिक्ष्व । लेहानि-लेहै । अलेट्-ड्, अलीढ़ाम् अलिहन्, अलीढ़ । अलिक्षत्-त । लिलेह, लिलिहे । लेढ़ासि-से । लिह्यात्, लिक्षीष्ट । लेक्ष्यति । कर्म्मणि—लिह्यते । अलेहि । णिचि—लेहयति-ते । अलीलिहत्-त । सनि—लिलिक्षति-ते । यङि—लेलिह्यते ।

कृत्—लेहनीयम् । लेहनम् । लेहः । लेहकः । लेही । लेढ़ा । लीढ़ः । लेढ़व्यम् । लीढ़िः । लेढ़ुम् । लीढ़्वा । संलिह्य । लेह्यम् । लिहन् । लिहानः । लिह्यमानः । लेक्ष्यन्-क्ष्यमाणः ।

## (४५१) ली श्लेषे दिवादि० आत्म० अक० अनिट् ।

कर्त्तरि—लीयते । लीयेत । लीयताम् । अलीयत । अलेष्ट; अलास्त । लिल्ये । लेतासे, लातासे । लेषीष्ट, लासीष्ट । लेष्यति, लास्यति । भावे—लीयते । अलायि । णिचि—

विलीनयति-ते, विलापयति-ते। सुपद्मसते विलालयति-ते घृतम्। अन्यत्र विलाययतीत्येव।

क्र्यादिस्तु स्वादि० पर० अक० अनिट्। लिनाति। अलैषीत्। द्रावणे वा चुरा० उभ० सक० सेट्, पक्षे भ्वादि० पर० अनिट्। लीनयति-ते। लापयति-ते, लाययति-ते, घृतम्। लयति। अलीलनत्-त। अलील(प)यत्-त। अलैषीत्, अलासीत्। प्रलम्भने अभिभवे पूजायाञ्च सक० आत्म०। तत्र निःयमात्वे पुक्, बालमुल्लापयते, वञ्चयतीत्यर्थः। श्येनो वर्त्तिकामुल्लापयते, अभिभवतीत्यर्थः। जटाभिर्लापयते, पूजामधिगच्छतीत्यर्थः।

कृत्सु—लयनीयम्, लानीयम्। लयनम्, लानम्। लायः। लयः। लेता, लाता। ओदित् निष्ठा-तस्य नः- -लीनः। लेतव्यम्, लातव्यम्। लीतिः। लातुम्, लेतुम्। लीत्वा। संलीय, संलाय। लेयम्। लीयमानः। लेष्यमाणः, लास्यमानः।

## (४५२) लुठ् लोठ तुदा० पर० अक० सेट् कुटादिः।

कर्त्तरि—लुठति। अलुठीत्। लुलोठ। लुलुठिथ। लुठिता। लुठिष्यति। भावे—लुठ्यते। अलोठि। णिचि—लोठयति-ते। अलूलुठत्-त, अलुलोठत्-त।

भ्वादिस्तु उपघाते पर० सक० सेट्। लोठति। अलोठीत्। प्रतिघाते आत्म० लुङि उभ० सक० सेट्। लोठते। अलुठत्, अलोठिष्ट। ऋदित् चङि न ह्रस्वः। चुरादिस्तु चौर्य्ये उभ० सक० सेट्। लोठयति-ते। अलूलुठत्-त।

कृत्सु—लुठनीयम्। लुठनम्। लोठः। लोठकः। लोठी। लुठिता। लुठितः। लुठितव्यम्। लुठिः। लुठितुम्। लुठित्वा। संलुठ्य। लोठ्यम्। लुठन्। लुठिष्यन्।

## (४५३) लुण्ठ् लुण्ठने भ्वादि पर० सक० सेट्।

कर्त्तरि—लुण्ठति। अलुण्ठीत्। लुलुण्ठ। लुण्ठिता। कर्म्मणि—लुण्ठ्यते। णिचि—लुण्ठयति-ते। अलुलुण्ठत्-त।

कृत्सु—लुण्ठनम्। लुण्ठितः। लुण्ठितुम्। लुण्ठनीयम्।

## (४५४) लुप् छेदने विनाशने च तुदादि० उभ० सक० अनिट् मुचादिः।

कर्त्तरि—लुम्पति-ते, लुम्पेत्-त। ऋदित् चङि वा ह्रस्वः—अलुपत्, अलुप्त। लुलोप, लुलोपिथ। लुलुपिव। लुलुपे। लोप्तासि से। लुप्यात्, लुप्सीष्ट। लोप्स्यति-ते। कर्म्मणि—लुप्यते। अलोपि। णिचि—लोपयति-ते। अलूलुपत्-त, अलुलोपत्-त।

कृत्सु—लोपनीयम्। लोपनम्। लोपः। लोपकः। लोपी। लोप्ता। लुप्तः। लोप्तव्यम्। लुप्तः। ष्ट्रन्—लोप्त्रम्। लुप्त्वा। संलुप्य। लोप्यम्। लुम्पन्। लुम्पमानः। लुप्यमानः। लोप्स्यन्-प्स्यमानः।

## (४५५) लुप् प्राप्तौ सक० अदर्शने नाशे आकुलीभावे च अक० दिवादि० पर० सेट्।

कर्त्तरि—लुप्यति। अलुपत्। अलोपीत्। नित्यमङित्येके। लुलोप। लोपिता। भावे—लुप्यते। अलोपि। णिचि—तौदादिकवत्।

कृत्सु—लोपिता। लोपितव्यम्। लोपितुम्। लोपित्वा, लुप्त्वा। लुप्यन्। लोपिष्यन् इति भेदः। अन्यत् तौदादिक-लुप्वत्। क्विप्—लुप्।

(४५६) लुभ् सातिशयेच्छायां दिवादि० पर० सक० सेट्।

कर्त्तरि—लुभ्यति। लुभ्येत्। इरित्—अलुभत्। वोपदेवमते अलोभीदित्यपि। लुलोभ। लोभिता। लोब्धा।

तुदादिस्तु विमोहने पर० अक० सेट्। लुभति। अलोभीत्।

कृत्सु—लोभनीयम्। लोभनम्। लोभः। लोभी। लोभिता, लोब्धा। लुब्धः। लोभितव्यम्, लोब्धव्यम्। लुब्धः। लोभितुम्, लोब्धुम्। लुभित्वा, लुब्ध्वा। लोभ्यम्। लुभ्यन्। लुभ्यमानः।

(४५७) लू छेदने क्र्यादि० उभ० सक० सेट् प्वादिः।

कर्त्तरि—लुनाति, लुनीतः, लुनन्ति। लुनीते। लुनीयात्, लुनीत। लुनातु, लुनीताम्, लुनन्तु। लुनीहि। लुनीताम्। अलुनात्। अलुनीत। अलावीत्, अलविष्ट। लुलाव, लुलुवतुः। लुलुवे। लविता। लूयात्, लविषीष्ट। लविष्यति-ते। कर्म्मणि—लूयते। अलावि। णिचि—लावयति-ते। अलीलवत्-त। सनि—लुलूषति-ते। यङि—लोलूयते।

कृत्सु—लवनीयम्। लवनम्। रसे—लवणम्। लवः। लावः। लावकः। लावी। लविता। लूनः। लूनिः। लवितव्यम्। लवितुम्। लवित्वा। संलूय। लव्यम्। लाव्यम्। लुनन्, लुनानः। लूयमानः। लविष्यन्-ष्यमाणः।

(४५८) लोकृ दर्शने भ्वादि० आत्म० सक० सेट्।

कर्त्तरि—लोकते। अलोकिष्ट। लुलोके। लोकिता। कर्म्मणि—लोक्यते। अलोकि। णिचि—लोकयति-ते। ऋदित् चङि न ह्रस्वः। अलुलोकत्-त। सनि—लुलोकिषते। यङि—लोलोक्यते।

वि—विलोकते। अव—अवलोकते।

कृत्सु—लोकनीयम् । लोकनम् । लोकः । लोककः । लोकौ । लोकिता । लोकितः । लोका । लोकितव्यम् । लोकितुम् । लोकित्वा । संलोक्य । लोक्यम् । लोकमानः । लोक्यमानः । लोकिष्यन्-ष्यमाणः । अवलोकनम् । विलोकनम् ।

## (४५९) लोक् दीप्तौ चुरादि० उभ० सक० सेट् ।

कर्त्तरि—लोकयति-ते । अलुलुकत्-त । लोकयतासि-से । कर्म्मणि—लोक्यते । अलोकि ।

कृत्सु—लोकयिता । लोकयितव्यम् । लोकयित्वा । लोकयन्-मानः । लोकयिष्यन्-ष्यमाणः इति भेदः । अन्यत् भ्वादिगणीय-लोक्वत् ।

## (४६०) लोच् दर्शने आलोचने च भ्वादि० आत्म० सक० सेट् ।

कर्त्तरि—लोचते । सर्व्वं भ्वादिगणीय-लोक्वत्, ककारस्थाने चकारमात्रभेदः ।

## (४६१) लोच् दीप्तौ चुरादि० उभ० अक० सेट् ।

कर्त्तरि—लोचयति-ते । सर्व्वं चुरादिगणीयलोकवत्, ककारस्थाने चकारमात्रभेदः ।

## (४६२) वच् व्यक्तायां वाचि अदादि० पर० द्विक० आर्द्धधातुके ब्रुवादेशस्तु उभयपदी अनिट् ।

कर्त्तरि—वक्ति, वक्तः । अन्तिप्रयोगो नास्ति । वक्षि, वक्थः, वक्थ । वच्मि, वच्वः, वच्मः । वच्यात् । वक्तु, वक्ताम् । अवक्-ग् । अवोचत् । ब्रुवादेशस्य अवोचत्-त । उवाच, ऊचतुः, ऊचुः । उवचिथ-उवक्थ । ऊचिव । ऊचे । वक्तासि-से । उच्यात्, वक्षीष्ट । वक्ष्यति-ते । कर्म्मणि—

उच्यते। अवाचि। णिचि—वाचयति-ते। अवीवचत्-त। सनि—विवक्षति-ते। यङि—वावच्यते।

निर्—निरुक्तौ निर्वक्ति। अनु—अनुवादे अनुवक्ति। प्रति—प्रतिवाक्ये प्रतिवक्ति।

कृत्सु—वचनीयम्। वचनम्। वाकः। वाचकः। असि—वचः। वाची। वक्ता। उक्तः। उक्तिः। वक्तुम्। वक्तव्यम्। उक्त्वा। निरुच्य। वाच्यम्, पदसमुदाये वाक्यम्। वचन्। उच्यमानः। वक्ष्यन्। निरुक्तिः। वक्ष्यमाणः। क्विप्(क्विप्)—वाक्। सनः,—विवक्षा। विवक्षुः। विवक्षन्। विवक्षितः।

निर्—निर्व्वचनम्। अनु—अनूक्तः। अनुवाकः। कान—अनूचानः। प्रति—प्रत्युक्तः। प्रत्युक्तिः। प्रतिवाक्यम्।

## (४६३) वच् सन्देशे चुरादि० उभ० सक० कथने द्विक० सेट्।

कर्त्तरि—वाचयति-ते। अवीवचत्-त। कर्म्मणि—वाच्यते। अवाचि। अवाचयिषाताम्. अवाचिषाताम्।

कृत्सु—वाचनीयम्। वाचनम्। वाचकः। वाची। वाचयिता। वाचितः। वाचना। वाचयितुम्। वाचयितव्यः। वाचयित्वा। प्रवाच्य। वाचयन्-मानः। वाच्यमानः। वाचयिष्यन्-ष्यमाणः। कर्म्मणि वाचिष्यमाणश्च।

## (४६४) वद् वाचि भ्वादि० पर०, भासने उपसान्त्वने च आत्म० द्विक० सेट् यजादिः।

कर्त्तरि—वदति, वदतः, वदन्ति। वदसि। वदेत्। वदेः। वदेयम्। वदतु। वद। अवदत्। अवदः। अवदम्। अवादीत्,

अवादिष्टाम्, अवादिषुः। उवाद, ऊदतुः। वदिता। उद्यात्। वदिष्यति। अवदिष्यत्। तङि—वदते इत्यादि। कर्म्मणि—उद्यते। अवादि। णिचि—वादयति-ते। अवीवदत्-त। सनि—विवदिषति। यङि—वावद्यते।

भासने—शास्त्रे वदते, भासमानो वदतीत्यर्थः। उपसान्त्वने—भृत्यान् उपवदते, सान्त्वयतीत्यर्थः। ज्ञानयत्नादावात्मनेपदीत्यन्ये। ज्ञानार्थे—ज्ञाने शास्त्रे वदते, वदितुं जानातीत्यर्थः। यत्ने—क्षेत्रे वदते, तद्विषयकमुत्साहमाविष्करोतीत्यर्थः। विमतौ—क्षेत्रे विवदन्ते, सम्भूय विचित्रं भाषन्ते इत्यर्थः। उपच्छन्दने—उपवदते, रहसि उपच्छन्दयतीत्यर्थः। मनुष्यविषयकसमुच्चारणे—सम्प्रवदन्ते राजानः। अमनुष्यविषये—सम्प्रवदन्ति कुक्कुटाः। उपसर्गसंज्ञकादनोरकर्म्मकात्—अनुवदते कठः कालापकस्य—अधीयानः कालापकः यथा पठति, तथा कठः इत्यर्थः। विप्रलापार्थे—विप्रवदन्ते(न्ति) वैद्याः, रोगस्य निदाननिर्णये युगपद् विरुद्धं भाषन्ते इत्यर्थः। अनादरे—धनकामो न्यायमपवदते, नाद्रियते इत्यर्थः।

वाक्ये सन्देशे च उभ० सक० सेट्। वदति-ते। अवादीत्, अवदिष्ट। चुर दिस्तु वादि सन्देशे च सक० उभ० सेट्। —वादयति-ते। अवीवदत्-त। अभि—प्रणामे, अभिवादयते, प्रणमतीत्यर्थः।

कृत्सु—वदनीयम्। वदनम्। वादः। प्रियंवदः, वशंवदः, ब्रह्मोद्यम्? कद्वदः। वादकः, वादी। वदिता। उदितः। उक्तिः। वदितुम्। वदितव्यम्। उदित्वा। अनूद्य। वाद्यम्। अवद्यम्। वदन्। उद्यमानः। वदिष्यन्-ष्यमाणः। यङः+ऊक—वावदूकः। णिचः+इत्र—वादित्रम्।

(४६५) वन्च् वञ्चने भ्वादि० पर० पक्षे चुरादि० आत्म० सक० सेट्।

कर्त्तरि—वञ्चति, वञ्चयते। अवञ्चीत्, अववञ्चत। वञ्चयामास। वञ्चयिष्यते। कर्म्मणि—वञ्च्यते। अवञ्चि।

कृत्सु—वञ्चनीयम्। वञ्चनम्। वञ्चकः। प्रवञ्चकः। वञ्ची। वञ्चिता, वञ्चयिता। वञ्चितः। वञ्चना। वञ्चितुम्, वञ्चयितुम। वञ्चयितव्यम्। वञ्चयित्वा। प्रवञ्च्य। वञ्च्यम्। वञ्चयमानः। वञ्च्यमानः। वञ्चयिष्यमाणः। कर्म्मणि—वञ्चिष्यमाणश्च।

(४६६) वन्द् (वदि) नमने स्तवने च भ्वादि० आत्म० सक० सेट् इदित्।

कर्त्तरि—वन्दते। वन्देत। वन्दताम्। अवन्दत। अवन्दिष्ट। ववन्दे। वन्दिषीष्ट। कर्म्मणि—वन्द्यते। अवन्दि। णिचि वन्दयति-ते। अववन्दत्-त।

कृत्सु—वन्दनीयम्। वन्दनम्। वन्दकः। वन्दः। वन्दी। वन्दिता। वन्दितः। क्तिन् नास्ति। युच्—वन्दना। वन्दितुम्। वन्दितव्यम्। वन्दित्वा। अभिवन्द्य। वन्द्यम्। वन्दमानः। वन्दिष्यमाणः। षाक—वन्दारु।

(४६७) वप् मुण्डने तन्तुबीजयोः सन्ताने च भ्वादि० उभ० सक० अनिट् यजादिः।

कर्त्तरि—वपति-ते। वपेत्-त। वपतु-ताम्। अवपत्-त। अवाप्सीत्, अवप्त। उवाप, ऊपतुः। उवपिथ, उवप्थ। ऊपिव। ऊपे। वप्तासि-से। उप्यात्, वप्सीष्ट। वप्स्यति-ते। कर्म्मणि—उप्यते। अवापि। णिचि—वापयति-ते। अवीवपत् त।

निर्—दाने निर्वपति । प्र+णि—प्रणिवपति ।

कृत्सु—वपनीयम् । वपनम् । वापः । वापकः । वापी । उप्ता । उप्तः । उप्तिः । वप्तुम् । वप्तव्यम् । उप्त्वा । निरुप्य । ड्वित्+क्त्रिम—उप्त्रिमः । वपन्-मानः । उप्यमानः । वप्स्यन्, वप्स्यमानः । नि—निवापः ।

## (४६८) वम् उद्गिरणे भ्वादि० पर० सक० सेट् ज्वलादिः ।

कर्त्तरि—वमति । वमेत् । वमतु । अवमत् । अवमीत् । ववाम, वेमतुः,-ववमतुः । ववमिथ । वेमथुः-ववमथुः वमिता । वम्यात् । वमिष्यति । अवमिष्यत् । कर्मणि—वम्यते । अवामि । णिचि—वमयति-ते । अवीवमत्-त । सनि—विवमिषति । यङि—वंवम्यते ।

कृत्सु—वमनीयम् । वमनम् । वामः । वामकः । वामी । वमिता । वान्तः । वान्तिः । वमितव्यम् । वमितुम् । वमित्वा-वान्त्वा । प्रभिवम्य । वम्यम् । वमन्-वममानः । वम्यमानः । वमिष्यन्-ष्यमाणः । सनः—विवमिषा । ट्वित्+अथु—वमथुः । ज्वला० वमः, वामः ।

## (४६९) वर्ण स्तुतौ, विस्तारे, शुक्लतादिकरणे, उद्योगे, दीपने च अदन्तचुरादि० उभ० सक० सेट् ।

कर्त्तरि—वर्णयति-ते । वर्णयेत्-त । वर्णयतु-ताम् । अवर्णयत्-त । अववर्णत्-त । वर्णयिता । वर्णयिष्यति-ते । अवर्णयिष्यत्-त । कर्मणि—वर्ण्यते । अवर्णि । अवर्णिषाताम्, अवर्णयिषाताम् ।

कृत्सु—वर्णनीयम् । वर्णनम् । वर्णः । वर्णकः । वर्णी । वर्णयिता । वर्णितः । वर्णना । वर्णयितुम् । वर्णयितव्यम् ।

वर्णयित्वा। संवर्ण्य। वर्णम्। वर्णयन्-मानः। वर्ण्यमानः। वर्णयिष्यन्-ष्यमाणः।

## (४७०) वर्द्ध पूरणे,छेदने च चुरा० उभ० सक० सेट्।

कर्त्तरि—वर्द्धयति-ते। अववर्द्धत-त। कर्म्मणि—वर्द्ध्यते। अवर्द्धि।
कृत्सु—वर्द्धनीयम्। वर्द्धनम्। वर्द्धः। वर्द्धकः। वर्द्धी। वर्द्धयिता।
वर्द्धितः। वर्द्धना। वर्द्धयितुम्। वर्द्धयितव्यम्। वर्द्धयित्वा।
प्रवर्द्ध्य। वर्द्ध्यम्। वर्द्धयन्-मानः। वर्द्ध्यमानः। वर्द्धयिष्यन्-ष्यमाणः। कर्म्मणि—वर्द्धिष्यमाणश्च। अयं परस्मैपदीत्यन्ये।
मुग्धबोधसम्मतोऽयं “वर्द्धक् पूर्त्तिच्छिदोः” इति कविकल्पद्रुमः।

## (४७१) वर्ष् स्नेहने भ्वादि० आत्म० सक० सेट्।

कर्त्तरि—वर्षते। वर्षेत। वर्षताम्। अवर्षत। ववर्षे। पाणिनि-सम्मतोऽयम्। “वृषु सेचने” इति कालापादयः।

## (४७२) वश् इच्छायाम् अदा० पर० सक० सेट्।

कर्त्तरि—वष्टि, उष्टः, उशन्ति। वक्षि, उष्ठः, उष्ठ। वश्मि, उश्वः, उश्मः। उश्यात्। वष्टु, उष्टाम्, उशन्तु। उड्ढि, उष्टम्, उष्ट। वशानि। अवट्-ड्। अवाशीत्, अवशीत्। उवाश, ऊशतुः। वशिता। उश्यात्। वशिष्यति। कर्म्मणि—उश्यते। अवाशि। णिचि—वाशयति-ते। अवीवशत्-त।
कृत्सु—वशनीयम्। वशनम्। वाशः। वाशकः। वाशी। वशिता। उशितः। उष्टिः। वशितुम्। वशितव्यम्। उशित्वा। न्युश्य। वाश्यम्। उशन्। उश्यमानः। वशिष्यन्-ष्यमाणः।

## (४७३) वस् निवासे भ्वादि० पर० अक० अनिट्।

कर्त्तरि—वसति। वसेत्। वसतु। अवसत्। अवात्सीत्, अवा-

त्ताम्, अवात्सुः। अवात्सीः, अवात्तम्, अवात्त। अवात्सम्, अवात्स्व। उवास, ऊषतुः, ऊषुः। उवसिथ, उवस्थ। ऊषिव। वसिता, वस्ता। उष्यात्। वत्स्यति। अवत्स्यत्। भावे—उष्यते। अवासि। णिचि—वासयति ते। अवीवसत्-त। सनि—विवत्सति।

मुग्धबोधमते यजादिरयम्। "वस औ निवासे" इति कविकल्पद्रुमः। उप भोजनाभावार्थे नाधारस्य कर्मता, उपवसति। अनु + अधि + उप + आङ्पूर्वः सक०।—अनुवसति, अधिवसति, उपवसति, आवसति वा गृहम्। प्र—प्रवासे (विदेशगमने) प्रवसति।

उप—उपोषितः, उपवासः। ल्युटि उपोषणमित्येके। प्र—प्रवासः। प्रोषितः, प्रोषितवान्। अधि—अधिवासः। आ—आवासः। कृत्सु—वसनीयम्। वसनम्। वासः। वासकः। वासी। वसिता, वस्ता। उषितः। उष्टिः। वसितुम्, वस्तुम्। वसितव्यम्, वस्तव्यम्। उषित्वा। उपोष्य। वास्यम्। क्वसु—ऊषिवान्। वसन्। अनूष्यमाणः। वत्स्यन्। अनुवत्स्यमानः।

## (४७४) वस् आच्छादने अदा० आत्म० सक० सेट्।

कर्त्तरि—वस्ते, वसाते, वसते। वस्से, वसाथे, वध्वे। वसे, वस्वहे। वसीत, वसीयाताम्, वसीरन्। वस्ताम्। अवस्त। अवसिष्ट। ववसे। वसितासे। वसिषीष्ट। वसिष्यते। कर्म्मणि—वस्यते। अवासि। णिचि—वासयति ते। अवीवसत्-त। सनि—विवसिषते। यङि—वावस्यते।

चुरादिस्तु स्नेहे छेदने वधे च उभ० सक० सेट्।—वासयति-ते। अवीवसत्-त। दिवा० स्तम्भे पर० सक० सेट्।—वस्यति। लुङि—अवसत्-अवासीत्। अदन्तचुरादिस्तु वासने (सुरभीकरणे) उभ० सक० सेट्।—वसयति-ते। अववसत्-त।

कृत्सु—वसनीयम्। वसनम्। वासः। णिच्-प्रभि—वासः, वाससी। वासकः। वासी। वसिता। वसितः। वस्तिः। वसितुम्। वसितव्यम्। उदित्-क्त्वा-वेट्।—वसित्वा-वस्त्वा। प्रवास्य। वास्यम्। वसानः। वस्यमानः। वसिष्यमाणः।

## (४७५) वह् प्रापणे भ्वादि० उभ० द्विक० अनिट् यजादिः।

कर्त्तरि—वहति-ते। वहेत्-त। वहतु-ताम्। अवहत्-त। अवाक्षीत्, अवोढाम्, अवाक्षुः। अवाक्षीः, अवोढम्, अवोढ। अवाक्षम्, अवाक्ष्व। अवोढ, अवक्षाताम्, अवक्षत। अवोढाः, अवक्षाथाम्, अवोढ्वम्। अवक्षि, अवक्ष्वहि। उवाह, ऊहतुः। उवहिथ, उवोढ। ऊहिव। ऊहे। ऊहिषे। वोढासि-से। उह्यात्। वक्षीष्ट। वक्ष्यति-ते। अवक्ष्यत्-त। कर्म्मणि—उह्यते। अवाहि। णिचि—वाहयति-ते। अवीवहत्-त। सनि—विवक्षति-ते। यङि—वावह्यते।

उद्—विवाहे,—उद्वहति। चुरादिषु दीप्तौ उभ० सक० सेट् इदित्—वंहयति-ते। अवंहिष्ट।

कृत्सु—वहनीयम्। वहनम्। वाहः। प्रवहः। निवहः। आवहः। वाहकः। वाही। इत्र—वहित्रम्। वोढा। ऊढः। ऊढिः। वोढव्यम्। वोढुम्। ऊढ्वा। प्रोह्य। वह्यम्। वाह्यम्। वहन्। वहमानः। उह्यमानः। वक्ष्यन्-क्ष्यमाणः। उद्—उदूढः।

## (४७६) वा गमने हिंसने (सूचने) च अदा० पर० सक० अनिट्।

कर्त्तरि—वाति। वायात्। वातु। अवात्, अवाताम्, अवुः-अवान्। अवासीत्, अवासिष्टाम्, अवासिषुः। अवासीः।

ववौ, ववतुः, ववुः। ववियथ-ववाथ। वविव। वातासि। वायात्। वास्यति। कर्म्मणि—वायते। अवायि। णिचि—वापयति-ते। अवीवपत्-त। कम्पनार्थे वाजयति। सनि—विवासति। यङि—वेवीयते।

चुरादिस्तु सुखार्थो अक०, गतौ सेवने च सक० उभ० सेट्। वपयति-ते। अवीवपत्-त।

कृत्सु—वानीयम्। वानम्। वायः। वायकः। वायी। वायुः। वाता। वातः। वातिः। वातुम्। वातव्यम। वात्वा। प्रवाय। वेयम्। वान्। वायमानः। वास्यन्-स्यमानः।

## (४७७) वाक्(ञ्छ्) कामे भ्वादि०पर०सक०सेट्।

कर्त्तरि—वाञ्छति। अवाञ्छत्। अवाञ्छीत्। ववाञ्छ। वाञ्छिता। कर्म्मणि—वाञ्छ्यते। अवाञ्छि। णिचि—वाञ्छयति-ते। अववाञ्छत्-त। सनि—विवाञ्छिषति।

कृत्सु—वाञ्छनीयम्। वाञ्छनम्। वाञ्छकः। वाञ्छी। वाञ्छिता। वाञ्छितः। वाञ्छा। वाञ्छितुम्। वाञ्छितव्यम। वाञ्छित्वा। प्रवाञ्छ्य। वाञ्छन्। वाञ्छमानः। वाञ्छिष्यन्-ष्यमाणः।

## (४७८) विच् पृथक्करणे वा रुधा० पक्षे जुहो० उभ० सक० अनिट्।

कर्त्तरि (रुधादिः)—विनक्ति, विङ्क्तः, विञ्चन्ति। विनक्षि, विङ्क्थः, विङ्क्थ। विनच्मि, विञ्चः। विङ्क्ते, विञ्चाते, विञ्चते। विङ्क्षे। विङ्ग्ध्वे। विञ्चे इत्यादि। विञ्च्यात्, विञ्चीत। विनक्तु। विङ्ग्धि। विनचानि। विङ्क्ताम्। अविनक्-ग्। अविङ्क्ताम्।

जुहोत्यादिपक्षे—विवेक्ति, विविक्ते। विवेच्यात्, विवेचीत। विवेक्तु। विविक्ताम्। अविवेक्, अविविक्त।

लुङादिषु (इरित्)—अविचत्। अवैक्षीत्। अविक्त। विवेच। विवेचिथ। विविचिव। विविचे। वेक्तासि-से। विच्यात्। विक्षीष्ट। वेक्ष्यति। कर्म्मणि—विच्यते। अवेचि। णिचि—वेचयति-ते। अवीविचत्-त। सनि—विविक्षति।

वि—विवेक्त, विविनक्ति।

कृत्सु—वेचनीयम्। वेचनम्। वेकः। वेचकः। क्तिन्—विक्तिः। विक्ता। विक्त। विक्तिः। वेक्तव्यम्। वेक्तुम्। विक्त्वा। विविच्य। वेच्यम्। विञ्चन्। विञ्चानः। विच्यमानः। वेक्ष्यन्-क्ष्यमाणः।

वि—विवेकः। विवेचनम्। विवेचना। विविक्तः।

## (४७९) विज् भये कम्पे च वा रुधा० पर० अक० सेट् पक्षे तुदा० आत्म० अक० अनिट्।

कर्त्तरि (रुधादिः)—विनक्ति। विनक्तु। विञ्ज्यात्। अविनक्-ग्। तुदादिपक्षे—विजते। (प्रायेणायमुत्पूर्व्वकः, तेन—उद्विजते)। विजेत। विजताम्। अविजत। लुङि—अविजीत इत्यादि। अविजिष्ट। विविजे। भावे—विज्यते। अविजि। णिचि—वेजयति-ते। अवीविजत्-त। सनि—विविजिषति।

जुहो० पृथक्करणे उभ० सक० अनिट्। —वेवेक्ति-वेविक्ते। इरित्—अविजत् अवैक्षीत्, अविक्त।

कृत्सु—वेजनीयम्। वेजनम्। वेगः। उद्वेगः। वेजकः। वेजी। विजिता। ईदित् ओदित्त्व—विग्नः। विक्तिः। विजितुम्। विजितव्यम्। विजित्वा। उद्विज्य। वेग्यम्। विजमानः। विजिष्यमाणः।

## (४८०) विद् ज्ञाने अदा० पर० सक० सेट्।

कर्त्तरि—वेद-वेत्ति, विदतुः-वित्तः, विदुः-विदन्ति। वेत्थ-वेत्सि,

विद्युः-विथ, विद-विथ। वेद वेद्मि, विद्व-विद्वः, विद्म-विद्मः। विद्यात्, विद्याताम्, विद्युः। वेत्तु-विदाङ्करोतु, वित्ताम्-विदाङ्कुरुताम्, विदन्तु विदाङ्कुर्वन्तु। विद्धि-विदाङ्कुरु, वित्तम्-विदाङ्कुरुतम्, वित्त-विदाङ्कुरुत। वेदानि-विदाङ्करवाणि, वेदाव-विदाङ्करवाव। ङामपक्षे आत्मनेपदञ्च।—विदाङ्कुरुताम्, विदाङ्कुर्वाताम्, विदाङ्कुर्वताम्। विदाङ्कुरुष्व, विदाङ्कुर्वाथाम, विदाङ्कुरुध्वम। विदाङ्करवै, विदाङ्करवावहै, विदाङ्करवामहै। अवेत्-द्, अविताम्, अविदुः। अवेत्-अवेः, अवित्तम्, अवित्त। अवेदीत्, अवेदिष्टाम्, अवेदिषुः। विवेद, विदाम्बभूव, विदामास, विदाञ्चकार। वेदिता। विद्यात्। वेदिष्यति। कर्म्मणि—विद्यते। अवेदि। णिचि—वेदयति-ते। अवीविदत्-त। सनि—विविदिषति। यङि—वेविद्यते।

सम्—आत्म० अक० संवित्ते, संविदाते, संविदते-संविद्रते।

कृत्सु—वेदनीयम्। वेदनम्। वेदः। अपि—वेदाः। जातवेदाः। वेदकः। वेदी। वेदिता। औणादिके तृचि तु—वेत्ता। विदितः। वित्तिः। वेदितव्यम्। वेदितुम्। विदित्वा। संविद्य। वेद्यम्। विदन्। विद्यमानः। वेदिष्यन्-ष्यमाणः।

## (४८१) विद् भावे दिवा० आत्म० अक० अनिट्।

कर्त्तरि—विद्यते। विद्येत। विद्यताम्। अविद्यत। अवित्त। विविदे। वेत्तासे। वित्सीष्ट। वेत्स्यते। भावे—विद्यते। अवेदि। णिचि—वेदयति-ते। अवीविदत्-त। सनि—विवित्सते।

कृत्सु—वेदनीयम्। वेदनम्। वेदः। वेदकः। वेदी। वेत्ता।

वित्तः । वित्तिः । वेत्तव्यम् । वेत्तुम् । वित्त्वा । संविद्य । वेद्यम् । विद्यमानः । वेत्स्यमानः ।

## (४८२) विद् लाभे तुदा० उभ० सक० अनिट् मुचादिः ।

कर्त्तरि—विन्दति-ते । विन्देत्-त । विन्दतु-ताम् । अविन्दत्-त । व्याघ्रभूतिमते वेट्, तेन लुङि—अविदत्, अवेदिष्ट, अवित्त इति पदत्रयम् । एवमन्यत्र । विवेद, विविदे । विवेदिथ, विविदिषे । विविदिव-विवेदिवहे । वेदिता, वेत्ता । वेत्तासि-से । विद्यात्, वेदिषीष्ट, वित्सीष्ट, । अवेदिष्यत्-त, अवेत्स्यत्-त । वेदिष्यति-ते, वेत्स्यति-ते । कर्म्मणि—विद्यते । अवेदि । णिचि—वेदयति-ते । अवीविदत्-त । सनि—विवित्सति-ते ।

परि—परिवेदने, परिविन्दति ।

कृत्सु—दिवादिकवत् । वेत्ता । वित्तः, विन्नः । परि—परिवेत्ता । परिवित्तः । वेत्तुम् । वेत्तव्यम् । वित्त्वा । विन्दन् । विन्दमानः । वेत्स्यन्-त्स्यमान इति भेदः ।

## (४८३) विद् विचारणे रुधादि० आत्म० सक० अनिट् ।

कर्त्तरि—विन्ते । विन्त्से । विन्दे । विन्दीत । विन्ताम् । विन्त्स्व । विनदै । अविन्त । अविन्थाः । अविन्दि । अवित्त । विविदे । वेत्स्यते । वेत्ता । सनि—विवित्सते ।

कृत्सु—वित्तः, विन्नः । वित्त्वा । वेत्तुम् ।

## (४८४) विद् सुखाद्यनुभवे चुरादि० आख्याने वादे च सक० वासे अक० उभ० सेट् ।

कर्त्तरि—वेदयति-ते । वेदयेत्-त । वेदयतु-ताम् । अवेदयत्-त ।

अवीविदत्-त। वेदयाञ्चकार-चक्रे। वेदयिता। वेदयिष्यति-ते। अवेदयिष्यत्-त।

कृत्सु—वेदयितव्यम्। वेदयितुं। वेदयित्वा।

अत्रेयं कारिका—

"वेत्ति रूपं विद ज्ञाने विन्ते विद विचारणे।
विद्यते विद सत्तायां लाभे विन्दति विन्दते॥"

## (४८५) विश् प्रवेशे तुदा० पर० सक० अनिट्।

कर्त्तरि—विशति। (बहुल प्रपूर्वकोऽयं प्रयुज्यते—प्रविशति)। विशेत्। विशतु। अविशत्। अविक्षत्, अविक्षताम्। विवेश। वेष्टा। विश्यात्। वेक्ष्यति। अवेक्ष्यत्। भावे—विश्यते। अवेशि। णिचि—वेशयति-ते। अवीविशत्-त। सनि विविक्षति। यङि वेविश्यते।

नि—आत्म० निविशते। अभि+नि—बुद्धिप्रवेशने सक०। धर्ममभिनिविशते। अन्यत्रार्थे अक०। सम्—शयने, संविशति। निर्—भृतौ भोगे च, निर्विशति। उप—स्थितौ अक० उपविशति। परि—परिवेशने, परिविशति।

कृत्सु—वेशनीयम्। वेशनम्। वेशः। वेशकः। वेशी। वेष्टा। विष्टः। विष्टिः। वेष्टव्यम्। वेष्टुम्। विष्ट्वा। उपविश्य। वेश्यम्। विशन्। वेक्ष्यन्।

प्र—प्रवेशः। अभि+नि—अभिनिवेशः। आ—आवेशः। उप—उपवेशनम्। अधि—अधिवेशनम्।

## (४८६) वृ भजने (सेवायां) क्र्यादि० आत्म० सक० सेट्।

कर्त्तरि—वृणीते, वृणाते, वृणते। वृणीत। वृणीताम्। अवृणीत। अवरिष्ट-अवरीष्ट-अवृत। वव्रे। ववृषे। वरीतासे-वरितासे।

वरिषीष्ट-वृषीष्ट। वरीष्यते-वरिष्यते। वरीता-वरिता। कर्म्मणि—व्रियते। अवारि, अवारिषाताम्-अवरीषाताम्-अवरिषाताम्-अवृषाताम्। णिचि—वारयति ते। अवीवरत्-त। सनि—विवरिषते-विवरीषते-वुवूर्षते। यङि—वेव्रीयते।

कृत्सु—वरणीयम्। वरणम्। वारः। संवारः। विवारः। नीवारः। वरः। वारकः। वारी। वरीता-वरिता। वृतः। वृतिः। वरीतव्यम्-वरितव्यम्। वरीतुम्-वरितुम्। वृत्वा। प्रवृत्य। वार्य्यम्। वृणानः। व्रियमाणः। वरीष्यमाणः-वरिष्यमाणः। कर्म्मणि—वारिष्यमाणश्च। एण्य—वरेण्यः।

## (४८७) वृ वरणे स्वादि॰ उभ॰ सक॰ सेट्।

कर्त्तरि—वृणोति, वृणुतः, वृण्वन्ति। वृणोषि। वृणोमि, वृण्वः, वृणुवः। वृणुते, वृण्वाते, वृण्वते। वृणुयात्, वृण्वीत। वृणोतु, वृणुताम्। अवृणोत्, अवृणुत। अवारीत्, अवारिष्टाम्, अवारिषुः। अवरीष्ट, अवरिष्ट, अवृत। अवरिषाताम्, अवरीषाताम्, अवृषाताम्। ववार। वव्रर्थ। वव्र। ववृषे। वरीतास्मि-से-वरितास्मि-से। व्रियात्, वरिषीष्ट-वृषीष्ट। वरिष्यति-ते-वरीष्यति-ते। अवरिष्यत्-त। अवरीष्यत्-त। कर्म्मणि—व्रियते। अवारि। सनि—वुवूर्षति, विवरिषति, विवरीषति।

सम्—सङ्कोचने, संवृणुते। वि—विस्तारकरणे, विवृणोति, "विवृण्वती शैलसुतापि भावम" इति कुमारः।

भ्वादिस्तु वरणे उभ॰ सक॰ सेट्। वरति-ते। अवारीत्। अवरि(री)ष्ट।

चुरादिश्च आवरणे उभ॰ सक॰ सेट्। वारयति-ते। अवीवरत्-त।

कृत्सु शतरि—वृश्चन्। वृश्चानः। यङ—वरीवृश्चन्-वरिवृश्चन्। एवं वृश्चमान इति भेदः। अन्यत्र कार्य्यं गणीयवत्।

## (४८८) वृज् वर्जने अदादि॰आत्म॰सक॰सेट्।

कर्त्तरि—(इदित् पक्षे) वृङ्क्ते (अनिदित्पक्षे) वृक्ते। अवृक्त। अवृक्षिष्ट। अवर्जिष्ट। ववृजे। वर्जिष्यते। वर्जिता। वर्जिषीष्ट। कर्म्मणि—वृज्यते। अवर्जि। वर्जयति-ते। अवी-वृजत-त, अववर्जत्-त। सनि—विवर्जिषति। यङि—वरीवृज्यते।

कृत्सु—वर्जनीयम्। वर्जनम्। वर्जितव्यः। वृक्त्वा, वर्जित्वा। परिवर्ज्य। वर्जितुम्।

## (४८९) वृज् वर्जने रुधादि पर॰ सक॰ सेट्।

कर्त्तरि—वृणक्ति। वृञ्ज्यात्। वृणक्तु। अवृणक्-ग्। अवर्जीत्। ववर्ज, ववृजतुः, ववर्जिथ। वर्जिष्यति। वर्जिता। णिच्—वर्ज्जयति। णिच्+लुङ्—अववृजत्, अववर्जत्। अन्यत् सर्व्वं अदादिगणीयवत्।

## (४९०) वृज् वर्जने चुरादि॰ उभ॰ सक॰ सेट्।

कर्त्तरि—वर्जयति-ते, परिवर्जयति ते, विवर्जयति ते। वर्जयेत्-त। वर्जयतु-ताम्। अवर्जयत् त। वर्जयिता। वर्जयिष्यति। अवर्जयिष्यत्। कर्म्मणि—वर्ज्यते।

कृत्सु—वर्जयित्वा। वर्जयितव्यम्। वर्जयितुम्।

## (४९१) वृत् वर्त्तने भ्वा॰ आत्म॰ अक॰ सेट् वृतादिः।

कर्त्तरि—वर्त्तते। वर्त्तसे। वर्त्ते। वर्त्तेत। वर्त्तताम्। अवर्त्तत। लुङि ऌटि ऌङि च उभ॰। अवृतत् अवर्त्तिष्ट। ववृते,

ववृतिषे। वर्त्तितासे। लृटि लृङि च वा पर० नेट्। वर्त्स्यति, वर्त्तिष्यते। वर्त्तिषीष्ट, अवर्त्स्यत्, अवर्त्तिष्यत। भावे—वृत्यते। अवर्त्ति। णिचि—वर्त्तयति-ते। अवीवृतत्-त। अववर्त्तत्-त। सनि—विवर्त्तिषते, विवृत्सति। यङि—वरीवृत्यते।

दिवादिस्तु सम्भक्तौ वरणे च आत्म० सक० सेट्। वृत्यते। अवर्त्तिष्ट

चुरादिस्तु दीप्तौ उभ० सक० सेट्। वर्त्तयति-ते। अवीवृतत्-त अववर्त्तत्-त।

कृत्सु—वर्त्तनीयम्। वर्त्तनम्। वर्त्तः। वर्त्तकः। वर्त्ती। वर्त्तिता। वृत्तः। वृत्तिः। वर्त्तितव्यम्। वर्त्तितुम्। उदित्त्वात् क्त्वा वेट्—वृत्त्वा-वर्त्तित्वा। प्रवृत्य। वृत्यम्। वर्त्तमानः। वर्त्स्यन्। वर्त्तिष्यमाणः। इष्णु—वर्त्तिष्णुः। सनः,—विवृत्सा-विवर्त्तिषा। विवृत्सुः-विवर्त्तिषुः। विवर्त्तिष्यमाणः।

## (४९२) वृध् वर्द्धने भ्वादि० आत्म० अक० सेट् वृतादिः।

कर्त्तरि—वर्द्धते। लुङि लृटि लृङि च उभ०। ऋदित्—अवृधत्, अवर्द्धिष्ट। ववृधे। वर्द्धितासे। वर्द्धिषीष्ट। वर्त्स्यति, वर्द्धिष्यते। अवर्त्स्यत, अवर्द्धिष्यत। भावे—वृध्यते। अवर्द्धि। णिचि—वर्द्धयति-ते। अवीवृधत्-त, अववर्द्धत्-त। सनि—विवर्द्धिषति-ते। यङि—वरीवृध्यते।

कृत्सु—वर्द्धनीयम्। वर्द्धनम्। वर्द्धः। वर्द्धकः। वर्द्धी। इष्णु—वर्द्धिष्णुः। वर्द्धिता। वृद्धः। वृद्धिः। वर्द्धितुम्। वर्द्धितव्यम्। वृद्ध्वा, वर्द्धित्वा। संवृध्य। वृध्यम्। वर्द्धमानः। वर्त्स्यन्, वर्द्धिष्यमाणः। सनि—विवृत्सा-विवर्द्धिषा। विवृत्सुः-विवर्द्धिषुः। विवर्द्धिषमाणः।

चुरादिस्तु—(मुग्धबोधमते पूर्त्तिच्छिदोरर्थयोः) उभ० अक० सेट्। वर्द्धयति-ते। कर्म्मणि—वर्द्धते। अवीवृधत्-त। अववर्द्धत्-त।

## (४९३) वृष् सेचने भ्वादि० पर० सक० प्रजननसामर्थ्ये ऐश्वर्य्ये च अक० सेट्।

कर्त्तरि—वर्षति, अभिवर्षति। ववर्ष। अवर्षीत्। वर्षिष्यति। वर्षिता। अवर्षिष्यत्। वृष्यात। कर्म्मणि—वृष्यते। अवर्षि। णिचि—वर्षयति-ते। अवीवृषत्-त। सनि—विवर्षिषति। यङि—वरीवृष्यते।

चुरादिरयमात्मनेपदी।—वर्षयते इत्यादि। वृषु सेचने इति कालापादयः।

कृत्सु—वृष्टः। वृष्ट्वा। परिवर्ष्य। वर्षितुम्।

## (४९४) वृह् ध्वनौ (करिगर्जने) वृद्धौ च भ्वादि० पर० अक० सेट् (इदिच्च)।

कर्त्तरि—वृंहति-वर्हति। वृंहेत वर्हेत्। अवृंहीत्। इरित्—अवृहत्-अवर्हीत्। भावे—वृंह्यते-वृह्यते। अवृंहि। णिचि—वृंहयति-ते। अववृंहत्-त।

भ्वादि० आत्मनेपदी तु वृद्धौ सक० सेट् इदित्—वृंहते। अवृंहिष्ट। तुदादिश्च उद्यमे पर० अक० वेट्। वृहति। अवर्हीत्-अवृक्षत्। दीप्तौ वा चुरा० उभ० सक० पक्षे भ्वादि० पर० इदित्—वृंहयति-ते। अववृंहत्-त। वृंहति। अवृंहीत्।

कृत्सु—वृंहणीयम्। वृंहणम्। वृंहः। वृंहकः। वृंही। वृंहिता। वृंहितम्। वृंहा। वृंहितव्यम्। वृंहितुम्।

वृंहित्वा। संवृंह्य। वृंह्यम्। वृंहन्। वृंहिष्यन्। मानिनि—निपा० व्र(व्र)ह्मन्। पवर्गीयमध्ये अस्य पाठो न बहुसम्मतः।

## (४६५) वॄ वृतौ क्र्यादि० उभ० सक० सेट् प्वादिः।

कर्त्तरि—वृणाति, वृणीतः। वृणीते। वृणीयात्, वृणीत। वृणातु, वृणीताम्। अवृणात्, अवृणीत। अवारीत्, अवरिष्ट-अवरीष्ट-अवूर्ष्ट। ववार, ववरिथ, ववरे, ववरिषे। वरीतासि-से, वरितासि-से। वरिषीष्ट-वूर्षीष्ट। वरीष्यति-ते, वरिष्यति-ते। कर्म्मणि—वूर्य्यते। अवारि, अवारिषाताम्-अवरीषाताम्-अवरिषाताम्-अवूर्षाताम्। णिचि—वारयति-ते। अवीवरत्-त। सनि—विवरीषति-ते, विवरिषति-ते, वुवूर्षति-ते।

कृत्सु—वरणीयम्। वरणम्। वरः। वारकः। वारी। वरीता-वरिता। वूर्णः। वूर्त्तिः। वरीतुम्-वरितुम्। वरीतव्यम्-वरितव्यम्। वूर्त्वा। संवूर्य्य। वार्य्यम्। वृणन्। वृणानः। कर्म्मणि—वूर्य्यमाणः। वरीष्यन्-ष्यमाणः। वरिष्यन्-ष्यमाणः। कर्म्मणि—वारिष्यमाणश्च।

## (४६६) वे तन्तुसन्ताने भ्वादि० उभ० सक० अनिट् यजादिः।

कर्त्तरि—वयति-ते। वयेत्-त। वयतु-ताम्। अवयत्-त। अवासीत्, अवास्त। ववौ, ऊवतुः-ऊयतुः। ऊवयिथ। ऊवे-ऊये। वातासि-से। ऊयात्, वासीष्ट। वास्यति-ते। कर्म्मणि—ऊयते। ओयत। अवायि, अवायिषाताम्-अवासाताम्। णिचि—वापयति-ते। अवीवपत्-त।

कृत्सु—वानीयम्। वानम्। वायः। तन्तुवायः। वायकः।

वायी। वाता। वायुः। ऊतः। ऊतिः। वातव्यम्। वातुम्। ऊत्वा। संवाय। वेयम्। वयन्, वयमानः। कर्मणि— ऊयमानः। वास्यन्-स्यमानः। कर्मणि—वायिष्यमाणश्च।

## (४९७) वेप् चलने (कम्पने) भ्वादि॰ आत्म॰ अक॰ सेट्।

कर्त्तरि—वेपते। वेपेत। वेपताम्। अवेपत। अवेपिष्ट। विवेपे। वेपिता। वेपिष्यते। भावे—वेप्यते। अवेपि। णिचि—पर॰ वेपयति। अविवेपत्—ऋदित्, तेन चङि न ह्रस्वः।

कृत्सु—वेपनीयम्, प्रवेपनीयम्। प्रवेपनम्। वेपः। वेपकः। वेपी। वेपिता। वेपितः। वेपा। वेपितव्यम्। वेपितुम्। वेपित्वा। संवेप्य। वेप्यम्। वेपमानः। वेपिष्यमाणः। अथुः—वेपथुः।

## (४९८) वेष्ट् वेष्टने भ्वादि॰ आत्म॰ सक॰ सेट्।

कर्त्तरि—वेष्टते। अवेष्टिष्ट। चेष्टवत् सर्वं, केवलं चकार-स्थाने वकारमात्रभेदः। णिचि—उभ॰ वेष्टयति-ते। अव(वि)वेष्टत्-त।

## (४९९) व्यथ् व्यथने भये चलने दुःखानुभवे च, भ्वादि॰ आत्म॰ अक॰ सेट् घटादिः।

कर्त्तरि—व्यथते। व्यथेत। व्यथताम्। अव्यथत। अव्यथिष्ट। विव्यथे। व्यथिता। व्यथिषीष्ट। व्यथिष्यते। भावे—व्यथ्यते। अव्यथि-अव्याथि। णिचि—व्यथयति-ते। अविव्यथत्-त।

कृत्सु—व्यथनीयम्। व्यथनम्। व्याथः। व्याथकः। व्याथी। व्यथिता। व्यथितः। व्यथा। व्यथितुम्। व्यथितव्यम्। व्यथित्वा। संव्यथ्य। व्याथ्यम्। व्यथमानः। व्यथिष्यमाणः।

## (५००) व्यध् ताड़ने दिवा० पर० सक० अनिट्।

कर्त्तरि—विध्यति। विध्येत्। विध्यतु। अविध्यत्। अव्यात्सीत्। विव्याध, विविधतुः। विव्यधिथ-विव्यद्ध। व्यद्धा। विध्यात्। व्यत्स्यति। कर्म्मणि—विध्यते। अव्याधि। णिचि—व्याधयति-ते। अविव्यधत्-त।

कृत्सु—व्यधनीयम्। व्यधनम्। व्याधः। घ—व्याधः। वेधस्तु नौटादिक-विधतेः रूपम्। व्याधकः। व्याधी। व्यद्धा। विद्धः। विद्धिः। व्यद्धुम्। व्यद्धव्यम्। विद्ध्वा। आविध्य। व्याध्यम्। विध्यन्। विध्यमानः। व्यत्स्यन्-त्स्यमानः। क्विप्—श्वावित्-द्। मृगावित्-द्। मर्मावित्-द्। मर्माविधम्।

## (५०१) व्ये स्यूतौ वरणे च भ्वादि० उभ० सक० अनिट् यजादिः।

कर्त्तरि—व्ययति-ते। व्ययेत्-त। व्ययतु-ताम्। अव्ययत्-त। अव्यासीत्, अव्यास्त। विव्याय, विव्यतुः। विव्यिथ। विव्यिव। विव्ये। व्यातासि-से। वीयात्-व्यासीष्ट। व्यास्यति-ते। कर्म्मणि—वीयते। अव्यायि। णिचि—व्याययति-ते। अविव्ययत्-त।

कृत्सु—व्यानीयम्। व्यानम्। व्यायः। व्यायकः। व्यायी। व्याता। वीतः। वीतिः। व्यातव्यम्। व्यातुम्। वीत्वा। संवीय, संव्याय। एवं परैः। व्येयम्। व्ययन्-मानः। कर्म्मणि—वीयमानः। व्यास्यन्-स्यमानः। कर्म्मणि—व्यायिष्यमाणश्च।

## (५०२) व्रज् गतौ भ्वादि० पर० सक० सेट्।

कर्त्तरि—व्रजति। व्रजेत्। व्रजतु। व्रज। अव्रजत्। अव्राजीत्। वव्राज। व्रजिता। व्रज्यात्। व्रजिष्यति। कर्म्मणि—व्रज्यते। अव्राजि। णिचि—व्राजयति-ते। अविव्रजत्-त।

चुरादिस्तु संस्कारे गतौ च, उभ० सक० सेट् । व्राजयति-ते । अविव्रजत्-त ।

परि—सन्न्यसने, परिव्रजति । अनु—अनुगमने, अनुव्रजति । अप—अपगमने, अपव्रजति ।

कृत्सु—व्रजनीयम् । व्रजनम् । व्रजः । व्राजः । परिव्राजकः । व्राजी । व्रजिता । व्रजितः । क्यप्—व्रज्या । व्रजितव्यम् । व्रजितुम् । व्रजित्वा । प्रव्रज्य । व्राज्यम् । व्रजन् । कर्मणि—व्रज्यमानः । व्रजिष्यन्-ष्यमाणः । क्विप्—परिव्राट् ।

## (५०३) व्रश्च् छेदने तुदादि० पर० सक० वेट् ऊदित् ओदिच्च ।

कर्त्तरि—वृश्चति । वृश्चेत् । वृश्चतु । अवृश्चत् । अव्रश्चीत्-अव्राक्षीत् । वव्रश्च, वव्रश्चतुः । वव्रश्चिथ-वव्रष्ठ । वव्रश्चिव-वव्रश्च्व । व्रश्चिता-व्रष्टा । वृश्च्यात् । व्रश्चिष्यति-व्रक्ष्यति । कर्म्मणि—वृश्च्यते । अव्रश्चि । णिचि—व्रश्चयति-ते । अवव्रश्चत्-त ।

कृत्सु—व्रश्चनीयम । व्रश्चनम् । 'सक्'—वृक्णः । ल्यु—व्रश्चनः । व्रश्चः । व्रश्चकः । व्रश्ची । व्रश्चिता-व्रष्टा । वृक्णः । वृक्तिः । व्रश्चितव्यम्-व्रष्टव्यम् । व्रश्चितुम्-व्रष्टुम् । व्रश्चित्वा । संवृश्च्य । व्रश्च्यम् । वृश्चन् । कर्मणि—वृश्च्यमानः । व्रश्चिष्यन्-ष्यमाणः-व्रक्ष्यन्-क्ष्यमाणः ।

## (५०४) शक् शक्तौ स्वादि० पर० अक० इरित् अनिट् ।

कर्त्तरि—शक्नोति, शक्नुतः, शक्नुवन्ति । शक्नुवः । शक्नुयात् । शक्नोतु । शक्नुहि । अशक्नोत् । अशकत्-अशाक्षीत् । मतान्तरे पुषादिः, तेन—अशकदित्येव । शशाक । शेकतुः । शशकथ-शेकिथ । शक्ता । शक्यात् । शक्ष्यति-शकिष्यति । भावे—

शक्यते। अशाकि। णिचि—शाकयति-ते। अशीशकत्-त। सनि—शिशक्षति-ते। यङि—शाशक्यते।

कृत्सु—शकनीयम्। शकनम्। शाकः। शक्ता। शक्तः। शक्तिः। शक्तुम्। शक्तव्यम्। शक्त्वा। प्रशक्य। शाक्यम्। शक्नुवन्। शक्ष्यन्।

### (५०५) शक् क्षमायां सक० शक्तौ अक० दिवादि० उभ० सेट्।

कर्त्तरि—शक्यति-ते। शक्येत्-त। शक्यतु-ताम्। अशक्यत्-त। अशकत्-अशक्त। मुग्धबोधमते—अशकत्, अशाकीत्, अशकीत्। अशकिष्ट। शशाक। शेके। शकितास्मि-से। शक्यात्, शकिषीष्ट। शकिष्यति-ते। भावे—शक्यते। अशाकि। णिचि—शाकयति-ते। अशीशकत्-त। सनि—शिशकिषति-ते।

कृत्सु—शकितः। शकिता। शकितव्यम्। शकितुम्। शकित्वा। शक्यन्। शक्यमानः। शकिष्यन्-ष्यमाणः इति भेदः। अन्यत् स्वादिगणीयवत्।

### (५०६) शक् (शकि) त्रासे अक० सन्देहे सक० भ्वादि० आत्म० सेट्।

कर्त्तरि—शङ्कते। शङ्केत। शङ्कताम्। अशङ्कत। अशङ्किष्ट। शशङ्के। शङ्किता। शङ्किषीष्ट। शङ्किष्यते। अशङ्किष्यत। कर्मणि भावे च—शङ्क्यते। अशङ्कि। णिचि—शङ्कयति-ते। अशशङ्कत-त। सनि—शिशङ्किषते। यङि—शाशङ्क्यते।

कृत्सु—शङ्कनीयम्। शङ्कनम्। शङ्कः। शङ्ककः। आशङ्की। शङ्किता। शङ्कितः। शङ्का। "लङ्कापि शङ्काकुला" इति नाटकम्। "अशक्यशङ्काव्यभिचारहेतुः" इति नैषधम्।

शङ्कितुम्। शङ्कितव्यम्। शङ्कित्वा। आशङ्क्य। शङ्क्यम्। शङ्कमानः। कर्म्मणि—शङ्क्यमानः। शङ्किष्यमाणः।

(५०७) शद्लृ शातने विशीर्णतायां भ्वादि० (लट् लिङ् लोट् लङ्षु आत्म०) अन्यत्र पर० अक० लृदित् अनिट्।

कर्त्तरि—शीयते। शीयेत। शीयताम्। अशीयत। अशदत्। शशाद, शेदतुः। शेदिथ, शशत्थ। शत्ता। शद्यात्। शत्स्यति। अशत्स्यत्। कर्म्मणि—शद्यते। अशादि। णिचि—शातयति। अशीशतत्। गमनार्थे—शादयति। अशीशदत्। सनि—शिशत्सति। यङि—शाशद्यते।

कृत्सु—शदनीयः। शन्नः। शत्त्वा। संशद्य। शत्तुम्।

(५०८) शन्स् हिंसायां कथने स्तुतौ च भ्वादि० पर० सक० सेट्।

कर्त्तरि—शंसति। शंसेत्। शंसतु। अशंसत्। अशंसीत्। शशंस। शंसिता। शस्यात्। शंसिष्यति। अशंसिष्यत्। कर्म्मणि—शस्यते। अशंसि। णिचि—शंसयति-ते। अशशंसत्-त। सनि—शिशंसिषति। यङि—शाशस्यते।

आ—आशंसने इष्टार्थप्रार्थने आत्म० आशंसते। प्र—प्रशंसायाम्—प्रशंसति। अभि—अभिशापे अपवादे च, अभिशंसति। इदिदयं, तेन न नलोपः,—आशंस्यते।

कृत्सु—शंसनीयम्। शंसनम्। शंसः। शंसकः। शंसी। शंसिता। शस्तः। शस्तिः। शंसा। शंसितुम्। शंसितव्यम्। उदित् क्त्वा वेट्।—शंसित्वा-शस्त्वा। प्रशस्य। शंस्यम्। शंसन्। शंसिष्यन्। कर्म्मणि—शंस्यमानः। शंसिष्यमाणः।

आ—आशंसा, आशंसुः। प्र—प्रशंसा। प्रशस्तिः। अभि—
अभिशस्तः।

## (५०९) शप् आक्रोशे भ्वादि० पक्षे दिवादि० उभ० सक० अनिट्।

कर्त्तरि—शपति-ते, शप्यति-ते। शपेत्-त, शप्येत्-त। अशपत्-त, अशप्यत्-त। अशाप्सीत्, अशप्त। शशाप, शेपे। शप्तासि-से। शप्यात्, शप्सीष्ट। शप्स्यति-ते। कर्म्मणि—शप्यते। अशापि। णिचि—शापयति-ते। अशीशपत्-त।

शपथे आत्म०—शपते।

कृत्सु—शपनीयम्। शपनम्। शापः। शापकः। शापी। शप्ता। शप्तः। शप्तः। शप्तव्यम्। शप्तुम्। शप्त्वा। अभिशप्य। शप्यम्। शपन्-मानः। शप्यन्-मानः। शप्स्यन्, शप्स्यमानः।

## (५१०) शब्द शब्दक्रियायाम् अदन्तचुरादि० उभ० सक० सेट्।

कर्त्तरि—शब्दयति-ते। शब्दयाञ्चकार-चक्रे। शब्दयिष्यति-ते। अशशब्दत्-त। भावे—शब्द्यते।

कृत्सु—शब्दः। शब्दयित्वा। शब्दयितुम्।

## (५११) शम् शान्तौ अक० शान्तिकरणे सक० दिवा० पर० सेट् शमादिः।

कर्त्तरि—शाम्यति। शाम्येत्। शाम्यतु। अशाम्यत्। अशमत्-अशमीत्। शशाम। शेमिथ। शमिता। शम्यात्। शमिष्यति। अशमिष्यत्। भावे कर्म्मणि च—शम्यते। अशमि-अशामि। णिचि—शमयति-ते, शामयति-ते। अशीश-

मत्-त, अशशामत्-त। ण्यन्त-कर्म्मणि—अशामि-अशमि, अशामयिषाताम्-अशमयिषाताम्, अशामिषाताम्-अशमिषाताम्। सनि—शिशमिषति। यङि—शंशम्यते।

उप—निवृत्तौ उपशाम्यति।

कृत्सु—शमनीयम्। शमनम्। णिचः,—ल्यु—शमनः। शमः। शमकः। शमी। शमिता। शान्तः। णिचस्तु शान्तः-शमितः। शान्तिः। शमितव्यम्। शमितुम्। उदित् क्त्वा वेट्।—शमित्वा-शान्त्वा। प्रशम्य। शम्यम्। शाम्यन्। शमिष्यन्।

उप—उपशमः।

## (५१२) शम् आलोचने चुरादि० उभ० सक० सेट्।

कर्त्तरि—शामयति-ते। शामयेत्-त। शामयतु-ताम्। शामय, शामयस्व। "निशामय तदुत्पत्तिं विस्तराद्गदतो मम" इति मार्कण्डेयचण्डी। अशामयत्-त। अशीशमत्-त। शामयाञ्चकार-चक्रे। शामयिता। शाम्यात्, शामयिषीष्ट। शामयिष्यति-ते। अशामयिष्यत्-त। कर्म्मणि—शाम्यते। अशामि। सनि—शिशामयिषति-ते।

कृत्सु—शामयितव्यः। शामितः। शामयित्वा। शामयितुम्।

## (५१३) शास् शासने अदादि० पर० द्विक० सेट् जक्षादिः।

कर्त्तरि—शास्ति, शिष्टः, शासति। शास्सि; शिष्ठः, शिष्ठ। शास्मि, शिष्वः, शिष्मः। शिष्यात्। शास्तु, शिष्टाम्, शासतु। शाधि। अशात्, अशिष्टाम्, अशासुः। अशात्-अशाः। अशिषत्। शशास। शासिता। शिष्यात्। शासिष्यति। अशासिष्यत्। कर्म्मणि—शिष्यते। अशासि।

णिचि—शासयति-ते। अशशासत्-त। सनि—शिशासिषति। यङि—शेशिष्यते।

आ—आशंसने आशीर्वादप्रार्थने, आत्म० सक०—आशास्ते, आशासाते, आशासते। आशास्से, आशासाथे, आशाध्वे। आशासे, आशास्वहे, आशास्महे। आशासीत। आशास्ताम्। आशास्त। आशासिष्ट। आशशासे। आशासिता। कर्म्मणि—आशास्यते। आशासि। णिचि—आशासयते। आशिशासत। सनि—आशिशासिषते। यङि—आशाशास्यते।

कृत्सु—शासनीयम्। शासनम्। शासः। शासकः। शासी। शासिता। औणादिके तृचि नेट्—शास्ता। शिष्टः। शिष्टिः। शासितव्यम्। शासितुम्। क्त्वा वेट्—शासित्वा-शिष्ट्वा। संशिष्य। शिष्यः। शास्यः। शासत्। शासिष्यन्। कर्म्मणि—शिष्यमाणः। शासिष्यमाणः। क्विप्—आशीः।

## (५१४) शिक्ष् शिक्षणे भ्वादि० आत्म० सक० सेट्।

कर्त्तरि—शिक्षते। शिक्षेत। शिक्षताम्। अशिक्षत। अशिक्षिष्ट। शिशिक्षे। शिक्षिता। शिक्षिषीष्ट। शिक्षिष्यते। कर्म्मणि—शिक्ष्यते। अशिक्षि। णिचि—शिक्षयति-ते। अशिशिक्षत्-त। सनि—शिशिक्षिषते। यङि—शेशिक्ष्यते।

कृत्सु—शिक्षणीयम्। शिक्षणम्। शिक्षः। शिक्षकः। णिचोऽपि—शिक्षकः। शिक्षी। शिक्षिता। शिक्षितः। शिक्षा। शिक्षितव्यम्। शिक्षितुम्। शिक्षित्वा। संशिक्ष्य। शिक्ष्यम्। शिक्षमाणः। कर्म्मणि—शिक्ष्यमाणः। शिक्षिष्यमाणः।

## (५१५) शिष् विशेषे रुधादि० पर० सक० अनिट्।

कर्त्तरि—शिनष्टि, शिंष्टः, शिंषन्ति। शिनक्षि, शिंष्ठः, शिंष्ठ। शिनष्मि, शिंष्वः, शिंष्मः। शिंष्यात्। शिनष्टु, शिंष्टाम्,

शिंषन्तु। शिं शाढ। अशिनट्-ड्। लृदित्—अशिषत्। शिशेष। शेष्टा। शिष्यात्। शेक्ष्यति। अशेक्ष्यत्। कर्मणि—शिष्यते। अशेषि। णिचि—शेषयति-ते, अशी-शिषत्-त। सनि—शिशिक्षति। यङि—शेशिष्यते।

वि—विशेषकरणे विशिनष्टि।

कृत्सु—शेषणीयम्। शेषणम्। शेषः। शेषकः। शेषी। शेष्टा। शिष्टः। शिष्टिः। शेष्टव्यम्। शेष्टुम्। शिष्ट्वा। शिष्यः। विशिष्य। शेष्यम्। शिंषन्। शेक्ष्यन्। कर्मणि—शिष्यमाणः। शेक्ष्यमाणः।

वि—विशिष्टः। विशेष्यम्। विशेषणम्।

## (५१६) शिष् अवशेषे विकल्पचुरादि० उभ० अक० पक्षे वधे भ्वादि० पर० सक० सेट्।

कर्त्तरि—शेषयति-ते, शेषति। अशीशिषत्-त, अशेषीत्। भावे—शिष्यते। अशेषि।

वि—अतिशायने, विशेषयति। अव—अवशेषे, अवशेषयति। अन्यत् चौधादिकवत्।

कृत्सु—शेषयिता, शेषिता। शेषितः, शिष्टः। शेषयितव्यम्, शेषितव्यम्। शेषयितुम्, शेषितुम्। शेषयित्वा, शेषित्वा, शिषित्वा, शिष्ट्वा। शेषयन्-माणः, शेषन्। कर्मणि—शिष्यमाणः। शेषयिष्यन्-ष्यमाणः, शेषिष्यन्, कर्मणि—शेषिष्यमाणः।

अव—अवशेषितः। अवशिष्टः।

## (५१७) शी शयने अदादि० आत्म० अक० सेट्।

कर्त्तरि—शेते, शयाते, शेरते। शेषे। शयीत, शयीथाः, शयीय। शेताम्, शयाताम्, शेरताम्। अशेत,

अशयाताम्, अशेरत। अशयिष्ट। शिश्ये। शयिता। शयितासे। शयिषीष्ट। शयिष्यते। अशयिष्यत। भावे—शय्यते। अशायि, अशायिषाताम्-अशयिषाताम्। णिचि—शाययति-ते। अशीशयत्-त। सनि—शिशयिषते। यङि—शाशय्यते।

अति—अतिक्रमे, अतिशेते। अधिपूर्वकः सक०—शय्यामधिशेते।

कृत्सु—शयनीयम्। शयनम्। शयः। उत्तानशयः। शायकः। शायी। शयिता। शयितः। शय्या। शयितव्यम्। शयितुम्। शयित्वा। उपशय्य। शेयम्। शयानः। शयिष्यमाणः। अतिशयितः।

## (५१८) शुच् शोके भ्वादि० पर० सक० सेट्।

कर्त्तरि—शोचति। शोचेत्। शोचतु। अशोचत। अशोचीत्। शुशोच। तादावार्द्धधातुके वेट्, तेन—शोचिता-शोक्ता। शुच्यात्। शोचिष्यति। अशोचिष्यत्। कर्म्मणि—शुच्यते। अशोचि। णिचि—शोचयति-ते, अशूशुचत्-त। सनि—शुशोचिषति, शुशुचिषति। यङि—शोशुच्यते।

अनु—अनुशोके, सक० अनुशोचति। दिवादिस्तु शोके क्लेदे च उभ० अक० सेट्। शुच्यति-ते। इरित्—अशुचत्-अशोचीत्, अशोचिष्ट। अनु—केनचिदुद्देशेन पश्चात्तापे, सक०—अनुशोचति।

कृत्सु—शोचनीयम्। शोचनम्। शोकः। शोचकः। शोची, शोकी। शोचिता-शोक्ता। शोचितः। ईदित्—शुक्तः। शुक्तिः। शोचितव्यम्, शोक्तव्यम्। शोचितुम्-शोक्तुम्। शोचित्वा-शुचित्वा-शुक्त्वा। विशुच्य। शोच्यम्। शोचन्। शोचिष्यन्।

अनु—अनुशोचनम्।

## (५१९) शुध् शौचे शोधने च दिवादि० पर० सक० निःशेषभवने अक० अनिट्।

कर्त्तरि—शुध्यति। शुध्येत्। शुध्यतु। अशुध्यत्। अशुधत्। शुशोध। शोद्धा। भावे—शुध्यते। अशोधि। णिचि—शोधयति-ते। अशूशुधत्-त।

कृत्सु—शोधनीयम्। शोधनम्। शोधः। शोधकः। शोधी। शोद्धा। शुद्धः। शुद्धिः। शोद्धव्यम्। शोद्धुम्। शुद्ध्वा। विशुध्य। शोध्यम्। शुध्यन्। शोत्स्यन्।

## (५२०) शुन्ध् शुद्धौ भ्वादि० पर० सक० सेट्।

कर्त्तरि—शुन्धति। शुन्धेत्। शुन्धतु। अशुन्धत्। अशुन्धीत्। शुशुन्ध। शुन्धिता। शुध्यात्। कर्म्मणि—शुध्यते। अशुन्धि। णिचि—शुन्धयति। अशुशुन्धत्। सनि—शुशुन्धिषति। यङि—शोशुध्यते।

अयं चुरादावपि उभ०।—शुन्धयति-ते। अशुशुन्धत्-त।

कृत्सु—शुधितः। शुधित्वा। शुन्धितुम्।

## (५२१) शुभ् दीप्तौ भ्वादि० आत्म० अक० सेट् इदित्।

कर्त्तरि—शोभते। अशोभिष्ट। शुशुभे। भावे—शुभ्यते। अशोभि। णिचि—शोभयति-ते। अशूशुभत्-त। सनि—शुशोभिषते-शुशुभिषते। (पौनःपुन्ये) यङि—शोशुभ्यते।

तुदादिस्तु दीप्तौ अक० हिंसने सक० पर० सेट्। शुभति। अशोभीत्।

कृत्सु—शोभनीयम्। शोभनम्। शोभः। शोभकः। शोभी। शोभिता। शोभितः। शोभा। शोभितव्यम्। शोभितुम्।

शोभित्वा-शुभित्वा। उपशुभ्य। शोभ्यम्। शोभमानः। शोभिष्यमाणः।

## (५२२) शुष् शोषणे दिवादि० पर० अक० अनिट् लृदित्।

कर्त्तरि—शुष्यति। शुष्येत्। शुष्यतु। अशुष्यत्। अशुषत्। शुशोष। शोष्टा। शुष्यात्। शोक्ष्यति। अशोक्ष्यत्। भावे—शुष्यते। णिचि—अशोषि। शोषयति-ते। अशूशुषत्-त। सनि—शुशुक्षति। यङि—शोशुष्यते।

कृत्सु—शुष्कः। शोष्टुम्। शोषः। णमुलि—ऊर्द्ध्वशोषम् "यद्वोर्द्ध्वशोषं तृणवद्विशुष्कः" इति भट्टिः।

## (५२३) श्चुत् (श्च्युत्) क्षरणे भ्वादि० पर० अक० सेट् इरित्।

कर्त्तरि—श्चोतति।—अश्चुतत्, अश्चोतीत्। चुश्चोत। भावे—श्चुत्यते। अश्चोति। णिचि—श्चोतयति-ते। एवं श्च्योतति इत्यादि

कृत्सु—श्चोतनीयम्। श्चोतनम्। श्चोतः। श्चोतिता। श्चुतितः। श्चुत्तिः। श्चोतितव्यम्। श्चोतितुम्। श्चुतित्वा-श्चोतित्वा। श्चोत्यम्। श्चोतन्। श्चोतिष्यन्।

## (५२४) श्रन्थ् मोचने प्रतिहर्षे च क्र्यादि० पर० सक० सेट्।

कर्त्तरि—श्रथ्नाति, श्रथ्नीतः, श्रथ्नन्ति। श्रथ्नासि। सर्वं ग्रन्थवत्, ग-स्थाने श-मात्रभेदः।

ग्रन्थने वधे च विकल्पचुरादि० उभ० पक्षे भ्वादि० पर०

सक० सेट् ।--श्रन्थयति-ते । श्रन्थति । अशश्रन्थत्-त ।
अश्रन्थीत् ।

(५२५) श्रम् तपसि खेदे आयासे च दिवादि० पर० अक० सेट् इरित् शमादिः ।

कर्त्तरि—श्राम्यति । श्राम्येत् । श्राम्यतु । अश्राम्यत् । अश्रमत्-अश्रमीत् । शश्राम । श्रमिता । श्रम्यात् । श्रमिष्यति । भावे—श्रम्यते । अश्रमि । णिचि—श्रमयति-ते । अशिश्रमत्-त । सनि—शिश्रमिषति ।

वि—विश्राम, विश्राम्यति । भावे—व्यश्रमि-व्यश्रामि । आ—आश्रयकरण, आश्राम्यति ।

कृत्सु—श्रमः । श्रान्तः । उदित् क्त्वा वेट् ।—श्रान्त्वा-श्रमित्वा । श्रमितुम् ।

वि—विश्रमः, विश्रामः, विश्रान्तः । आ—आश्रमः । परि—परिश्रान्तः । परिश्रमः ।

(५२६) श्रा विक्लृत्तिरूपे पाके अदादि० पर० सक० अनिट् घटादिः ।

कर्त्तरि—श्राति । अश्रासीत् । शश्रे । श्राता । भावे—श्रायते । अश्रायि । णिचि—श्रपयति-ते । अशिश्रपत्-त ।

कृत्सु—श्राणम । णिचम्तु—श्रपणीयम् । श्रपणम् । श्रपयिता । श्रपितः । श्रपणा । श्रपयितव्यम् । श्रपयितुम् । श्रपयित्वा । श्रप्यम् । श्रपयन्-माणः । श्रपयिष्यन्-ष्यमाणः । ण्यन्त-कर्म्मणि—श्रप्यमाणः । श्रपिष्यमाणः ।

(५२७) श्रि सेवने भ्वादि० उभ० सक० सेट् ।

कर्त्तरि—श्रयति-ते । श्रयेत्-त । श्रयतु-ताम् । अश्रयत्-त ।

अशिश्रियत्-त। शिश्राय, शिश्रियतुः। शिश्रिये। श्रयितासि-से। श्रीयात्,श्रयिषीष्ट। श्रयिष्यति-ते। अश्रयिष्यत्-त। कर्म्मणि—श्रीयते। अश्रायि। णिचि—श्राययति-ते। अशिश्रयत्-त। सनि—शिश्रयिषति-ते, शिश्रीषति-ते। यङि—शेश्रीयते।

आ—आलम्बने, आश्रयति-ते। प्र—प्रागल्भ्ये, अक० प्रश्रयति। उत्—उच्चभवने, अक० उच्छ्रयति।

कृत्—श्रयणीयम्। श्रयणम्। श्रयः। आश्रयकः। आश्रयी। इनि— संश्रयी। श्रयिता। श्रितः। श्रितिः। श्रयितव्यम्। श्रयितुम्। श्रयित्वा। आश्रित्य। आश्रयम्। श्रयन् माणः। श्रयिष्यन्-ष्यमाणः। कर्म्मणि—श्रीयमाणः। ण्यन्त-कर्म्मणि—श्राययिष्यमाणश्च।

आ—आश्रयः। आश्रितः। प्र—प्रश्रयः। उत्—उच्छ्रितः। उच्छ्रयः। उच्छ्रायः।

## (५२८) श्रु श्रवणे भ्वादि० पर० सक० अनिट्।

कर्त्तरि (लटि)—शृणोति, शृणुतः, शृण्वन्ति। शृणोषि, शृणुथः, शृणुथ। शृणोमि, शृणुवः,-शृण्वः, शृणुमः,-शृण्मः।

लिङि—शृणुयात्, शृणुयाताम्, शृणुयुः। शृणुयाः, शृणुयातम्, शृणुयात। शृणुयाम्, शृणुयाव, शृणुयाम।

लोटि—शृणोतु, शृणुताम्, शृण्वन्तु। शृणु, शृणुतम्, शृणुत। शृणवानि, शृणवाव, शृणवाम।

लङि—अशृणोत्, अशृणुताम्, अशृण्वन्। अशृणोः, अशृणुतम्, अशृणुत। अशृणवम्, अशृणुव-अशृण्व, अशृणुम-अशृण्म।

लुङि—अश्रौषीत्, अश्रौष्टाम्, अश्रौषुः, अश्रौषीः, अश्रौष्टम्, अश्रौष्ट। अश्रौषम्, अश्रौष्व, अश्रौष्म।

लिटि—शुश्राव, शुश्रुवतुः, शुश्रुवुः । शुश्रविथ-शुश्रोथ, शुश्रुवथुः, शुश्रुव । शुश्राव शुश्रव, शुश्रुव, शुश्रुम ।

लुङादिषु—श्रोता, श्रोतारौ, श्रोतारः। श्रूयात्, श्रूयास्ताम्, श्रूयासुः । श्रोष्यति । श्रोष्यतः। श्रोष्यन्ति। अश्रोष्यत्, अश्रोष्यताम्, अश्रोष्यन् ।

कर्म्मणि—श्रूयते । अश्रावि, अश्राविषाताम् अश्रोषाताम् । णिचि—श्रावयति-ते । अशिश्रवत्-त, अशुश्रवत्-त । सनि—शुश्रूषते । णिचः-सनि—शु( शि )श्रावयिषति-ते । यङि—शोश्रूयते ।

प्रति—अङ्गीकारे, प्रतिशृणोति। आ—आशृणोति। सम्—संश्रवे, आत्म० अक० संशृणुते, संशृण्वाते, संशृण्वते ।

कृत्सु—श्रवणीयम् । श्रवणम् । श्रवः । आश्रावः । श्रावकः । अलि—श्रवः । श्रावी । श्रोता । ष्ट्रन्—श्रोत्रम् । श्रुतः । श्रुतिः । श्रोतव्यम् । श्रोतुम् । श्रुत्वा । उपश्रुत्य । श्रव्यम् । श्राव्यम् । शृण्वन् । श्रोष्यन् । कर्म्मणि—श्रूयमाणः । ण्यन्त-कर्म्मणि—श्रोष्यमाणः । श्राविष्यमाणः ।

## (५२९) श्लाघ् विकत्थने (आत्मगुणाविष्करणे) अक० प्रशंसने सक० भ्वादि० आत्म० सेट् ।

कर्त्तरि—श्लाघते। अश्लाघिष्ट। भावे—श्लाघ्यते। अश्लाघि। णिचि—श्लाघयति-ते। ऋदित् चङि न ह्रस्वः। अशश्लाघत्-त ।

कृत्सु—श्लाघनीयम्। श्लाघनम्। श्लाघकः। श्लाघी। श्लाघिता। श्लाघितः। श्लाघा। श्लाघितव्यम्। श्लाघितुम्। श्लाघित्वा। श्लाघ्यम्। श्लाघमानः। कर्म्मणि भावे च—श्लाघ्यमानः। श्लाघिष्यमाणः ।

(५३०) श्लिष् आलिङ्गने, सम्बन्धमात्रे, एक-शब्देनोभयार्थबोधने च दिवादि० पर० सक० अनिट् लृदित्।

कर्त्तरि—श्लिष्यति। श्लिष्येत्। श्लिष्यतु। अश्लिष्यत्। आलिङ्गने—अश्लिक्षत्। लृदित्—अश्लिषत्। श्लेष्टा। श्लेक्ष्यति। कर्म्मणि—श्लिष्यते। अश्लेषि, अश्लिक्षाताम्। णिचि—श्लेषयति-ते। अशिश्लिषत्-त।

प्र—प्रश्लेषे, प्राश्लिष्यत्।

कृत्सु—श्लेषणीयम्। श्लेषणम्। श्लेषः। श्लेषकः। श्लेषी। श्लेष्टा। श्लिष्टः। श्लिष्टिः। श्लेष्टव्यम्। श्लेष्टुम्। श्लिष्ट्वा। प्रश्लिष्य। श्लेष्यम्। श्लिष्यन्। श्लेक्ष्यन्। कर्म्मणि—श्लिष्यमाणः। श्लेक्ष्यमाणः।

प्र—प्रश्लेषे प्रश्लेषः। वि—विश्लेषे विश्लेषः। सं—संश्लेषे संश्लेषः।

(५३१) श्वस् प्राणने अदादिः पर० अक० सेट् रुदादिः।

कर्त्तरि—श्वसिति, श्वसितः, श्वसन्ति। श्वसिषि, श्वसिथः। श्वसिमि, श्वसिव। श्वस्यात्। श्वसितु, श्वसिताम्, श्वसन्तु। श्वसिहि। अश्वसत्-अश्वसीत्। अश्वसिताम्, अश्वसन्। अश्वसीः, अश्वसिष्टाम्, अश्वसिषुः। शश्वास। श्वसिता। श्वस्यात्। श्वसिष्यति। अश्वसिष्यत्। भावे—श्वस्यते। अश्वासि। णिचि—श्वासयति-ते। अशिश्वसत्-त। सनि—शिश्वसिषति। यङि—शाश्वस्यते।

वि—विश्वासे, विश्वसिति। आ—आश्वासे, आश्वसिति।

कृत्सु—श्वसनीयम्। श्वसनम्। श्वसनः। श्वासः। श्वासकः।

श्वासी । श्वसिता । श्वसितः । श्वस्तिः । श्वसितव्यम् । श्वसितुम् । श्वसित्वा । विश्वस्य । श्वासम् । श्वसन् । श्वसिष्यन् ।
वि—विश्वसितः, विश्वस्तः । आ—आश्वसितः, आश्वस्तः ।
प्रश्वासनिश्वासार्थे प्र—प्रश्वासः । नि—निश्वासः ।

## (५३२) श्वि गतौ सक० वृद्धौ अक० भ्वादि० पर० यजादिः सेट् ।

कर्त्तरि—श्वयति । श्वयेत् । श्वयतु । अश्वयत । अशिश्वियत्-अश्वत्-अश्वयीत् । अशिश्वियताम्-अश्वताम्-अश्वयिष्टाम् । शुशाव-शिश्वाय, शुशुवतुः-शिश्वियतुः । शुशविथ-शिश्वयिथ । श्वयिता । शूयात् । श्वयिष्यति । कर्म्मणि भावे च—शूयते । अश्वायि, अश्वायिषाताम्-अश्वयिषाताम् । णिचि—श्वाययति-ते । अशोश्वयत्-त, अशिश्वयत्-त । यङि—शोशूयते-शेश्वीयते ।
उत्—स्फीतताभवने अक० ।—उच्छ्वयति ।
कृत्सु—श्वयनीयम् । श्वयनम् । श्वयः । श्वायकः । अथु—श्वयथुः । श्वयिता । ओदित्—शूनः । शूतिः । श्वयितव्यम् । श्वयितुम् । श्वयित्वा । उच्छ्वय । श्वेयम् । श्वयन् । श्वयिष्यन् । कर्म्मणि—शूयमानः, श्वायिष्यमाणः, श्वयिष्यमाणश्च ।
उत्—उच्छूनः ।

## (५३३) ष्ठिव् निरसने ( श्लेष्मादेर्मुखेन वमने ) दिवादि० पर० सक० सेट् ।

कर्त्तरि—ष्ठीव्यति । ष्ठीव्येत् । अष्ठेवीत् । टिष्ठेव-तिष्ठेव । कर्म्मणि—ष्ठीव्यते । अष्ठेवि । णिचि—ष्ठेवयति-ते । अटिष्ठिवत्-त । अतिष्ठिवत्-त ।

भ्वादि० ष्ठिव् दिवादि० ष्ठीव् च उक्तार्थे, तेन ष्ठीवति । ष्ठीव्यति । अष्ठीवीत् ।

कृत्सु—ष्ठेवनीयम् । ष्ठेवनम् । ष्ठेवः । ष्ठेवकः । ष्ठेवी । ष्ठेविता । ष्ठ्यूतः । ष्ठ्यूतिः । ष्ठेवितुम् । ष्ठेवितव्यम् । उदित्—ष्ठेवित्वा-ष्ठ्यूत्वा । ष्ठेव्यम् । ष्ठीव्यन् । ष्ठेविष्यन् । कर्म्मणि—ष्ठीव्यमानः । ष्ठेविष्यमाणः ।

ल्युडादौ ष्ठीवनमित्यादि । नि—निष्ठीवनम् ।

## (५३४) सद् विषादे, ( आकुलीभावे ) अक० आश्रयकरणे हिंसायां गतौ च सक०, तुदादि० पर० अनिट् लृदित् षोपदेशः ।

कर्त्तरि—सीदति । सीदेत् । सीदतु । असीदत् । असदत् । ससाद, सेदतुः । सेदिथ-ससत्थ । सेदिव । सत्ता । सद्यात् । सत्स्यति । असत्स्यत् । कर्म्मणि भावे च—सद्यते । असादि । णिचि—सादयति-ते । असीषदत्-त । सनि—सिषत्सति । यङि—सासद्यते ।

प्र—प्रसादे, प्रसीदति । वि—विषादे, विषीदति । अव—अवसादे, अवसीदति । उत्—उन्मूलने, उत्सीदति । आ—नैकट्ये, आसीदति ।

चुरादिस्तु गतौ उभ० सक० सेट् । सादयति-ते । असीषदत्-त ।

कृत्सु—सदनीयम् । सदनम् । सादः । सादकः । सादी । सत्ता । सन्नः-सन्नवान् । सत्तिः । सत्तव्यम् । सत्तुम् । सत्त्वा । प्रसद्य । साद्यम् । सीदन् । सत्स्यन् । कर्म्मणि—सद्यमानः । सत्स्यमानः । अचि—सदः । मनिनि—सद्म ।

प्र—प्रसन्नः । प्रसादः । प्रासादः । वि—विषण्णः । विषादः ।

अव—अवसन्नः। अवसादः। उत्—उत्सन्नः। उत्सादः।
आ—आसन्नः। आसत्तिः। ज्वलादि०—सदः। सादः।

(५३५) सन्ज् सङ्गे सक० सम्बन्धे च अक० भ्वादि० पर० अनिट्।

कर्त्तरि—सजति। सजेत्। सजतु। असजत्। असाङ्क्षीत्। ससञ्ज, ससजतुः, ससञ्जतुः। सङ्क्ता। सज्यात्। सङ्क्ष्यति। भावे—सज्यते। असञ्जि। णिच—सञ्जयति-ते। अससञ्जत्-त। सनि—सिसङ्क्षति। यङ—सासज्यते।

प्र—प्रसङ्क्ते, प्रसजति। अनु—अनुषङ्क्ते, अनुषजति। अभि—अभिषङ्क्ते—(पराभवे) अभिषजति।

कृत्सु—सञ्जनीयम्। सञ्जनम्। सङ्गः। सञ्जकः। त्रिणुन्—सङ्गी। सङ्क्ता। सक्तः। सक्तिः। सङ्क्तव्यम्। सङ्क्तुम्। सक्त्वा। प्रसज्य। सञ्जम्। सजन्। सङ्क्ष्यन्।

प्र—प्रसङ्गः। अनु—अनुषङ्गः।

(५३६) सह् शक्तौ (क्षमायां) भ्वादि० आत्म० सक० सेट् षोपदेशः।

कर्त्तरि—सहते। सहेत। सहताम्। असहत, असहेताम्, असहन्त। असहिष्ट, असहिषाताम्, असहिषत। सेहे। सहितासे-सोढासे। सहिषीष्ट। कर्म्मणि—सह्यते असाहि। णिचि—साहयति-ते। असीषहत्-त। पर्य्यस-षहत्-त।

उत्—उत्साहे, उत्सहते।

कृत्सु—सहनीयम्। सहनम्। साहः। ज्वलादि० सहः, साहः। दुःखसहः। भारसह। दुःसहः। साहकः। साही। इष्णु—सहिष्णुः। सहिता-सोढा। सोढः। सोढिः। सहितव्यम्

सोढ़व्यम्। सहितुम्-सोढ़ुम्। सहित्वा-सोढ़्वा। मतान्तरे साढ़्वा। प्रसह्य। सह्यम्। सहमानः। कर्मणि—सह्यमानः। सहिष्यमाणः।

उत्—उत्साहः।

## (५३७) सान्त्व सान्त्वने अदन्तचुरादि उभ० सक० सेट् षोपदेशः।

कर्त्तरि—सान्त्वयति-ते। अससान्त्वत्-त। सान्त्वयाञ्चकार-ञ्चक्रे। सान्त्वयिष्यति। कर्म्मणि—सान्त्व्यते। असान्त्वि।

कृत्सु—सान्त्वनीयम्। सान्त्वनम्। सान्त्वयिता। सान्त्वितः। सान्त्वना। सान्त्वयितव्यम्। सान्त्वयितुम्। सान्त्वयित्वा। प्रसान्त्व्य। सान्त्व्यम्। सान्त्वयन्-मानः। सान्त्वयिष्यन्-ष्यमाणः। कर्मणि—सान्त्व्यमानः। सान्त्विष्यमाणः।

## (५३८) सि बन्धने स्वादि० पक्षे क्र्यादि० उभ० सक० अनिट् षोपदेशः।

कर्त्तरि—सिनोति-सिनाति, सिनुतः,-सिनीतः, सिन्वन्ति-सिनन्ति। सिनुते सिनीते। सिनुयात्-सिनीयात्। सिन्वीत-सिनीत। सिनोतु-सिनातु, सिनुताम्-सिनीताम्। असिनोत्-असिनात्। असिनुत-असिनीत। असैषीत्, असेष्ट। सिषाय। सिष्ये। सेतासि-से। सीयात्। सेषीष्ट। सेष्यति-ते। कर्म्मणि—सीयते। असायि। णिचि—साययति-ते। असीषयत्-त।

वि—विषये, विषिणोति-विषिणाति।

कृत्सु—सयनीयम्। सयनम्। सायः। सायकः। सायी। सेता। सितः। ग्रासे—सिनः। सितिः। सेतव्यम्। सेतुम्। सित्वा। प्रसित्य। सेयम्। सिन्वन्-सिन्वानः। सिनन्-

सिनानः। सेष्यन्-ष्यमाणः। कर्म्मणि—सीयमानः।
मायिष्यमाणः।

वि—विषयः।

## (५३९) सिच् सेचने, तुदादि० उभ० सक० अनिट् मुचादिः षोपदेशः।

कर्त्तरि—सिञ्चति, सिञ्चतः, सिञ्चन्ति। सिञ्चते। सिञ्चेत्-त। सिञ्चतु-ताम्। असिञ्चत-त। न्यषिञ्चत। असिचत्। असिचत-असिक्त। सिषेच, सिषिचे। निषिषेच, निषिषिचे। सेक्ता। सेक्तासि-से। सिच्यात्। सिक्षीष्ट। सेक्ष्यति-ते। कर्म्मणि—सिच्यते। असेचि। णिचि—सेचयति-ते। असीषिचत् त। सनि—सिसिक्षति। यङि—सेसिच्यते।

नि—निषेके, (गर्भाधाने) निषिञ्चति। अभि—अभिषेके, (मन्त्रपूर्व्वकस्नपनभेदे) अभिषिञ्चति। उत्—गर्व्वे, अक० उत्सिञ्चति।

कृत्सु—सेचनीयम्। सेचनम्। सेकः। सेचकः। सेची। सेक्ता। सिक्तः। सिक्तिः। सेक्तव्यम्। सेक्तुम्। सिक्त्वा। निषिच्य। सेच्यम्। सिञ्चन्-मानः। सेक्ष्यन्-क्ष्यमाणः। कर्म्मणि—सिच्यमानः।

नि—निषिक्तः। निषेकः। अभि—अभिषिक्तः। अभिषेकः। उत्—उत्सिक्तः। उत्सेकः।

## (५४०) सिध् (षिधू) सिद्धौ दिवादि० पर० अक० अनिट् षोपदेशः।

कर्त्तरि—सिध्यति। सिध्येत्। सिध्यतु। असिध्यत। असैत्सीत्। पाणिनिमते पुषादिः, तेन असिधत्। सिषेध। सेद्धा। सिध्यात्। सेत्स्यति। भावे—सिध्यते। असेधि। णिचि

अपारलौकिके अर्थे—साधयति-ते। पारलौकिके अर्थे—सेधयति-ते। असीषिधत्-त। सनि—सिषित्सति, णिचः सनि—सिषाधयिषति।

कृत्सु—सेधनीयम्। सेधनम्। सेधः। सेधकः। सेधी। सेद्धा। सिद्धः। सिद्धिः। सेद्धव्यम्। सेद्धुम्। क्त्वा-वेट्—सिधित्वा-सेधित्वा-सिद्ध्वा। संसिध्य। सेध्यम्। सिध्यन्। सेत्स्यन्। णिचस्तु—साधनीयम्। साधनम्। साधकः। साधयिता। साधितः। साधना। साधयितव्यम्। साधयितुम्। साधयित्वा। प्रसाध्य। साध्यम्। साधयन्-मानः। साधयिष्यन्-ष्यमाणः। कर्मणि—साध्यमानः। साधिष्यमाणः।

## (५४१) सिध् (षिधू) गतौ शासने च भ्वादि० पर० सक० माङ्गल्य अक० सेट्, षोपदेशः।

कर्त्तरि—सेधति। सेधेत्। सेधतु। असेधत्। असेधीत्-असैत्सीत्। सिषेध। सिषेधिथ-सिषेद्ध, सिषिधिव-सिषिध्व। सेधिता-सेद्धा। सिध्यात्। सेधिष्यति-सेत्स्यति। असेधिष्यत्-असेत्स्यत्। कर्म्मणि—सिध्यते। असेधि। णिचि—सेधयति-ते। असीषिधत्-त।

प्रति—निषेधे सक०, प्रतिषेधति। नि—निषेधे सक० निषेधति। आ—आसेधे (राजाज्ञयाऽवरोधे) सक०, आसेधति। उत्—उच्चतायाम् अक०, उत्सेधति।

कृत्सु—सेधनीयम्। सेधनम्। सेधकः। सेधी। सेधिता। सिद्धः। सिद्धिः। सेधितव्यम्-सेद्धव्यम्। सेधितुम्-सेद्धुम्। सेधित्वा-सिद्ध्वा। निषिध्य। सेध्यम्। सेधन्। सेधिष्यन्। कर्मणि—सिध्यमानः। सेधिष्यमाणः।

प्रति—प्रतिषिद्धः । प्रतिषेध. । नि—निषिद्धः । निषेधकः । निषेधः । आ—आसेधः । आसिद्धः । उत्—उत्सिद्धः । उत्सेधः ।

## (५४२) सिव् (षिवु) तन्तुसन्ताने दिवा० पर० सक० सेट् षोपदेशः ।

कर्त्तरि—सीव्यति । परिषीव्यति । सीव्येत् । सीव्यतु । असीव्यत् । असेवीत् । सिषेव । परिषिषेव । सेवितासि । सीव्यात् । कर्म्मणि—सीव्यते । असेवि । णिचि—सेवयति-ते । असीषिवत्-त । सनि—सिसेविषति-सिस्यूषति । यङि—सेषीव्यते । कृत्सु—सेवनीयम् । सेवनम्-सीवनम् । सेवकः । सेवी । सेविता । स्यूतः । स्यूतिः । सेवितव्यम् । सेवितुम् । सेवित्वा-स्यूत्वा । आसीव्य । सेव्यम् । सीव्यन् । सेविष्यन् । कर्म्मणि—सीव्यमानः । सेविष्यमाणः ।

## (५४३) सु मर्दने, स्नपने, मद्योत्पादने, मन्थने, स्नाने, सन्धाने, स्वादि० उभ० सक०, स्नाने अक० अनिट्, लुङि पर० सेट्, षोपदेशः ।

कर्त्तरि—सुनोति, सुनुतः, सुन्वन्ति । सुन्वः-सुनुवः । सुनुते । सुन्वे । सुनुयात्, सुन्वीत । सुनोतु, सुनुताम् । असुनोत्, असुनुत । असावीत्, असविष्ट-असोष्ट । सुषाव, सुषुवतुः । सुषविथ-सुषोथ । सुषुवे । सवितासि-से, सोतासि-से । सूयात्, सविषीष्ट-सोषीष्ट । सविष्यति-ते, सोष्यति-ते । असविष्यत्-त । असोष्यत्-त । कर्म्मणि—सूयते । असावि । णिचि—सावयति-ते । असूषवत्-त । सनि—सुसूषति-ते । यङि—सोषूयते ।

अभि—अभिषवे, अभिषुणोति सोमं निष्पीडयति स्नाति वेत्यर्थः।
भ्वादिस्तु गतौ, उभ० सक० अनिट्। सवति-ते। असौषीत्।
असोष्ट। परस्मैपदी तु प्रसवे ऐश्वर्ये च सवति इत्यादि।
अदादिरप्युक्तार्थ पर० सक० वेट्, लिटि नित्येट्।—सौति।
असावीत्-असौषीत्। सुषुविव इत्यादि।
कृत्सु—सवनीयम्। सवनम्। सवः। सावः। सावकः। सावी।
सविता-सोता। सुतः। सुतिः। सवितुम्-सोतुम्। सवितव्यम्-
सोतव्यम्। सुत्वा। अभिषुत्य। वनिप्—सुत्वा, सुत्वानौ।
सव्यम्। साव्यम्। सुन्वन्, सुन्वानः। सविष्यन्-ष्यमाणः,
सोष्यन्-माणः। कर्मणि—सूयमानः। साविष्यमाणः।
अभि—अभिषवः। अभिषुतः।

## (५४४) सू प्रसवे अदादि० आत्म० सक० वेट् षोपदेशः।

कर्त्तरि—सूते। सुवीत। सूताम्। सुवै, सुवावहै, सुवामहै।
असूत। असविष्ट-असोष्ट। सुषुवे। सुषुविषे। सविता-
सोता। सविषीष्ट-सोषीष्ट। सविष्यते-सोष्यते। कर्मणि—
सूयते। असावि। णिचि—सावयति-ते। असुषवत्-त।
सनि—सुषूषते।
कृत्सु—सवनीयम्। सवनम्। सवः। सावकः। सावी। सविता-
सोता। सूतः। सूतिः। सवितव्यम्-सोतव्यम्। सवितुम्-
सोतुम्। सूत्वा। प्रसूय। सव्यम्। साव्यम्। सुवानः। सविष्य-
माणः-सोष्यमाणः। कर्मणि—सूयमानः। साविष्यमाणः।

## (५४५) सू प्रसवे दिवादि० आत्म० सक० वेट्, षोपदेशः।

कर्त्तरि—सूयते। असविष्ट-असोष्ट। सुषुवे। सुषुविषे। सविता-

सोता। अन्यत् सर्वम् अदादिगणीयवत्। निष्ठायां—सूनः, सूनवान्। शानचि—सूयमान इति भेदः।

तुदादिस्तु क्षेपे प्रेरणे च पर० सक० सेट्।—सुवति। असावीत्।

## (५४६) सूच सूचने पैशुन्ये (अन्तर्द्रोहे) च अदन्तचुरादि० उभ० सक० सेट्।

कर्त्तरि—सूचयति-ते। असुसूचत्-त। सूचयाञ्चकार-ञ्चक्रे। सूचयिता। सूचयिष्यति। कर्मणि—सूच्यते। असूचि, असूचिषाताम्-असूचयिषाताम्।

कृत्सु—सूचनीयम्। सूच्यम्। सूचकः। सूची। सूचयिता। सूचितः। सूचना। सूचयितव्यम्। सूचयितुम्। सूचयित्वा। संसूच्य। सूच्यन्। सूचयन्-मानः। सूचयिष्यन्-ष्यमाणः। कर्मणि—सूच्यमानः। सूचिष्यमाणः। बहुच्कत्वान्न षोपदेशः।

## (५४७) सूद आश्रये हनने च चुरादि० उभ० अक० सेट् षोपदेशः, क्षरणे अदन्तचुरादि० अक० प्रतिज्ञायां निरासे च सक० उभ० सेट्।

कर्त्तरि—सूदयति-ते। असुषूदत्-त। कर्मणि—सूद्यते। असूदि, असूदिषाताम् असूदयिषाताम्।

मुग्धबोधादिमते पर०।—सूदयति इत्यादि।

भ्वादिस्तु निवारणे आत्म० मारणे पर० सक० सेट्।—सूदते। असूदिष्ट। सूदति। असूदीत्।

कृत्सु—सूदनीयम्। सूदनम्। मधुसूदनः। बलसूदनः। सूदकः। सूदी। सूदयिता। सूदितः। सूदना। सूदयितव्यम्। सूदयितुम्। सूदयित्वा। संसूद्य। सूद्यम्।

सूदयन्-मानः। सूदयिष्यन्-ष्यमाणः। कर्म्मणि—सूद्यमानः। सूदिष्यमाणः। नि—निषूदनम्।

## (५४८) सृ गतौ भ्वादि० पर० सक० अनिट् गर्य्युदासान्न षोपदेशः।

कर्त्तरि—सरति। सरेत्। सरतु। असरत्। असरत्, असार्षीत्। ससार। ससर्थ। सस्रुव। सर्त्तासि। स्रियात्। सरिष्यति। कर्म्मणि—स्रियते। असारि। णिचि—सारयति-ते। असीसरत्-त। सनि—सुसूर्षति।

चुरादिस्तु गतौ स्थितौ च उभ० सक० सेट्। सारयति-ते।

सृधातोर्धावादेशे धावति इत्यादि धाव-धातोः परस्मैपदि-प्रयोगवत्।

प्र—प्रसारे, प्रसरति। अप—अपसरणे, अपसरति। सम्—संसरणे, (स्वादृष्टजन्यदेहधारणे) संसरति। अनु—अनुसरणे, अनुसरति। वि—विस्तारे, विसरति। अभि—अभिसारे, (कान्तार्थितया सङ्केतस्थानगमने) अभिसरति। उत्—उत्सरणे, (दूरीभवने) अक० उत्सरति। णिचः,—उत्सारयति-ते।

कृत्सु—सरणीयम्। सरणम्। सरः। सारकः। सारी। सर्त्ता। सृतः। सृतिः। सर्त्तव्यम्। सर्त्तुम्। सृत्वा। उपसृत्य। सार्य्यम्। सरन्। सरिष्यन्। कर्म्मणि—स्रियमाणः। सरिष्यमाणः। सारिष्यमाणः।

प्र—प्रसृतः। प्रसृतिः। प्रसारः। अप—अपसृतः। अपसरणम्। अपसारः। सम्—संसृतिः। संसारः। अनु—अनुसृतः। अनुसरणम्। अनुसारः। वि—विसृतः। विसरणम्। विसारः। अभि—अभिसारः। अभिसारिका। उत्—उत्सृतः। उत्सारणम्। णिचः,—उत्सारितः। उत्सारणा।

## (५४९) सृज् विसर्गे तुदादि० पर० सक० अनिट्।

कर्त्तरि—सृजति। परिसृजति। सृजेत्। सृजतु। असृजत्। अस्राक्षीत्। ससर्ज। ससर्जिथ-सस्रष्ठ। ससृजिव। स्रष्टा। सृज्यात्। स्रक्ष्यति। कर्म्मणि—सृज्यते। असर्जि, असृक्षाताम्। णिचि—सर्जयति। असीसृजत्-त, अससर्जत्-त। सनि—सिसृक्षति।

अङ्गान्विते कर्त्तरि आत्मनेपदी दैवादिक-सृज्वत् सृज्यते इत्यादि। तनि चिण् च—असर्जि।

सम्—संसर्गे, दिवादि० अक०—संसृज्यते। उत्—दाने सक० उत्सृजति।

कृत्सु—सर्जनीयम्। सर्जनम्। सर्गः। त्रिणुन्—संसर्गी। स्रष्टा। सृष्टः। सृष्टिः। स्रष्टव्यम्। स्रष्टुम। सृष्ट्वा। विसृज्य। सर्ग्यम्। सृज्यम्। सृजन्। स्रक्ष्यन्। कर्म्मणि—सृज्यमानः। स्रक्ष्यमाणः।

उत्—उत्सर्गः। उत्सृष्टः।

## (५५०) सृप् गतौ भ्वादि० पर० सक० अनिट्।

कर्त्तरि—सर्पति। अभिसर्पति। सर्पेत्। सर्पतु। असर्पत्। अस्राप्सीत्-असार्प्सीत्-असृपत्। ससर्प। ससर्पिथ। ससृपिव। स्रप्ता-सर्प्ता। सृप्यात्। स्रप्स्यति-सर्प्स्यति। कर्म्मणि—सृप्यते। असर्पि, असर्पिषाताम्-असृप्साताम्। णिचि—सर्पयति-ते। असीसृपत्-त, अससर्पत्-त। सनि—सिसृप्सति। यङि—सरीसृप्यते।

उत्—उल्लङ्घने, (उत्थाने) उत्सर्पति। अप—अपयाने, अपसर्पति। सम्—समन्तात् गतौ व्याप्तौ च, संसर्पति।

कृत्सु—सर्पणीयम्। सर्पणम्। सर्पः। सर्पी। स्रप्ता-सर्प्ता।

सृप्तः। सृप्तिः। स्रप्तव्यम्-सर्प्तव्यम्। स्रप्तुम्-सर्प्तुम्। सृप्त्वा। संसृप्य। सृप्यम्। सर्पन्। स्रप्स्यन्-सर्प्स्यन्। कर्म्मणि—सृप्यमाणः। स्रप्स्यमानः,-सर्प्स्यमानः। यङः,—सरीसृपः।

## (५५१) सेव् सेवने भ्वादि॰ आत्म॰ सक॰ सेट्।

कर्त्तरि—सेवते। सेवेत। सेवताम्। असेवत। असेविष्ट। असेविष्ठाः। असेविषि। सिषेवे, सिषेविषे, सिषेविरे। सेविता। सेविषीष्ट। सेविष्यते। असेविष्यत। कर्म्मणि—सेव्यते। असेवि। णिचि—सेवयति। असिषेवत्। सनि—सिषेविषते। यङि—सेषेव्यते।

कृत्,—सेवनीयम्। सेवितव्यः। सेवितः। सेवित्वा। आसेव्य। सेवितुम्। सेवा।

## (५५२) सो नाशे दिवादि॰ पर॰ सक॰ अन्त-कर्म्मणि अक॰ अनिट् षोपदेशः।

कर्त्तरि—स्यति। परिष्यति। स्येत्। स्यतु। अस्यत्। असात्-असासीत्, असाताम्-असासिष्टाम्, असुः,-असासिषुः। ससौ। ससिथ-ससाथ। ससिव। साता। सेयात्। सास्यति। भावे कर्म्मणि च—सीयते। असायि, असायिषाताम्-असासाताम्। णिचि—साययति-ते। असीषयत्-त। सनि—सिषासति। यङि—सेषीयते।

अव—समाप्तौ, अवस्यति। वि+अव—उद्यमे बोधे च सक॰, व्यवस्यति। कर्म्मणि—व्यवसीयते। अनु+वि+अव—बुद्धस्य पुनर्बोधे, अनुव्यवस्यति।

कृत्—सानीयम्। सानम्। सायः। सायकः। सायी। साता। सितः। सितिः। सातव्यम्। सातुम्। सित्वा। अवसाय। सेयम्। स्यन्। सास्यन्।

अव—अवसायः । अवसानम् । वि+अव—व्यवसायः । अनु+वि+अव—अनुव्यवसायः ।

(५५३) स्कन्द् उत्प्लुत्य गतौ अक० उद्धृतौ आप्लवे च सक० भ्वादि० आत्म० सेट् इदित् ।

कर्त्तरि—स्कन्दते । अस्कन्दत । अस्कन्दिष्ट । चस्कन्दे । स्कन्दिता । अस्कन्दिष्यत ।

आ—आस्कन्दने, आप्लुत्य गतौ च, इदित्त्वात् न नलोपः ।—आस्कन्दते । आचस्कन्दे । आस्कन्द्यते । अव—अवरोधने, अवस्कन्दति ।

कृत्सु—आस्कन्दितम् । आस्कन्दः । स्कन्दितुम् । स्कन्दित्वा । आस्कन्द्य । आस्कन्दनम् ।

(५५४) स्कन्द् गतौ सक० शोषणे च अक० भ्वादि० पर० अनिट् ।

कर्त्तरि—स्कन्दति । स्कन्देत् । स्कन्दतु । अस्कन्दत् । इरित्—अस्कदत्-अस्कान्त्सीत् । चस्कन्द । स्कन्तासि । स्कद्यात् । स्कन्त्स्यति । कर्म्मणि—स्कद्यते । अस्कन्दि । चस्कदे-चस्कन्दे । णिचि—स्कन्दयति-ते । अचस्कन्दत्-त ।

अदन्तचुरादिस्तु समाहारे उभ० सक० सेट् ।—स्कन्दयति-ते ।

कृत्सु—स्कन्दनीयम् । स्कन्दनम् । स्कन्दः । स्कन्दौ । स्कन्दकः । स्कन्ता । स्कन्नम् । स्कन्तिः । स्कन्तव्यम् । स्कन्तुम् । स्कन्त्वा । आस्कन्द्य । स्कन्द्यम् । स्कन्दन् । कर्म्मणि—स्कद्यमानः ।

(५५५) स्खल् चले भ्वादि० पर० अक० सेट् वा घटादिः ।

कर्त्तरि—स्खलति । अस्खालीत् । चस्खाल । भावे—स्खल्यते । अस्खालि । णिचि—स्खलयति-ते, स्खालयति-ते ।

कृत्सु—स्खलनीयम्। स्खलनम्। स्खालः। स्खालकः। स्खलिता। स्खलितः। स्खलितव्यम्। स्खलितुम्। स्खलित्वा। स्खलन्। स्खलिष्यन्। कर्मणि—स्खल्यमानः। स्खलिष्यमाणः।

**(५५६) स्तन्भ् स्तम्भने सौत्रः, मतान्तरे क्र्यादि० पक्षे स्वादि० पर० सक० सेट्।**

कर्त्तरि—स्तभ्नाति-स्तभ्नोति, स्तभ्नीतः,-स्तभ्नुतः। स्तभ्नन्ति-स्तभ्नुवन्ति। स्तभ्नीयात्-स्तभ्नुयात्। स्तभ्नातु-स्तभ्नोतु। अस्तभ्नात्-अस्तभ्नोत्। अस्तभत्-अस्तम्भीत्। तस्तम्भ। तस्तभतुः, तस्तम्भतुः। स्तम्भिता। स्तभ्यात्। कर्मणि—स्तभ्यते। अस्तम्भि। णिचि—स्तम्भयति-ते। अतस्तम्भत्-त। वि-•-विष्टभ्नाति-विष्टभ्नोति। व्यष्टभत्। णिचः,—व्यतस्तम्भत्-त।

मुग्धबोधादिमते भ्वादि० आत्म० इदित् षोपदेशः।—स्तम्भते इत्यादि।

कृत्सु—स्तम्भनीयम्। स्तम्भनम्। स्तम्भः। स्तम्भकः। स्तम्भी। स्तम्भिता। स्तब्धः। स्तब्धिः। स्तम्भितव्यम्। स्तम्भितुम्। उदित्-क्त्वा-वेट्—स्तम्भित्वा-स्तब्ध्वा। स्तम्भम्। स्तभ्नन्-स्तभ्नुवन्। स्तम्भिष्यन्। कर्मणि—स्तभ्यमानः। स्तम्भिष्यमाणः।

**(५५७) स्तु (ष्टु) स्तवने अदादि० उभ० सक० अनिट्। सिचि सेट्, लिटि नित्येट्। मतान्तरे तादावार्द्धधातुके वेट्।**

कर्त्तरि—(लट्) स्तौति-स्तवीति, स्तुतः, मतान्तरे स्तुवीतः, स्तुवन्ति। स्तुते-स्तुवीते, स्तुवाते, स्तुवते।

(लिङि)—स्तुयात्-स्तुवीयात, स्तुयाताम् स्तुवीयाताम्। स्तुयुः, स्तुवीयुः। स्तुवीत, स्तुवीयाताम, स्तुवीरन्।

(लोटि)—स्तौतु-स्तवीतु, स्तुताम्-स्तुवीताम्, स्तुवन्तु। स्तुताम्-स्तुवीताम, स्तुवाताम्, स्तुवताम्।

(लङि)—अस्तवीत्-अस्तौत्, न्यस्तौत्-न्यष्टौत्। एवं वेः परेश्च। अस्तुवीताम्-अस्तुताम्, अस्तुवन्। अस्तुत-अस्तुवीत, अस्तुवाताम, अस्तुवत।

लुङादिषु—अस्तावीत। (मतान्तरे) अस्तौषीत्। अस्तोष्ट। तुष्टाव। तुष्टवतुः। तुष्टोथ। तुष्टुव। तुष्टुवे। स्तविताऽस्मि-से, स्तोतास्मि-से। स्तूयात्, स्तोषीष्ट। स्तोष्यति-ते। कर्मणि—स्तूयते। अस्तावि। णिचि—स्तावयति-ते। अतुष्टवत्-त। सनि—तुष्टूषति-ते। यङि—तोष्टूयते।

प्र—प्रस्तावे, प्रस्तवीति-प्रस्तौति। पाणिनीयमते प्रणौति, मुग्धबोधादिमते अ-पिति नेट्—स्तुते इत्यवेति भेदः।

कृत्सु—स्तवनीयम्। स्तवनम्। स्तवः। स्तावकः। स्तावी। स्तविता-स्तोता। स्तुतः। परिष्टुतः। स्तुतिः। स्तवितव्यम्-स्तोतव्यम। स्तुत्वा। प्रस्तुत्य। स्तुत्यम। स्तुवन्। स्तोष्यन्-ष्यमाणः। कर्मणि—स्तूयमानः। स्ताविष्यमाणः।

प्र—प्रस्तावः। प्रस्तावना। प्रस्तुतः।

## (५५८) स्तृ आवरणे विस्तारे च स्वादि० उभ० सक० प्रीतौ पर० अक० रक्षणे सक० अनिट् पर्युदासान्न षोपदेशः।

कर्त्तरि—स्तृणोति-स्तृणुते, स्तृणुतः-स्तृण्वाते, स्तृण्वन्ति-स्तृण्वते। स्तृणुः, स्तृणुतः। स्तृणुयात्-स्तृण्वीत। स्तृणोतु-स्तृणुताम्। अस्तृणोत्-अस्तृणुत। अस्तार्षीत्, अस्तृत-अस्तरिष्ट।

तस्तार-तस्तरे। तस्तरतुः। तस्तरिथ-तस्तर्थ। तस्तरिव। स्तर्त्तासि-से। स्तर्य्यात्-स्तरिषीष्ट-स्तृषीष्ट। स्तरिष्यति-ते। कर्म्मणि—स्तर्य्यते। अस्तारि. अस्तारिषाताम् अस्तृषाताम्। णिचि—स्तारयति-ते। अतिस्तरत्-त, अतस्तरत्-त। सनि—तिस्तीर्षति-ते। यङि—तास्तर्य्यते।

कृत्सु—स्तरणीयम्। स्तरणम्। स्तरः। विष्टरः,—आसने। संस्तरः। संस्तृतः। अवस्तरः। विस्तरः,—शब्दसमूहे, अन्यत्र विस्तारः। स्तारकः। स्तारी। स्तर्त्ता। स्तृतः। स्तृतिः। स्तर्त्तव्यम्। स्तृत्वा। विस्तृत्य। स्तार्य्यम्। स्तृतवन्। स्तृतवानः। स्तरिष्यन्-ष्यमाणः। कर्म्मणि—स्तर्य्यमाणः। स्तारिष्यमाणः।

## (५५९) स्तॄ आच्छादने क्र्यादि॰ स्वादि॰ उभ॰ सक॰ सेट्।

कर्त्तरि—स्तृणाति-स्तृणीते। स्तृणीयात्-स्तृणीत। स्तृणातु-स्तृणीताम्। अस्तृणात्-अस्तृणीत। अस्तारीत्, अस्तरीष्ट-अस्तरिष्ट-अस्तीर्ष्ट।

अयं षोपदेश एव न्याय्यः। वि—विस्तारि,—विस्तृणाति। सम्—संस्तरि.—संस्तृणाति।

कृत्सु—स्तीर्णः। स्तीर्त्वा। स्तरितव्यः-स्तरीतव्यः। स्तरितुम्-स्तरीतुम्।

वि—विस्तरः। सम्—संस्तृतः।

## (५६०) स्था गतिनिरोधे भ्वादि॰ पर॰ अक॰ अनिट् षोपदेशः।

कर्त्तरि—तिष्ठति, तिष्ठतः, तिष्ठन्ति। तिष्ठसि। तिष्ठामि। तिष्ठेत्। तिष्ठेः। तिष्ठेयम्। तिष्ठतु। तिष्ठ। तिष्ठानि।

अतिष्ठत्। अतिष्ठः। अतिष्ठम्। अस्थात्, व्यष्ठात्, अस्थाताम्, अस्थुः। अस्थाः। अस्थाम्। तस्थौ, नितष्ठौ, तस्थतुः, तस्थुः। तस्थिथ-तस्थाथ, तस्थथुः। स्थाता। स्थेयात्। स्थास्यति। अस्थास्यत्। भावे—स्थीयते। अस्थायि। णिचि—स्थापयति-ते। निष्ठापयति। अतिष्ठिपत्-त। सनि—तिष्ठासति। यङि—तेष्ठीयते।

प्रतिज्ञायाम्, निर्णयार्थावलम्बने, स्वाभिप्रायप्रकाशने च आत्म० "पृथिव्यां गन्धमातिष्ठते", प्रतिजानीते इत्यर्थः। "विवादे संशय्य तिष्ठते", निर्णयार्थमवलम्बते। "पत्ये तिष्ठते कामिनी" पतिमुद्दिश्य स्वाभिप्रायं प्रकाशयति। सम्-वि-अव—आत्म०—संतिष्ठते। वितिष्ठते। अवतिष्ठते। प्र—प्रस्थाने, आत्म० प्रतिष्ठते। प्रति—प्रतिष्ठायां, प्रतितिष्ठति। अधि—अधिष्ठाने, अक० अधितिष्ठति। उत्—उत्थाने, उत्तिष्ठति। अनूर्द्ध्वचेष्टायान्तु आत्म०—"विद्यायामुत्तिष्ठते" यतते इत्यर्थः।

उपपूर्व्वकोऽयं सकर्म्मकः।—गुरुमुपतिष्ठते शिष्यः। लिप्सार्थे उभ०।—अर्थी धनिनमुपतिष्ठते उपतिष्ठति वा।

कृत्—स्थानीयम्। स्थानम्। स्थायः। स्थायी। स्थाता। स्थितः। स्थितिः। आस्था। स्थातव्यम्। स्थातुम्। स्थित्वा। उत्थाय। स्थेयम्। तिष्ठन्। स्थास्यन्। क्वसु—तस्थिवान्। वितष्ठिवान्। स्नु—स्थास्नुः।

प्र—प्रस्थानम्। प्रति—प्रतिष्ठितः। प्रतिष्ठा। सम्—संस्थितः। संस्था। अव—अवस्थानम्। अवस्था। अनु—अनुष्ठानम्। अधि—अधिष्ठितः। अधिष्ठानम्। उत्—उत्थितः। उत्थानम्।

(५६१) स्ना शोधने अदादि० पर० अक० अनिट् षोपदेशः।

कर्त्तरि—स्नाति। अभिस्नाति। स्नायात्। स्नातु। स्नाहि। स्नानि। अस्नात्। अस्नासीत्। अस्नासीः। अस्नासिषम्। सस्नौ। सस्निथ-सस्नाथ। स्नाता। स्नेयात्-स्नायात्। स्नास्यति। अस्नास्यत्। भावे—स्नायते। अस्नायि। णिचि—स्नापयति-ते। वा घटादित्वे—स्नपयति-ते। असिष्णपत्। सनि—सिष्णासति। यङि—सास्नायते।

कृत्—स्नानीयम्। स्नानम्। स्नायः। स्नायकः। स्नायी। स्नाता। स्नातः। अभिस्नातः। "निष्णातः, नदीष्णातः" द्वावेतौ कुशले। स्नातिः। स्नातव्यम्। स्नातुम्। स्नात्वा। उपस्नाय। स्नेयम्। स्नान्। स्नास्यन्।

(५६२) ष्णिह् प्रीतौ दिवादि० पर० सक० ऊदित् वेट् षोपदेशः।

कर्त्तरि—स्निह्यति। परिस्निह्यति। स्निह्येत्। स्निह्यतु। अस्निह्यत्। लुङि—अस्निहत्। सिष्णेह। स्नेहिता-स्नेढा-स्नेग्धा। स्निह्यात्। स्नेहिष्यति-स्नेक्ष्यति। भावे—स्निह्यते। अस्नेहि। णिचि—स्नेहयति-ते। असिष्णिहत्-त।

चुरादिस्तु स्नेहयुक्तभक्ते उभ० सक० सेट्।—स्नेहयति-ते इत्यादि।

कृत्—स्नेहनीयम्। स्नेहनम्। स्नेहः। स्नेही। स्नेहिता-स्नेढा स्नेग्धा। स्नीढः-स्निग्धः। स्नेहितव्यम्-स्नेढव्यम्-स्नेग्धव्यम्। स्नेढुम्-स्नेग्धुम्। संस्निह्य। स्नेह्यम्। स्निह्यन्। स्नेहिष्यन्-स्नेक्ष्यन्। उद्+क्विप् नि०—उष्णिक्।

(५६३) स्नु प्रस्रवणे अदादि० पर० अक० सेट् षोपदेशः।

कर्त्तरि—स्नौति। परिस्नौति। स्नुतः, स्नुवन्ति। स्नुयात्। स्नौतु। अस्नौत्। अस्नावीत्। सुष्णाव। सुष्णविथ। सुष्णुविव। स्नविता। स्नूयात्। स्नविष्यति। भावे—स्नूयते। अस्नावि। णिचि—स्नावयति-ते। असुष्णवत्-त।

कृत्सु—स्नवनीयम्। स्नवनम्। स्नवः। स्नावकः। स्नावी। स्नविता। स्नुतः। परिस्नुतः। स्नुतिः। स्नवितव्यम्। स्नवितुम्। स्नुत्वा। अपस्नुत्य। स्नाव्यम्। स्नव्यम्। स्नुवन्। स्नविष्यन्।

(५६४) स्पन्द् ईषत्कम्पे भ्वादि० आत्म० अक० सेट्।

कर्त्तरि—स्पन्दते। अस्पन्दिष्ट। पस्पन्दे। स्पन्दिता। स्पन्दिषीष्ट। स्पन्दिष्यते। भावे—स्पद्यते। अस्पन्दि। णिचि—पर० स्पन्दयति। अपस्पन्दत्।

नि—निस्पन्दे, निस्पन्दते। परि—समन्तात् स्पन्दने—परिस्पन्दते।

कृत्सु—स्पन्दनीयम्। स्पन्दनम्। स्पन्दः। स्पन्दकः। स्पन्दी। स्पन्दिता। स्पन्दितः। स्पन्दा। स्पन्दितव्यम्। स्पन्दितुम्। स्पन्दित्वा। निस्पद्य। स्पन्द्यम्। स्पन्दमानः। स्पन्दिष्यमाणः।

नि—निस्पन्दः। परि—परिस्पन्दः।

(५६५) स्पर्द्ध् संघर्षे (पराभिभवेच्छायाम्) भ्वादि० आत्म० अक० सेट्।

कर्त्तरि—स्पर्द्धते। स्पर्द्धेत। स्पर्द्धताम्। अस्पर्द्धत। अस्पर्द्धिष्ट।

पस्पर्द्धे। स्पर्द्धिष्यते। भावे—स्पर्द्ध्यते। अस्पर्द्धि। णिचि—स्पर्द्धयति-ते। अपस्पर्द्धत्-त। सनि—पिस्पर्द्धिषते। यङि—पास्पर्द्ध्यते।

आङ्—आस्फालने, आस्पर्द्धते। वि—विस्पर्द्धते।

कृत्सु—स्पर्द्धनीयम्। स्पर्द्धनम्। स्पर्द्धः। स्पर्द्धकः। स्पर्द्धी। स्पर्द्धिता। स्पर्द्धितः। स्पर्द्धा। स्पर्द्धितव्यम्। स्पर्द्धितुम्। स्पर्द्धित्वा। आस्पर्द्ध्य। स्पर्द्ध्यम्। स्पर्द्धमानः। स्पर्द्धिष्यमाणः।

आ—आस्पर्द्धा। वि—विस्पर्द्धा।

## (५६६) स्पृश् स्पर्शने तुदादि० पर० सक० अनिट्।

कर्त्तरि—स्पृशति। स्पृशेत्। स्पृशतु। अस्पृशत्। अस्प्राक्षीत्-अस्पार्क्षीत् अस्पृक्षत्। पस्पर्श। पस्पृशतुः। पस्पर्शिथ। पस्पृशिव। स्प्रष्टा-स्पर्ष्टा। स्पृश्यात्। स्प्रक्ष्यति-स्पर्क्ष्यति। अस्प्रक्ष्यत्-अस्पर्क्ष्यत्। कर्म्मणि—स्पृश्यते। अस्पर्शि। णिचि—स्पर्शयति-ते। अपस्पृशत्-त, अपस्पर्शत्-त। णिजन्तस्तु दानार्थेऽपि। सनि—पिस्पृक्षति। मुग्धबोधादिमते पिस्प्रक्षति-पिस्पर्क्षति। यङि—परीस्पृश्यते।

उप—आचमने, उपस्पृशति।

कृत्सु—स्पर्शनीयम्। स्पर्शनम्। णिचः,—स्पर्शनम्, दानमित्यर्थः। स्पर्शः। स्पर्शकः। स्पर्शी। स्प्रष्टा-स्पर्ष्टा। स्पृष्टः। स्पृष्टिः। स्प्रष्टव्यम्-स्पर्ष्टव्यम्। स्प्रष्टुम्-स्पर्ष्टुम्। स्पृष्ट्वा। संस्पृश्य। स्पृश्यम्। स्पृशन्। स्प्रक्ष्यन्-स्पर्क्ष्यन्। कर्म्मणि—स्पृश्यमानः। स्प्रक्ष्यमाणः,-स्पर्क्ष्यमाणः।

उप—उपस्पृश्य, आचम्य इत्यर्थः। मन्त्रस्पृक्। उदकस्पर्शः।

## (५६७) स्पृह इच्छायाम् अदन्तचुरादि० उभ० सक० सेट्।

कर्त्तरि—स्पृहयति-ते। स्पृहयेत्-त। स्पृहयतु-ताम्। अस्पृहयत्-त। अपस्पृहत्-त। स्पृहयाञ्चकार-ञ्चक्रे-मास-म्बभूव। कर्म्मणि—स्पृह्यते। अस्पृहि।

कृत्सु—स्पृहणीयम्। स्पृहणम्। स्पृहकः। स्पृहयिता। स्पृहितः। क्तिन् नास्ति, अ—स्पृहा। स्पृहयितव्यम्। स्पृहयितुम्। स्पृहयित्वा। उपस्पृह्य। स्पृह्यम्। स्पृहयन्-माणः। स्पृहयिष्यन्-ष्यमाणः। कर्म्मणि—स्पृह्यमाणः। स्पृहिष्यमाणः।

## (५६८) स्फुट् विदारणे प्रकाशे च तुदादि० पर० अक० सेट् कुटादिः।

कर्त्तरि—स्फुटति। अस्फुटीत। पुस्फोट। भावे—स्फुट्यते। अस्फोटि। णिचि—स्फोटयति-ते।

भ्वादिस्तु विकाशे पर०, स्फोटति। इरित्—अस्फुटत्-अस्फोटीत्। विदलने आत्म० अक० सेट्।—स्फोटते। अस्फोटिष्ट। चुरादिश्च भेदे उभ० सक० सेट्—स्फोटयति-ते। परीहासे अक० उभ० सेट् इदित्।—स्फुण्टयति-ते। हिंसायान्तु उभ० सक० सेट्। प्रायेणाङ् पूर्वः।—आस्फाटयति-ते। आपुस्फुटत्-त। अदन्तचुरादिस्तु विकाशे, उभ० सक० सेट्।—स्फुटयति-ते। अपुस्फुटत्-त।

कृत्सु—स्फुटनीयम्। स्फुटनम्। स्फोटः। स्फोटकः। स्फोटी। स्फुटिता। स्फुटितः। स्फुटिः। स्फुटितव्यम्। स्फुटितुम्। स्फुटित्वा। संस्फुट्य। स्फुटन्। स्फुटिष्यन्।

(५६९) स्फुर् स्फूर्त्तौ तुदादि० पर० अक० सेट् कुटादिः।

कर्त्तरि—स्फुरति। सर्वं स्फुट्वत्। नि-वि वा षत्वम्, निष्फुरति-निस्फुरति। विष्फुरति विस्फुरति इति भेदः। एवं स्फुल्।

(५७०) स्मि विस्मये भ्वादि० आत्म० अक० अनिट् षोपदेशः।

कर्त्तरि—स्मयते। विस्मयते। अस्मेष्ट। सिष्मिये। भावे—स्मीयते। अस्मायि। णिचि—स्माययति। प्रयोजककर्त्तृतो विस्मये, आत्म० अच्-आत्-पुक् च—विस्मापयते।

चुरादिस्तु अनादरे सक० विस्मये अक० आत्म० सेट्। स्मापयते। असिष्मपत्।

कृत्सु—स्मयनीयम्। स्मयनम्। स्मयः। स्मायकः। इनि—स्मयी। विस्मयी। स्मेता। स्मितः। स्मितिः। स्मेतव्यम्। स्मित्वा। विस्मित्य। स्मेयम्। स्मयमानः। स्मेष्यमाणः।

(५७१) स्मृ स्मरणे भ्वादि० पर० सक० अनिट् घटादिर्वा।

कर्त्तरि—स्मरति। स्मरसि। स्मरामि। स्मरेत्। स्मरेः। स्मरेयम्। स्मरतु। स्मर। स्मराणि। अस्मरत्। अस्मरः। अस्मरम्। अस्मार्षीत्, अस्मार्ष्टाम्। अस्मार्षीः, अस्मार्ष्टम। अस्मार्षम्, अस्मार्ष्व। सस्मार, सस्मरतुः। सस्मर्थ। सस्मरिव। स्मर्त्ता। स्मर्य्यात्। स्मरिष्यति। अस्मरिष्यत्। कर्म्मणि—स्मर्य्यते। अस्मारि, अस्मारि। णिचि—स्मारयति-ते। अस-स्मरत्-त। घटादिपक्षे स्मरयति इति भेदः। सनि—सुस्मूर्षते, अषोपदेशत्वान्न षत्वम्। यङि—सास्मर्य्यते।

वि—विस्मरणे, विस्मरति।

कृत्सु—स्मरणीयम् । स्मरणम् । स्मरः । स्मारकः । स्मारी । स्मर्त्ता । स्मृतः । स्मृतिः । स्मर्त्तव्यम् । स्मर्त्तुम् । स्मृत्वा । विस्मृत्य । स्मार्य्यम् । स्मरन् । स्मरिष्यन् । कर्म्मणि— स्मर्य्यमाणः । स्मारिष्यमाणः,-स्मरिष्यमाणश्च ।

वि—विस्मृतिः । विस्मरणम् ।

## (५७२) स्यन्द् चरणे भ्वादि० आत्म० अक० ऊदित् वेट् वृतादिः लुङि लृटि लृङि च उभ० ।

कर्त्तरि—स्यन्दते, निष्यन्दते-निस्यन्दते घृतम् । एवं परि-नि-वि-अभि-अनु वा षत्वम् । निस्यन्दते हस्ती । निस्यन्दते मत्स्योदके । लृदित्—अस्यदत् । अस्यन्दिष्ट-अस्यन्त । सस्यन्दे सस्यन्दे । स्यन्दितासे-स्यन्तासे । स्यन्दिषीष्ट-स्यन्त्सीष्ट । स्यन्त्स्यति-स्यन्दिष्यते । अस्यन्त्स्यत्-अस्यन्दिष्यत । भावे—स्यद्यते । अस्यन्दि । णिचि—स्यन्दयति-ते । असिस्यन्दत्-त ।

कृत्सु—स्यन्दनीयम् । स्यन्दनम् । स्यन्दः । स्यन्दकः । स्यन्दी । निष्यन्दी । स्यन्दिता स्यन्ता । स्यन्नः । स्यन्तिः । स्यन्दितव्यम्-स्यन्तव्यम् । स्यन्दितुम् स्यन्तुम् । स्यन्दित्वा-स्यन्त्वा । निष्यन्द्य । स्यन्द्यम् । स्यन्दमानः । स्यन्त्स्यन् । स्यन्दिष्यमाणः ।

## (५७३) स्रन्स् भ्रंशे प्रसादे च भ्वादि० आत्म० अक० सेट् लुङि उभ० ।

कर्त्तरि—स्रंसते । इरित्—अस्रसत्-अस्रंसिष्ट । सस्रंसे-सस्रंसे । स्रंसिषीष्ट । स्रंसिष्यते । भावे—स्रस्यते । अस्रंसि । णिचि—स्रंसयति-ते । असस्रंसत्-त ।

कृत्सु—स्रंसनीयम् । स्रंसनम् । स्रंसः । स्रंसकः । स्रंसी । स्रंसिता । स्रस्तः । स्रस्तिः । स्रंसितुम् । स्रंसितव्यम् । उदित्-क्त्वा-वेट्

—स्रंसित्वा-स्रस्त्वा। विस्रस्य। स्रस्यम्। स्रंसमानः। स्रंसिष्यमाणः।

## (५७४) स्वन् शब्दे भ्वादि॰ पर॰ अक॰ सेट्।

कर्त्तरि—स्वनति। अस्वानीत्-अस्वनीत्। फणादिः,—स्वेनतुः,-सस्वनतुः। भूषणे वा घटादि॰। णिचि—स्वनयति-स्वानयति। अदन्तचुरादिस्तु ध्वाने उभ॰ अक॰ सेट्।—स्वनयति-ते। असस्वनत्-त।

कृत्सु—स्वनितम्। स्वनितुम्। स्वनित्वा। नि—निस्वनः।

## (५७५) स्वन्ज आलिङ्गने भ्वादि॰ आत्म॰ सक॰ अनिट् षोपदेशः।

कर्त्तरि—स्वजते, विष्वजते। अस्वङ्क्त, न्यष्वङ्क्त-न्यस्वङ्क्त। एवं वेः। सस्वजे-सस्वञ्जे। विषस्वजे। स्वङ्क्तासे। स्वङ्क्षीष्ट। स्वङ्क्ष्यते। कर्म्मणि—स्वज्यते। अस्वञ्जि। णिचि—स्वञ्जयति-ते। असस्वञ्जत्-त।

कृत्सु—स्वञ्जनीयम्। स्वञ्जनम्। स्वङ्गः। निष्वङ्गः। स्वञ्जकः। घिणुन्—परिष्वङ्गी। स्वङ्क्ता। स्वक्तः। स्वङ्क्तव्यम्। स्वङ्क्तुम्। स्वक्त्वा। परिष्वज्य। स्वजमानः। कर्म्मणि—स्वज्यमानः। स्वङ्क्ष्यमाणः।

## (५७६) स्वप् शयने निद्रायाञ्च अदादि॰ पर॰ अक॰ अनिट् रुदादिः।

कर्त्तरि—स्वपिति, स्वपितः, स्वपन्ति। स्वपिषि, स्वपिथः, स्वपिथ। स्वपिमि, स्वपिवः। स्वप्यात्। स्वपितु, स्वपिताम्, स्वपन्तु। स्वपिहि। अस्वपीत्-अस्वपत्, अस्वपिताम्, अस्वपन्। अस्वपीः,-अस्वपः। अस्वाप्सीत्। अस्वाप्सीः। अस्वाप्सम्। सुष्वाप, सुषुपतुः। विषुष्वाप, विषुषुपतुः। सुष्वपिथ-

सुष्वपथ । सुषुपिव । सुषुप्म । सुप्यात् । स्वप्स्यति । भावे—
सुप्यते । अस्वापि । णिचि—स्वापयति ते । असूषुपत्-त ।
सनि—सुषुप्सति । णिचः सनि—सुष्वापयिषति ते ।
कृत्सु—स्वपनीयम् । स्वपनम् । स्वापः । स्वापकः । स्वापी । स्वप्ता ।
सुप्तः । सुषुप्तः । सुप्तिः । स्वप्तव्यम् । स्वप्तुम् । सुप्त्वा । विषुप्य ।
स्वप्यम् । स्वपन् । स्वप्स्यन् । न—स्वप्नः । नज्—स्वप्नक् ।

## (५१७) हन् हिंसायां गतौ च अदादि० पर० सक० अनिट् ।

कर्त्तरि—लटि—हन्ति, प्रणिहन्ति, हतः, घ्नन्ति । हंसि, हथः, हथ । हन्मि, हन्वः, हन्मः; प्रहण्वः,-प्रहन्वः; प्रहण्मः,-प्रहन्मः ।

लिङि—हन्यात्, हन्याताम्, हन्युः । हन्याः, हन्यातम्, हन्यात । हन्याम्, हन्याव, हन्याम ।

लोटि—हन्तु, हताम्, घ्नन्तु । जहि, हतम्, हत । हनानि, हनाव, हनाम ।

लङि—अहन्, अहताम्, अघ्नन् । अहन्, अहतम्, अहत । अहनम्, अहन्व, अहन्म ।

लुङि—अवधीत्, अवधिष्टाम्, अवधिषुः । अवधीः, अवधिष्टम्, अवधिष्ट । अवधिषम्, अवधिष्व, अवधिष्म ।

लिटि—जघान, जघ्नतुः, जघ्नुः । जघनिथ-जघन्थ, जघ्नथुः, जघ्न । जघान-जघन, जघ्निव, जघ्निम ।

लुटि—हन्ता । हन्तासि । हन्तास्मि ।

आशीर्लिङि—वध्यात्, वध्यास्ताम्, वध्यासुः । वध्याः, वध्यास्तम्, वध्यास्त । वध्यासम्, वध्यास्व, वध्यास्म ।

लृटि—हनिष्यति ।

लृङि—अहनिष्यत्। अहनिष्यः। अहनिष्यम्।

कर्मणि—हन्यते। अवधि-अघानि। अवधिषाताम्-अघानिषाताम्-अहसाताम्। जघ्ने। घानिता-हन्ता। वधिषीष्ट-घानिषीष्ट। घानिष्यते-हनिष्यते। णिचि—घातयति-ते। अजीघतत्-त। सनि—जिघांसति। यङि—जङ्घन्यते-जेघ्नीयते।

परा—पराहन्ति, पराघ्नन्ति। सम्—सङ्घन्ति, संघ्नन्ति। वि—विघ्नन्ति, विघ्नन्ति। कर्मणि—विहन्यते। उत्—उद्धन्ति, उद्घ्नन्ति। प्रति—प्रतिघ्नन्ति, प्रतिघ्नन्ति। कर्मणि—प्रतिहन्यते। अभि-आ—आघाते, अभ्याघ्नन्ति। आ—आघ्नन्ति। आङ्पूर्वकः स्वाङ्गकर्मणि अकर्मकत्वे च आत्म०। वक्ष आहते। वि+आ—व्याघाते, व्याघ्नन्ति।

कृत्सु—हननीयम्। हननम्। वधः। घातः। ड—तमोपहः। शोकापहः। क—शत्रुघ्नः। रोगघ्नः। घातकः। घाती। तृच्—घातुकः। हन्ता। हतः। हतिः। हन्तव्यम्। हन्तुम्। हत्वा। प्रहत्य। घात्यम्। घ्नन्। शत्रुं निघ्नानः। हनिष्यन्। कर्मणि—हन्यमानः। घानिष्यमाणः,-हनिष्यमाणः। क्विप्—वृत्रहा। क्वसु—जघ्निवान्-जघन्वान्।

परा—पराहतः। पराहतिः। सम्—संहतः। संहतिः। सङ्घातः। वि—विहतः। विघातः। उत्—उद्धतः। उद्घातः। प्रति—प्रतिहतः। प्रतिघातः। अभि—अभिहतः। अभिघातः। आ—आहतः। आघ्रातः। वि+आ—व्याहतः। व्याघातः।

(५७८) हस् हासे भ्वादि० पर० अक० सेट् एदित् सिचि न वृद्धिः।

कर्त्तरि—हसति। हसेत्। हसतु। अहसत्। अहसीत्।

जहास। जहसिथ। हसिता। हसिष्यति। भावे—हस्यते। अहासि। णिचि—हासयति-ते। अजीहसत्-त। सनि—जिहसिषति। यङि—जाहस्यते।

उप—उपहासे, ( हास्यपूर्वकनिन्दने ) सक० उपहसति।

कृत्सु—हसनीयम्। हसनम्। हासः। हासकः। हसिता। हसितः। हस्ति। हसितव्यम्। हसितुम्। हसित्वा। उपहस्य। हास्यम्। हसन्। हासयन्। उप—उपहास्यः। उपहसितः।

## (५७९) हा त्यागे जुहो० पर० सक० अनिट्।

कर्त्तरि—जहाति, जहितः,-जहीतः, जहति। जहासि, जहिथः,-जहीथः, जहिथ-जहीथ। जहामि, जहिवः,-जहीवः, जहिमः,-जहीमः। जह्यात्। जहातु, जहिताम्-जहीताम्, जहतु। जहाहि-जहिहि-जहीहि। अजहात्। अहासीत्। जहौ, जहतुः। जहिथ-जहाथ। हाता। हेयात्। हास्यति। कर्म्मणि—हीयते। अहायि। णिचि—हापयति-ते। अजीहपत्-त। सनि—जिहासति। यङि—जेहीयते।

कृत्सु—हानीयम्। हानम्। प्रहाणम्। हायनो व्रीहिर्वर्षं च। हायः। हायकः। हायी। हाता। ओदित्—निष्ठा-तस्य नः। हीनः। हानिः। हातव्यम्। हातुम्। हित्वा। प्रहीय। हेयम्। जहत्। हास्यन्। कर्म्मणि—हीयमानः। हायिष्यमाणः,-हास्यमानस।

## (५८०) हा गतौ जुहो० आत्म० सक० अनिट्।

कर्त्तरि—जिहीते, जिहाते, जिहते। जिहीषे, जिहाथे, जिहीध्वे। जिहे। जिहीत। जिहीताम्। अजिहीत। अहास्त। जहे। हातासे। हासीष्ट। हास्यते। कर्म्मणि—

ह्रायते। अह्रायि। णिचि—ह्रापयति-ते। अजीह्रपत्-त।
सनि—जिह्रासते। यङि—जाह्रायते।

उत्—उदये, उज्जिहीते।

कृत्सु—ओदित्, निष्ठा-तस्य नः,—ह्रानम्। ह्रानिः। ह्रात्वा।
प्रह्राय। हेयम्। जिहानः। ह्रास्यमानः। कर्म्मणि—
ह्रायमानः। ह्रायिष्यमाणः,-ह्रास्यमानः। अन्यत् पूर्ववत्।
उत्—उज्जिहानः।

## (५८१) हि वर्द्धने गतौ स्वादि० पर० सक० अनिट्।

कर्त्तरि—हिनोति, प्रहिणोति, हिनुतः, हिन्वन्ति। हिनोषि।
हिन्वः,-हिनुवः। हिनुयात्। हिनोतु। हिनु। हिनवानि।
अहिनोत्। अहैषीत्। जिघाय, जिघ्यतुः। जिघयिथ-
जिघेथ। हेता। हीयात्। हेष्यति। कर्म्मणि—हीयते।
अहायि। णिचि—हाययति-ते। अजीहयत्-त।

प्र—प्रेरणे, प्रहिणोति।

कृत्सु—हयनीयम। हयनम। हयः। हायकः। हायी। हेता।
हितः। हितिः। हेतुम्। हेतव्यम्। हित्वा। संहित्य।
हेयम्। हिन्वन्। हेष्यन्। कर्म्मणि—हीयमानः। हायिष्य-
माणः,-हेष्यमाणः। प्र—प्रहितः।

## (५८२) हिस् (हिसि) हिंसने वा चुरादि० उभ० पक्षे रुधादि० पर० सक० सेट् इदित्।

कर्त्तरि (चुरादिपक्षे)—हिंसयति ते हिंसयतः,-हिंसयेते।
हिंसयेत्-त। हिंसयतु-ताम्। हिंसय-हिंसयस्व। अहिंसयत्-
त। अजिहिंसत्-त। हिंसयाम्बभूव-मास-ञ्चकार।
हिंसयितासि-से।

कर्त्तरि (रुधादिपक्षे)—हिनस्ति, हिंस्तः, हिंसन्ति। हिंस्यात्।

हिनस्तु । हिन्धि, मतान्तरे—हिण्ढि, हिण्ड्ढि । अहिनत्-द् । अहिनत्-द्-अहिनः । अहिंसीत् । जिहिंस । हिंसिता । हिंसितासि । हिंस्यात्, हिंस्यास्ताम् । हिंस्याः । हिंसिष्यति । अहिंसिष्यत् । कर्म्मणि—हिंस्यते । अहिंसि, अहिंसिषाताम् । चुरादिपक्षे—अहिंसयिषाताम् । सनि—जिहिंसिषति ।

कृत्सु—हिंसनीयम् । हिंसनम् । हिंसः । हिंसकः । हिंसी । हिंसयिता, हिंसिता । हिंसितः । हिंसना । हिंसा । हिंसयितव्यम्, हिंसितव्यम् । हिंसयितुम्, हिंसितुम् । हिंसयित्वा, हिंसित्वा । उपहिंस्य । हिंस्यम् । हिंसयन्-मानः, हिंसन् । हिंसयिष्यन्-ष्यमाणः, हिंसिष्यन् । कर्म्मणि—हिंस्यमानः । हिंसयिष्यमाणः ।

## (५८३) हु होमे अदने च जुहो० पर० सक० अनिट् ।

वार्त्तार—जुहोति, जुहुतः, जुह्वति । जुहोषि, जुहुथः । जुहोमि, जुहुवः । जुहुयात् । जुहोतु, जुहुताम्, जुह्वतु । जुहुधि । जुहवानि । अजुहोत् । अहौषीत् । जुहाव, जुहुवतुः । जुहविथ-जुहोथ । जुहुविव । पक्षे जुहवाम्बभूव-मास-ञ्चकार इत्यादि । होता । हूयात् । होष्यति । कर्म्मणि—हूयते । अहावि । णिचि—हावयति-ते । अजूहवत्-त । प्रीणने—"जुहुधीह पावकम्" इति भारविः ।

कृत्सु—हवनीयम् । हवनम् । हवः । हावः । हावकः । हावी । असि—हविः । क्तिण्—होत्रम् । होता । हुतः । हुतिः । आहुतिः । होतव्यम् । हुत्वा । प्रहुत्य । हव्यम् । हाव्यम् । जुह्वत् । होष्यन् । कर्मणि—हूयमानः । हाविष्यमाणः-होष्यमाणः ।

## (५८४) हृ हरणे भ्वादि० उभ० द्विक० अनिट्।

कर्त्तरि—हरति-ते। हरेत्-त। हरतु-ताम्। अहरत्-त। अहार्षीत्-अहृत। जहार-जह्रे, जह्रतुः। जहर्थ। जह्रिव। हर्त्ता। हर्त्तासि-से। ह्रियात्-हृषीष्ट। हरिष्यति-ते। अहरिष्यत्-त। कर्मणि—ह्रियते। अहारि, अहारिषाताम्, अहृषाताम्। णिचि—हारयति-ते। अजीहरत्-त। सनि—जिहीर्षति-ते। यङि—जेह्रीयते।

प्र—प्रहारे प्रहरति। अप—अपहृतौ, (चौर्य्यकरणे) अपहरति। सम्—संहारे (नाशने) संहरति। अनु—अनुकरणे, अनुहरति। गत्यनुकारे आत्म० अनुहरते। वि—विहारे, विहरति। आ—आहारे, आहरणे च, आहरति। उत्—उद्धारे; उद्धरति। सम्+अभि—साहित्यकरणे, समभिहरति। वि+आ—कथने, व्याहरति। अभि+अव—भोजने, अभ्यवहरति। निर्—निर्हरणे, निर्हरति।

स्वीकारार्थे अंशं हरति दायादः। नाशनार्थे पापं हरति। प्रापणार्थे द्विक०—भारं हरति ग्रामम्।

कृत्सु—हरणीयम्। हरणम्। हरः। प्रहारः। मनोहरः। हारकः। नाथहरिः। हारी। हर्त्ता। हृतः। हृतिः। हर्त्तव्यम्। हर्त्तुम्। हृत्वा। प्रहृत्य। हार्य्यम्। हरन्-माणः। हरिष्यन्-ष्यमाणः। कर्मणि—ह्रियमाणः। हारिष्यमाणः,-हरिष्यमाणः।

प्र—प्रहृतः। प्रहारः। प्रहरणम्। अप—अपहृतः। अपहरणम्। सम—संहृतः। संहारः। सम्+अभि—समभिहारः। अभि+अव—अभ्यवहारः। अभ्यवहृतिः। अनु—अनुहरणम्। वि—विहृतः। विहृतिः। विहारः। वि+

आ—व्याहृतः। व्याहृतिः। आ—आहृतः। आहारः। आहरणम्। उत्—उद्धृतः। उद्धारः। निर्—निर्हारः। निर्हरणम्।

## (५८५) हृष् तुष्टौ दिवादि० पर० अक० सेट्।

कर्त्तरि—हृष्यति। हृष्येत्। हृष्यतु। अहृष्यत्। इरित्—अहृषत्-अहर्षीत्। जहर्ष, जहृषतुः। हर्षिता। हृष्यात्। हर्षिष्यति। भावे—हृष्यते। अहर्षि। णिचि—हर्षयति-ते। अजीहृषत्-त-अजहर्षत्-त।

भ्वादिस्तु चित्तोत्साहे अक० मिथ्याकरणे सक० (उदित् क्त्वा वेट्) पर० सेट्।—हर्षति। अहर्षीत्।

कृत्सु—हर्षणीयम्। हर्षणम्। हर्षः। हर्षकः। हर्षी। हर्षिता। हृषितः, हृष्टः। हृष्टिः। हर्षितव्यम्। हृष्ट्वा। मिथ्याकरणे उदित् क्त्वा वेट्—हृषित्वा-हृष्ट्वा। प्रहृष्य। हृष्यम्। हृष्यन्। हर्षिष्यन्।

## (५८६) ह्नु चौर्य्ये अदादि० आत्म० सक० अनिट्।

कर्त्तरि—ह्नुते, ह्नुवाते, ह्नुवते। ह्नुवीत। ह्नुताम्। अह्नुत। अह्नोष्ट। जुह्नुवे। ह्नोतासे। ह्नोषीष्ट। ह्नोष्यते। कर्म्मणि—ह्नूयते। अह्नावि, अह्नाविषाताम्-अह्नोषाताम्। णिचि—ह्नावयति-ते। अजुह्नवत्-त।

अप—अपलापे, अपह्नुते। नि—गोपने, निह्नुते।

कृत्सु—ह्नवनीयम्। ह्नवनम्। ह्नवः। ह्नावकः। ह्नावी। ह्नोता। ह्नुतः। ह्नुतिः। ह्नोतव्यम्। ह्नुत्वा। प्रह्नुत्य। ह्नव्यम्। ह्नाव्यम्। ह्नुवानः। ह्नोष्यमाणः। कर्म्मणि—ह्नूयमानः। ह्नाविष्यमाणः-ह्नोष्यमाणः।

अप—अपह्नुतः। अपह्नवः। नि—निह्नुतः। निह्नवः।

(५८७) ह्री लज्जायां जुहो० पर० अक० अनिट्।

कर्त्तरि—जिह्रेति, जिह्रीतः, जिह्रियति। जिह्रेषि, जिह्रीथः। जिह्रेमि। जिह्रियात्। जिह्रेतु, जिह्रीतात्। अजिह्रेत्। अह्रैषीत्। जिह्रयाम्बभूव-मास-ञ्चकार। आमभावपक्षे—जिह्राय। जिह्रियतुः। जिह्रयिथ-जिह्रेथ। ह्रेतासि। ह्रीयात्। ह्रेष्यति। भावे—ह्रीयते। अह्रायि। णिचि—ह्रेपयति ते। अजिह्रिपत्-त। सनि—जिह्रीषति। यङि—जेह्रीयते।

कृत्सु—ह्रयणीयम्। ह्रयणम्। ह्रयः। ह्रायकः। ह्रायी। ह्रेता। ह्रीणः। ह्रीतिः। ह्रेतुम्। ह्रीत्वा। प्रह्रीय। ह्रेयम्। जिह्रियत्। ह्रेष्यन्।

(५८८) ह्रेष् अव्यक्तशब्दे भ्वादि० आत्म० सक० सेट्।

कर्त्तरि—ह्रेषते। जिह्रेषे। ह्रेषिता।

कृत्सु—ह्रेषितः। ह्रेषितुम्। ह्रेषः।

(५८९) ह्लाद् आह्लादे भ्वादि० आत्म० अक० सेट्।

कर्त्तरि—ह्लादते। जह्लादे। ह्लादिता। भावे—ह्लाद्यते। अह्लादि। णिचि—ह्लादयति। अजिह्लदत्। सनि—जिह्लादिषते।

कृत्सु—ह्लादनीयम्। ह्लादितः। ह्लादित्वा। ह्लादितुम्। आ—आह्लादः।

(५९०) ह्वे स्पर्द्धायाम् शब्दे च अक० आह्वानार्थे सक० भ्वादि० उभ० अनिट् यजादिः।

कर्त्तरि—ह्वयति-ते। ह्वयेत्-त। ह्वयतु-ताम्। अह्वयत्-त। अह्वत्, अह्वत-अह्वास्त। जुहाव जुहुवे, जुहुवतुः। जुहविथ-

जुहोथ। ह्वातासि-से। हूयात्, ह्वासीष्ट। ह्वास्यति-ते।
कर्म्मणि—हूयते। अह्वायि, अह्वायिषाताम्-अह्वासाताम्।
णिचि—ह्वाययति ते। अजूहवत्-त।

आ—स्पर्द्धायाम्, आत्म०—आह्वयते। उप—उपह्वयते। नि—
निह्वयते। वि—विह्वयते। सम्—संह्वयते।

कृत्सु—ह्वानीयम्। ह्वानम्। ह्वायकः। ह्वायी। ह्वाता।
हूतः। हूतिः। ह्वातुम्। हूत्वा। आहूय। हेयम्।
ह्वयन्-मानः। ह्वास्यन्-स्यमानः। कर्म्मणि—हूयमानः।
ह्वायिष्यमाणः,-ह्वास्यमानः।
आ—आह्वयमानः। आह्वानम्। आहूतः।

इति श्रीतारानाथतर्कवाचस्पतिभट्टाचार्य्यविरचितः
अकारादिहान्तवर्णादिकप्रसिद्धधातुरूपादर्शः।

शिवमस्तु ओँ तत्सत्।

---



## अतिरिक्त-सन्निवेशः।

[ ४५ पृष्ठे ४४ संख्यक "ऋध्" धातोरनन्तरम् ]

### एज् कम्पने भ्वादि० पर० अक० सेट्।

कर्त्तरि—एजति। एजतु। एजेत्। ऐजत्। ऐजीत्। एजाञ्चकार-मास-म्बभूव। एजिता। भावे—एज्यते। ऐजि। णिचि—एजयति-ते। ऐजिजत्-त।

कृत्सु—एजनीयम्। एजित्वा। उदेज्य। जनमेजयः।

[ ५१ पृष्ठे ५७ संख्यक "कित्" धातोरनन्तरम् ]

### कुत्स् कुत्सने चुरादि० आत्म० सक० सेट्।

कर्त्तरि—कुत्सयते। अचुकुत्सत। सनि—चुकुत्सयिषते।

कृत्सु—कुत्सितः। कुत्सनम्। कुत्सा।

[ १६७ पृष्ठे ३२५ संख्यक "बुध्" धातोरनन्तरम् ]

### बुध् अवगमने भ्वादि० पर० अक० सेट्।

कर्त्तरि—बोधति। बोधेत्। बोधतु। अबोधत्। अबोधीत्। बुबोध। बोधिष्यति। बोधिता। अबोधिष्यत्। बुध्यात्। कर्म्मणि—बुध्यते। अबोधि। णिचि—बोधयति। अबूबुधत्। सनि—बुबोधिषति, बुबुधिषति। यङि—बोबुध्यते।

कृत्सु—बोधितव्य। बोधनीयम्। बोध्यः। बोधितः, बुधितः। बोधित्वा, बुधित्वा। बोधितुम्।

उत्—( स्मरणे ) उद्बुद्धः। उद्बोधितः। प्र—( जागरणे ) प्रबुद्धः। प्रबोधितः। सम्—( सम्यक् ज्ञाने ) सम्बुद्धः। सम्बोधितः। ( आह्वाने )—सम्बोधनम्।